BHU LIBRARY

ॐ तत्सत्।

व्यावहारिक-संस्कृतप्रबोधः

(प्रथम द्वितीय भागौ)

संस्कृतविद्यागहनारण्यप्रविविक्षूणां संस्कृतसलापाभिलाषिणाञ्चोप-
कारार्थम् श्रीमत्परमविद्वद्वर्य्य श्रीदुर्गाप्रसादसूनुना, अलीगढ़राज
कीयाङ्गलपाठशालाप्रधानसंस्कृताध्यापकेन गौड़वंशीयेन
सुखानन्देन त्रिपाठिना विशारदपरीक्षोत्तीर्णेन व्यरचि

सोऽयम्।

काशीयन्त्रालये त्रिषष्ट्यत्तरैकोनविंशतिशततमेऽब्देमुद्रापित।
अस्य सर्वेऽधिकारा ग्रन्थनिर्माता स्वायत्तीकृता.
(मूल्य सार्द्धरूपकमेकम्)

A GUIDE

TO

COLLOQUIAL SANSKRIT

IN TWO PARTS

OR

A HELP IN GENERAL SANSKRIT COMPOSITION AND CONVERSATION WITH IMPORTANT GRAMMATICAL NOTES, PROVERBS, SPECIMENS OF LETTERS AND APPLICATIONS ETC, ETC, FOR THE USE OF THE STUDENTS GOING UP FOR THE INTERMEDIATE AND MATRICULATION EXAMINATIONS

BY

PANDIT SUKHANAND TRIPATHI,
DIPLOMATED VISHARAD,
Head Pandit, Govt High School, Aligarh.

PRINTED AT THE KASHI PRESS,
BENARES CITY.

Registered for copy-right under
Act XXV of 1867.

भूमिका।

आज कल कर्मभूमि भारतवर्ष में भी बहुत से ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य प्रायः संस्कारों से भ्रष्ट हुए अपने २ धर्म कर्मों को छोड़ने से दिन पर दिन अधोगति को प्राप्त होते चले जाते हैं। कारण इसका केवल कर्त्तव्य कर्म न जान अकर्मण्य होना है जो शास्त्रावलोकन से जाने जाते थे। शास्त्रज्ञान के लिये संस्कृत विद्या जानने की परमावश्यकता है। पर बालकों की शिक्षा का समुचित प्रबन्ध न होने, यथावत् ब्रह्मचर्य की रक्षा न रहने, बुरी सङ्गति में पड़ने और मन्द भाग्यता के कारण बाल-अवस्था से ही गृहस्थ के सन्देहों में पड़ने से वह तीक्ष्ण बुद्धि, जो व्याकरणादि षट् शास्त्रों के अवगाहन में समर्थ होती थी प्रायः नष्ट होती जारही है। यदि किसी प्रकार से किसी की कुछ रुचि संस्कृत की ओर चली भी तो जहां ग्रन्थों में कठिनता पड़ी और श्रम करने का समय आया आलस्यवश छोड़ बैठे। और बहुतों ने तो संस्कृत पढ़ना भीख मांगने का द्वारही समझ केवल ब्राह्मणों के लिये छोड़ दिया है। परिणाम यह हुआ कि अपने शास्त्र चक्षु न होने से जैसे जिसने बहकाया बहक गये और कुमार्गों व स्वधर्म-विरुद्ध मतों में पड़ गये जिससे कि अपनी जाति, धर्म और जीवन तक को नष्ट कर बैठे। अतएव अल्प काल में थोड़े परिश्रम से संस्कृत विद्या सिखाने के लिये और व्यवहार का अच्छा पण्डित बनाने के लिये व संस्कृत में सम्भाषण व चिट्ठी पत्री लिखने पढ़ने और शास्त्रज्ञान की गति प्राप्त कराने के लिये "व्यावहारिकसंस्कृत-प्रबोध" नाम की यह पुस्तक बनाई गई है जिसके दो भाग हैं। प्रथम भाग में प्रत्येक प्रकार की व्यावहारिक संस्कृत बोलने व लिखने की रीति है दूसरे भाग में आद्योपान्त संस्कृत व्याकरण हिन्दी अनुवाद से समझाया गया है कि जिससे विद्यार्थी को कौमुदी से कहीं अधिक बोध स्वयं हो सक्ता है। यह पुस्तक सर्वसाधारण के हित के लिये और विशेष कर अंग्रेजी के साथ संस्कृत पढ़ने वाले उच्च श्रेणियों के विद्यार्थियों के लिये जिनको कि परीक्षार्थ संस्कृतानुवाद सुन्दर रूप से आना परम आवश्यक है, बनाई गई है। मैं आशा करता हूं कि विद्यार्थीगण व सर्वसाधारण जन इस पुस्तक द्वारा अपने को व अपनी सन्तति को संस्कृतज्ञ बना मेरे परिश्रम को सफल करेंगे।

अन्त में मैं अपने परोपकृति परायण मित्र पं० ज्योतिःस्वरूपशर्मा सम्पादक निगमागम चन्द्रिका (हिन्दी) व महामण्डल समाचार (उर्दू) व धर्मोपदेष्टा श्रीभारतधर्म महामण्डल को कोटिशः धन्यवाद देता हूं कि जिन्होंने इस पुस्तक के छपाने में बहुत कुछ सत्परामर्श दिया है और

प्रूफादि शोधन करने कराने में अनवकाश होने पर भी बड़ी सहायता दी है। तथापि, भूल रह जाना मनुष्य की स्वभावही है अस्तु पुस्तक के अन्त में शुद्धाशुद्धपत्र भी लगवा दिया है। पाठकों को उचित है कि पढ़ने से पहले उसके अनुसार शुद्ध करलें। इति शिवम्!

सुखानन्द त्रिपाठी।

व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोध की विषयानुक्रमणिका।

अथ प्रथमोभागः।

अ.	विषय.	पृष्ठ.
१	देहावयवविशेष	१
२	वस्त्रविशेष	१४
३	आभूषणविशेष	१८
४	गृहस्थवस्तु	२१
५	पात्रविशेष	२४
६	चतुष्पद्वयानविशेष	२८
७	पक्षिविशेष	३३
८	दुखदायीजीवविशेष	३५
९	वनजन्तुविशेष	४०
१०	जलजन्तुविशेष	४२
११	छात्रोपयोगीपाठशालासम्बन्धी वस्तुएँ	४७
१२	भोजनपदार्थविशेष	६५
१३	सम्बन्धद्योतकशब्द	७२
१४	जातिविशेष	७५
१५	वृक्ष, पुष्प व सख्याविशेष	९०
१६	आकाशपदार्थ, अहोरात्रादिभाग	९९
१७	स्वर्गीयवृत्तान्त, धर्मसम्बन्धीअनेक विषय	१०४
१८	रोगविशेष	१२२
१९	औषधि, व उनकी तोल	१२५
२०	विशेषण शब्द	१३१
२१	व्याकरण की परिभाषा	१३९
२२	अवशिष्ट क्रिया विशेष	१५०
२३	अनेक प्रकार के अनोखे वाक्य व मुहावरे कहावतें इत्यादि	१५१
२४	अभिनन्दनपत्र, अर्जी, चिट्ठी पहेलियां, छन्द इत्यादि	१८७
२५	दिनचर्या व रात्रिचर्या	२०४

अथ द्वितीयो भागः।

१	सन्धि विषय वर्णन	२
२	पदलिङ्गरूप	६
३	अव्ययार्थ	२१
४	स्त्रीप्रत्यय	२३
५	कारक	२५
६	समास	२९
७	तद्धित	३०
८	धातुरूप	३२
९	णिजन्त प्रक्रिया वर्णन	५९
१०	सन्नन्त प्रक्रिया वर्णन	६०
११	यङन्त प्रक्रिया वर्णन	६०
१२	यङ्लुगन्त वर्णन	६१
१३	नाम धातु वर्णन	६२
१४	आत्मनेपद वर्णन	६३
१५	परस्मैपद वर्णन	६४
१६	वाच्य वर्णन	६४
१७	लकारार्थ वर्णन	६५
१८	कृदन्त वर्णन	६६

S. N.
C. LIBRARY.

PREFACE.

The practice of speaking Sanskrit in India gradually declined during the Mohamadan rule until it became a dead language. Our humble thanks for its revival are specially due to our late lamented Queen-Empress as well as to the present King-Emperor, whose reigns have been marked with the resuscitation of this Aryan language. Now it would be well if every Indian who has any knowledge of Hindi acquired a practical knowledge of Sanskrit himself and teach it to his children before they join an English school. The profoundness of the Sanskrit language is generally admitted. Practical proficiency in Sanskrit is rather difficult to acquire. To supply this long-felt want is the object of the present work. It consits of two parts, I and II of 25 and 18 chapters respectively a brief sketch of which is given below.

The plan adopted is as follows:—

First, the Heading denotes the subjet matter. Secondly, important words of daily use are given. Lastly come the illustrations of Hindi and Sanskrit sentences in common use. The headings will, it is hoped, give the reader an adequate idea of the work. Great pains have been taken to collect and classify, as far as possible, all the impotant words in daily use with their Sanskrit equivalents. The substantives are put in the singular nominative to show their genders, as it is very difficult to determine gender in Sanskrit. In the same way the roots are given in the present tense (लट्) third person singular (अन्य पुरुष एक वचन) to show their conjugation etc. (गणपद इत्यादि).

There are already several Sanskrit translation books in the market. In my humble opinion, however, they are not

of much help to a student who wishes to acquire a practical knowledge of Sanskrit within a short period It is hoped that the student, who reads this work with a '*Guru*' or studies it himself carefully, will acquire some knowledge of colloquial Sanskrit Sanskrit proverbs letter writing religious principles and duties as well as the mode of Sanskrit translation together with the peculiarities of Sanskrit Grammar

No other Sanskrit translation book will be required upto the Matriculation and F A standards by a student who has thoroughly gone through this book after a preliminary study of my 'A GUIDE TO ANGLO SANSKRIT CONVERSATION FOR BEGINNERS' At first I intended writing this work in Anglo Sanskrit as I have done with my book for beginners referred to above, but considering that it would then be useful to English knowing students only, I have written it in the present form so that it may be useful to all

I offer a few hints for the benefit of teachers The chapters in the second part dealing with grammatical constructions should begone through before taking up the book regularly from the beginning and in the first part the words with their synonyms in each chapter should be carefully mastered before using them in sentences

I conclude these remarks with a list of the chapters in both the parts

The names of the chapters in the first part are as follows —(1) Limbs parts etc of the human body (2) Clothes of every kind (3) Ornaments (4) House hold things (5) Vessels and the chief parts of a house (6) Cattle and conveyances (7) Birds (8) Poisonous animals and insects (9) Animals of the forest (10) Animals living in water (11) Things required for students in a school (12) Eatables (13) Words showing family relationships (14)

Caste and occupation of Indians. (15) Certain trees and flowers and Sanskrit numeration. (16) Heavenly bodies and divisions of day and night. (17) Heavenly beings and things and some mysteries of our religion. (18) Kinds of disease. (19) Medicines and weights. (20) Adjectives. (21) Remaining verbs. (22) Definitions of Sanskrit Grammar with English equivalents. (23) Miscellaneous sentences, idiomatic sentences, famous Sanskrit proverbs, shlokas for entertainment on occasions of marriage gatherings. (24) Addresses, letters, applications etc. and the important Sanskrit Metres. (25) The duties to be performed by a man during day and night.

The names of the chapters of the Second part are as follows :—

(1) The rules and examples of the Conjunction of Sanskrit letters (सन्धि). (2) Declension of great many words in common use in all the cases with their derivations (व्युत्पत्ति). (3) Indeclinables with their meanings (अव्ययार्थ). (4) Feminine affixes [स्त्रीप्रत्यय]. (5) Cases of nouns and pronouns with their uses [कारक]. (6) Rules, uses and examples of compounds [समास]. (7) Rules for nominal affixes [तद्धित]. (8) Conjugation [धातुरूप] of many important verbs with all constructions [प्रक्रियारूप] required. (9) Causative verbs [णिजन्त]. (10) Desiderative verbs [सन्नन्त]. (11) Frequentative verbs [यङन्त]. (12) Frequentative verbs rejecting यङ् [यङ्लुगन्त]. (13) Nominal verbs [नामधातु]. (14) Rules for the use of Parasmaipada [परस्मैपद प्रक्रिया]. (15) Rules for the use of [आत्मनेपद प्रक्रिया]. (16) Rules of intransitive passive [भावकर्म] and Passive and Active voices [कर्मकर्तृप्रक्रिया] (17) Rules for the use of Tense and Mood [लकारार्थ प्रक्रिया]. (18) Verbal affixes [कृत्प्रत्यय].

ALIGARH, Sept. 1907. S. N. TRIPATHI.

विद्यार्थियों को परमोपयोगी पुस्तकें।

सदाचार सोपान—इसमें लड़कों को माता, पिता और गुरू की भक्ति करने के लाभ और प्रातःकाल से लेकर सोने तक के धर्म कर्म बड़ी उत्तमता से बताये गये हैं। मूल्य -)

धर्मसोपान—इसमें धर्म के समस्त तत्व वेदादि धर्म ग्रन्थों के अनुकूल ऐसी सुगमता से लिखे गये हैं कि थोड़ेही काल में धर्म का पूर्ण ज्ञान हो जाता है। मूल्य ।)

ब्रह्मचर्याश्रम—ब्रह्मचर्य की विद्यार्थियों का बड़ीही आवश्यकता है। इसी पर संसार के धर्मादि और परलोक की उन्नति निर्भर है। इसके पढ़ने से विद्यार्थियों का बहुत उपकार होगा। मूल्य ।) मात्र

चाणक्यनीतिदर्पण—यह नीति का सर्वोत्तम ग्रन्थ है। आजकल भारतवासी मात्र को इसका पढ़ना आवश्यक है इसीसे इसको एक विद्वान पण्डित के द्वारा सुन्दर हिन्दी टीका बनवा कर प्रकाशित कराई है। मूल श्लोक मोटे अक्षरों में और उन पर अन्वयाङ्क लिख कर नीचे पहले केवल अन्वयाङ्क के अनुसार संस्कृत हिन्दी में शब्दार्थ और फिर भावार्थ लिखा गया है। इससे संस्कृतज्ञ और नागरी जाननेवाले दोनों का विशेष उपकार सम्भव है। एक भाषा जान कर दूसरी भाषा भी सरलता से आसकती है। लगभग डेढ़ सौ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ॥-) मात्र रखा है।

धर्मसङ्गीत—भारतवर्ष भर के सुप्रसिद्ध विद्वान् कविराजों के धर्मरस छलछलाते सङ्गीतों का संग्रह बड़ीही उत्तमता से किया गया है। इसके सङ्गीत श्रवण करतेही चित्त आनन्द मग्न हो जाता है। और धर्म की जागृति हो आती है। मूल्य ≡) मात्र

आङ्गल संस्कृत प्रदीपिका—इसके द्वारा थोड़ी सी हिन्दी जाननेवाला भी थोड़ेही समय में नित्त प्रति व्यवहार में आनेवाली अंग्रेजी और संस्कृत बोलना, लिखना और पढ़ना सीख सक्ता है। क्योंकि इसमें क्रम बहुत सुन्दर रक्खा गया है। पहले बहुत से छोटे २ शब्द और फिर उनका व्यवहार वाक्यों द्वारा दिखाया गया है। इसमें १० अध्याय हैं उनके नाम यहां लिखे देते हैं कि जिनसे इसका उपयोगी होना स्वयं ज्ञात हो जायगा। १ अध्याय में बहुत से व्यवहारिक शब्द, २ में समय व संख्या शब्द, ३-स्कूल सम्बन्धी ४ देह के अङ्गों के नाम, ५ रिश्तेदारी के शब्द, ६ सब प्रकार के कपड़ों के नाम, ७ भोजन के पदार्थ, ८ घर सम्बन्धी शब्द, ९ घर की वस्तुओं के नामादि, १० पशुपक्षी और धर्म सम्बन्धी बातें। इसपर भी दाम केवल ।) मात्र।

न्यायादर्श—न्याय के अति कठिन तर्कसंग्रह ग्रन्थ को कि जिसकी प्रत्येक बात कण्ठस्थ करना होती है विद्यार्थियों के हितार्थ बड़े परिश्रम से चित्रपट [नकशे] के रूप में प्रकाशित कराया है। जिसके द्वारा न्यायशास्त्र हस्तामलकवत् प्रतीत होने लगता है। दाम -) मात्र।

मिलने का पता:— श्री सरस्वतीभण्डार काशी।

BARC LIBRARY. S. N.....

श्रीगणेशायनमः ।

व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोधः ।

गोत्राधिराजतनयातनयः सहितः श्रियां ।
पायात्प्रत्यूहसन्दोहवारणो वारणाननः ॥ १ ॥
अनङ्गशरविद्धाङ्गीमालिङ्गन्गोपभामिनीम् ।
जायतां श्रेयसे वोऽद्य कृष्णः कलितकौस्तुभः ॥ २ ॥
अधीतविद्यानधुनातनॉस्तान् विलोक्य तांन्तान् व्यवहारिकोक्तौ
शिष्यान् विनेतुं व्यवहारवाण्यामभाणि वाणी किलदेवतानाम् ॥ ३ ॥
यद्यत्र स्खलितं भवेन्मम कृतौ शोध्यं बुधैरेव तत् ।
प्रायासः प्रथमः प्रकल्पित इति ज्ञात्वा दयासागरैः ॥
इत्येवं विनतो निवेदयति वो डिम्भः सुखानन्दको ।
बालानां किल चेष्टितं गुरुजनानन्दाय सञ्जायते ॥ ४ ॥

प्रथमोऽध्यायः ।

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन— देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
मनुष्य	पुरुषः, पूरुषः, नरः, नरः, मर्त्यः ।	बाल	केशः, कुन्तलः, कचः, चिकुरः,
बालक	बालः, शिशुः, अर्भकः ।	रोम	रोमन्, लोमन् (न०) तनूरुहः.
स्त्री	नारी, अङ्गना, अबला, धामा, योषित्, (स्त्री) ।	मूंछ	गण्डलोमन्, (न०) गुम्फः.
बाँझ	वशा, वन्ध्या.	डाढी	श्मश्रु, (न०) कूर्चम्, मुख-रोमन् (न०).
चोटी	शिखा, वेणिः (णी), धम्मिल्लः चूडा, कबरी.	सिर	शिरः (न०), शीर्षम्, मूर्धा (पुं०), मौलिः, मस्तकः-कम्

१ । शोभया । २ । क्लान्तान् ।

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन— देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
खोपड़ी	कपालः (लम्), कर्परः, शिरोस्थि (न०).	चूतड़	नितम्बः
माथा	ललाटम्, मस्तिष्कम्, भालपट्टम्, पटलम्	बाँह	दोः, [पु०] बाहुः, भुजः
भौं	भ्रूः, भ्रूलता.	नाड़ी	स्नायुः (स्त्री०) शिरा, धमनिः मांसपेशी.
आँख	चक्षुः, (न०) नेत्रम्, नयनम्, अक्षि (न०).	हाथ	हस्तः, पाणिः, करः, पञ्चशाखः
नाक	नासिका, घोणा, गन्धवहा नासा	कोहनी	कूर्परः, कफ [फो] णिः
मुँह	वक्त्रम्, आननम्, मुखम्, तुण्डम्.	उँगली	अङ्गुलिः-ली ।
दांत	दन्तः, रदः, दशनः दंष्ट्राजम्भः	अंगूठा	अङ्गुष्ठः ।
मसूढ़े	दन्तमांसम्.	चारउँगलियों के नाम	तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कानिष्ठिका,
जीभ	जिह्वा, रसना, रसज्ञा.	हथेली—	करतलः लम्.
तालुआ	तालु, (न०) काकुदम्.	नोह —	नखः-खम्, करुहः, नखरः-रम्
फेफड़ा	फुप्फुसम्.	शरीर	कायः, देहः, शरीरम्, वपुः (न०) गात्रम्.
डाढ़	दंष्ट्रा.	खाल	चर्म (न०) त्वक् (स्त्री०)
हलक	कण्ठः, गलः, एकः, निगरणः.	हड्डी —	कीकसम्, कुल्यम्, अस्थि (न०)
जवान	युवा (पु०) तरुणः.	मांस	पिशितम्, मांसम्, पललम्, क्रव्यम्.
बूढ़ा	वृद्धः, स्थविरः.	चरबी	मेदः (न०) वसा, वपा.
कान	कर्णः, श्रोत्रम्.	हड्डीके भीतकी चरबी	मज्जा, सारः
कानका मैल	कर्णकिट्टम्, कर्णमलम्.	खून.	रुधिरम्, असृक् (न०) अस्रम्, रक्तम्.
ठोड़ी	चिबुकम्, हनुः (पु० स्त्री०)	कलेजा.	यकृत् (क्रा), अग्रमांसम्.
गर्दन	ग्रीवा, गलः, कन्धरः, शिरोधिः.	लार	क्ष्वेडिका, स्यन्दिनी, लाला.
कन्धा	स्कन्धः, अंसः ।	पैर की घुट्ठी.	घुटिके, गुल्फौ.
पीठ	पृष्ठम्, पृष्ठदेशः		
कमर	कटिः, श्रोणिः (णी), (स्त्री)		

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
जङ्घाका ऊपरीहिस्सा	ऊरुः, सक्थि (न०)	छिनार	कुलटा, पुँश्चली, धन्धकी.
मूत.	मूत्रम्, प्रस्रावः.	विधवा	विश्वस्ता, विधवा, रण्डा.
मल.	पुरीषम्, गूथम्, विष्ठा, शकृत्, (स्त्री).	सखी	आलिः, वयस्या.
पुरुष का वीर्य्य	शुक्रः, [पुं.] वीर्यम्, रेतः, बीजम्.	सुहागिन	पतिघ्नी, सभर्तृका.
स्त्री का ,,	रजः, पुष्पम्, आर्तवम्.	दूती	दूतिः, सञ्चारिका.
अंडकोश	मुष्कः, वृषणः.	वेश्या	वारस्त्री, वारांगना, गणिका.
कुचा	कुचः, स्तनः	खाविन्द	धवः, पतिः, भर्ता.
दिल.	मनः, (न०) मानसम्, चित्तम्, हृदयम्, हृत्, चेतः (न०)	जार लवार	जारः, उपपतिः.
मूत्राशय.	वस्तिः.	जेर	उल्वम्, जरायुः, गर्भाशयः.
गुदा.	गुदम्, अपानम्, पायुः, (पुं०) मलद्वारम्.	सोवर	सूतिगृहम्.
बुद्धि.	बुद्धिः, मनीषा, धिषणा, प्रज्ञा, शेमुषी, धीः।	गर्भ	गर्भः, भ्रूणः (कुक्षिस्थस्य प्राणिनः नाम).
पेट.	उदरम्, जठरम्, तुन्दम्, कुक्षि	मानना	मन्यते.
डूँडी.	नाभिः (भी), उदरावर्तः	लाना	आनयति, आहरति, आवहति प्रापयति।
आँतें.	अन्त्राणि।	काजल लगाना	कज्जलं निदधाति, नियोजयति, अनक्ति.
लिंग.	लिंगम्, उपस्थः, शिश्नः, मेढ्र	सूँघना	जिघ्रति,
योनी.	योनिः, भगः-(गम्).	थूकना	ष्ठीव्यति, नि-ष्ठीवति।
पैर	पादः, पदम्, चरणः-णम्, अंघ्रि	निगलना	ग्रसते, निगिरति.
पस्सें	प्रसृतिः.	डकारना	उद्गिरति।
चुटकी	क्षोटिका	छींकना	क्षौति, क्षवथुं करोति।
मुक्का, मुट्ठी	मुष्टिका.	कै करना	वमति, उद्वमति।
		नाक साफ़ करना	नसः मलं त्यजति।
		खकारना खाँसना	कासते, क्षौति।

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन— देहावयवाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
छूना	स्पृशति ।	सींटी बजाना	शीत्कारं करोति.
हँसना	स्मयते, ईषद्धसति, मन्दस्मितम् करोति ।	मारना	हन्ति, प्रहरति, ताडयति, अभिहन्ति.
चिपटना	आश्लिष्यति, आलिङ्गनं करोति, सज्जति ।	थप्पड़मुक्का-मारना	चपेटया-घातेन, मुष्टिना-हन्ति, ताडयति, युध्यते, प्रहरति.
पेशाब क०	मेहति, मूत्रयति-ते ।	खोदना	खनति, [भूमिं] अवदारयति, भिनत्ति
दिशा जाना	पुरीषमुत्सृजति, ह्रदते ।	मरना	म्रियते, प्राणांस्त्यजति
स्त्री प्रसङ्ग करना	अभिगच्छति, संगच्छते, मैथुनंकरोति,	पहरना	परिधत्ते
भोजन करना	अत्ति, प्रत्ति, खादति, अश्नाति भक्षयति, भुङ्क्ते, अभ्यवहरति	उतारना	अवतारयति, अपनयति.
नहाना	स्नाति, मज्जति, गाहते	करना	करोति, विदधाति
कुल्ला क०	गण्डूषं करोति	गाली देना	शपति-ते, अभिशंसति, शापं ददाति, आक्रोशति, गर्हयति.
चखना	आस्वादते, लेढि.	घुराकहना	आशास्ते, आशिषं ददाति-ते, अभिनन्दति.
पकड़ना	गृह्णाति, गृह्णीते, धरति, धारयति, बध्नाति.	आशीर्वाद देना	निमज्जति, मज्जयति [प्रे०]
लेना	स्वी-अङ्गी-करोति, गृह्णाति.	डूबना	विकत्थते, दृप्यति.
उबटन क०	उद्वर्तनम्, उत्साद्नम् करोति-ते, अभ्यनक्ति.	अभिमान करना	
कबड्डी क०	हठायच्छति.	तर्पणकरना	तर्पयति.
कुस्ती क०	मल्लयुद्धकरोति बाहुयुद्धं वि युध्यति.	हवनकरना	जुहोति.
चलना	चल-र्-ति, व्रजति, प्र क्रमात-ते	रोकना	अवरुणद्धि.
आना	आगच्छति, आयाति	जप करना	जपति,
सोना	स्वपिति, शेते, निद्राति.	कान फूँकना	कर्णे जपति.
जागना	जागर्ति, प्र वि-बुध्यते, निद्रां त्यजति.	शुरू करना	आरभते, उपक्रमते, प्रक्रमते.

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन— देहावयवविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
रोना	रोदिति, विलपति, आक्रन्दति, अश्रूणि पातयति.	काँपना	कम्पते, वेपते.
		नाचना	नृत्यति, नटति.
हँसी करना	उपहासं करोति, उपहसति.	डरना	बिभेति, सं-वि-त्रस्यति उद्विजते.
आज्ञाकरना	आज्ञापयति आदिशति.	घबड़ाना	मुह्यति.
आज्ञा देना	अनुमन्यते, अनुजानाति, अनुमोदते, अनुजानीते.	साफ करना	शोधयति, मार्ष्टि, मार्जयति प्रे०
घूमना	परिभ्रमति, पर्य्यटति.	तलाक देना	त्यजति, निराकरोति.
घुमाना	भ्रामयति.	डाह करना	असूयति, ईर्ष्यति, [चतुर्थ्या-सह] परोत्कर्षं न सहते, मृष्यति.
बहस करना	विवदते.		
भागना दौड़ना	पलायते, धावति-ते, अपक्रमति-ते, क्राम्यति, विद्रवति, परैति, अपधावति, सरति.		

पहिला पाट—प्रथमः पाठः।

हिन्दी।	संस्कृत।
पुरुष अपनी बुद्धि से अत्यन्त बलवान् सिंहादि जीवों को भी वश कर लेता है.	पुरुषः स्वबुद्ध्याऽतीव बलवतोऽपि सिंहादीन् जीवान् वशमानयति.
स्त्री को चाहिये कि पति की सेवा करनेवाली होये और उसको ही ईश्वर तुल्य माने.	योषित्पतिभक्ता भवेत् तमेव चेश्वरतुल्यं मन्येत.
माधव के बड़ी भारी चोटी है तू भी ऐसी ही रख.	अस्यतीव दीर्घो धम्मिल्लो माधवस्य त्वमप्येतादृशं स्थापय.
कृष्णदत्त के बाल मुलायम हैं.	कृष्णदत्तस्य केशाः सुकोमलास्सन्ति.
भोजदेव के बाल बड़े कड़े हैं.	भोजदेवस्य चिकुरास्त्वतीव प्रखराः.

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तुम्हारे देह के बाल और डाढ़ी लोहरी हैं.	सन्ति लोहितवर्णानि तव देहलोमानि श्मश्रूणि च.
स्त्रियों के मुह पर मूछें नहीं होतीं.	स्त्रीणां गण्डस्थले गण्डलोमानि न भवन्ति.
बहुत से गोरे डाढ़ी मूँछ नहीं रखते.	बहवो गुरण्डाः श्मश्रुगुम्फौ न दधते.
गोविन्ददेव का शिर बुढ़ापे से कांपता है.	गोविन्ददेवस्य शिरः वार्धक्यात्कम्पते.
कृष्णदत्त ने रामदास के सिर में ऐसी लाठी मारी जिससे उसकी खोपड़ी फूट गई.	कृष्णदत्तेन रामदासमूर्ध्नि ईदृग्यष्टिप्रहारः कृतः येन तत्कपालो भग्नः ।
नारायण का माथा बड़ा चौड़ा है इस लिये वह धनवान है.	नारायणस्य मस्तिष्कमतीव विपुलमतएव स धनाढ्यः.
केशवदत्त का भौं चलाना तो देखो.	केशवदत्तस्य भ्रूचालनन्तु पश्य ।
आँखों के बिना जीने से क्या ?	विनाक्षिभ्यां (णी)किं जीवितेन ?
माधव की नाक तोते की सी दिखाई देती है.	माधवस्य नासिका (घोणा) शुकनासावद्दृश्यते ।
उसके मुँह में बहुत से छाले हैं.	तस्य मुखे बहवो विस्फोटका विद्यन्ते.
गोविन्द रोज़मर्रा दाँतन करता है इसी लिये उसकी दांतों की क़तार बड़ी उजली है.	गोविन्दः प्रत्यहं दन्तधावनं करोति अतएव तस्य दन्तपंक्तिरतीव शुभ्रा.
जीवों को जिह्वा से ही रस का ज्ञान होता है.	जिह्वयैव रसज्ञानं भवति जीवानाम् ।
देवदत्त ! आँखों में काजल लगालो.	देवदत्त ! अक्ष्णोः काजलं निधेहि ।
कृष्ण अपनी नाक से फूल सूँघता है.	कृष्णः स्वनसा पुष्पाणि जिघ्रति.
देखो सांप आपके सामने मूसे को निगलता है.	सर्पो भवताम् समक्षं मूषकं ग्रसत इति पश्यत
दुष्ट ! नाक क्यों नहीं साफ़ करता.	दुष्ट ! नसः मलं कथं न त्यजसि क्षालयसि

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
तालुए से बोले जानेवाले अक्षर तालव्य होते हैं.	तालुना उच्यमाना वर्णास्तालव्या भवन्ति.
हिंसक जीवों की डाढ़ बड़ी मजबूत और पैनी होती हैं.	श्वापदानां दंष्ट्रा अतीव दृढा निशिताश्च भवन्ति.
नाका बेहलक होता है यह सुना जाता है क्योंकि वह जीवों को पकड़ के एक साथ निगल जाता है.	नक्रः निर्गलो भवतीति श्रूयते यतः स जीवानाक्रम्य (धृत्वा) युगपदेव निगिलति.
आज तू बहुतही खांसता है इसमें क्या सबब है.	अद्य त्वमतीव काससे (क्षौसि) इत्यत्र किंकारणम्?
कल मैंने दही खाया था यही सबब होगा.	ह्यो मया दधि भक्षितमेताद्धि कारणं भवेत्.
देवदत्त कानों से ठीकर नहीं सुनता, तो क्या वह बहिरा है? और क्या.	देवदत्तः कर्णाभ्यां यथावन्न शृणोति, तर्हि स किं बधिरः? आम्,(अथ किं) [बाढम्].
हनुमान की ठोड़ी बड़ी लम्बी चौड़ी थी.	हनुमतश्चिबुकमत्यायतमासीत्.
गोबर्धन की गर्दन बहुत बड़ी और शङ्ख कीसी है.	गोवर्धनस्य कन्धरातीव दीर्घा शङ्खाकृतिश्च विद्यते.
शूर वीरों के कन्धे बड़े ऊंचे होते हैं.	शूराणां स्कन्धावत्युन्नतौ भवतः.
भीमसेन कुन्ती सहित चारों भाइयों को अपनी पीठ पर चढ़ा कर सुरङ्ग द्वारा लाखा भवन से बाहर निकल गया.	*भीमसेनः कुन्त्या सह चतुरोऽपि भ्रातॄन् स्वपृष्ठमारोप्य सुरङ्गया लाक्षाभवनाद्बहिर्निस्सृतः.*
नर्तकैया अपनी कमर में (घूतरों के ऊपर) कौंधनी बांध कर नाचता है.	नर्तकः स्वकट्यां (नितम्बस्योपरि) क्षुद्रघण्टिकां बद्ध्वा नृत्यति.
स्त्री का रज और पुरुष का वीर्य मिल कर सन्तति उत्पन्न होती है.	स्त्रिया रजः पुरुषस्य शुक्रो मिलित्वा सन्ततिरुद्भवति.

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
श्रीराम के भुज दण्ड के प्रताप से दुष्ट डरते हैं.	श्रीरामस्य दोर्दण्डप्रतापेन दुष्टास्त्रस्यन्ति.
वह हाथ से मुझे छूता है ।	स हस्तेन मां स्पृशति
हकीमजी मेरे देह में कुछ हड़चल है कृपा कर नाड़ी तो देखिये.	भिषग्वर! मम देहस्यास्वास्थ्यं वर्तते- कृपया नाडिन्तु परीक्षस्व.
जब उसने मुझ बेकसूर को भी कोहनी से मारा तब मैंने उसके लात मारी.	यदा स मां निर्दोषमपि कूर्परेणाताड- यत् तदाहं त लत्तया प्राहरम्.
क्या तुम अंगुलियों के नाम भी जान- ते हो.	किं त्वमङ्गुलीनां नामान्यपि वेत्सि ?
जानता हूं तुम भी सुनो । पहिला तो अंगूठा, दूसरी तर्जनी, तीसरी मध्य- मा (बीच की) चौथी अनामिका और पांचवी कनिष्ठिका (कनी).	वेद्म्यहं त्वमपि शृणु। प्रथमस्त्वङ्गुष्ठः द्वितीया तर्जनी तृतीया मध्यमा चतु- र्थीअनामिका पञ्चमी कनिष्ठिकेति.
भाग्य उलटा होने पर हाथ में आई हुई चीज़ भी नष्ट हो जाती है.	दैवप्रातिकूल्ये करतलगतमपि वस्तु नश्यति.
मनुष्य अपने देहों की रक्षा करे क्यों कि यही धर्म कर्म के हेतु हैं.	मनुष्याः स्वदेहमपि रक्षेयुः यत एतान्ये- व धर्मकर्महेतूनि सन्ति.
उसकी खाल बड़ी कड़ी है हिंसक जीवों से भी फाड़ी नहीं जा सकती.	तस्य त्वगतीव कठिना श्वापदैरपि भेत्तुं न शक्यते.
रस, लोहू, माँस, चरबी, हाड़, मज्जा और वीर्य ये सात देह की धातु हैं.	रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि, इति सप्त देहस्था धातवः.
नाई को बुलाकर इस बालक के नोह कतरवाओ.	नापितमाहूयास्य बालस्य करद्वान्कर्तय
इसका हिम्मत बहादुर दिल दुःख की दशा में भी नहीं घबड़ाता है.	अस्य साहसिकं मनः विषमावस्थाया- मपि न मुह्यति.

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
दामोदरदास की बुद्धि सराहनीय है जो सोलहवें वर्ष में एम. ए. परीक्षा में पास हुए.	सुश्लाघ्या प्रज्ञा दामोदरदासस्य यः षोडशतमेऽब्दे मास्टर आफ आर्ट्सेति परीक्षायामुत्तीर्णोऽभवत्.
शङ्करदत्त का पेट तो बड़ा है परञ्च ज्यादह नहीं खाता.	शङ्करदत्तस्योदरन्तु पृथु परञ्चाधिकं न भुङ्क्ते.
गोपीवल्लभ की टूंडी बड़ी गहरी है वह हर रोज प्रातःकाल ही न्हाता है.	गोपीवल्लभस्य नाभिरतीव गम्भीरा वर्त्तते, स प्रत्यहं प्रत्यूष एव स्नाति.
मनुष्य भोजन के पीछे १६ कुल्ले करे.	जनः भोजनान्ते षोडशगंडूषान्कुर्यात्.
कृपा करो और यहां से जल्दी जाओ.	कृपां कुरु अतःशीघ्रं गच्छ च.
यह शहद हथेली पर रख कर उंगली से चाटता है.	स सारघं करतले धृत्वाऽङ्गुल्या लेढि.
मनुष्य पाखाना फिरने के बाद ढेले वगैरः से गुदा साफ करे और फिर जल से.	जनो मलत्यागानन्तरं लोष्टादिना गुदं परिमार्जयेत् ततो जलेन च.
बड़े जोर से न पादे और न रोके.	नोच्चैरपानवायुं मुञ्चेत् नचावरुन्ध्यात्.
उसके मुंह पर बहुत सी फुन्सी हैं.	तस्य मुखे बहवः पिटिका विधन्ते.
श्रीराम का शरीर सर्व लक्षण सम्पन्न है.	श्रीरामस्य शरीरं सर्वलक्षणसम्पन्नमास्ति.
उसकी जांघें केले के खंभों की नाईं हैं.	तस्याः ऊरू कदलीस्तम्भवत्स्तः.
मेरी पसिया में बैल ने लात मारी.	मम गुल्फे वृषभेणपादप्रहारः कृतः.
श्रीमान् गुरुजी के चरण कमलों को नमस्कार हो.	नमोनमः श्रीमद्गुरुचरणकमलेभ्यः.
मित्र! बहुत दिनों में देखा है आओ मुझसे मिलो.	मित्र! चिराद्दृष्टोऽसि एहि मामाश्लिष्य.
इस घड़े को पकड़ो नहीं तो ज़मीन में गिर पड़ेगा.	इमं घटं गृहाण नोचेदयं पृथिव्यां पतिष्यति.
इस बालक के मुख से बड़ी लार बहती है.	अस्य बालस्य मुखाद् महती लाला वहति

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
इस सींक को लाकर मेरे कान का मेल निकालो.	इमां शलाकामादाय मम कर्णकिट्टं निष्काशय.
हकीम रोग की जांच के लिये नाड़ी मल और मूत्र की जांच करते हैं.	वैद्याः रुग्परीक्षार्थं नाड़ीं मलमूत्रञ्च परीक्षन्ते.
मनुष्य को चाहिये कि वीर्य को बड़े जतन से रक्षा करे.	जनः शुक्रं यत्नेन परिरक्षेत.
बिना अण्डकोशों के घोड़े अरबी कहलाते हैं.	अबृषणा अश्वा अरबेति कथ्यन्ते.
मोहनी नाम की स्त्री अपने जोड़ों को दुहियों से दूध पिलाती है.	मोहिनी नाम्नी स्त्री स्वयमजौ कुचाभ्यां स्तन्य पाययति.
उसके वस्ति (टूंडी से नीचे का हिस्सा) प्रदेश में बड़ी तकलीफ है। डाक्टर को दिखाओ.	तस्य वस्तिप्रदेशे महती वेदना वर्तते। वैद्य प्रदर्शय.
माता ब्याह के वक्त बेटे का उबटन करती है.	माता विवाहसमये पुत्रस्योद्वर्तनं करोति.
गोविन्द व्याकरण पढ़कर अब काव्यादि पढ़ता है.	गोविन्दो व्याकरणमधीत्याधुना काव्यादीन्पठति.
उसने अजीर्ण में खा लिया इसीलिये कै कर दी.	सोऽजीर्णेऽभुङ्क्त अत एवोदवमत्.
जो रोज़ मरहे कसरत करता है वह हमेशा चंगा रहता है.	यो नित्यं व्यायच्छति (व्यायामं करोति) स सदैव स्वस्थो वर्तते (आस्ते) (भवति).
आज मेले में बहुत से मल्ल कुश्ती लड़ेंगे सो ज़रूर ही देखना चाहिये.	अद्य महोत्सवे बहवो मल्लाः मल्लयुद्धं करिष्यन्ति तदवश्यमेव द्रष्टव्यम्.
घोड़ा अच्छा चलता है.	साधु विक्रमते वाजी.
जो मेरेसाथ चले वह आओ.	यो मया सह चलतु स आगच्छतु.

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन—देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
आज कलके बहुत से लोग अपनी तुच्छ बुद्धि की युक्तियों से मूर्खों के साथ बहस करते हैं.	आधुनिका बहवो जनाः स्वक्षुद्रबुद्धि-युक्तीः पुरस्कृत्यापण्डितः सह विवदन्ते.
जहां इनकी असलियत को जानने वाले पण्डित हैं तहां से तो भाग जाते हैं.	यत्र तन्मर्मज्ञाः पण्डिता विद्यन्ते ततस्तु परिद्रवन्ति.
क्या यह मदन मोहन सोता है ?	किमयं मदनमोहनः स्वपिति (शेते) ?
नहीं अभीतो जागता है.	न, आद्यापितु जागर्ति.
यहां सीटी कौन बजाता है. उसे यहां लाओ मैं मारूंगा.	कस्तत्र शीत् शब्दकरोति । तमत्रानय ताडयिष्याम्यहम्.
भाई ! देवदत्त ने मुझको मुक्केसे मारा और मैंने उसको लातसे मारा.	भ्रातः ! देवदत्तो मां मुष्टिनाताडयत्, अहञ्च तं लत्तया ग्राहरम्.
रास्ते में गड्ढा कभी न खोदो । जो खोदता है वही गिरता है यह मदाहर है.	मार्गे कदापि गर्तं न खन । यः खनति स एव पततीति प्रसिद्धम्.
अक्सर जीवों के कलेजे और हृदय में ज्यादह चरबी होती है.	प्रायो जीवानां बुघायां हृदये चाधिका वसा भवति.
प्यारे ! आज नये कपड़े पहिनो.	प्रिय ! अद्य नूतनानि वस्त्राणि परिधत्स्व.
आपके गाँव में कल कौन मरा ?	भवतां ग्रामे ह्यः कोऽम्रियत ?
एक बूढ़ा कुम्हार मरगया यह सुना है.	एको वृद्धकुलालः प्राणानत्यजदितिश्रुतं
सोवर में मत जाओ.	सूतिगृहे मागच्छ.
यह कौन छींकता है ? यह नारायण है और कोई दूसरा नहीं है.	कोऽयं क्षौति ? नारायणोऽयं न कोऽप्यपरः.
यह घोड़ा बहुत से बोझसे लदाहुआ दिखाई देता है इसका बोझ उतारो.	बहुभाराक्रान्तोयमश्वो दृश्यते, अस्य भारमवतारय.
खोटी स्त्रियां अपने पुरुषों को छोड़कर जारों से स्नेह करती हैं.	पुंश्चल्यः स्वपतीन् हित्वा जारान् भजन्ते.

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन—देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
देखो बन्दर तालाब में कैसे तैरते हैं.	वानरास्तड़ागे कथं प्लवन्त इति पश्य.
जो मनुष्य जल में तैरना नहीं जानता वह गहरे पानी में ज़रूर ही डूब जाता है.	योजनो जलप्लवनं न जानाति स गम्भीरजलेऽवश्यमेव निमज्जति.
जेर में लिपटा हुआ गर्भ पेट में ही माता के खाये हुए अन्न के रस से पुष्ट होता है.	उल्वेनावृतो गर्भः जठर एव मातृखादितेनान्नरसेन पुष्यति.
देवदत्त देवताओं के लिये रोज़ हवन करता है.	देवदत्तो देवानुद्दिश्य नित्यं जुहोति.
आज कल के महाशय इस हवन को पवन शोधन के लिये ही कहते हैं परन्तु पहिले लोग नहीं उनका आपस का भेद तो देखो.	आधुनिका महाशया एतद्धवनं पवनशोधनार्थमेव वदन्ति नतु पूर्वे पश्यत तेषां परस्परभेदम्.
जो हवा शुद्ध करनेही के लिये हवन होय तो अपने कपोल कल्पित ग्रन्थों में हवन मन्त्रों से क्या ?	यदि पवनशुद्ध्यर्थमेव हवनं स्यात् तर्हि स्वकपोलकल्पितग्रंथेषु हवनमन्त्रैः किम्?
यह खयाल करने की बात है.	एतच्चिन्त्यम् ।
यह कौन है ? यह मेरी बँहदोली है। क्या यह सुहागिन है वा विधवा.	केयं ? इयं ममालिः। किमियं पतिवन्ती विधवा वा.
आस्तिक लोग देवता और पितृ लोगों को तर्पण करते हैं.	आस्तिका देवान् पितॄंश्च तर्पयन्ति.
गणेशदत्त को बुलाओ.	गणेशदत्तमाकारय.
वह तो सन्ध्या करता है.	स तु सन्ध्यामुपास्ते.
सिर्फ अपने शास्त्रों के न जाननेवाले अंग्रेजी फारसी जबान के जाननेवाले फिजूल बकवाद करते हैं.	केवलमविदितस्वशास्त्रा इतरभाषापारंगता एव वृथा विकत्थन्ते.

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन—देहावयवविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
इसको आदत बहुत खराब है यह हमेशा दूसरों की बुराइयों को दूसरों के कानों में कहा करता है.	अस्य प्रकृतिस्त्वतीव दुष्टाऽयं सर्वदा परदोषान् परेषां कर्णे जगति.
क्या वेश्या भी गर्भधारण करती है?	किं वाराङ्गनयोऽपि गर्भन्धारयन्ति.
वह मृत्युञ्जय का जाप अरिष्ट निवारण करने के लिये शुरू करता है।	स मृत्युञ्जयस्य जापमरिष्टनिवृत्तय आरभते.
दूतियों का क्या लक्षण है? नमालूम.	दूतीनां किं लक्षणं? न जाने.
यह आपका सेवक मौजूद है मुझे हुक्म दीजिये मैं क्या करूं.	एषोऽहं तव सेवकः आज्ञापय मां किं महं करोमीति.
यह कौन रोती है? कोई भूखी भिकारिन है.	केयं रोदिति? अस्ति काचित्क्षुधार्ता भिक्षुकी.
बालक उसकी हँसी करते हैं.	बालकास्तामुपहसन्ति.
बहुत से भिखारी एकही दिन में बहुत से गावों में भीख के लिये घूमते हैं.	बहवो भिक्षुका एकस्मिन्नेव दिने बहुषु ग्रामेषु भिक्षार्थमपर्य्यटन्ति.
मैलनिकाला कानका मैल निकालता है.	कर्णमलनिस्सारयिता कर्णकिट्टं निष्काशयति.
अब्दुल्लाखां मुसलमान ने कल अपनी स्त्री को तलाक देदी.	अब्दुल्लाखाँभिधो यवनः ह्यः स्वस्त्रियं निराकरोत्.
पाँच महायज्ञ नीचे के श्लोक में दिखाये हैं.	पञ्च महायज्ञा निम्नश्लोके प्रदर्शिताः.
अध्यापन (पढ़ाना) ब्रह्मयज्ञ, तर्पण पितृयज्ञ, होम दैवयज्ञ, बलि भौतयज्ञ, अभ्यागत पूजन नृयज्ञ.	अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् होमो दैवः बलिर्भौतो नृयज्ञो ऽतिथि पूजनं.
है तो परन्तु यह साफ नहीं है महरबानी कर इसको आप खुलासा करो यह किसी शिष्य की किन्हीं गुरुओं	अस्ति तु परञ्चैषान रुपष्टा कृपया स्पष्टीकुर्वन्तु भवन्त इति कस्यचिच्छिष्यस्य काँश्चिद्गुरून्प्रत्युक्तिरियम्।

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन—देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
के लिये कहन है । गुरु—सुनो, चेला—सुनता हू.	गुरुः—श्रुयतां, शिष्यः—शृणोमि.
अध्यापन अर्थात् वेदादि का पढ़ाना पहिला यज्ञ है; अन्नजल इत्यादि से पितृतर्पण करना दूसरा यज्ञ है; हवन और बलिवैश्वदेव यह तीसरा यज्ञ है; बलि (भेंट) देना यह चौथा यज्ञ है; घर आये हुए अतिथियों को अन्नजल से पूजा करना पाँचवाँ यज्ञ है.	अध्यापनं कोऽर्थः वेदादेः पाठनम् प्रथमोयज्ञः; अन्नोदकादिनापितृणांतर्पणद्वितीयः; होमः वैश्वदेवहोमश्चतृतीयः; बलिहरणं चतुर्थः; अतिथीनां गृहागतानामन्नादिना सपर्य्या पञ्चमइति.

दूसरा अध्याय—द्वितीयोऽध्यायः ।

वस्त्र इत्यादि का वर्णन—वस्त्रविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
कपास कपड़ा पगड़ी टोपी दुपट्टा चादर गलेबन्द मिर्जई कुर्ता, कोट	पिचुः, (पुं) तूलः, कार्पासः वसनम्, अंशुकम्, वासः (न०) चैलम्. उष्णीषम्. शिरस्त्राणम्, शिरस्कम्, शिरोवेष्टनम्. उत्तरीय. गलबन्धनांशुकम्. कञ्चुकः, निचोलः.	अगरखा धोती पाजामा पतलून कमरबन्द मोज़े रज़ाई वा दुलाई चादरजीन पोथा दफ़ी फेंटा	अङ्गरक्षणी. — अधोवस्त्रम्. जङ्घात्राणम्, जङ्घावस्त्रम्. कटिसूत्रम्—रशना. — पादत्राणम्. — नीशारः. उत्तरच्छदः, शय्याच्छादनम्, प्रच्छदः. परिकरः.

वस्त्र इत्यादि का वर्णन—वस्त्रविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
तकिया	उपबर्हणम्, उपबर्हः, उपधानम्.	नारंगी	पिच्छलः, कौसुम्भी-भः.
रूमाल	करवस्त्रम्.	प्याजू	पलाण्डुवर्णः.
जाँघिया	जङ्घावस्त्रम्.	हरा	हरित्, हरिद्वर्णः.
लोई,कंबल	रल्लकः, कम्बलः.	केशरिया	केसरवर्णः, कुंकुमवर्णः.
लँहगा	चण्डातकम्—कः	कपूरिया	कर्पूरवर्णः.
अँगी	चोलः	घुसना	प्रविशति.
ओढ़ना साड़ी	शाटिका.	सीना	वि नि सीव्यति (सिव्).
रेशमीवस्त्र	कौशिकम्, क्षौमम्, दुकूलम्, कौशाम्बरम्.	उठना, खड़ा होना	उत्तिष्ठति, अवतिष्ठते.
पड़दा	जवनिका, तिरस्करिणी.	बिछाना	सं+आ+परिस्तृणाति.
रंग	वर्णः, रागः, रङ्गः.	खरीदना	क्रीणाति, क्रीणीते.
नीला	नीलः, श्यामः.	बेचना	विक्रीणाति, विक्रीणीते.
काला	कृष्णः, कालः, असितः.	कातना	कर्तति, कर्तयति, (प्र०) वयति, तन्तून् करोति सृजति.
पीला	पीतः, पीतलः, हरिद्राभः.	बुनना	वयतिते, वयतिने, गुम्फति, विरचयति.
लाल	रक्तः, लोहितः, शोणः.	बैठना	तिष्ठति, आस्ते, निषीदति, उपविशति.
भूरा सपेद	श्वेतः, शुक्लः, धवलः, सितः.	रँगना	रञ्जयति.
बैंजनी	धूम्रः, धूमलः, नीललोहितः.		
गुलाबी	पाटलः, जपासवर्णः.		

हिन्दी।	संस्कृत।
जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये वस्त्रों को पहनता है तैसेही यह प्राणी पुराने देह को छोड़ कर नये को लेता है।	यथा नरो जीर्णानि वासांसि विहाय नवान्यं शुक्लानि परिधत्ते, तथैवायं देही पुराणं देहं परित्यज्य नूतनं गृह्णाति.

वस्त्र इत्यादि का वर्णन—वस्त्रविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
कचहरी में बिना पगड़ी का कोई भी आदमी नहीं घुसता है.	अधिकरणे ऽनुष्णीषः कश्चिदपि जनो न प्रविशति.
मेरी टोपी कहां गई उसे ढूँढ कर यहां लाओ.	मम शिरस्त्राणं कुत्र गतं तदान्विष्याऽऽनय.
मेरा दुपट्टा तो खूँटी से उतार दो.	ममोत्तरीयन्तु नागदन्तादवतारय.
जाड़े के मौसम में गुलूबन्द बहुत सुखदायक होता है.	शीततौ शिरोधरांशुकमतीव सुखप्रदं भवति.
कल मैं दो कुर्ते सिलवाऊंगा.	श्वोऽहं द्वौकञ्चुकौ सेवयितास्मि.
क्या आपके पास मेरी धोती है? नहीं तो कैसे न्हाऊं.	किं तव सन्निधौ ममाधोवस्त्रमस्ति ? न तर्हि कथं स्नायाम्.
तुम्हारे पाजामे में तो कमरबन्द भी नहीं है.	तव जङ्घात्राणे तु कटिसूत्रमपि नास्ति.
यह लो, मैं देता हूं। मोज़े भी पहन लो.	अहं ददामीदं गृहाण। पादत्राणेऽपि परिधत्स्व.
शूर वीर लोग फेंटा बांधकर लड़ाई के लिये खड़े होते हैं.	शूराः परिकरं बध्वा युद्धार्थमुत्तिष्ठन्ति.
रात में ओढ़ने के लिये चादरा लाओ.	रात्रौ परिधानार्थमुत्तरीयमानय.
खाट पर बिछौना बिछाओ.	शय्योपरि शय्याच्छादनं प्रस्तारय.
अब रज़ाई की जरूरत नहीं है.	नास्त्यावश्यकताधुना नीशारस्य.
जो कोई तकिया हो तो देओ.	यद्यस्ति किञ्चिदुपबर्हणं तर्हि देहि.
कल मैंने पांच रूमाल खरीदे.	श्वोऽहं पञ्चकरवस्त्राण्यक्रीणाम्.
कम्बल सब मौसमों में सुखदायक है.	सर्वर्तुषु कम्बलः सुखप्रदः.
बीकानेर की लोई बहुत अच्छी होती है.	बीकानेरस्य राङ्कवम् प्रशस्यतरं भवति.
वह स्त्री साड़ी उतार लहँगा पहनती है.	सा स्त्री शाटिकामवतार्य चण्डातकं परिधत्ते.
अक्सर स्त्रियां जाड़े के मौसम में दुलाइयां ओढ़ती हैं.	प्रायः स्त्रियः शीततौ नीशारान्परिदधते.

घंस इत्यादि का वर्णन — वस्त्रविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
उसकी अँगिया कहां है?	तस्याश्चोलः कुत्र वर्तते?
वह तो धोती ही में लिपट रही है.	स तु शाटिकायामेवालग्नः.
रेशमी और ऊनी कपड़ा भजन पूजा में अच्छा होता है.	क्षौमं और्णञ्च वसनं भजनपूजादिषु प्रशस्तं भवति.
यह पड़दा यहां क्यों लगाया है?	किमर्थमारोपितैषा जवनिकाऽत्र?
कपास से रूई निकलवा कर और उसे कतवा कर बहुत तरह के कपड़े बनाये जाते हैं.	कार्पासात्तूलं शोधयित्वा तत्कर्तयित्वा च बहुविधानि वस्त्राणि विरच्यन्ते, (निर्मीयन्ते).
कोई रँगरेज़ बुला कर ग्यारह ओढ़ने अलग २ रंग के रंगने के लिये दो.	कञ्चिद्रञ्जकमाहूयैकादशशाटिकाःपृथक्पृथक् वर्णरञ्जनार्थं प्रयच्छ.
आप कौन २ से रंग चाहते हैं सिर्फ उनके नामही ले दीजिये वे उसी रंग के हो जायँगे। बहुत अच्छा.	भवान् काँस्कान्वर्णानभिलषति तेषां नामान्येव केवलं ब्रवीतु तास्तु तद्वर्णा एव भविष्यन्ति। धरम्.
एक नीली, दूसरी काली, तीसरी पीली, चौथी लाल, पाँचवीं बैंजनी, छठी गुलाबी, सातवीं नारंगी, आठवीं प्याज़ू, नौवीं हरी, दसवीं केसरिया, ग्यारहवीं कपूरिया वग़ैरह.	एका नीला, द्वितीया कृष्णा, तृतीया पीता, चतुर्थी रक्ता, पञ्चमी नीललोहिता, षष्ठी पाटला, सप्तमी कौसुम्भी, अष्टमी पलाण्डुवर्णा, नवमी हरिद्वर्णा, दशमी केशरवर्णा, एकादशी कर्पूरवर्णा चेति.
सैमल की रूई और आक की रूई से भरा हुआ तकिया या बिछौना गरम और मुलायम होता है.	शाल्मलितूलेनार्कतूलेन भृतमुपबर्हणमास्तरणञ्चोष्णं कोमलञ्च भवति.



तीसरा अध्याय—तृतीयोऽध्यायः ।

गहने इत्यादि का वर्णन—आभूषणविशेषाः उपाभरणाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
गहने	अलङ्कारः, आभरणम्, परिष्कारः.	बिछिया	नूपुरः-रम्, मञ्जीरम्.
तोड़ा, कठला, कण्ठा	कण्ठिका, कण्ठाभरणम्.	जञ्जीर	शृङ्खला, शृङ्खलः.
अंगूठी, छल्ला	अङ्गुलीयकम्, ऊर्मिका.	नथ	नासाभरणम्.
काँधनी	मेखला, काञ्चिः-ञ्ची.	अलमारी	काष्ठफलकम्.
दान्तकुरेदनी सुई	दन्तशोधनी सूचिः.	कंघी	प्रसाधनी, कङ्कतः-तिका, केशमार्जनी.
बोला	बालपाश्या, पारितथ्या.	ब्रुश	आकर्षणी, लोममयी मार्जनी वा शोधनी.
बन्दी, बेना	स्रीमस्तकाभरणम्.	दर्पण	मुकुरः, दर्पणः, आदर्शः.
चम्पाकली गुलीबन्द	ग्रैवेयकम्, कण्ठभूषा.	सुर्मा, काजल	अञ्जनं, कज्जलं
हार, माला	लम्बनम्, लम्बान्तिका, हारः.	साबन	फेनिलः, मार्जनलेपः, पल्यूलम्.
कर्णफूल	ताटङ्कः, कर्णिका, कर्णभूषणम्, कुण्डलम्, कर्णवेष्टनम्.	तेल, फुलेल	गन्धतैलम्, पुष्पवासितम्.
बाजूबन्द, जोशन	केयूरम्, अङ्गदम्.	बिन्दी	बिन्दुः (पुं)
मठिया	कङ्कणम्, करभूषणम्.	शोभित होना	शोभते, राजति-ते.
पहुंची	आवापकः, कटकः, वलयः.	बनवाना बनाना	निर्मापयति, निर्माति, निर्मिमीते, करोति, विधत्ते, विरचयति.
मोती	मुक्ता, मुक्काफलम्, शुक्तिजम्.	धारणकरना	धारयति.
अरसी	अरण्युष्ठाभरणम्.	(बाल)	(केशान्) प्रसाधयति.
चूड़ी	काचवलयम्.	काढ़ना	
पायजेब लच्छे	पादभूषणम्.	धोना	प्रक्षालयति.

गहने इत्यादि का वर्णन—आभूषणविशेषाः उपाभरणाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
लगाना चुराना	संयोजयति, निवेशयति. चोरयति, मुष्णाति, अपहरति.	सौगन्ध खाना	शपति, शपथं करोति.

हिन्दी ।	संस्कृत ।
देखो गोविन्द की गर्दन में तोड़ा कैसा सोहता है.	पश्य गोविन्दस्य कण्ठे स्वर्णकण्ठिका कथं शोभते.
स्त्रियों का चूड़ी पहननाही अक्सर सुहाग का चिन्ह माना जाता है.	स्त्रीणां काचवलयधारणं हि प्रायः सौभाग्यलक्षणं मन्यते.
उस औरत की उंगलियाँ अंगूठी छल्लों से और अंगूठा आरसी से अच्छा लगता है.	तस्याः स्त्रिया अङ्गुलयः अङ्गुलीयकैः राजन्ते, अङ्गुष्ठोऽङ्गुष्ठभूषणेन च.
यह आदमी सोने की कांधनी और सोने की जंजीर पहनता है.	अयं जनो हैमीं मेखलां हेमं गलभूषणञ्च परिधत्ते.
कल मैं सुनार से चाँदी की दान्तकुरेदनी सुई बनवाऊंगा.	श्वोऽहं स्वर्णकारात् राजतीं दन्तशोधनीं सूचीं निर्मापयिताऽस्मि.
स्त्रीलोग सिर में चोला, बन्दी वेना माथे पर, कर्णफूल कानों में, चम्पाकली व हार गर्दन में, बाजू बाहों में, मठिया और पहुँची पहुँचे में, नथ नाक में, पायजेब लच्छे पाओं में, बिछिया पैरों की उँगलियों में, काँधनी कमर में पहनती हैं.	स्त्रीयो चालपाद्यां शीर्षे, स्त्रीमस्तकाभरणञ्च मस्तके, ताटङ्कौ कर्णयोः, ग्रैवेयकं लम्बनञ्च ग्रीवायां, केयूरे बाह्वोः, कङ्कणे वलयौ च प्रकोष्ठे, नासाभूषणं घोणायां, पादभूषणानि पादयोः, नूपुरान् पादाङ्गुलीषु, मेखलाञ्च कट्यां धारयन्ति.
धनवानलोग अक्सर सोने की जंजीर गले में पहना करते हैं.	स्वर्णशृङ्खलां प्रायो धनिनः कण्ठे (गले) धारयन्ति.
गोपीनाथ आँखों में अञ्जन लगाता है.	गोपीनाथो नेत्रयोरञ्जनमनक्ति.

गहने इत्यादि का वर्णन—आभूषणविशेषाः उपाभरणाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
वह स्त्री माथे में सिन्दूर का बेंदा और दान्तों में मञ्जन लगाती है.	सा स्त्री भस्तके सिन्दूरस्य बिन्दुं दन्तेषु मञ्जनञ्च संयोजयति (निवेशयति).
आलमारी से कंघी लेकर बाल काढ़लो.	काष्ठफलकात् कङ्कतिकामादाय केशान् प्रसाधय.
क्या अभी तक मुँह नहीं धोया अपना मुँह तो शीशे में देख.	किमद्यावधि मुखं न प्रक्षालितं स्वयमन्तु मुकुरे पश्य.
आज मैं दुकान से बुरा और साबन मोल लूंगा.	अद्याहं विपणितः लोममयीं मार्जनीं फेनिलञ्च क्रेष्यामि.
चन्दन और हुसां मेरे लिये भी लाना.	चन्दनं चन्दनघर्षणखण्डञ्च मदर्थमप्यानय.
यह गन्धी अतर बेचता है.	गन्धैलविक्रेताऽयं पुष्पवासितं तैलं विक्रीणीते.
यह अमीर मोतियों की माला पहनता है.	धनाढ्योऽयं मुक्ताफलस्रजं धारयति.
यह औरत मेरी औरत का गुलीबन्द चुरा लेगई.	सा स्त्री मम स्त्रियाः ग्रैवेयकमग्रहरत्.
उसको अकेले में बुलाकर पूछो.	तामेकान्त आहूय पृच्छ.
जब उससे पूछा तब सोगन्ध खा गई कि मैंने कुछ नहीं चुराया.	'यदा सा पृष्टा तदा मया न किमपि चोरितमिति शपथमकरोत्.
मोहनी नाम की स्त्री गुलीबन्दही पहनती हुई देखी है नकि कनफूल और घन्टी बेना.	मोहनी नाम्नी स्त्री ग्रैवेयकमेव दधाना दृष्टा न कर्णिकां वलातिकाञ्च.



चौथा अध्याय — चतुर्थोऽध्यायः।

गृहस्थी के वस्तु इत्यादि का वर्णन—गृहस्थवस्तूनि।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
खड़ाऊं	पादुका.	घड़ा	घटः, कलशः.
जूता	उपानत्(स्त्री)चरणपादुका.	ईंढरी	घटाधारयन्त्रम्.
	पादुः	चलनी	चालनी, तितउः (पुं)
चौकी, स्टूल	काष्ठपीठः.	रई	मन्थः, मन्थदण्डकः.
मेज़	फलकः-कम्, मञ्चः, आधारः.	बुहारी	संमार्जनी, शोधनी.
आराम-चौकी	सुखासनम्.	कुढारी	कुदारी, कुठारी, कुठारः.
	विष्टरः, आसनम्, पीठम्,	फावड़ा	कुद्दालम्, अवदारणम्.
मूढ़ा,कुर्सी	आसन्दी.	दीया-सलाई	दीपशलाका.
तिपाईंवेंच	त्रिपादिका.	चम्मक पत्थर	वन्हिसञ्जननश्मा (पुं)
छाता	छत्रम्, आतपत्रम्, घर्म-वारणम्.	फूकनी	नलिका.
लठिया	लष्टिका,यष्टिका,यष्टिः (स्त्री)	चक्कूछुरी	छुरिका.
चर्खी-चक्कला	पेषणी,पेषणयन्त्रम्,अरघट्टः	छींका	शिक्यम्.
पनचक्की	जलचाल्यचक्रम्,जलयन्त्रम्	जूना	यूनम्.
चूल्हा	चुल्लिः, चुल्ली, अधिश्रयणी.	रस्सी	रज्जुः, (स्त्री)
अंगीठी	अङ्गारधानिका, अङ्गारश-कटी, हसन्तिका.	फर्श	भूतलास्तरणम्, भूतलसं-स्तरः.
मूसल	मुशलः-लम्.	सन्दूक-पिटारी	पेटिका, समुद्गकः, सम्पुटः पिटकः, मञ्जूषा.
खाट	खट्वा.	चर्खा	तान्तवयन्त्रम्.
पलंग	कशिपुः, पल्यङ्कः, मञ्चः.	तकुआ	तकुः (स्त्री).
ओखली	उलूखलम्, उदूखलम्.	हल	लाङ्गलम्, हलम्, फालः गोदारणम्, सीरः.
झाड़	सूर्पम्.	कूँचा	कूर्चिका.

गृहस्थी के वस्तु इत्यादि का वर्णन—गृहस्थवस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
हरोस	इषा लाङ्गलदण्डः.	पंखा	व्यजनम्, व्यजनम्.
शिल,लोढ़ी	शिला, शिलासुतः	(घास का पंखा)	उशीरव्यजनम्.
जोते	आवन्धः,योक्त्रम्, योत्रम्,	पीसना	पिनष्टि, क्षुणत्ति, चूर्णयति.
टोकरा	मञ्जूषा, पिटकः, करण्डः, खण्डोलः.	दलना	दलयति.
ताला,तालो	तालकम्, कुञ्चिका, तालो	बुहारना	मार्ष्टि, संमार्जयति. अपनयति.

हिन्दी ।	संस्कृत ।
मेरा छाता और लाठी लेकर यहां आओ.	मदीय छत्रं लाष्टिकाञ्चादायात्रागच्छ.
खड़ाऊ पहन हुए एक साधु यहां आया.	काष्ठपादुके धारयन्नेकस्साधुरत्रागच्छत्
मैं फ़राकत जाता हू मेरो जूती लाओ.	शौचार्थमहं गच्छामि मदुपानहावानय.
इस चौका हो पर जल का घड़ा रखदो.	अस्य काष्ठपीठस्योपर्येव वारिघटं स्थापय
मैं यहीं हो न्हालूगा.	अहमत्रैव स्नास्यामि.
ये आरामचौकी है इस पर बैठिये और मेरी बात सुनिये.	सुखासनमिदं स्थीयतामस्योपरि मद्वार्ता श्रूयताम्.
इस मूढ़े और इस तिपाई को उठाकर उस मेज़ के पास रख दो.	इमं विष्टरमिमां त्रिपादिकाञ्चात उत्थाप्य तत्फलकसमीपे स्थापय.
मेरी दफ़्अ में तो एक स्कूल है जो आप हुक्म दें तो लाऊं.	मम कक्षायान्त्वेकः काष्ठपीठो वर्तते आनयामि चेदाज्ञापयेयुर्भवन्तः.
मेरे घर दो चक्की हैं.	मम गृहे द्वे पेषणयन्त्रे स्तः.
ब्याह के लिये अपने गेंहू तो मैं पनचक्की में पिसवाऊंगा.	विवाहार्थं स्वगोधूमांस्त्वहं जलयन्त्रे पेषयिष्यामि.
चकला यहां ले आओ मैं पांच सेर चने दलूँगा.	पेषणयन्त्रमत्रानयाहं पञ्च सेटकान् चणकान्दलयिष्यामि.
इस घर में दो चूल्हे हैं.	अस्मिन्गृहे द्वे चुल्ल्यौ स्तः.

गृहस्थी के वस्तु इत्यादि का वर्णन—गृहस्थवस्तूनि।

हिन्दी।	संस्कृत।
एक मूशल की बड़ी ज़रूरत है इस-लिये अपने गाँव के बढ़ई से बनवा कर भेजो.	अस्त्यतीवावश्यकतैकस्य मुशलस्यातः स्वग्रामतक्षकान्निर्मापयित्वाऽत्र प्रेषय.
और भी गृहस्थ की बहुतसी सामग्री हैं उनको भी सुनो.	सन्त्यन्या अपि बह्वयः सामग्रयो गृहस्थस्य ता अपि शृणु.
खाट, पलङ्ग, मेज़, ओखली, छींका, छाज, चलनी, बुहारी, चर्खा, तकुआ, अंगीठी, कुदारी, टोकरा, कूँचा.	खट्वा, पल्यङ्कः, काष्ठफलकः, उदूखलम्, शिक्यम्, सूर्पम्, चालनी, संमार्जनी, तान्तवयन्त्रं, तर्कुः, अङ्गाराधानिका, कुदारी, करण्डः, कूर्चिका.
आँच निकालने का पत्थर, दीयासलाई. सिल, लोढ़ी, फूकनी, चाकू, ताला, कुञ्जी, घड़ा, रस्सी, सन्दूक, खस का पङ्खा, फ़र्श वग़ैरह.	वह्निसंजननम्मावा, दीपशलाका, शिला, शिलासुतः, नलिका, छुरिका, तालकम्, कुञ्चिका, घटो, रज्जुः, पेटिका, (मञ्जूषा) उशीरव्यजनम्, भूतलास्तरणमित्यादयः.
वह स्त्री अपने घरको बुहारी से बुहारती है.	सा स्त्री स्वगृहं शोधन्या संमार्जयति.
वह लकड़हारा जूले में ईंधन बाँध कर बाज़ार में बेचने को लाता है.	स काष्ठकेता यूने इन्धनं बद्ध्वाऽऽपणे विक्रेतुमानयति.
यह कौन बुढ़िया है जो तकुआ से सूत कातती है.	केयं वृद्धा या तर्कुणा सूत्रं कर्तयति.

पांचवां अध्याय — पञ्चमोऽध्यायः ।

गृहस्थ और वर्तन इत्यादि का वर्णन—गृहस्थानांविशेषाः पात्रविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
राजमहल धनिकों का घर	प्रासाद हर्म्यम्.	सुरङ्ग	सुरङ्गा, गूढमार्ग .
झोंपडी, कुटी	उटज -जम्, कुटीर , पर्ण शाला	खुण्टी	नागदन्त , भारयष्टि
रसोईघर	पाकशाला, महानसम्	खूटा	शिवक कीलक
न्हाने की जगह	स्नानागारम्.	भीत	कुड्यम्, भित्ति
जीना	सोपानम् आरोहणम्.	अट्टा	अट्ट , अट्टालकम्
नसैनी	निश्रणि , आध्ररोहणी	छप्पर	तृणपटलम्, तृणच्छदि
पाखाना	शौचागारम्	कुआ	कूप , उद पानम्, अन्धु [पु]
बैठक	अधिवेशनस्थानम , सत्का रालय	बावड़ी	वापिका, दीर्घिका.
आँगन	अङ्गणम	तालाब	तटाक , सर [न०] ह्रद
चौतरा	चत्वरम्	ईंट [पक्का कच्चा]	इष्टका, पक्वेष्टका. आमेष्टका
झरोखे	वातायनम्, गवाक्ष .	देहली	गृहावग्रहणी, देहली
कमरा या कोठरी	कक्ष क्षा,कोष्ठ ,शालागृहम	बल्ली	यष्टि
सोढ	तुला, स्थूणा	छत	छदि [स्त्री] पटलम्
खम्भे	स्तम्भ	पतनाला	प्रणाल
किवाड़	कपाटम् अरम्.	मोरी	जलनिर्गम , जलोच्छ्वास
सकल	गृहद्वारम्, निगड.	पलँघी	जलस्थानम्.
खिड़की	प्रच्छन्नम्, अन्तर्द्वारम्	छज्जे	मञ्च [ब०व०] मञ्चसनाथ गृह
सोने की जगह	शयनस्थानम्	दर्वाजा	द्वा , [स्त्री] द्वारम् .
		घर	गृहम्, गेहम्, वेश्मन् [न०]

पात्रविशेषा ।

थाली	पात्रम्, भाजनम्
कलशा	कलश -शम् घट , उदक पात्रम्
घड़ा लोटा	

गृहस्थ और वर्तन इत्यादि का वर्णन–गृहस्थानांविशेषाः पात्रविशेषाश्च।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
टोकनी	स्थाली, उखा, [स्त्री] पिठरः पिष्टपचनम्.	लोहा	अश्मसारः, अयः [न०] लोह-हम्, कालायसम्.
चमचा	चमसः-सम्, दर्विः र्वी [स्त्री]	तांबा	ताम्रम्, शुल्वम्, उदुम्बरम्.
वर्तन	अमत्रम्, पात्रम्.	सोना	हरिण्यम्, सुवर्णम्, कनकम्, रुक्मम्, जाम्बूनदम्, चामीकरम्, काञ्चनम्, हेमन् [न०] हिरण्यम्.
पली	कंचिः-ची, दर्विः, खजाका.		
कुण्डी	कुटुः [स्त्री०]		
चौमटा	कंकमुखम्.	सीसा	सीसम्, नागम्, यत्रम्.
संडासी	संदंशः-कम्.	चान्दी	रजतम्, रूप्यम्.
गिलास	पानपात्रम्, शरावः.	काच	क्षारः, काचः.
कटोरा	चषकः कम्, काचपात्रम्.	मैलाकरना	कल्मषयति, आविली मलिनी करोति.
कुंडी,सोंटा	अरत्निपात्रम्, लगुडः, यष्टिः [स्त्री०]	ढ्वाना	आच्छादयति.
मथानी	मन्थनी, मर्गरी.	चाहना	अभिलषति, इच्छति, रोचते
परात	बृहद्भाजनम्.	फेंकना	प्रास्यति, आपातयति.
घिलौंट	कुटरः, विष्कम्भः.	डालना	प्रक्षिपति.
कड़ाही	कटाहकः, बृहत्कटाहः.	लिप्पी-करानाः	लेपयति.
घंटी, हांडी	हण्डी		
नाद	द्रोणि-णी [स्त्री०]	जलाना	दाहयति,ज्वलयति,तापयति.
तपा	भ्राजीपम्, पिष्टपचनम्.	जलना	दहति, ज्वलति, तपति, प्लुष्यति.
पीतल	पित्तलम्, आरकूटः-टम्, रीतिः.		
कांसी	कांस्यम्.		

गृहस्थ और वर्तन इत्यादि का वर्णन—गृहस्थानांविशेषाः पात्रविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
राजाओं के घर "प्रासाद" धनवानों के घर "हर्म्य" और ऋषियों का "उटज" कहलाता है.	राज्ञां गृहं प्रासादः, धनिनां गृहं हर्म्यः, ऋषीणामुटज इति कथ्यते.
आप के घर में कोई अलग रसोई घर भी है.	भवतः वेश्मनि काचित्पृथक् पाकागाराप्यस्ति.
नहीं, तो धूंआ गृहस्थ की चीजों को काला करदेगा.	नहि, तर्हि धूमः गृहस्थानां वस्तूनि मलिनी करिष्यत्येव.
शादी वगैरह में भट्टी से काम चलता है मामूली चूल्हे से नहीं.	विवाहादौ गृहदाधिश्रयण्या कार्यं भवति नतु सामान्यचुल्लिभिः.
मेरे घर में तो बैठक रसोई घर गुसलघर और पाखाना अलग २ हैं.	ममगृहेतु सत्कारालयः पाकशाला स्नानगृहम् शौचागारं च पृथक्पृथगस्ति
तुम्हारे घर में आँगन कैसा है.	तव गृहे कीदृगङ्गणमस्ति.
न बहुत लम्बा चौड़ा न छोटा ही.	नातिविस्तीर्णं न सङ्कीर्णमेव.
इस घर में बहुत से झरोखे, चार कोठे, चौंसठ शीशम की कड़िया, नीम के किवाड़, कितनीही खिड़कियां मौजूद हैं.	अस्मिन्गृहे बहवः गवाक्षाः, चत्वारः कक्षाः, चतुःषष्टि.शिंशिपाया स्थूणा निम्बस्य कपाटानि अनेकान्यन्तर्द्वाराण्युपस्थितानिसन्ति.
क्या सब किवाड़ें बाहर भीतर की जंजीर वाली हैं ?	वाह्याभ्यन्तरस्य किं सर्वाण्यर्गलाणि शृङ्खलामयानि सन्ति ।
हां । सोने के कमरे में जाकर मेरा बिछौना बिछादो । तू कहां सोता है.	ओम् । शयनागारे गत्वा ममास्तरणमास्तारय त्वङ्कुत्र स्वपिषि.
गरमियों में और बर्सात में अट्टे पर और दूसरे मौसम में घर के भीतर.	ग्रीष्मे वर्षर्तौ चाट्टालकेऽन्यस्मिन्नृतौ गृहाभ्यन्तरे.
क्या वहां पंखा भी है ? है तो.	किं तत्र व्यजनमप्यस्ति ? अस्तितु.
कल मैं छप्पर खम्भों से छप्पर छवा ऊँगा.	श्वोऽहं तृणपटलकारेभ्यस्तृणपटलमाच्छादयितास्मि.

गृहस्थ और बर्तन इत्यादि का बर्णन—गृहस्थानांविशेषाः पात्राविशेषाश्च।

हिन्दी।	संस्कृत।
तुम्हारे घर की बड़ी ऊँची हवा रोकने वाली भीतियाँ हैं.	तव वेश्मनो ऽत्युन्नता वायुरोधका भित्तयस्सन्ति.
बिना पानी की जगह में मैं एक कूआ बनवाऊं यह चाहता हूँ	निर्जलभूमौ निर्मापयेयमेकं कूपमित्यभिलषामि.
मैं भी अव्वलतो कच्ची ईंटों का, हाथ चलने पर पक्कोही ईंटों का घर बनवाऊंगा.	अहमपि प्रथमन्तु आमेष्टकानां, सति वैभवे पक्वेष्टकानामेव गृहं निर्मापयिष्यामि.
घर में सीढ़ी ज़रूर रखना चाहिये.	वेश्मनि सोपानमवश्यं निर्मातव्यम्.
तुम्हारे शहर में कोई तलाव या बावड़ी है.	अस्ति कश्चित्तडागो वापिका वा तव नगरे.
घर की देहली पर बैठ कर कभी मत खाओ.	गृहावग्रहण्यां स्थित्वा कदापि मा भुङ्क्ष्व.
छत के ऊपर चिकनी मिट्टी डाल दो.	पटलस्योपरि स्निग्धां मृत्तिकामापातय.
पतनाला तो पक्की ईंटों से बनवा कर चूना से लिप्पी करा दो.	प्रणालन्तु पक्वेष्टकाभिर्निर्माय्य चूर्णेन सुधया वा लेपय.
बलदेव के घर में मोरी बड़ी छोटी है और पलेड़ी बहुत ऊँची है.	बलदेवस्य गृहे जलनिर्गमोऽतीव सूक्ष्मः जलस्थानं चातीवोन्नतमास्ति.
मेरे घर में चार दर्वाज़े हैं दो पुरुषों के और दो स्त्रियों के.	सन्ति चत्वारि द्वाराणि मम वेश्मनि द्वे पुरुषाणां द्वे स्त्रीणाञ्च.
हमारे घर में छज्जे नहीं हैं इसी से बौछार घर में भीतर घुस जाती है.	अस्मद्गृहे गोपानसी नास्ति अत एव धारासम्पातोऽन्तर्गृहे प्रविशति.
गृहस्थ के बर्तन बयान करो.	गृहस्थपात्राणि वर्णय.
बर्तन जैसे घड़ा, दोकनी, चमचा, चीमटा वा सँडासी, सोने के बर्तन, चांदी के बर्तन, पत्थर के बर्तन, कूंडियाँ, सोटा परात, गिलास,	पात्राणि, यथा घटः, स्थाली, दर्विः, कङ्कमुखं, स्वर्णपात्राणि, रजतपात्राणि, अश्मपात्राणि, लगुडः, बृहद्भाजनं, पानपात्रं,

गृहस्थ और बर्तन इत्यादि का वर्णन—गृहस्थानांविशेषाः पात्रविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
कड़ाही, हांड़ी, कड़ाह, कुप्पी, तवा इत्यादि अनेक होते हैं.	कटाहिका, हण्डी, बृहत्कटाहः, कुतुपः, कजीपमित्यादीन्यनेकानि सन्ति.
इधीम लोग सोसा जला कर नागेश्वर बनाते हैं.	वैद्याः सीसं दाहयित्वा नागेश्वरं निर्मापयन्ति.
राजा दशरथ बेटे के रंज से मरने के पीछे तेल की नाँद में भरत के आने तक रक्खा गया.	राजा दशरथः पुत्रशोकेन मरणानन्तरं तैलद्रोण्यामाभरतागमनात्स्थापितः.
वह स्त्री बिलोइ के पास दही की कमोरी लाकर रई से दही बिलोती है और मक्खन बेटे को देती जाती है.	सा स्त्री कुटरस्समीपे दधिभाण्डं मन्थनीरज्जुमाऽऽदाय मन्थां दधि मथ्नाति हैयङ्गवीनञ्च पुत्राय प्रयच्छति.

छठवाँ अध्याय—षष्ठोऽध्यायः ।

मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पादविशेषा यानविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
गौ	गौः, धेनुः.	घोसी ग्वाला	घोषः, आभीरः, गोपः गोधुक्.
गौ के गले का चमड़ा	सास्ना, गलकम्बलः.	घोड़ा	अश्वः, तुरगः, हयः, वाजी, घोटकः.
बैल	वरीवर्दः, वृषः, उक्षन् (पुं०)	अयाल	केसराः, सटाः.
बछरा	गोवत्सः.	घुड़सवार	अश्वारोहः, सादिन् (पु०).
भैंस	महिषी, महिषः.	गधा	खरः, रासभः गर्दभः.
थन	ऊधः (न०) धापीनम्.	घुड़साल	अश्वशाला, मन्दुरा.
सींग	शृङ्गम्, विषाणः-णम्.	खिधर	अभ्यन्तरः, वेसरः.
गोबर	गोमयः-यम्, गोविद्.	दरोगा	अभ्यन्तरपालः.
पेशाब	गोमूत्रः.		

मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पादविशेषा यानविशेषाश्च ।

हिन्दी।	संस्कृत ।
बकरी	अजा, छागी.
ऊँट	उष्ट्रः, क्रमेलकः, मयः.
नाथ,नकेल	नस्योतः.
हाथी	गजः, हस्ती, करिन् (पुं०) मातङ्गः.
फीलखान	आधोरणः, हस्तिपः.
हाथीशाल	घारी, गजबन्धनी.
पूंछ	लाङ्गूलम्, पुच्छः-च्छम्, लूमम्, बालधिः.
लीद	पुरीषम्, विष्ठा, गूथम्, शकृत्.
खुर	खुरः, शफः-फम्.
सूअर	क्रोडः, वराहः, किरिः, कोलः.
आनेंकण्डे	करीषम्.
घिटौरा	करीषराशिः.
घूरा	अघकरनिचयः.
भेड	एडका, मेषी, ऊर्णायुः.
भूसी	घुशः.

यानविशेषाः ।

रथ	रथः, स्यन्दनम्.
रथवान	सारथिः, सूतः, सव्येष्ठ(पुं०)
छकड़ा टम-टम	लघुयानम्, रथः.
पालकी तामझाम	नरयानम्, शिविका, याप्य यानम्, चतुरश्रयानम्.

हिन्दी।	संस्कृत ।
दहमर्दा कपड़े-पहरना	दशयानम्.
नालबन्दी करना	वासः परिधत्ते.
मुकाबला करना	खुरघ्नं बध्नाति, खुरघ्नेण सनाथीकरोति.
चरना	प्रतियोधयति, वि-प्रति रुणद्धि, प्रतिकरोति, प्रत्यवतिष्ठते.
मलना	चरति, भक्षयति, अत्ति.
छकड़ा	घर्षति, मर्दयति.
बहली	अनः (न०) शकटः-टम्, वाहनम्, प्रवहणम्.
विमान	कर्णीरथम्, लघुशकटः-टम्.
बुलाना	विमानः-नम्, व्योमयानम्.
सिखाना	आकारयति, आह्वयति, ह्वयते
चढ़ाना	शिक्षयति.
चढ़ना	आरोहयति.
तोड़ना	आरोहति.
तुड़वाना	भिनत्ति.
युद्ध करना	भेदयति.
चलाना हांकना	युद्धयति-ते, योधयति, विगृह्णाति, संग्रहयति.
सिद्ध करना धा काम निकालना	वाहयति, नोदयति, चालयति, प्रेरयति.
	साध्नोति, साधयति, राधयति.

मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पादविशेषायानविशेषाश्च ।

विहारकर्ना खेलना	विहरति, क्रीडति.	कोशिश करना उतरना	यतते, उद्यच्छते, प्रवर्तते, व्यवस्यति. अवरोहति, अवतरति.

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तुम्हारे पास जो घोसी रहता है उस की गोशाला में कितनी गायें कितने बैल हैं.	युष्माकं समीपे यो घोषो वसति तस्य गोशालायां कति धेनवः कत्युक्षाणः सन्ति.
पाँच गाय, सात बैल.	पञ्च गायः सप्त वृषभा इति.
घोसीलोगों से गौओं का दूध और गोबर बेचा जाता है.	गवां पयः गोमयञ्चापि विक्रीयते आभीरैः.
भैंसों का सींग गयल उनका दूध महिष ऐसा कहलाता है.	महिषीणां शृङ्गं गयलं तासां पयो महिषेत्यभिधीयते.
गौओं के गले में जो खाल लटकती है उसे मनुष्य "सास्ना" कहा करते हैं.	गवां गले यावत् प्रलम्बते तां सास्नामिति प्रचक्षते जनाः.
गोविन्द की घुड़साल में पाँच घोड़े हैं, उनमें एक घोड़ा अशिक्षित है उस को किसी चाबुकसवार को घुला कर सिखवाओ.	गोविन्दस्याश्वशालायां पञ्च तुरङ्गा विद्यन्ते, तेष्वेकस्तुरगो ऽशिक्षितोऽस्ति तं कमप्यश्वयेनेतारमाकार्य्य शिक्षय.
चौमासे में तो गोबर घूरे पर ही फेंक दिया जाता है.	चातुर्मास्ये तु गोमयमयकरनिचय एव प्रक्षिप्यते.
यह ग्वाला जल पीना चाहता है इसे जल पिलाओ.	पिपासत्ययं गोधुगेनं जलं पायय.
मरखने बैल नाथ से ही बस में लाये जाते हैं.	दुष्टवृषभा नस्योतेनैव वशीक्रियन्ते.
श्रीमान् गोपालदेव के राज्य में कितने घुड़सवार हैं? वेशुमार ।	श्रीमद्गोपालदेवराज्ये कत्यश्वसादिनः सन्ति? असङ्ख्याः ।

मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पादविशेषायानाविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
घोड़े और सिंहों के अयाल होते हैं.	अश्वानां सिंहानाञ्च केशरा भवन्ति.
गधा बड़ा गरीब जानवर है.	अतिदीनपशूरासभोऽस्ति.
इसका मुह काला करके गधे पर चढ़ा कर शहर के चारों ओर घुमाओ.	अस्य मुखं श्यामं कृत्वा गर्दभस्योपरि आरोप्य नगरमितः परिभ्रामयत.
ये दरापी खच्चरों को लेजाकर लड़ाई को जाते हैं.	एतेऽश्वतरपालाः वेसराञ्नीत्वा युद्धार्थं गच्छन्ति.
बकरी का दूध भी पथ्य होता है.	अजादुग्धमपि पथ्यं भवति.
क्या फौजों में ऊँट और हाथी भी रक्खे जाते हैं?	किं पृतनासूष्ट्रा गजाश्चापि रक्ष्यन्ते.
ऊँट घोड़ा लेजाने के लिये हाथी तोपों के लेजाने के लिये रक्खे जाते हैं.	उष्ट्राः भारोद्वहनार्थं गजाः शतघ्नीनामुद्वहनार्थं रक्ष्यन्ते.
घोड़े की पूछ में बहुत बाल होते है.	हयपुच्छे बहूनि लोमानि भवन्ति.
गौओं का गोबर गोमय बोला जाता है.	गवां पुरीषं गोमयमिति शब्द्यते.
और संग साथ में भैंस का भी.	प्रसङ्गान्महिषीणामपि.
गौओं के खुर फटे और घोड़े वगैरह के समूचे होते हैं.	गवादीनां खुरा युक्ता अश्वादीनामयुक्ता भवन्ति.
दो सूअरों के बीच में सिंह भी पानी नहीं पीसक्ता लेकिन दो सिंहों के बीच में एक सूअर ज़रूरही जल पी आता है यह मशहूर है.	द्वयोर्वराहयोर्मध्ये सिंहोऽपि पानीयं पातुं न क्षमः परञ्च द्वयोः सिंहयोर्मध्ये एकः किरिः जलमवश्यं पिबत्येवेति प्रसिद्धम् .
पहिले ज़माने में रथी लोग रथों से ही लड़ाई में लड़ते थे.	पूर्वदा मृधे रथिनः रथैरेव युध्यन्ति स्म.
और सारथी लोगही रथ के घोड़ों को जोतते थे.	सूताश्चैव रथवाहान् याद्यन्ति स्म.
गाय वगैरह चौपाये अक्सर घास खाते हैं.	गवादयश्चतुष्पदाः प्रायशो घासं (शष्पं) चरन्ति.

मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पादविशेषायानविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
सईस घोड़ा खुजाता है.	अश्वपालोऽश्वं मर्दयति.
अब तो बहुत से धनवान् और बड़े ओहदेदार अहलकार लोग बग्घियों में इधर उधर जाया करते हैं.	इदानीन्तु बहवो धनाढ्या उच्चपदस्था यिनो राजसेवकाश्च द्विचक्रान्केषु लघुयानेष्वितस्ततो गच्छन्ति.
बहुत से धनवान् अब भी पालकी पर चढ़ कर जाते हैं.	बहवो धनिनोऽद्यापि शिविकामारुह्य गच्छन्ति.
बीच के दर्जे के लोग छकड़े मझोलो या टमटमों से अपने काम निकाल लेते हैं.	मध्यमश्रेणिजना अनोभिः (शकटैः) लघुशकटैः लघुयानैर्वा स्वकार्याणि साधयन्ति.
सब सवारियों में रेलगाड़ी बहुत ही आराम देनेवाली और थोड़े खर्च की है.	सर्वेषु यानेषु रेलाख्य. शकटोऽसौ सुखप्रदोऽल्पव्ययश्च.
पहिले देवतालोग विमानों में विहार करते थे.	पुरा देवा व्योमयानेषु विहरन्ति स्म.
अब अङ्गरेजलोग विमान के रिवाज के लिये अक्सर कोशिश कर रहे हैं.	अधुनाङ्गलदेशवासिनोऽऽकाशविमान-प्रचारार्थं प्रायो यतन्ते.
लेकिन उनसे अभी तक कोई ठीक २ चढ़ने उतरने की तरकीब नहीं मिली.	परञ्च न प्राप्तो यथोचितो रोहणावरोहणक्रियाऽद्यावधि.
मुल्क काबुल में उस मुल्क के रहनेवाले मुसलमानलोग भेड़ का मांस खाते हैं और उसकी खाल का वस्त्र पहरते हैं.	काबुलाख्ये देशे तद्देशनिवासिनो यवनाः ऊर्णायोर्मांसमदन्ति तत्त्वचञ्च वासः परिदधते.
रथवान् अपने घोड़े के नाल बँधवाताहै.	सश्वेष्टा स्वाश्वस्य खुरत्रं बन्धयन्ति.
भेड़ी भेड़िये का तब मुकाबला करती है जब इसका मेमना पास होता है.	मेषी तदा वृकं प्रति बोधयति यदास्याः शावकस्समीपस्थो भवति.

सातवाँ अध्याय—सप्तमोऽध्यायः ।

पक्षी इत्यादि का वर्णन—पक्षिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
पक्षी	पतत्रिन् (पुं०) विहगः, खेचरः, खगः.	नीलकंठ	चाषः-सः, किकीदिविः.
चाँच	चञ्चुः-चूः, (पुं० स्त्री०) शोटिः (स्त्री०), तुण्डम्.	टटीरी	टिट्टिभः
पंख	पिच्छम्, पक्षः, गरुत् (पुं०)	चहगादर	जतुका, अजिनपत्रा.
चिड़िया	चटकः, कलविङ्कः.	उल्लू	उलूकः, कौशिकः, पेचकः.
कौआ	काकः, वायसः, ध्वाङ्क्षः.	घुग्घू	घूकः, दिवान्धः.
पंडुक	छिद्रगलः.	हंस	मरालः, राजहंसः.
तोता	शुकः, कीरः, चक्रतुण्डः.	खुटपावरी	दार्वाघाटः, दारपेचकः.
मैना	सारिका.	मोर	मयूरः, शिखी.
चील्ह	चिल्लः-ल्ला, आतापिन् (पुं०)	मोरपँख	बर्हः-र्हम्, चन्द्रकः, मेचकः.
कबूतर	कपोतः, पारावतः, कलरवः.	मोरवाणी	केका, मयूरवाणी.
मुर्गा	कुक्कुटः, ताम्रचूडः, नखायुधः.	पक्षियों की आवाज	रवः, रावः, कलकलः.
गिद्ध	गृध्रः, दाक्षायणः.	घौंसला	कुलायः, नीडः.
सारस	सारसः, कह्लः, वकः, पुष्करालः.	पटवीजना	खद्योतः, ज्योतिरिङ्गणः.
		तीतर	तित्तिरः.
बाज	श्येनः, शशादनः, पत्रिन् (पुं)	बटेर	वार्तिरः
शिकरा		लवा	लावः.
बाज पालने वाले	श्येनपालकः	कुलङ्ग	उत्क्रोशः, कुररः.
कोयल	कोकिलः, परभृत् (पुं०)	चकवा	चक्रः, चक्रवालः, कोकः.
पपीहा	चातकः, पिकः, चातकः.	बोलना	कूजति, रौति.
		रोशन होना	प्रकाशते.
		बसेरा लेना	विश्राम्यति.
		चमकना	द्योतते, शोभते, विद्योतते, प्रकाशते.

पक्षी इत्यादि का वर्णन–पक्षिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
देखो आसमान में परेरू उड़ रहे हैं.	पश्याकाशे पक्षिण उड्डीयन्ते.
खास २ परेरुओं के अलग २ नाम लो.	मुख्यविहगानां पृथक् पृथक् नामानि श्रृणुत.
चिरौटा, कौआ, तोता, मैना, चील्ह, कबूतर, मुर्गे, गिद्ध, सारस, शिकरा, कोयल, पपीहा, चामचिर्र, उल्लू, धुग्घू, हंस, खुटकबढ़ैया, मोर, तीतर, बटेर, लवा, वगैरह परन्द अक्सर मांस खाने वाले होते हैं.	चटकः, काकः, शुकः, सारिका, चिल्लः, कपोतः, कुक्कुटः, गृद्धः, सारसः, श्येनः कोकिलः, चाषः, जतुका, उलूकः, घूकः, मरालः, दार्वाघाटः, मयूरः, तित्तिरः, वार्तिरः, लाव इत्यादयः पक्षिणः ग्रामेमांसाशिनोभवन्ति.
परेरू अपनी चौंचों सेही हाथ का काम निकालते हैं.	पक्षिणः स्वचञ्चुभिरेव हस्तकार्यं वाहयन्ति.
पटवीजने अक्सर जलवाली जगहों में रात में चमकते हैं.	खद्योताः प्रायशो जलसनाथेषु स्थलेषु रात्रौ द्योतन्ते.
परन्दों की आवाज़ "रव" या कलकल कहलाती है.	पक्षिणां शब्दो रवः कलकलो वेत्यभिधीयते.
मोर की पूंछ चंद्र और उसकी वाणी केका कहलाती है.	मयूरपिच्छं चन्द्रस्तद्वाक्केकेत्यभिधीयते.
मोर चौमासे में नीले बादलों को देख कर बहुत खुश होते हैं.	मयूराश्चातुर्मास्ये नीलजलवाहकान्दृष्ट्वाऽतीव हृष्यन्ति.
क्या सूरज का भी नाम खद्योत है ? है तो.	किं सूर्यस्यापि नाम खद्योतोऽस्ति ? अस्ति तु.
बग़ीचे में इधर उधर पक्षी बोलते हैं.	उद्यान इतस्ततो खगाः कूजन्ति.
शाम को परन्द अपने २ घौंसलों में बसेरा लेते हैं.	सायंकाले पतत्रिणः स्वेषु स्वेषु नीडेषु विश्राम्यन्ति.

पक्षी इत्यादि का वर्णन—पक्षिविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
सबेरे उठ कर उनकी मनचाही जग हों में जाने की इच्छा होगी.	कल्यमुत्थाय तेषां स्वेष्टदेशेषु जिगमिषा भविष्यति.
कबूतरबाज़ अपनी छत्तों पर आये हुए दूसरों के कबूतरों को पकड़ कर उनके पर कैंच कर देते हैं.	कपोतपालकाः स्वछत्र आगतानन्येषां पारावतान्धृत्वा तत्पक्षान्छुनन्ति.

आठवाँ अध्याय—अष्टमोऽध्यायः।

दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन—दुःखदायिनोजीवविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
चींटी	पिपीलिका, पिपीलकः.	छांह	अनातपः.
टीडी	शलभः, शलभः.	सांप	सर्पः, अहिः, दन्दशूकः, सरीसृपः.
खेत	क्षेत्रम्, घप्रः–प्रम्, भूमिः (स्त्री).	,,का फन	फणा, स्फटा.
अजदहा	अजगरः.	,, ,, विष	श्वेडः, गरलम्, विषम्.
मक्खी	माक्षिका, सरघा (मधुमक्षिका).	सपेरा	आहितुण्डिकः.
मोम,	मधूच्छिष्टम्, शि(सि)क्थम्.	विषवैद्य	जाङ्गुलिकः.
छत्ता	मधुकोषः, चषालः, करण्डकः.	विच्छू	वृश्चिकः, द्रोणः.
दीमक	श्वेतापिपीलिका.	डंक	लूमम्.
बर्र	वल्मीकः–कम्, वामलूरः.	कातर	शतपदी,
बर्रे	बरटा, गन्धोली.	कानसलाई	कर्णशलाका.
भौंरा	भ्रमरः, षट्पदः, अलिः, भृङ्गः.	अण्डा	डिम्बः.
खटमल	मत्कुणः, उद्देशः, खट्वामलः.	गोह	गोधा
धूप	आतपः.	छिपकली	पल्ली.
		मच्छर डाँस	दंशः, मशः—कः, घनमक्षिका.

दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन—दुःखदायिनोजीवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
भींगर मजीरा चूहा बिलाव कुत्ता गिलहरी कपास बन्दर लंगूर चींचरी कलींदा पतङ्ग जूँ लीक घूँस नौला बरर्कटा बर्रा छछून्दर चुमुही मकड़ी ,, जाला	ह्रोथका, ह्रिरिका, ह्रिल्लिका. मूषकः, उन्दुरः-दुः, आखुः. ओतुः, विडालः, मार्जारः, आखुभुक्. श्वा, कुक्कुरः, सारमेयः. काष्ठमार्जारः, चमरपुच्छः. कार्पासः, तूलः. वानरः, कपिः, मर्कटः, शाखामृगः. कपिः, प्लवङ्गः, मर्कटः, दीर्घलाङ्गुलः. चर्चिका. पतङ्गः, शलभः यूकः (पुं० स्त्री). लिक्षा (स्त्री०). बृहन्मूषकः. नकुलः, वभ्रुः, अङ्गुरः. दृकलासः, सरटः. दंशकः, गोमक्षिका छुछुन्दरी, गन्धमुखी, दीर्घतुण्डी, विषान्धिका. द्विमुखा. तन्तुवायः, तन्तुनाभः, लूता मर्कटकः, ऊर्णनाभः. जालं, तन्तुसन्ततिः.	भौंकना काटना डंकमारना नाश करना ,, होना खींचना रहना वा रखना मस्त होना जिंदा रहना चुभाना चुभना चिपटना कतरना फाड़ना चीरना फटना छोड़ना टुकड़े २ क० फैलाना पीना रेंगना	युक्रति. — दशति, व्यथयति. नाशयति. नश्यति. आकर्षति, कृषति, समाकर्षति वसति, नि-प्रति-वसति वर्तते, तिष्ठति, अध्यास्ते. माद्यति. जीवति, प्राणान्धारयति. संलग्नीकरोति, निवेशयति, संश्लेषयति. संश्लिष्यति, संनिविशते, सलगति, संलग्नोभवति. आश्लिष्यति, आलिङ्गति, सज्जति, लगति, आ-अञ्च+लंबते अनुषज्जति. कृन्तति, लुनाति, छिनत्ति, आवापयति विदारयति, विदृणाति, उल्लुञ्चति. दृणाति, जहाति, त्यजति, उत्सृजति, उज्झति. खण्डयति, खण्डशः करोति. सनुते, तनोति, विस्तारयति. पिबति, धयति. सर्पति, मन्दंप्रसर्पति.

दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन—दुःखदायिनोजीवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
यह देखो लाल चींटी ने मुझे काट खाया.	रक्तपिपीलिकेयं मामदशदिति पश्य.
टीडी जिस खेत में गिरती है उसको जड़ से उड़ा देती है.	शलभा यस्मिन् क्षेत्रे पतन्ति तत्समूलं नाशयन्ति.
कभी तूने अजगर भी देखा है ? नहीं.	दृष्टस्त्वया कदाप्यजगरः ? न.
लेकिन सुना है कि वह अन्दाज में बीस सेर या इससे कम ज्यादह होता है.	परञ्च श्रुतं समाने विंशति सेटकमित-मनन्यूनाधिको वा भवति.
वह पास आये हुए जीवों को स्वास से ही खींच कर मुंह मे निगल जाता है.	स समीपागतान्जीवान् श्वासेनैवाकृष्य मुखेन निगिलति.
मोहार की मक्खी फूलों से रस खींच कर छत्ते में रखती हैं.	सरघाः पुष्पेभ्यो रसमाकृष्य मधुकोषे निदधते.
ये दीमक इस किवाड़ को खागईं.	श्वेतपिपीलिका इमे पतरकपाटमखादन्.
धेले का मोम लाओ.	अर्धताम्रखण्डस्य (पणार्धस्य) मधूच्छिष्टमानय.
मक्खी अक्सर मैली चीजों पर बैठती हैं.	माक्षिकाः प्रायोमलिनेषु वस्तुषु तिष्ठन्ति.
बमई में सांप रहते हैं। सांप आहिस्ते चला करता है। यही न समझो सांप तेजी में घोड़े को भी मात देता है.	वल्मीकेषु सर्पा निवसन्ति। सर्पो मन्दं प्रसर्पति। एतदेव नावबुध्यस्व सर्पो जवे घोटकमप्यतिक्रामति.
तैलिये ने मुझे काट खाया जल्दी दीवा-सलाई या आक का दूध लाओ.	रक्तघरटा मामदशत्तूर्णं दीपशलाका-मर्कदुग्धं घानय.
फूलकी खुशबू सूँघ कर भौंरा मस्त होता है.	पुष्पगन्धमाघ्राय भ्रमरो माद्यति.
इस खाट में बड़े खटमल हैं इस को धूप में डालदो.	अस्यां खट्वायां बहवो मत्कुणास्सन्ति पनामातपे (घर्मे) निक्षिप.
सपेरा बमई से सांप पकड़ कर अपनी जीविका के लिये लाता है.	आहितुण्डिको बामलूरात्सरीसृपं धृत्वा स्वजीविकार्थमानयति.

दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन—दुःखदायिनोजीवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
सांप के जहर का हकीम (गारुड़ी) जांगुलिक कहलाता है.	विषवैद्यो जांगुलिक इत्यभिधीयते.
काले सांप का बड़ा फण होता है उस का काटा हुआ जीव अक्सर नहीं जीता.	कृष्णसर्पस्य महती फणा वर्तते तद्दष्टो जीवः प्रायो न जीवति.
धींछू ने अपना डंक मेरे पाँव के अंगूठे में चुभो दिया.	वृश्चिकः स्वदंशं मम पादांगुष्ठे समक्षेपयत्.
मेरे कन्धे पर छपकली गिर पड़ी इस का फल विचारिये.	मम स्कन्धेऽपतत्पल्ली फलमस्य विचार्यताम्.
कातर जहां कहीं चिपट जाती है वहीं अपने पैरों को गाड़ देती हैं.	शतपदी यत्र कुत्राप्यारोक्ष्यति तत्रैव स्वपादान् संलग्नीकरोति.
चोरलोग गोह के सहारे महलों पर चढ़ जाते हैं यह सुना है.	चौरा गोधायाः सकाशाद्धर्म्येष्वारोहन्तीति श्रुतं
इस घास में बहुत से डांस हैं.	अस्मिन्घासे बहवो दंशा विद्यन्ते.
झींगर अक्सर रात में झींमीं शब्द किया करते हैं.	झींरुकाः प्रायो रात्रौ झींझींतिशब्दं कुर्वन्ति.
इस घर में बहुत से चूहे हैं उन्हों ने मेरी बहुतसी चीजें काट डालीं.	अस्मिन्गृहे बहवो मूषकास्सन्ति ते ममानेकानि वस्तून्यछिन्दन्.
उनके दूर करने के लिये क्या करना चाहिये.	किं कर्त्तव्यं तेषां निवृत्त्यर्थम्.

दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन--दुःखदायिनोजीवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
कुत्ता भौंकता है-यहां ज़रूर कोई आदमी है.	कुक्कुरो बुक्कति अघाघट्यं केनचिन्मनुष्येण भाव्यम्.
यह कुत्ता सामने रोरहा है यह खोटा शकुन दिखाई पड़ता है.	श्वायमभिरौतितिदुःशकुनोऽयं दृश्यते.
यह गिलहरी मुह में रूई लेकर पेड़पर चढ़ती है.	काष्ठमार्जारोऽयं वक्त्रे तूलमादाय वृक्षमारोहति.
बन्दर जो कुछ चीज़ बाहर देखते हैं उसीको लेकर फाड़ डालते हैं.	वानरा यत्किञ्चिद्वस्तु बहिः पश्यन्ति तदेयनीत्वा दारयन्ति.
बन्दर भेड़ियों और लंगूरों से डरते हैं.	मर्कटाः वृकेभ्यो दीर्घलांगूलेभ्यश्च बिभ्यति.
चीचरी अक्सर गौ और भैंसों के थनों में चिपटी रहती हैं.	चर्चिकाः प्रायो गवां महिषीणाञ्च स्तने प्रवलम्बन्ते.
पतङ्ग दीये पर आकर अपनी ज़िन्दगी से भी हाथ धो बैठते हैं.	पतङ्गाः दीपं प्रत्यागत्य स्वजीवनान्यपि त्यजन्ति.
घूस घरों की दीवारों को भी सब ओर से खोद डालती हैं.	गृहन्मूषका गृहभित्तीरपि सर्वतः खनन्ति.
न्यौले लड़ाई में सांपों को टुकड़े २ कर डालते हैं.	नकुला युद्धे सर्पान्खण्डयन्ति, खण्डशः कुर्वन्तीति वा.
छिपकली का गिरना और करकँटे का चढ़ना भी शकुन होता है.	पल्लीपतनम् कृकलासारोहणञ्चापि शकुनम्भवति.
इस गौकी बच्ची को पकड़ कर और गोबर में रख दूर फैंक दो.	अस्या धेनोः गोमक्षिकां धृत्वा गोमये च निधाय दूरे प्रक्षिप.
यहां बड़े मच्छर हैं इसलिये मसहरी लाओ.	अत्र बहवो मशका अतो मशहरीमानय.

दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन--दुःखदायिनोजीवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
बिल्ली छछून्दर को चूहे के भेरे मार तो देती है लेकिन घनन्दय यदबू खाती नहीं.	मार्जारी दीर्घतुण्डीम् मूषकक्षुद्धया हति परञ्च तां गन्धयशान्न खादति.
छछून्दर जब मुंह से कृच् २ ऐसा शब्द करती है तभी उसके मुह से बदबू निकलती है.	गन्धमुषो यदा कृच्कृच् इति शब्दं करोति तदैव तद्मुखाद्गन्धो निस्सरति.
दुगुही छ महीने तक एक मुह से और छ. महीने दूसरे मुंह से खाती है यह सुना है.	द्विमुखा षण्मासपर्यन्तमेकमुखात् षण्मासपर्यन्तञ्च द्वितीयमुखात् खादतीति श्रुतम्.
मकड़ी जाला पूरती है.	ऊर्णनाभस्तन्तुसन्तानं तनुते.
कुत्ता सूखे हाड़ के जरिये से निकले हुए अपने मुह केही खून को खून मानता हुआ और उसे पीता हुआ खुश होता है यही दशा दुनिया के दु.खों को सुख माननेवालों की है.	श्वा शुष्कास्थिनिसृतं स्वमुखरक्तमेव रक्तंमन्यमानः पिबँश्च मोदते इयमेव दशा सांसारिकाणां संसृति दु.खमेव सुखंमन्यमानानाम्.

नवाँ अध्याय—नवमोऽध्यायः ।

वन के जीव इत्यादि का वर्णन—वनजन्तुविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
सिंह	मृगेन्द्र, पञ्चाननः, हरिः, केसरी (पु०).	भेड़िया	वृकः, कौकः, ईहामृगः.
गेंडा	गण्डकः, खड्ग, गण्डद्रुकः.	गीदड़	गोमायुः, जम्बूकः, क्रोष्टा, शृगालः.
सेही	श्वाविध, (पुं०) शल्यः.	रीछ	ऋक्षः, भल्लूकः, भालुकः.
बाघ	व्याघ्रः, चित्रक. छीपी (पुं०)	लोमड़ी	भूरिमायः, किलिः.
		खरहा	शशः-कः.

वन के जीव इत्यादि का वर्णन—वनजन्तुविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
वनबिलाव	ओतुः, वनविड़ालः, अरण्यमार्जारः.	संगोलना बिलोना या बिचरना	गाहते.
वनमानुष	अरण्यमानुषः.	शिकार-होना	आमिषतांयाति, भक्ष्यंभवति
हिरन	हरिणः, कुरङ्गः, मृगः, एणः.	,, करना	मृगयां करोति, मृगयते.
हिरन का बच्चा	मृगशावः पोतः.	झुकना	आ-वि-नमति, आवृजति, वक्रीभवति.
बारहसिंगा	द्वादशशृङ्गः.	झुकाना	नामयति, नम्रीकरोति, आवर्जयति, वक्रीकुरुते.
वनगाय	वनधेनुः, गवयः.		
वरहेलू सूअर	वनशूकरः.		
गोरखर	वनरासभः-गर्दभः.		

हिन्दी।	संस्कृत।
शेर वन के जीवों का मालिक है परन्तु जहां आग जलती है वहां वह नहीं जाता.	सिंहो हि वनजन्तूनामधिपतिः परञ्च यत्राग्निर्ज्वलति तत्र स न गच्छति.
क्या तुमने गैंडा भी देखा है? हां सम्वत् १९५२ में मैंने जयपुर के अजायबखाने में देखा था.	किं त्वया गण्डशृङ्गोऽपि दृष्टः? चाढम् एकोनविंशत्युत्तरत्रिपञ्चाशत्तमे विक्रमाब्दे मया जयपुरस्य कौतुकागारे दृष्टः.
सेही कांटों से अपने से बलवान् जीवों से मुकाबला करता है.	शल्यः स्वकण्टकैः स्वस्माद्बलवतोऽपि जीवान् प्रतियोधयति.
सिंह ज्यादह बलवान होने की वजह से सब वन को छान डालता है.	सिंहोऽतीव बलवत्त्वादखिलं वनं गाहते.
छोटे जीव डर सेही सिंह के शिकार हो जाते हैं.	क्षुद्रजन्तवो भियैव सिंहस्वामिकतां यान्ति.

वन के जीव इत्यादि का वर्णन—वनजन्तुविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
बाघ वा चीता सिंहही की एक किस्म है. जाम्बवान रीछ ने वामन अवतार में विराट् रूप भगवान् की दो घड़ी में तीन परिक्रमा कीं.	व्याघ्रश्चित्रको वा सिंहस्यैव भेदः. जाम्बवता ऋक्षेण वामनावतारे विराड् रूपिणो भगवतः द्विघटिकाभ्याम् तिस्रः परिक्रमाः कृताः.
और भी वन के जीवों के नाम लिखो. सुनिये, भेड़िया, गीदड़ गवय, लोमड़ी, खरहा, वनबिलाव, वनमानुस, हिरन, बीजू, बारहसिंहा, गोरखर, बनैला सूअर, वनगाय वगैरह होते हैं.	अन्येषामपि वनजन्तूनां नामानि लिख. श्रूयन्ताम्, चृकः, गोमायुः, गवयः, भूरिमायः, शशाः, अरण्यमार्जारो ऽरण्यमानुषः, हरिणः, (बीजू), द्वादशाष्टङ्कः, वनगर्दभः, वनशूकरः, वनधेनुरित्यादीनि सन्ति.
हिरन का बच्चाही मृगशाव कहलाता है.	मृगशिशुरेव मृगशाव इत्युच्यते.
सूअर अपनी गर्दन इधर उधर मोड़ नहीं सक्ता है.	क्रोड़ः स्वकन्धरामितस्ततो नामयितुं न शक्नोति.
वनबिलाव अक्सर पेड़ों की खोलों में रहते हैं.	अरण्यमार्जाराः प्रायस्तरुकोटरेषु निवसन्ति.
सबही हिंसक जीव रुधिर सहित मांस खाते हैं.	सर्वे श्वापदाः सरुधिरं पिशितमश्नन्ति.

दसवाँ अध्याय—दशमोऽध्यायः ।

जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
समुद्र	समुद्रः, सरित्पतिः अब्धिः, अर्णवः, जलनिधिः.	किनारा	कूलम्, रोधः (न०) तीरम्, तटम्, (त्रि०).
नदी	सरित्, (स्त्री०) नदी.	कुआं	कूपः, उदपानम्, (अस्त्री) प्रहिः अंधुः, (पुं०).

जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
नहर वम्बे	कुल्या, प्रणाली.	नाव	नौः, तरणिः, तरिः [स्त्री०]
प्याऊ जीवोंकी	आदावः, निपानम्.	(छोटी) नौका दंड	उडुपम्, ह्रदः, कोलः.
प्याऊ	प्रपा, पानीयशालिका.	जोंक	क्षेपणी.
बावड़ी	वापी, दीर्घिका.	शंख	यूका, जलौकसः [पुं०] जलौकस् [स्त्री०].
पोखर	तटाकः, तटागः, जलाशयः.	सीप	शङ्खः, कम्बुः.
तालाब	अम्भः [न०] तोयम्, पानीयम्, नीरम्, अम्बु [न०]	कूप की मन	शुक्तिः [स्त्री०].
जल	तरङ्गः, ऊर्मिः, वीचिः, आवर्तः [भँवर]	मेंडक	घीनाहः.
लहर	मत्स्यः, मीनः, झषः.	थामला	मण्डूकः, भेकः, शालूरः, दर्दुरः
मच्छ	बुद्बुदाः.	जलव्याल	आलवालम्, आवालम्, आवापः.
बबूले	धीवराः, कैवर्ताः मत्स्योपजीविनः.	ऊदबिलाव	अलगर्दः.
मछुए	बडिशम्.	केंचुए	उद्रः, जलमार्जारः.
मछली का कांट	नक्रः, कुम्भीरः, मकरः ग्राहः.	खाई	गण्डूपदः, किञ्चुलकः.
गाह, नाक	शूलीरः, कर्कटकः.	कीच	रेयम्, परिखा.
केंकड़ा	कच्छपः, कूर्मः, कमठः.	काई	कर्दमः षङ्कः पङ्किलः [कीचदार].
कछवा	जलकुक्कुटः.	बतक	निपछरः, जम्बालः.
जल-मुर्गाबी	बलाका, बिसकण्टिका बलाका, बकः, कहः.	कमल	वार्तिका, कादम्बः, कलहंसः वर्तकः.
बगला	जलमानुषः.	कमल की डण्डी	तामरसम्, पङ्केरुहम्, कमलम्, सहस्रपत्रम्.
जलमानुष	तिमिः, तिमिङ्गिलः.	,, जड़	मृणालम्, बिसम्.
तेल	पोतः, यानम्.		करहाटः, शिफाकन्दः.
नाव (बड़ी)			

जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
कमल का केसर	किञ्जल्कः, केशरः.	मिलना	मिलति.
ग्रास करना	कवलयति [ना०धा०] ग्रसति.	उछलना छलांग-भरना	उत्पतति, उत्प्लवते । अत्येति, लङ्घते.
खुस होना	प्रीणाति, मोदते, हृष्यति.	सिकुड़ना सिकोड़ना	सङ्कुञ्चयते, आकुञ्च्यते, संहियते, सङ्कोचयति, संहरति, आकुञ्चयति, निमीलति.
बैठाना-रखवाना	स्थापयति.		
ज़ाहिर करना	द्योतयति, प्रकाशयति दर्शयति, सूचयति, व्यञ्जयति, प्रकटीकरोति, आविष्करोति, व्यक्तीकरोति.		

हिन्दी ।	संस्कृत ।
समुद्र भी पूरे चान्द को देख कर खुश होता है और बढ़ता है मनुष्य तो कहां रहे.	समुद्रोऽपि पूर्णचन्द्रं दृष्ट्वा प्रीणाति वर्धते च किमुतान्ये जनाः.
मछुए लोग काँटे के ज़रिये से या जाल से मछलियों को खींच कर बाज़ार में बेचने को लाते हैं.	मत्स्योपजीविनो वडिशद्वारा जालेन वा झषानाकृष्य हाटके विक्रेतुमानयन्ति.
इस नदी में बड़े भयङ्कर नाके हैं, इसके किनारे पर भी न जाओ.	अस्यां नद्यामतीव भयङ्करा ग्रहवो नक्रास्सन्ति, अस्यास्तीरेऽपि मागच्छ.
क्या तुमने कभी नाके की दाँतों की पङ्क्ती भी देखी है.	किं त्वया कदापि मकरस्य दन्तपंक्तिरपि दृष्टा.
यह आदमियों को बिना टुकड़े ही किये निगल जाता है बेहलक होनेकी वजह से क्या नहर, बम्बों में भी नाके होते हैं?	अयं मनुष्यान्खण्डमकृत्वैव कवलयति निर्गलत्वात्. किं कुल्यासु प्रणालीषु चापि ग्राहा भवन्ति

जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
नहीं। कभी बड़ी नदियों से कोई आभी जाता है.	न। कदाचिद् बृहन्नदेभ्यः कश्चिदागच्छत्यपि।
इस चम्बे के दोनों किनारों पर बड़ी पेड़ों की छाया है यहां छाते की जरूरत नहीं.	अस्याः प्रणाल्याः द्वयो रोधसोः महती वृक्षच्छाया वर्तते नास्यत्रावश्यकता छत्रस्य.
इस कूए पर पक्की भन और जीवों की प्याऊ नहीं है.	अस्य कूपस्योपरि पक्कवीनाहो निपानञ्च न वर्तते.
गरमियों में बहुत से लोग प्याऊ रखवाते हैं.	ग्रीष्मर्तौ बहवो जनाः प्रपां स्थापयन्ति.
अब तो बावड़ी नहीं बनवाई जातीं.	इदानीन्तु वाप्योः न निर्माप्यन्ते.
इस बड़े तलाव में जो जलजन्तु हैं उनके नाम बताओ। सुनिये—केकड़ा, कछवा, जलमुर्गावी, ढेंक, जलमानुस, चकवा, बतक, बगला, जोंक, मेंडक, जल का साँप वगैरह। जिंडोंये अक्सर चौमासे में पैदा होते हैं वे कभी देह को जल में सकोड़ लेते हैं कभी फैला देते हैं.	अस्मिन्बृहत्तडागे ये जलजन्तवस्तेषां नामानि ब्रूहि। श्रूयन्ताम् कुलीरकः, कूर्मः, जलकुक्कुटः, बलाका, जलमानुषः, चक्रः, वर्तकः, बकः, यूका, भेकः, अलगर्द इत्यादीनि। गण्डूपदाः प्रायश्चातुर्मास्ये जायन्ते, ते देहं जले कदापि सङ्कोचयन्ति कदापि विस्तारयन्ति.
हवा के जोर से पानी में लहरें पैदा हो जाती हैं.	वायुवेगाज्जले तरङ्गा उत्पद्यन्ते.
अथाह (गहरे) पानी में ही भमर पड़ते हैं.	अगाधजले प्रवाहर्ताः पतन्ति.
उनमें नावों का चलानाही मल्लाहों की होशियारी जाहिर करता है.	तेषु तरणीनां प्रचालनमेव कर्णधाराणां कौशल्यं द्योतयति.
शङ्ख और सिप्पी भी अक्सर समुद्रों में ही मिलती हैं.	शङ्खाः शुक्तयश्चापि नदीष्वेव प्रायो मिलन्ति.

जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
(बड़े खेद की बात है) कि जहाज का कप्तान (मालिक) भी बहुत आदमियों के साथ हेल के जरिये जहाज टूटने से समुद्र में डूब गया.	अहो, पोताध्यक्षोऽपि बहुभिर्जनैस्सह तिमिद्वारा यानभङ्गेन सागरे न्यमज्जत्.
मल्लाह लोग नदियों में भी पतवार के जरिये से नावों को चलाते हैं.	नाविका नदीष्वपि क्षेपणीद्वारोडुपानि चालयन्ति.
यह तालाब बड़ी कीचड़वाला है इसमें मत घुसो.	अतीव पङ्किलमिदं सरः मास्मिन्प्रविश.
इस तालाब में बहुत से कमल हैं.	अस्मिन्तडागे बहूनि तामरसानि सन्ति.
किले की खाईयों में अक्सर बहुत पानी होता है.	कोट[दुर्ग]परिखासु प्रायो महज्जलं भवति.
इस थामले में तुलसी का पौधा लगादो.	अस्मिन्थावाले तुलस्या वृक्षं स्थापय.
बहुत सी मछलियां खाई के पानी से उछल जाती हैं और डूब जाती हैं.	बहवो मत्स्याः परिखाजलादुत्पतन्त्यधपतन्ति च.
कमल की जड़ का साग बहुत अच्छा होता है.	करहाटस्यापि शाकमतीव शोभनं भवति.
इस्साल सूखा से पञ्जाब में रय्यत दुखी है.	येषमः पञ्चालेष्वनग्रहेण पीडिता प्रजास्ति.
पारसाल बङ्गाली लोग तौरससाल मध्य देश के रहने वाले रोग से पीड़ित थे। अब ईश्वर सब जगह कुशल करे.	पराद्यब्दे बङ्गदेशवासिनः पराश्चिमध्यदेशवास्तव्या महामारीरोगेण पीडिता आसन् अधुनेश्वरः सर्वत्र क्षेमं विदध्यात्.



ग्यारहवां अध्याय—एकादशोऽध्यायः।

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
किताब	पुस्तकम्.	तर्जुमा	अनुवादः.
स्लेट	अश्मपट्टिका, काष्ठपट्टिका.	जुगराफ़िय़ः	भूगोलविद्याशास्त्रम्.
तख़्ती		तारीख़	इतिहासः.
काग़ज़	पत्रम्.	साइन्स	पदार्थविज्ञानः, विज्ञानशास्त्रम्.
क़लम	लेखनी.	ड्राइंग	आकर्षः, आकर्षणं, चित्र आलेख्यम्.
दवात	मसीपात्रम्——	न्याय	तर्कशास्त्रम्.
स्याही	मसिः-सी [स्त्री०].	वेदान्त	दर्शनशास्त्रम्.
पेन्सिल	तूलिका, वर्तिका, शीराक शलाका.	मालियाना इम्तहान	वार्षिकपरीक्षा.
क़लमदान	लेखनीपात्रम्.	इनाम	पारितोषिकः.
बोर्ड	फलकः-कम्, काष्ठखण्डम्.	मदर्सा	पाठशाला, विद्यालयः.
खड़िया	खटिका, कठिनी.	रबर	घर्षकः, मार्जकः.
नक़्शा	देशालेख्यम्, आलेख्यपत्रम्.	चिट्ठी	पत्रम्, सन्देशपत्रम्.
गुजराती	गुर्जरभाषा.	सफ़ा	
उर्दू ज़बान	उर्दूभाषा.	पता —	मामुद्दिश्य, दत्तमठाद्यनाम.
अंग्रेजी	आङ्ग्लभाषा.	अक्षर	अक्षरम्, वर्णः.
बङ्गाली	बङ्गभाषा.	लेख	लेखनम्, लेख्यः.
फ़ारसी	पारसीकभाषा	बोर्डिंगहोस	छात्रालयः मठः.
हिसाब	अङ्कगणितः.	अहाता	मर्यादा, सीमन् [पुं०] अवधिः प्रान्तः.
जबर मुकाबला	बीजगणितः.	इन्स्पेक्शन	निरीक्षणम्, अवेक्षणम्, निरूपणम्, दर्शनम्.
रेखा गणित	रेखागणितः ज्यामितिः.		
मसाहत	मापनम्, मितिः [स्त्री०]		

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचयस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
नौकरी	उपचारः, परिचर्या, आ-संश्रयः.	चालचलन	वृत्तम्, आचारः
नतीजा	फलम्, उदर्कः, परिणामः.	फ़ीस, तन-ख़्वाह	शुल्कः लकम्, वेतनम्, मा-सिकम्, भृतिः [स्त्री०].
मैनेजर	प्रणेता, [पुं०] कार्याध्यक्षः अधिपतिः सम्पादकः.	जुर्माना	धन-अर्थ-दण्डः.
इन्स्पेक्टर	निरीक्षकः, अध्यक्षः.	सिफ़र	शून्यम्, बिन्दुः.
डाइरेक्टर	शासिता, अधिष्ठाता.	स्पेसिमेन	आदर्शः, प्रतिमा, प्रतिरूपम्
उस्ताद	गुरुः, अध्यापकः, आचार्यः.	चन्दा	अंशदानम्, उद्धारदानम्.
तालिब इल्म	विद्यार्थी [पुं०] छात्रः, अ-ध्येता पठिता.	टूर्नामेन्ट	सादिक्रीडा युद्धम्.
मज़मून	विषयः.	रेजिष्टर	लेख्यम्, लिखनस्थानम्.
डायरी	दिनपत्रिका, दैनिकवृत्त-पुस्तकम्.	कालेज	बृहद्विद्यालयः-यम्.
दिली	मानसी, मानसिकी.	प्रोफ़ेसर	अध्यापकः, गुरुः, आचार्यः.
रेजर	क्षुरः.	इन्स्टालमेंट	भागः, अंशः.
दर्जा	कक्षा, श्रेणिः-णी.	सनद	प्रमाण निर्णय-पत्रम्.
क्लासफ़ेलो	सहाध्यायी [पुं०].	हमउमर	वयस्यः, मित्रम्, सुहृद् [पुं०]
स्कूल ,,	पाठशालाध्यायी [सतीर्थ्यः].	जल्दी	तूर्णम्, शीघ्रम्, झटिति.
जमना-स्टिक	व्यायामः, मल्लक्रीड़ा.	बुलाना	आह्वयति ते, आकारयति.
मुश्तंडा	आरब्धा [पुं०], नवच्छात्रः.	झिड़कना	निर्भर्त्सयते; तर्जयते; नि-ष्ठुरमभि-धा; निन्दति अ-धिक्षिपति.
गेन्द	कन्दुकः, गेन्दुकः.		
बल्ला	यष्टिः, [स्त्री०] लगुडः.		
विकेट्स	क्रीडावधिकाष्ठानि.		
लैक्चर	व्याख्यानम्, भाषणम्.		
		वंचकरना	वि-उत्-सृजति, परित्यज-ति, नियुङ्क्ते, वियुङ्क्ते, क्षपयति, गमयति, याप-यति [प्रे०].
		चुपचाप-चलेजाना	निभृतं अलक्षितं अपयाति, अपगच्छति.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
पढ़ना	पठति, अध्येति, याचयति, अधिगच्छति.	देना(अदा करना)	ददाति दत्ते, अर्पयति.
निपटना	निपटते.	पढ़ाना	अध्यापयति, शिक्षयति, पाठयति, उपदिशति.
गलती करना	भ्रमति, भ्राम्यति, मुह्यति, प्रमाद्यति अपराध्यति.		अपह्नपति-वदति, मरुवीकरोति, निषेधति, प्रत्याख्याति, अप नि ह्नुते.
देर करना बताना	चिरयति (ना० धा०).	मना करना	
माफ़ी कराना	विज्ञापयति.	बढ़ना	प्रवर्धते, प्रचीयते, उपचीयते
		निकलना	उदेति, उत्तिष्ठति, उत्पद्यते.
		हिज्जेकरना	यथाक्षरंसङ्ख्याति - पठति, लिखति.

हिन्दी ।	संस्कृत ।
ये प्यारे उठो । सूरज निकल आया और सवेरा हो गया.	उत्तिष्ठ वत्स । सूर्य उदितप्रत् प्रातः कालो जातश्च.
सुनो मुर्ग बाँग दे रहे हैं और परेरू भी अपने घोंसलों को छोड़ कर आसमान में विहार कर रहे हैं.	शृणु कुक्कुटसङ्घो रौति पक्षिणश्चापि स्वनीडानुत्सृज्याम्बरे विहरन्ति.
पाषाना इत्यादि कामों से निवट कर मदर्से जाओ.	शौचादिकृत्येभ्यो निवृत्य पाठशालां गच्छ.
अच्छा । अभी जाता हू.	बाढम् । गच्छाम्यहमधुनैव.
गोपालदत्त ! क्यों देर करते हो क्या जुर्माने से नहीं डरते हो.	गोपालदत्त ! कथ चिरयसि किमर्थं दण्डाच्च विभेषि ?
दोस्त ! डरता तो हू लेकिन अभी देर नहीं है.	विभेमि त्वहं मित्र ! परञ्चाद्य नातिकालः.
अच्छा, आओ २ देखो ये हमारे अंग्रेजी के उस्ताद जा रहे हैं.	वरम्, आगच्छागच्छ, पश्यैते ऽस्माकमाङ्ग्लभाषाध्यापका गच्छन्ति.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिघवस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तो देर नहीं है हौले २ चलो.	तदाहि नातिकालः, शनैः शनैश्चल.
मङ्गलदत्त ! तुम्हारा कल्याण हो बहुत दिनों से पाठशाला में तुम्हारी गैर-हाजिरी का क्या सबब हुआ.	मङ्गलदत्त ! भद्रन्ते, बहुभिर्दिवसैः पाठशालायां तवानुपस्थितेः किं कारणं जातम्.
मिश्र श्यामलाल ! मेरी माता बहुत दिनों से बुखार से पीड़ित थी यही मेरे न आने का कारण था.	मिश्र श्यामलाल ! ज्वरग्रस्तासीन्मदीया माता बहुभिरहोभिः, एतद्धि ममानागमनकारणम्.
क्या कोई और सबरगीरा न था ?	किं कश्चिदन्यो निरीक्षको नासीत् ?
नहीं मेरे पिता तो काशी गये और बड़े भाई कुरुक्षेत्र की यात्रा में.	न, मम पितरस्तु काशीं गताः ज्येष्ठभ्रातरश्च कुरुक्षेत्रयात्रायाम्.
तुम्हारा एक छोटा भाई भी तो है.	एकः कनीयान्भ्रातापि तव विद्यते.
हां, वह तो बालक होने से निगहबानी करने में असमर्थ है.	बाढम्, सतु बाल्यत्वान्निरीक्षणाक्षमः.
अब तुम्हारी वालिदह (माता) कैसे हैं.	अधुना तवाम्बाः कथं विद्यन्ते ?
अब तो ईश्वर (खुदा) की कृपा (फ़ज़ल) है.	अस्तीश्वरानुकम्पा त्विदानीम्.
आज हमारे मदर्से में यह क्या भीड़ है यह पूछ कर जल्दी मुझको खबर दो.	अद्यास्माकं पाठशालायां कोऽयं महाजनसम्मर्द इति पृष्ट्वा त्वरितम् विज्ञापय माम्.
क्या तुम नहीं जानते कि आज कालेज का टूर्नामेन्ट होगा.	किं त्वं न जानास्यद्य आङ्ग्लविद्यालयस्य सादिक्रीड़ा भविष्यति.
इसका मुन्तजिम कौन है ?	कोऽयमस्य निरीक्षकः ?
हमारे मदर्से के हेडमास्टर श्रीमान् महामहिममहोदय अपने अनुचर लोगों को खुदा रखने वाले श्रीमान् कूपरसाहिब हैं.	अस्मत्पाठशालाध्यक्षः श्रीमन्महामहिममहोदयः स्वानुचरानुमोदमदः श्रीमत् कूपराभिधोमहाशयः.
निश्चयही इनका इन्तज़ाम तारीफ़ के लायक है.	खलु प्रशंसनीयोऽस्य प्रबन्धः.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचत्वस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
इनके वक्त में हमारी पाठशाला सब तरह से बहबूदी को प्राप्त हुई.	अस्य समये नः पाठशाला सर्वथोन्नतिं गता.
ऐसे हेडमास्टर जिनके वक्त में हम तालिबइल्म और उस्ताद लोग अपने२ कामों को होशियारी से करते हुए निडर रहते हैं, चिरञ्जीव रहें.	चिरञ्जीवत्वे तादृशोऽध्यक्षो यस्य समये वयमध्यापका विद्यार्थिनश्च स्वकृत्यानि सावधानतया कुर्वाणा निर्भीकाः (अकुतोभयाः) स्मः ।
अब यहुत यातें होली जमनास्टिक का वक्त हो गया.	अलम्बहुभाषणेन; व्यायामसमयो जातः.
वहां जाकर पहिले तो एक कतार में खड़े हो.	तत्र गत्वा पूर्वन्त्वेकस्यामेव पङ्क्त्यामवतिष्ठध्वम्.
तब ड्रिलमास्टर के हुक्म से हरेक दफ़अ कतार में ही अपने२ पढ़ने के स्थानों में जाओ.	ततो व्यायामाध्यक्षानुशातः प्रत्येका कक्षा (श्रेणिः) पङ्क्त्यामेव स्वे स्वेऽध्ययनालये गच्छतु.
इसके बाद विद्यार्थियों से पढ़ना शुरू किया जाता है.	ततोऽध्ययनमारभ्यते छात्रैः.
यह अंग्रेजी का घण्टा है इसलिये हेड मास्टर साहिब के पास चलें.	अस्येका घटिकाङ्गलभाषाया अतः प्रथमाध्यापकसमीपे चलत.
फल संस्कृत और हिसाब में हमारा इम्तहान होगा.	श्वो भविता संस्कृते गणिते चास्माकम्परीक्षा.
देखिये कौन पास होता है कौन फेल.	पश्यन्तु कउत्तीर्णः कोऽनुत्तीर्णो भवेत्.
जो विद्यार्थी अपने मुक़र्रिर किये हुए सबकों को मुक़र्रिरहही वक्त पर नहीं याद कर लेते हैं। उनका पास होना मुश्किल है.	ये विद्यार्थिनः स्वनियतपाठान् नियतसमय एव न स्मरन्ति (कंठस्थान्न कुर्वन्ति) तेषामुत्तीर्णता, दुस्साध्या, (कठिना वा).
इसीसे अक्लमन्द तालिब इल्म को चाहिये कि दिये हुए सबकों को मुक़र्रिरहही वक्त पर याद कर ले.	अत एव विचक्षणश्छात्रः नियतपाठान् नियतसमय एवानुस्मरेत्.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

हिन्दी ।

शक्कमन्द लोग या तालिबइल्म आज के काम को दूसरे दिन के लिये नहीं छोड़ते.

उस्ताद आते ही खड़े हो जाओ.

सब एक दफ़ाही खड़े होते हैं और गुरु को नमस्कार (प्रणाम) करते हैं.

उस्ताद लोग अपने विद्यार्थियों को आशीर्वाद देकर पहिले तालिबइल्मों की हाज़िरी लेते हैं.

इसके बाद पहिले दिन पढ़ाये सुपुर्द सबकों को सुनते हैं.

और लड़के अलग २ सुनाते हैं.

जो ठीक २ सबक नहीं सुनाता वह पिटता और जुर्माना किया जाता है.

आजका उक़्लेदस का सबक बहुत मुश्किल है खुदाही खैर करे.

मणिधर ने फल मेरी पुस्तक चुरालो.

हेडमास्टर साहब ने तहक़ीक़ात करके उसको ऐसा मारा जिससे वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा.

यह हेडमास्टर साहब ने बहुत अच्छा किया.

यह फिर कुछ भी न चुरायेगा.

कृपा और दण्ड दो धर्महीं मालिकों के होते हैं.

संस्कृत ।

बुद्धिमन्तो जनाश्छात्रा वाद्यतनं कार्यं द्वितीयदिवसार्थं न परित्यजन्ति.

अध्यापका आगच्छन्ति अभ्युत्थानमेभ्यो दीयताम्.

सर्वे युगपदेवोत्तिष्ठन्ति गुरुनमस्कुर्वन्ति च.

अध्यापकाः स्वच्छात्रानभिनन्द्य प्रथमं छात्राणां समुपस्थितिं गृह्णन्ति.

तदनन्तरं पूर्वदिवसाध्यापितपाठान् शृण्वन्ति.

छात्राश्च पृथक् पृथक् श्रावयन्ति.

यो यथोक्तपाठं न श्रावयति स देहदण्डमर्थदण्डञ्च लभते (देहार्थदण्डभाग् भवति).

अद्यतनो रेखागणितपाठोऽतीव कठिनः ईश्वर एव कुशलं विदध्यात्.

मणिधरो ह्यो मदीयपुस्तकमचुरत्.

मुख्याध्यक्षो निर्णयानन्तरं तं भृशं तथाताडयद्यथा स निश्चेतनो भूत्वा भूमावपतत्.

शोभनं विहितमेतन्मुख्याध्यक्षैः.

स पुनः न किमपि चोरयिष्यति.

अनुग्रहो निग्रहश्च द्वौ धर्मावेव प्रभूणां भवतः.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचयस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
सालियाने इनआम में पास हुए विद्या-	वार्षिकपरीक्षायामुत्तीर्णेषु विद्यार्थिषु
र्थियों में से पहिले दूसरे इनाम पायेंगे.	प्रथमद्वितीयौ पारितोषिकं लप्स्येते.
मेरा तो तीसरा नम्बर है नहीं तो मैं भी इनाम पाता.	मदीया तु तृतीया संख्या नोचेदहमपि पारितोषिकमलप्स्ये.
मित्र तुम्हारा कौन सा नम्बर है.	मित्र तव कतमा संख्या ?
न मालूम, मगर आज मैं घर से पूछूंगा.	न जाने, परश्वाहमद्य लिखितं (लेखकं) प्रदर्शयामि.
तुम्हारे मदर्से में कितने उस्ताद हैं और वे किस २ जाति के हैं.	तव पाठशालायां कतिपया अध्यापका सन्ति किं किं जातीयाश्च ते.
हेडमास्टर साहब तो यूरप देश के एकही हैं.	मुख्याध्यक्षस्तु यूरुपदेशीयो एक एव.
उनकी क्या तनख्वाह है? ४०० रुपये.	तस्य किं वेतनम्? मुद्राणां चतुःशतम्.
सैकिण्ड मास्टर कौन है? एक ईसाई साहब हैं.	द्वितीयाध्यक्षः कः? खीष्टमतानुयायी- महाशय एकः.
उनकी सौ रुपये तनख्वाह है.	तस्य भृतिर्मुद्राणां शतमस्ति.
थर्ड, फोर्थ, फिफ्थमास्टर कायस्थ हैं वेभी क्रम से सत्तर, पचास, चालीस रुपये पाते हैं.	तृतीयचतुर्थपञ्चमाः कायस्थजातीयाः तेऽपि क्रमात्सप्ततिपञ्चाशच्चत्वारिंशन्मुद्रा लभन्ते.
सिक्स्थ मास्टर साहब गौड़ ब्राह्मण मुखर्जी ज्वालाप्रसाद हैं यह भी ४० रुपये मदर्से से और पचीस रुपये योडिंगहौस सुपरिंटेण्डेण्टी के इस तरह मिला कर ६५ रुपये पाते हैं.	षष्ठोऽध्यापको गौड़वंशीयो महाशयः ज्वालाप्रसादनामा सोऽपि चत्वारिंशन्मुद्राः पाठशालातः पञ्चविंशति- मुद्राश्छात्रनिरीक्षकपदव्या इत्थं मिलित्वा पञ्चषष्ट्यधिकान्मुद्रा लभते.
इसी तरह अपनी अक्ल से बना ले.	इत्थमेव स्वबुद्ध्या परिकल्पयेत्.
संस्कृत फारसी पढ़ानेवाले कितने हैं उनकी तलब (तनख्वाह) भी बताओ	संस्कृतपारसीकभाषाध्यापकाः कतिपयाः तेषां वेतनान्यपि विज्ञापय.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
संस्कृत और हिन्दी के पढ़ानेवाले दो हैं पहिले ३० रुपये, और दूसरे २० रुपये पाते हैं.	अमरमर्त्यवाण्योरध्यापकौ द्वौ, प्रथमस्तु त्रिंशन्मुद्राः द्वितीयश्च विंशतिरूपकाणि लभते.
अरबी फारसी के पढ़ानेवाले दो हैं वे भी क्रम से ३० और पंद्रह रुपया पाते हैं.	अरबपारसीकभाषाध्यापकौ द्वौ तावपि क्रमात् त्रिंशद्दिशतिमुद्राश्च लभेते.
मैं पाखाने जाना चाहता हूं महरबानी कर मुझे हुक्म दीजिये । जाओ देर न करो.	अहं शौचार्थं जिगमिषामि कृपयाऽनुज्ञापयन्तु भवन्तः । गच्छ मा चिरय ।
यह अहाते में कौन पेशाब करता है इसे पकड़ कर यहां लाओ.	कोऽयं परिसरभूमौ (प्र.क्षणे वा) मेहति इमं धृत्वाऽत्रानय.
कोई गाँव का नाचाकिफ आदमी है । अच्छा इससे आठ आने जुर्माने के लेकर और गर्दन पकड़ कर निकाल दो.	अस्ति कश्चिदग्रामीणो ऽनभिज्ञः । वरम् असादष्टाणकान् अर्धदण्डस्यादायार्धचन्द्रं दत्वा च निष्काशय (निस्सारय).
इतनीही सजा काफ़ी है.	एतावानेव दण्डः पर्य्याप्तः.
क्या तू इस बेत से नहीं डरता जो अपना सबक याद नहीं करता.	किं त्वं न बिभेष्यस्माद्वेत्राद्यत्स्वपाठं नानुस्मरसि.
लायक़ तालिबइल्म उस्ताद के कहने कोही बहुत समझते हैं.	सुयोग्याश्छात्रा गुरूणां कथनमेव बहुमन्यते.
खोटे तालिबइल्म गुरु के बचनों को न मान कर पढ़ने से विमुख हुए अनेक तरह के खोटे मार्गों में पड़ कर जिन्दगी भर दुःख पाते हैं.	कुशिष्यास्तु गुरुवचोऽस्यनादृत्याध्ययनात् पराङ्मुखाः सन्तः नानाविधेषु कुमार्गेषु पतित्वा ऽऽजन्माचरन्ति.
अच्छे शिष्य अमृत तुल्य गुरु का वचन मान उनको माता पिता से भी ज्यादह मानते हुए आदर करते हैं.	सच्छिष्या अमृतफलं गुरुवचो मत्वा तं पितृभ्यामपि सविशेषं मन्यमाना आद्रियन्ते.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचयस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
अपनी सिलेट निकाल कर हिसाब और जबरमुक़ाबले के सवाल लिखो.	स्वाश्मपट्टिकां निष्काश्याङ्कगणितबीज-गणितप्रश्नान् लिखत.
मेरे पास तो क़लम काग़ज है.	मत्समीपे तु लेखनीपत्रञ्च विद्यते.
क्या मैं इसी पर लिखा लूं.	किमहमस्योपर्येव लिखानि ?
है तो यह हमारे हेडमास्टर साहब के हुक्म के ख़िलाफ़, मगर आज तेरा क़सूर माफ़ करता हूं.	अस्त्येषस्वाशाभङ्गो ऽस्माकं पाठशाला-ध्यक्षस्य परञ्चाद्य तव दोषं क्षमे (उपेक्षे).
फल जरूर सिलेट हो नहीं तो सज़ा-वार होगा.	श्वो ऽवश्यमेवाश्मपट्टिकास्या नोचेद्-पड्यो भविष्यसि.
बहुत अच्छा । गुरूजी ! दफ्तरी से दवात ले आऊ.	धरम् । गुरवः ! मसीपात्राध्यक्षान्मसी-पात्रमानयानि.
यहां परही दवात है इसे लेलो.	अत्रैव मस्मिपात्रं वर्तते गृह्यतामत्.
इसमें स्याही नहीं है, तो क्या करूं ?	मसिरस्मिन्न वर्तते, तर्हि किं करवाणि ?
गंगाराम भी स्याही देने को मना करता है	गङ्गारामोऽपि मसि दातुं प्रत्याख्याति.
अच्छा, पैन्सिल सेही जल्द लिखो.	धरम्, तूलिकयैव तूर्णं लिख.
लड़कों किताब बन्द करो यह किताब देखने का समय नहीं है.	पुस्तकानि पिधत्त छात्राः नास्त्ययं पु-स्तकावलोकनसमयः.
क्या तुम्हारे सब सवाल ठीक है.	किं तवास्मिलाः प्रश्ना उपपन्नाः (तथ्याः, अन्वितथाः) सन्ति.
हां, तो बीजगणित के सवाल को बोर्ड पर लिखकर अपने दर्जे के लड़कों को दिखला दो । जो आज्ञा.	ओम्, तर्हि बीजगणितप्रश्नं फलके (काष्ठखण्डे) लिखित्वास्मिलान्स्व-वर्गच्छात्रान् प्रदर्शय । यथाज्ञा.
तुम मेंसे नक्शे में कौन ज्यादह होशि-यार है । कृष्णदत्तशर्म्मा.	युष्माकं मध्ये देशालेख्ये कतमोऽतीव निपुणः ? कृष्णदत्तशर्म्मा.
इस दफ़ा में कितने तालिबइलम संस्कृत फारसी के हैं और कितने साइंस और ड्राइङ्ग के.	अस्मिन्वर्गे कतिपया विद्यार्थिनः संस्कृ-तपारसीकभाषयोः सन्ति कतिपयाश्चार्कर्षं (चित्रविद्या) पदार्थविज्ञानयोः ?

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचयस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
ग्यारह सस्कृत के चौदह फारसी के और पांच २ साइन्स ड्राइङ्ग के हैं.	रुद्रसंख्याकाः संस्कृते चतुर्दश पारस्यां पञ्च पञ्चाकंपदार्थविज्ञानयोः.
क्या आठवीं दर्जा में मसाहत है.	किमष्टमकक्षायां मापन विद्यते.
नहीं, यह नयी दर्जा से शुरू कराई जाती है.	न, नत्तु नवमकक्षात आरभ्यते.
अबके सालियाने इम्तहान में तर्जुमा बहुत कठिन था.	इदानीन्तनायां वार्षिकपरीक्षायामनुवादो ऽतीव क्लिष्ट (कठिन.) आसीत्.
पिछले पन्द्रह्स इम्तहान में शिवलाल शर्मा तवारीख जुगराफियह में फेल होगया था.	गतैकोनविंशतिवार्षिकपरीक्षायां शिवलालशर्मेतिहासभूगोलशास्त्रयोरपतत्.
क्या तुम न्याय शास्त्र भी जानते हो? नहीं। विद्या तो पढ़ाने से बढ़ती है और तरह से नहीं	किं त्वं तर्कशास्त्रमपि जानासि ? नो। विद्यात्वध्यापनात्प्रवर्धतेनान्यथा.
मैंने तो दर्शन शास्त्र पढ़ा है.	मया तु दर्शनशास्त्रमधीतम्.
यहां ककार ज्यादह है इसको रबर से मिटा दो.	ककारोऽयमत्राधिकः. एनं घर्षकेण शोधय.
जिन लड़कों का अंग्रेजी और दूसरी जबान का लिखना अच्छा है वे क्लास से बाहर निकल आवें.	येषां छात्राणामाङ्ग्लभाषालिपिर्द्वितीयभाषालिपिश्च मनोहरा ते वर्गाद्बहिरागच्छन्तु.
उनका लेख लिखा कर अठारह्वें महीने की पहिली तारीख को इन्स्पेक्टर साहब के पास भेजा जायगा.	तेषां लेखं लेखयित्वाऽऽगामिनो मासस्य प्रथमतिथावध्यक्षमहोदयसन्निधौ प्रेषयिष्यते.
पिछले इन्स्पेक्शन का क्या नतीजा हुआ? अभी तक कुछ नहीं मालूम पड़ा.	गतनिरीक्षणस्य कः परिणामो जातः? नाद्यावत कश्चिद्बोधोऽधि.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
बहुत से मदर्से हैं जिनका य-दोबस्त मैनेजर द्वारा होता है.	बहवः पाठशालाः सन्ति यासां प्रणयनम् (अधिष्ठानं । व्यवस्थापनं । प्रवर्तनं) प्रणेतृद्वारा भवति.
अब हमारे डाइरेक्टर कौन हैं.	इदानीं (सम्प्रति) कोऽस्माकमधिष्ठाता [शासिता वा].
श्रीमान् महोदय लूइस साहब.	श्रीमन्महोदया लूइसमहाशयाः.
उस्तादों के लिये शिष्य का क्या फ़र्ज़ है.	गुरुन्प्रति शिष्यस्य किं कर्तव्यमस्ति.
जो मन से वाणी से कर्म से गुरुओं के भक्त हैं वेही अच्छे शिष्य हैं और नहीं.	ये मनसा वाचा कर्मणा गुरूणां भक्ताः त एव सच्छिष्या नेतरे.
गुरू भी ऐसे आजिज़ अच्छे शिष्य को बेटे बराबर जान कर हमेशा उस को अच्छी नसीहत दे और हितकारी वचन बोले.	गुरुरप्येतादृशं विनयोपेतं सच्छिष्यम् पुत्रवज्ज्ञात्वा सदैव तस्मै सुशिक्षां दद्यात् हितकरं वचश्च ब्रूयात्.
बी. ए. इम्तहान में कै मज़मून हैं ? छै.	सन्ति कति विषया बी.ए.परीक्षायाम् षट्.
आजकल के घमंडी तालिबइल्म थोड़ी भी विद्या पढ़ कर गुरुओं को कुछ नहीं समझते.	अधुनिकाः सदर्पाश्छात्रा अत्यल्पामपि विद्यामधीत्य गुरुनवमन्यन्ते.
ऐसों का क्या नतीजा होता है ?	कः परिणामो भवत्येतादृशाम् ?
दुनियाँ में सुख न मिलना और अख़ीर में नरक में पड़ना.	संसारे सुखानुपलब्धिरन्ते निरयपातश्च.
इन्द्र पढ़नेवाला और बृहस्पतिजी पढ़ानेवाले और हज़ार दिव्य वर्ष तो भी विद्या की थाह न पाई । विद्या तो ऐसी है.	इन्द्रश्चाध्येता बृहस्पतिश्च प्रवक्ता दिव्यं वर्षसहस्रं तदापि नान्तं जगाम विद्यायाः । विद्या त्वेतादृशी.
जो थोड़ी भी विद्या पढ़कर अभिमान करते हैं वे मूर्ख हैं.	ये स्वल्पामपि विद्यामधीत्याभिमन्यन्ते ते मूर्खाः.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तुम्हारी बैठक में बहुत सी तख्तियें हैं वे तुमने कहां से पाईं.	युष्माकं सत्कारालये बहूनि आलेख्यानि सन्ति श्रुतस्त्यया तानि लब्धानि.
क्या तुम्हारे पास डायरी है.	किमस्ति तव समिधौ दैनिकवृत्तपुस्तकम्.
है तो, परन्तु मैं उसे काम में नहीं लाता. चाकू लाने के लिये किसी नौकर को हुक्म दो.	अस्तितु; परञ्चाहं तत्र प्रयुनज्मि. क्षुरानयनार्थं कञ्चिद्भृत्यमाज्ञापय.
अच्छा; नये तालिबइल्मों (मुफ्तदियों) के लिये दिली हिसाब बहुत फ़ायदे मन्द होता है.	यत्, नवच्छात्रेभ्यो मानसिकोऽङ्कगणितो ऽतीवोपयोगी भवति.
तुम भी अपने छोटे भाई को इसे पढ़ाओ.	त्वमपि स्वकनिष्ठभ्रातरमेनमध्यापय.
हमसबकों के साथ हमेशा मेल से रहो.	स्वाध्यायिभिः सह सदैव सम्मेलनेन वर्तध्वम्.
हमारे मदर्से में हर रोज़ शाम को गेंद का खेल और कसरत होती है, अच्छा, कसरत की जगह मुझे भी दिखाओ.	अस्माकं पाठशालायां प्रतिदिनं सायंकाले कन्दुकक्रीड़ा व्यायामश्च भवति । चरम्, व्यायामभूमिं मामपि प्रदर्शय.
यहां कितने विद्यार्थी जमनास्टिकवाले हैं ? चवालीस लड़के.	तत्र कति च्छात्रा व्यायामशीलिनः (सेविन.) सन्ति चतुश्चत्वारिंशच्छात्राः.
क्या ये सबही बोर्डिङ्गहौस में रहनेवाले हैं ? नहीं.	किमखिला एव ते छात्रालयनिवासिनः ? न.
शहरी और बोर्डर दोनों की ये तादाद है.	नागराणां छात्रालयाध्येतृणाञ्चैतयोरेषा संख्या.
तू बोट होगया वहां मुझे दे.	त्वं घाटोऽभव. कन्दुकमपि मां प्रयच्छ.
क्या तू गुजराती और बङ्गाली भी जानता है.	किं त्वं गुर्जरभाषां बङ्गभाषामपि वेत्सि.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
पहिली तो जानता हुं दूसरी नहीं.	प्रथमान्तु जानामि न द्वीतराम्.
यह्काली ज़बान तो संस्कृत जाननेवाले को बहुत आसान है क्योंकि उसमें अक्सर संस्कृत शब्दही इस्तेमाल किये जाते हैं सिर्फ बोलने में फ़र्क है.	यवनभाषा तु संस्कृतशस्यातीव सुलभा, यतस्तस्यां प्रायः संस्कृतशब्दा एव प्रयुज्यन्ते केवलं भेदस्तूच्चारणे.
क्या तुम्हारे मदर्से में भी कभी व्याख्यान होता है.	किम् युष्मदीयायां पाठशालायामपि कदापि व्याख्यानम्भवति.
होता है शनैश्चर को.	भवति तु शनियासरे.
व्याख्यान देनेवाले कौन हैं ? हमारे देह पण्डित.	व्याख्यानदाता कः ? संस्कृतग्रथमाध्यापको नः
इन लैक्चरों का कुछ नतीजा भी है.	अस्तिकश्चित्परिणाम एषां व्याख्यानानाम्.
ठीक २ नहीं क्योंकि आज कल के बहुत से मन्दबुद्धि धर्मोपदेशों को तो जल्दीही अपने मन में रख लेते हैं न कि धर्म युक्त उपदेशों को.	नास्ति याथातथ्येन, यत आधुनिको बहवः क्षुद्रबुद्धयो धर्मोपदेशान्तु झटित्येव स्वमनस्सु धारयन्ति न च धर्मोपेतान्.
यह ठीक है । यह महाराज कलियुग का प्रभाव है.	सत्यमेतत् । अस्त्येषः प्रभावः महाराजस्य कलेः.
विद्यार्थी दशा में हमेशा अपने बेटे इत्यादिक के सदाचार की रक्षा करे क्योंकि यह बड़ी हालत है.	छात्रावस्थायां स्वपुत्रादिवृत्तं सदैव गोपायेत् यत एषा ऽपक्वावस्था.
इस उम्र में सीखे हुए सदाचार या दुराचार जीवन पर्यन्त सुख दुःख देते हैं.	अस्यामवस्थायां शिक्षितानि सद्वृत्तानि असद्वृत्तानि वा यावज्जीवं सुखदुःखे प्रयच्छन्ति.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचयस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
जैसे कच्ची लकड़ी इधर उधर नवाई जाती है और सूखी लकड़ी नहीं वैसेही हालत बालकों की होती है.	यथाऽपक्वः काष्ठ इतस्ततो नम्रीक्रियते (नाम्यते) नच शुष्ककाष्ठस्तथैव दशा बालानाम्.
तुम्हारी दफ़्अ की क्या फ़ीस है.	किमस्ति शुल्कं तव कक्षायाः.
ढाई रुपया.	सार्धरूपकद्वयम्.
इम्तहान के पर्चे छपाई के लिये धन कहां से आता है। लड़कों के चंदे से.	परीक्षापत्राणां मुद्रणार्थं व्ययः कुत आयाति ? छात्राणामंशदानात्.
तुम्हारे मदर्से में इम्तहान के पर्चों का क्या इन्तजाम है.	परीक्षापत्राणां कः प्रबन्धस्तव पाठशालायाम्.
वे हाथ के छापे (हैंड प्रेस) से यहीं छप जाते हैं.	तानि तु हस्तमुद्रणयन्त्रादत्रैव मुद्रितानि भवन्ति.
क्या तुम्हारे मदर्से में उस्ताद लोग अपने क्लास रजिस्टर अलग २ रखते हैं या कुल मदर्से का एकही रजिस्टर है.	किमध्यापकास्तव पाठशालायां स्वस्वगंलेख्यानि पृथक् पृथक् रक्षन्त्यथवा एकमेव लिखनस्थानं समग्रायाः पाठशालायाः.
तुम्हारे शहर में कोई कालिज है ?	अस्ति कश्चिद्विद्यालयस्तव पत्तने ?
है तो एक मुसलमानों का.	अस्ति त्वेको यवनानाम्.
यहां कौन प्रिन्सिपिल, साहब, और कौनरियाज़ी (हिसाब) के प्रोफ़ेसर हैं.	कस्तत्र प्रिन्सिपलमहाशयो गणिताध्यापकश्च.
अंग्रेजी विद्यारूपी समुद्र के पारगत दयालु मिस्टर मारिसन नामक साहब प्रिन्सिपिल हैं.	अस्त्याङ्ग्लविद्यापारावारपारीणो दयालुर्मिस्टरमारिसनाभिधोमहाशयः प्रिन्सिपिलः,
हिसाब के प्रोफ़ेसर तो श्रीमान् महा मताषी, करुणार्द्रचित्त, कोमलवाणी वाले गणित विद्यारूपी समुद्र के पारंगत, श्रीमान् यादवचन्द्र चक्रवर्ती नामक बङ्गाली महाशय हैं.	गणिताध्यापकस्तु श्रीमन्महामहिमहोदयः करुणार्द्रचेताः कोमलवाक् गणितविद्याकूपारपारङ्गता-श्रीमद्यादवचन्द्रचक्रवर्त्याख्यो बङ्गदेशीयो महाशयः.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचयस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
ऐसेही और भी उस्ताद लोग यहां लायक़ हैं ? अच्छा.	इत्थमन्येऽप्यध्यापकास्तत्र सुयोग्याः। वरम्.
संस्कृत के प्रोफ़ेसर का क्या नाम है?	संस्कृताध्यापकस्य किं नाम ?
संस्कृत-विद्या रूपी समुद्र के पारगामी षट्कर्म सावधान, इलाहाबाद निवासी श्रीमान् परम विद्वान् शिवाशंकरजी हैं.	अमरवाग्विद्याणंवपारकृतः षट्कर्मवृत्तचेताः प्रयागनिवासी श्रीमत् परमविद्वद्वर्यः शिवाशंकर इति.
तुम्हारे मदर्से में माहवारी फ़ीस एक ही दफ़ाने में भेजी जाती है अथवा दो इन्स्टालमेण्ट [हिस्सों] में.	तत्र पाठशालायां मासिकशुल्कमेकदैव कोषे प्रेष्यते ऽथवा द्वयोरंशयोः.
एक बारही। मोहनदत्त अपने दर्जे का रजिष्टर जल्दी लाओ.	एकदैव । मोहनदत्त स्वयर्गलेख्यं तूर्णमानय.
वह कहां है । गंगाराम को पूछो या नन्हेखाँ चपरासी को.	तत्तु कुत्र वर्तते । गङ्गारामं पृच्छाथवा नन्हेखाँमिधं भृत्यम्.
वे दोनोंही नहीं मिलते हैं । वे दोनों कहां गये पहिले उन्हीं को ढूंढो.	तावेव न मिलतः । तौ कुत्र गतौ प्रथमं तावन्विष्य.
हमेशा मेरे पते से चिट्ठी भेजो.	सदैव मामुद्दिश्य (दत्तमठाह्वनाम) पत्रं प्रेषय (प्रहिणु).
यह लड़का आठवीं दफ़्त में भर्ती होना चाहता है.	छात्रोऽयमष्टमकक्षायामभिविशति.
इससे फीस लेकर इसका नाम अपने क्लास रजिष्टर में लिख लो.	अस्माच्छुल्कमादायास्याभिधं स्वयर्गलेख्ये लिख.
यह हिसाब और अंग्रेज़ी में इस दफ़ा के नाक़ाबिल है.	पत्रस्तवयोग्योऽस्य वर्गस्य गणिताङ्गलभाषयोः.
अगरच्च यह नाक़ाबिल है तो भी इसकी कमज़ोरी बोर्डिङ्गहौस में रहने से दूर हो जायगी.	यदि चायमयोग्यस्तथाप्यस्यायोग्यता छात्रालयनिवासादूरीभविष्यति.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचत्वारिंशत् ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
यह तालिबइल्म किस नाम का है ।	किन्नामायंछात्रः । यद्वीप्रसाद इति.
बद्रीप्रसाद.	
इसके बाप का क्या नाम और क्या पेशा है ?	किन्नामास्य पितुः काच वृत्तिः ?
बाप का नाम गोपालदत्त, और सूद की जीविका है.	गोपालदत्तः पितुर्नाम, वृद्ध्याजीविका (कुसीदत्व) वृत्तिः ।
पहिले इसने किसी सर्कारी मदर्से में भी पढ़ा है.	पूर्वमनेन कस्यामपि राजकीयपाठशालायामधीतम्.
किसी भी सर्कारी मदर्से में नहीं मगर यहां पर्ही एक पब्लिक नाम के प्राइवेट मदर्से में.	न कस्यामपि राजकीयपाठशालायाम् परञ्च पब्लिकनाम्न्यामराजकीयपाठशालायामत्रैव.
तो इसका दाखिला जाँच के बाद होगा.	तर्ह्यस्य प्रवेशः परीक्षानन्तरं भविष्यति.
बोर्डिङ्गहौस का माहवारी खर्च बताओ.	छात्रालयस्य मासिकव्यय उच्यताम्.
३) रु० तो खाने में ४) रु० फुटैल खर्च में पड़ते हैं । यह तो मामूली खर्च है.	तिस्रो मुद्रास्तु भोजने चतस्रो मुद्रास्त्वतिरिक्तव्यये वियन्ति । एष तु साधारणो व्ययः.
चौथी दफअ के पास हुए बिना सर्कारी मदर्से में दाखिला नहीं होता यह कायदा अब भी है या नहीं.	चतुर्थं कक्षोत्तीर्णसां विना राजकीयपाठशालायामप्रवेश इति नियमोऽद्यापि वर्तते न वा.
यह कायदा टूट गया.	स नियमो निरस्तः खण्डितो वा.
तुम्हारा मदर्सा कब खुलेगा.	युष्माकं पाठशाला कदाऽपावरिष्यते (उद्घटिष्यति) ?
इस हफ्ते के अख़ीर में । तबही अपने भाई को लाऊंगा.	अस्य समाहरस्यावसाने । तदैव स्वभ्रातरमानेष्यामि.
इम्तहान का वक़्त बहुत क़रीब है इस लिये इन दिनों में ख़ूब पढ़ो.	परीक्षासमयस्त्वतीव समीपोऽतः सम्यक् अधीष्वैतु दियसेषु.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचयस्तूनि ।

हिन्दी।	संस्कृत।
दिये हुए इम्तहान में तुम पास होगे या नहीं.	दत्तायाम्परीक्षायां त्वमुत्तीर्णता भविष्यति नवा.
आशा तो है परञ्च नतीजा तो ईश्वराधीन ही है.	आशास्ते त्वहं परञ्च फलन्तु दैवाधीनमेव.
बोर्डिङ्गहौस में खाने का इन्तजाम अच्छा नहीं है.	छात्रालये भोजनप्रबन्धो न प्रशंसनीयः.
कभी दालही स्याह नहीं होती कभी रोटीही मोटी और कच्ची होती है.	कदापि छिद्रलेव सुस्वादुर्न भवति कदापि करपट्टिका एव स्थूला अपक्वाश्च भवन्ति.
यहां कोई अचम्भा नहीं है सभी बोर्डिङ्गहौसों में मैंने ऐसाही खाने का इन्तज़ाम देखा है.	न किञ्चिदत्राद्भुतं प्रायशः सर्वेष्वेव छात्रालयेष्वेतादृश एव भोजनप्रबन्धो मया दृष्टः.
चाहे जैसा हो तो भी यहां खाने का इन्तजाम और बोर्डिङ्गहौसों से अच्छाही है.	यथाकथञ्चित्स्यात्तथाप्यत्र भोजनप्रबन्धोऽन्येभ्यश्छात्रालयेभ्यः श्रेयानेव.
आज बहुत से नये तालिबइलम दाखिले के लिये आरहे हैं.	अद्य बहवो नव्याश्छात्राः प्रवेशार्थमागच्छन्ति.
हां। जैसे आरहे हैं तैसेही बहुतों के नाम भी खारिज होंगे.	ओम्। यथागच्छन्ति तथा बहूनां नामान्यपि पृथग्भविष्यन्ति.
तुम्हारा निवास स्थान [दौलतख़ाना] कहां है.	तव निवासस्थानं कुत्रास्ति ?
विजयपुर नाम के गाँव में। अपना भी निवास स्थान बताओ.	विजयपुराभिधे ग्रामे। स्वनिवासमपि कथय.
मैं तो अलीगढ़ शहर में रहता हूं.	अहन्तु अलीगढ़ाभिधे नगरे (पत्तने) वसामि.
आज बहुत से बादल आसमान को घेरे हुए हैं।	अद्य बहवो मेघा आकाशमाच्छादयन्ति.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचयवस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
फल मेह बहुत उपयोगी वस्तु है.	हो मेघस्तवतीवोपयोगी वृष्टः.
वह स्कूल यहां लाओ । लाता हूं भाई.	काष्ठपीठमहोऽत्रानय । आनयामि भ्रातः.
क्यों चक्कर खाता है इस सवाल का और कायदा है.	किमर्थं भ्राम्यसि अस्य प्रश्नस्यान्या रीतिः.
जो तालिबइलम फल देर करके आये थे उनको आज हेडमास्टर धुला कर डाटेंगे.	ये विद्यार्थिनो ह्यो घेलानिकमं विधायागतास्तान्मुख्याध्यक्षो ऽद्याकार्य्यं सन्तोषयिष्यते.
गोविन्द जितना धन कमाता है उतना खो देता है.	गोविन्दो यावद्धनमर्जति तावद्भ्रमयति.
हमको यह तौहारों की छुट्टियां खेल में ही गुजरती मालूम होती है.	अनध्यायमहोत्सवं खेलन्तः सम्भावयाम.
कोई मुझे जगह दीजिये यह मेरी प्रार्थना है और यह मेरी सनद देखिये.	कश्चित्संश्रयो मह्यं दीयतामित्यभ्यर्थना मदीया । इदञ्च प्रमाणपत्रमपीक्ष्यताम्
हमारे दर्जे में तो कृष्णदत्त अच्छे अक्षर लिखता है.	कृष्णदत्तोऽस्माकं श्रेष्यान्तु समीचीनान्यक्षराणि लिखति.
छात्रों से अपना पाठ रोज पढ़ लेना चाहिये नहीं तो भूल दिया जाता है.	छात्रैः स्वाध्यायो नित्यमध्येतव्यो नो चेद्विस्मार्यते.
गोपालदत्त मदर्से में आकर और छुट्टी न लेकरही चला गया था इसीसे हमारे हेडमास्टर साहब ने वह बेतों से मारा.	गोपालदत्त पाठशालामागत्यावकाशमगृहीत्वैव गतोऽत एवास्मदध्यक्षेण स वेत्रैस्ताडितः.



बारहवां अध्याय—द्वादशोऽध्यायः ।

भोजने इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषाः ।

हिन्दी।	संस्कृत ।	हिन्दी।	संस्कृत ।
नाज	धान्यम्, शस्यः, व्रीहिः (पुं०)	लोभिया	शिंबिकः.
गेंहू	गोधूमः, सुमनः (पुं०)	तिल	तिलम्.
जौ	यवः, यवेटः.	जई	यवभेदः
चना	चणकः, पाजिमन्थः.	आम	आम्रः, रसालः-लम्, चूतः.
मटर	तुवरी, वर्तुलः, फलायः, हरेणुः त्रिपुटः.	नीबू	जम्भीरः, दन्तशठः.
अरहर	आढकी.	बेर	कर्कन्धूः, बदरीफलम्.
मसूर	मसूरः, मङ्गल्यकः.	बिजौरा नीबू चकोतरा	बीजपूरः.
धोवा दाल	सूपः, काञ्चनसूपः.	राई	राजिका.
दाल	छिवला.	खटाई	अम्लता, अम्लरसः.
उरद	माषः.	घृत	घृतम्.
मूंग	मुद्गकः.	करौंदा	करमर्दकम्.
मोठ	मकुष्टः.	केला फली	कदलीफलम्.
कोदों	कोद्रवः	परवर	पटोलकम्.
चावल	अक्षतम्, तण्डुलः.	अमरूद	अमृतफलम्.
भात	भक्तम्, ओदनः-नम्.	खीरा	त्रपुसम्.
प्याल	नीवारः.	इमली	अम्लिका, चिञ्चा, तिन्तिड़ी.
माड़	मण्डम्.	अनार	दाड़िमफलम्, दाड़िमम्.
सरसों	सर्षपः, तन्तुभः.	नारंगी	नारङ्गः, नागरङ्गः, नादेयी, नारङ्गफलम्, भूमिजम्बुका
मक्का	शस्यम्.	लोकाट	लवकटम्, कोमलवल्कला.
ज्वार	जुर्णली.	अङ्गूर	द्राक्षा, मृद्वीका.
बाजरा	अणुः, प्रियङ्गुः	पिण्डी	क्षीरिकाफलम्.
काँगनी	कङ्गुः.		

भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
आलू रतालू	आलुकः-कम्.	मूली	मूलिका, काथली.
ककरू	कर्कारुः.	यँगन	वृन्ताकम्.
ककड़ी	कर्कटिका.	गाजर	गृञ्जनम्.
फूट, खरबूजे	घिर्मटिका.	मिर्च	मरीचम्, कलकम्.
तरबूज	तरम्बुजम्, कालिङ्गम्, कलिङ्गकम्.	बनकरेले ककोड़े	कर्कोटकम्, कुष्मलः.
काशीफल	कूष्माण्डम्, कर्कारुः.	कचनार की कली	काञ्चनारोद्भवाः कलिकाः.
फालसे	परूषः.	जमीकन्द	सूरणकम्.
कद्दू	तुम्बी.	करेले	कारवेल्लम्.
मेथी का साग	मेथिका शाकम्.	तोरई	कोशातकी, दीर्घफला.
नारी का साग	नाडिकाशाकम्.	बथुआ	वास्तुकः.
पालक	पालक्या.	भिंडी	भिण्डिका.
घौलाई	मेघनादः.	घड़हल	लकुचः-चम्.
कुलफा	कुलथी.	घुँटया	आरण्याकाः.
सेम्द	चित्रफलम्.	सैम	सिम्बः.
कैत	कपित्थः, दधित्थः दधिफल	गोभी	गोजिह्वा.
सिंघाड़े	शृङ्गाटः.	जंभीरानीबू	जम्भीरम्.
प्याज	पलाण्डुः, सुकन्दकः.	कढ़ी	काथली, काथिता.
लहसन	लशुनम्, रसोनकः.	बड़ी	माषवटी.
टिण्डे	डिण्डिसम्.	मंगौरी	मुद्गवटी, माषरङ्गी.
कमरख	कर्मरङ्गः-ङ्गम्.	बड़े	वटकाः
जामुन	जम्बुः-बु (म्बो)जम्बुफलम्· जाम्बवम्.	काँजी के बड़े	काञ्जिकवटकाः.
		छुहारे	शुष्कखर्जूरः.
		बादाम	वादामम्.

भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः ।

हिन्दी।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
अखरोट	अक्षोट'-टम्.	मुरब्बा	रागखाण्डव'.
दाख	शुष्कद्राक्षा, गोस्तनी.	चिलुआ	चिर्भटम्.
गोला	नारिकेलफलम्.	आचार	सन्धितम्, सन्धानम्, सन्धितद्रव्यम्.
चिरौंजी	वरस्कन्धः.	चटनी	अवलेहः. —
चिलगोजा	पद्मबीजाभम्, पानीयफलम्.	शकरपारे	शर्करा-पाल.-पालिका.
मखाने	निकुचः-चम्.	मठरी	मण्ठः.
मसाले	वेसवार..	सैमई	सेविकाः
पापड़	पर्पटाः. —	भाँग	मातुलानी, भङ्गा. —
भर्ता	भरता.	दूध	दुग्धम्, पयः [न०] क्षीरम्
परामठा	पोलिका.	खीर	पायसम्.
पूरी	पूलिका, शष्कुली. —	दही	दधि [न०]
रोटी	करपाट्टिका.	छाछ	तक्रम्.
बाटी	अङ्गारकर्कटी.	घी	सर्पिः [न०] आज्यम्, घृतम्.
चेढ़ई	चेढमिका, मापगर्भा.	तेल	तैलः, अनाज्यम्.
पन्ना	पानकम्.	पेड़ा	पेडा, पीडिका.
सिखरन	शिखरणी.	बरफी	बरफी, चक्रिका.
लौनी, मक्खन	नवनीतम्, हैयङ्गवीनम्. —	लड्डू	मोदकः.
सत्तू	सक्तु'.	फैनी	फेनिका.
बोहरी	धाना.	जलेबी इमरती	कुण्डलिका. —
चिरवा	पृथुकाः.	खजला	खाजा.
खीलें	लाजाः, भर्जितव्रीहयः	बालूसाई	मिष्टमण्ठ . —
होरा	होलकः	लपसी हलुआ	लप्सिका.
गरम मसाला	सौरभम्. —	मालपूआ	मल्लपूपः, पूपसम्. —
साठी चावल	षष्टिका.		

भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
गुँधना	संयावकम्.	रसोईया	सूदः, पाचकः, सूपकारः.
गुलायजामन	दुग्धपूपिका.	अचार-डालना	उपस्कृणोति-णीते, सं-दधाति, धत्ते.
घेवर	घृतपूरः	राँधना	रध्यति.
रायता	दाधेयम्.	उबालना	उत्कथति, पचति, भाति.
ताहरी	तापहरी.	सूखना	शुष्यति, शोषंयाति, शोषयति.
खिचड़ी	एलारा.	सुखाना	भनक्ति, खण्डयति.
गुड़	गुडः.	तोड़ना	लिखति.
पोदीना	अजगन्धः.	लिखना	यि स्मरति, स्मृतेः-भ्रंशते, भ्रदयति.
शक्कर, बूरा	पार्करा, सिता, खण्डविकारः.	भूलना	
गन्ना	इक्षुकाण्डम्, इक्षुः, एलालः	पकना	पचति.
शँवरसे	इन्दुरसाः.	पकाना	पाचयति.
शहद	मधु [न०] क्षौद्रम्, सारघम्,		

हिन्दी ।	संस्कृत ।
अन्नही मनुष्यों का ज्यादह भोजन का हिस्सा है. अन्नों को सुनो—गँहू, जौ, चना, मटर, साठी चावल, चावल, मक्का, जवार, बाजरा, लोभिया, कांगनी वगैरह होते हैं। इनमें चावल और गँहू अक्सर धनवानों का भोजन है और सब साधारण लोगों का. जिनकी दाल खाई जाती है उन नाजों के नाम भी कृपा कर आप कहें.	धान्यमेवाधिको भोजनांशो मनुष्याणाम्. धान्यानि शृणु-गोधूमो यवश्चणको बर्तुलः [कलायः] पष्ठिका, अक्षतः शाल्यं तुवरी, प्रियङ्गुः शिम्बिकः कङ्गुरित्यादीनि सन्ति। एतेषु-तगोधूमौ प्रायो धनिनां भोजनमन्यदखिलं सामान्यानाम्— येषां दिदला खाद्यते तेषां धान्यानां नामान्यपि कृपया ब्रुवन्तु भवन्तः.

भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः।

हिन्दी।	संस्कृत।
मटर, अरहर, मसूर, उरद, मूँग, मोठ, चना वगैरह की धुली दाल और सतू- री दाल भी अक्सर मनुष्य खाते हैं.	तुवरी, आढकी, मसूरो माषो मुद्गको म- कुष्टश्चणक इत्यादीनां काञ्चनसूपं म- नुष्या छिदलाश्चापि प्रायोजना·दन्ति.
क्या कोदों भी मनुष्य खाते हैं। नहीं.	किं कोद्रवमपि मनुष्याः खादन्ति। न.
तिल का तेल जाड़ों में सरसों का गरमी में हितकारी होता है.	तिलस्य तैलं शिशिरे, सर्षपस्य ग्रीष्मे पथ्यम्भवति.
शाग कितनी तरहके हैं उनके नाममी वर्णन करो.	कतिविधाः शाकास्तेषां नामान्यपि- वर्णयतु.
आलू, अरवी, ककड़ी, काशीफल कद्दू, मेथी, नारी कासाग, पालक, चौ- लाई, कुलफा, परवर, प्याज, टिण्डे मूली, बैंगन गाजर, फकोड़ा वथुआ फचनारकी कली, जमीकन्द, करेले तोरई, गोभी इत्यादि बहुतसे शाग होते हैं.	आलुका, आरवीकाः, फर्कटिकाः, कूष्मा- पण्ड, तुम्बी, मेथिका, नाडिका, पालक्या, मेघनादः, कुलत्थी, पटोलकं, पलाण्डुः डिण्डिसं, मूलिका, वृन्ताकं, गृञ्जनं, कर्कोटकं, वास्तुकः, काञ्चनारोद्भवाः कलिकाः, सूरणकं, कारवेल्लं, कोशातकी गोजिह्वेत्यादयो बहवः शाकाः सन्ति.
हरी मिर्च और करौंदों में राई ज़रूर डालो.	हरिन्मरीचेषु करमर्दकेषु च राजिकाम- वश्यं प्रक्षिप।
दो पैसे का आचार ले आओ.	द्वयोस्ताम्रखण्डयोः सन्धितद्व्यमान्या
इस साल तुमने आम का अचार डा- ला या नहीं। डाला तो है.	अस्मिन्वर्षे त्वयाम्रस्य सन्धितं सन्धानं (उपस्कृतं) नवा। सन्धातन्तु.
अब आप फलों को बयान करें.	अधुना फलान्याख्यान्तु भवन्तः।
अच्छा। गिनो, आम, जँभीरा, बेर, सेंव, बिजौरा, शहतूत, केला, केत, अनार, नारंगी, इम्ली, अंगूर, कसे- रू, खिरनी, फूट, तरबूज, खीरा, सिंघाड़े जामन इत्यादि बहुत से होते हैं.	वरम्। गणय, आम्रो जम्बीरः कर्कन्धू- बिल्वफलं, बीजपूरस्तूतं कदली- फलं, कपित्थोदाडिमो, नारङ्गः अ- म्लिकाफलं द्राक्षा कसेरुः, क्षीरिका चिर्भटिका, तरम्बुजं, त्रपुसं, शृङ्गाटो जम्बूफलमित्यादीनि बहूनि सन्ति।

भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
हे रसोईयेजी आज तो कहीं से तोड़ सहित दही वा मट्ठा लाकर धरो। करो। अच्छा.	सूपकाराद्य दिने तु कुतोऽपि समल· दधि तक्रं वानीय कथितां कुरु। वरम.
कल तैंने क्या रांधा था ?	ह्यः (गतेह्नि) त्वया किं रन्धितम् ?
मंगौरी और उरदी.	मुद्गवट्यो माषवट्यश्च.
कल तो दही के बड़े और कांजी के बड़े करो। जो आज्ञा.	श्वस्तु दधिवटकान् काञ्जिकवटका न्कुरु। यथाज्ञा.
धोया दाल और शाग के लिये मसाला पीसो ऐसी आज्ञा नौकर को रसोईया देता है.	सूपार्थं शाकार्थञ्च वेसवारं पिष्ढोत्या· ज्ञापयति भृत्य सूदः.
दो आने के पापड़ लाओ.	द्वयोराणकयोः पर्पटानानय.
बैंगन का भर्ता अच्छा, हितकारी और ठण्ढा होता है.	वृन्ताकस्य भर्ताहोमन (सुस्वादु) पथ्यं शीतलञ्च भवति.
और भी खाने की चीजों के नाम बताओ.	अन्येषामपि भोज्यपदार्थानां नामानि ब्रूहि.
परामठे, पूरी, रोटी, घाटी, मटरी ताहरी, खिचड़ी कचौड़ी इत्यादि.	पोलिका, शुष्कुली, करपट्टिका अङ्· गारकर्कटी, मण्ठः, तापहरी, कशरा, खेटामिक्केत्यादीनि.
अब मिठाइयों को भी कहो.	अधुना मिष्टान्नान्यपि कथय.
लड्डू, फैनी, अन्दरसे, जलेबी इमर्ती, खीर, लप्सी [हलुआ], मालपूआ, मूँहगी, गुलाबजामन, घेवर, शक्कर, बूरा गुड पेड़ा बरफी इत्यादि पदार्थ होते हैं.	मोदकः, फेनिका, इन्दुरसाः, कुण्डालिकाः पायसं, खाजा, लप्सिका, मालपूपः, संयावः दुग्धपूपिकाः, घृतपूरः, शर्करागुडः पीडिकाचक्किकेत्यादिपदार्थाः सन्ति.
शक्कर वगैरह ईख के गन्नों से पैदा होती है.	शर्करादय इक्षुकाण्डेभ्य उत्पद्यन्ते.

भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
सेमई घी और शक्कर से ही गरिष्ट नहीं होतीं इनके विना गरिष्ट होती हैं.	सेविकाः सर्पिषाशर्करैरेवागरिष्ठा अन्यथा गरिष्ठाः.
हे मा ! इस कटोरे में मुझको कुछ दूध दे । देती हूं बेटा.	अस्मिँश्चषके मां किञ्चिद्दुग्धं देहि मातः । ददामि वत्स.
अब पिये जाने वाले पदार्थ सुनो । पन्ना, सत्तू, शिखरन, दूध वगैरह:.	पेयपदार्थान् शृणु । पानकं, सक्तुः, शिखरिणी दुग्धमित्यादयः.
दो पैसे का दूध मीठा लाओ.	सदार्धकं दुग्धमानय द्वयोस्ताम्रखण्डयोः ।
लौनी, शहद, चटनी वगैरह लेह्य पदार्थ हैं.	नवनीतं, क्षौद्रं, अवलेह इत्यादयो लेह्याः.
चाबने योग्य पदार्थ जैसे बोहरी, खील चिरवा, होले, भुनेचने, चिलवा इत्यादि हैं.	चर्व्याःयथा धानाः, लाजाः, पृथुकाः, होलकाः, सष्टचणकाः, चिर्भटप्रभृतय सन्ति.
अब सूखे फलों को वर्णन करूंगा.	अथ घनानि कोऽर्थः शुष्कफलानि वर्णयिष्ये.
छुहारे, बादाम, अखरोट, किशमिश, गोला, वगैरह होते हैं.	शुष्कखर्जूरः, बादामं, अक्षोटः गोस्तनी नारिकेलफलमित्यादीनि सन्ति.
ऊपर कही चीज़ों मेंसे आधा २ सेर संजोये के लिये खरीद लो.	उपरोक्तेष्वर्धमर्धं सेटकं विवाहप्रदिन्यै क्रीणीहि.
यह फल कच्चा है इसको न तोड़ो.	शलाछिदं फलं भक्षिष्यतेनत्.
आज फल कौन २ से शाक बाज़ार में मिलते हैं । बैंगन वगैरह बहुत से.	अद्यत्वे कानिकानि शाकानि विपणौ मिलन्ति । वृन्ताकादीनिबहूनि ।
इन फलों के नाम किसी कागज़ पर लिख कर मुझे दे दो नहीं तो मैं भूल जाऊंगा.	एतेषां फलानां नामानि कस्मिंश्चित्पत्रे लिखित्वामां देह्यन्यथाहं विस्मरिष्यामि ।

तेरहवां अध्याय—त्रयोदशोऽध्यायः ।

सम्बन्ध जनानेवाले शब्दों का वर्णन—सम्बन्धद्योतकाः शब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
बाप	पिता, जनकः.	बाबा	पितामहः.
मा	माता, जननी, अम्बा.	परबाबा	प्रपितामहः.
बेटा	पुत्रः, सूनुः, आत्मजः.	बृद्ध पर-बाबा	बृद्धप्रपितामहः.
बेटी	पुत्री, आत्मजा, दुहिता.	साढू	पत्नीभगिनीपतिः.
भाई	भ्राता, सहोदरः, अग्रजः-अनुजः.	धेवता	दौहित्रः.
भतीजा	भ्रातृजः, भ्रातृव्यः.	जमाई	जामाता, दुहितृपतिः.
बहिन	भगिनी, स्वसा.	बहनोई	भगिनीपतिः, आवुल्लः.
फूआ	पितृस्वसा.	देवर	देवरः, देवा (देवृ) (पुं०).
,, फाबेटा	पैतृष्वस्रेयः.	जिठानी	यातृ (स्त्री०)
मामा	मातुलः, मामः.	जेठ	ज्येष्ठः, पतेरग्रजः.
,, फाबेटा	मातुलेयः.	चाचा	पितृव्यः.
भानजा	भागिनेय, स्वस्रेयः.	नाऊ	पितृकरः, ज्येष्ठपिता.
बहू	भार्या, पत्नी, जाया, वधूः, कलत्रम्.	खान्दान	कुलम्, वंशः, अन्वयः, गोत्रम्, सन्ततिः, अन्ववायः.
पति	पतिः, भर्ता, धवः, कान्तः.	पुत्रवधू	पुत्रवधूः, स्नुषा.
साला	श्यालः.	पोता, नाती	नप्ता, पौत्रः.
सास	श्वश्रूः (स्त्री).	परनाती	प्रनप्ता, प्रपौत्रः.
ससुर	श्वशुरः.	परपोता	प्रनप्ता, प्रपौत्रः.
मौसी	मातृष्वसा.	सगाई	वाग्दानविधिः.
,, फाबेटा	मातृष्वस्रेयः.	ब्याह	विवाहः, उद्वाहः, परिणयः.
नाना	मातामहः.	बोझा, बासबाब	द्रव्य, सामग्री, बस्तूनि गृहोपस्करः.
परनाना	प्रमातामहः.		
बृद्धपर-नाना	बृद्धप्रमातामहः.		

सम्बन्ध जनानेवाले शब्दों का वर्णन–सम्बन्धद्योतकाः शब्दाः ।

हिन्दी।	संस्कृत ।	हिन्दी	संस्कृत ।
व्याहकरना भजना,सेवनकरना	परिणयति, उद्वहति, उपयच्छते. भजति—ते	बोझालादना लेटना	भारन्यस्यति, निदधाति, भारेणपीडयति, भारमारोपयति भाराक्रान्तंकरोति. शेते, अभ्यास्ते.

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तुम्हारे पिता कहां हैं ?	तव पिता क्वास्ति ?
वे तो लाहोर हैं.	ते तु लाहपुरे वसंन्ते.
तुमकै भाई हो ? पाँच	कति भ्रातरो यूयम् ? पञ्च.
तुम्हारी बहन का सम्बन्ध कहां हुआ ?	तव भगिन्याः सम्बन्धः क्वाभूत् ?
पटना शहर में.	पाटलिपुत्रनाम्नि नगरे.
मेरे भाईके तीन बेटी हैं उनमें से एक तो लखनऊ ब्याही है दूसरी अलमोड़ा शहर में और तीसरी की सगाई काशी में हुई है.	मम भ्रातुः तिस्रः पुत्र्याः सन्ति तासामेका तु लक्ष्मणपुरे परिणीता द्वितीया त्वलमोड़नगरे तृतीयाया वाक्प्रदानविधिर्वाराणस्यामभूत्.
मा चूचियों से पुत्र को दूध पिलाती है	माता स्तनाभ्यां पुत्रं दुग्धं पाययति.
मेरी एक फूआ, पांच फुफेरे भाई और चार भानजे दिल्ली में रहते हैं.	ममैका पितृष्वसा पञ्चपैतृष्वस्रेयाश्चत्वारो भागिनेयाश्चेन्द्रप्रस्थे निवसन्ति.
तुम्हारा मामा किसनाम का है ? शम्भुदत्त.	किन्नामा तव मातुलः ? शम्भुदत्तः.
मेरे दो मामाके लड़के लक्ष्मी प्रसाद और जुगल किशोर हैं.	मम द्वौ मातुलेयौ लक्ष्मीप्रसादयुगलकिशोराभिधौ.
तुम्हारी स्त्री का कैसा स्वभाव है ? बहुत तारीफ़केलायक.	कीदृशी प्रकृतिस्तव भार्यायाः ? सुश्लाघ्या.
रामसेवक की स्त्री तो कुलटा है ऐसा सुना गया है.	रामसेवकस्य जाया तु कुलटेति श्रूयते.

सम्बन्ध जाननेवाले शब्दों का वर्णन—सम्बन्धद्योतकाः शब्दाः ।

कुलटा शब्दको मैंने नहीं जाना इससे खुलासा कहिये.

कुलटा शब्दमहं नाहासिषमतो.

जो अपने पति को छोड़ जारको भजे· वही कुलटा है.

या पतिं हित्वा जारम्भजति सैव कुलटा.

तुम्हारे कोई साला है? कोई भी नहीं.

अस्ति कश्चिच्छ्यालस्तव । न कोऽपि.

सुसरके खान्दान में तो बहुत हैं परन्तु कोई पास अपना नहीं है। मेरी सासतो जीती हैं.

श्वसुरान्वयाये तु बहवस्सन्ति परञ्च न कोपि स्वकीयः । मम श्वश्रूस्तु जीवति.

और भी रिश्तों के नाम लिखिये.

अन्येषां सम्बन्धानां नामान्यपि लिखत.

अच्छा सुनो.

वरम् शृणु.

मौसी, मौसेराभाई, साढ़ू, धेयता, जमाई, बहनोई, देवर, पतोहू दौरानी या जिठानी, जेठ, चाची ताऊ, ननद, पोता, परपोता नाती, नाना, परनाना, वृद्ध परनाना, बाबा, परबाबा, वृद्ध परबाबा, वगैरह हैं.

मातृष्वसा, मातृष्वस्रेयः पत्नीभगिनीपतिः दौहित्रः जामाता, भगिनीपतिः, देवरः स्नुषा, याता, ज्येष्ठः, पितृव्यः, ज्येष्ठपितृव्यः, ननान्दा पौत्रः प्रपौत्रः नप्ता मातामहः प्रमातामहः वृद्धप्रमातामहः पितामहः प्रपितामहः वृद्धप्रपितामह इत्यादीनि सन्ति.

स्त्री पुरुष "दम्पती" और "जम्पती" कहलाते हैं.

स्त्रीपुरुषौ दम्पती जम्पतीति शब्देते.

हमदोनों जौहेड़ भाई हैं.

आवां यमजौ भ्रातरौ.

मेरेपिता अब दूसरी स्त्री ब्याहेंगे.

मम पिताधुना द्वितीयां स्त्रियमुद्वक्ष्यति (परिणेष्यति.)

यहां आपकी पतोहू है इसलिये यहां न जाइये.

तत्र भवदीया स्नुषाध्यास्ते ऽतस्तत्रमा गच्छतु.

ब्याहों में सबचीजें छकड़ों या ऊँटों में लादी जाती हैं.

विवाहसमये वस्तुजातं शकटेषु उष्ट्रेषु वा भारत्वेन न्यस्यते.

उसका बेटा, भतीजा और मेरा भाई लाहौर कालेज में अंग्रेजी पढ़ते हैं.

तस्य पुत्रः, भ्रातृजः, मातुलेयश्च लाहपुरविद्यालयेऽङ्गलभाषामधीते.

चौदहवां अध्याय—चतुर्दशोऽध्यायः ।

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
ब्राह्मण	भूसुरः, वाडवः, विप्रः, अग्रजन्मा (पुं०) द्विजः.	यज्ञकर्ने-वाला	यायजूकः.
क्षत्री	क्षत्रियः.	साकल्य	चरुः.
वैश्य	वैदयः, विट् (पुं०) ऊरुजः, अर्यः.	देवान्न	हव्यम्.
		पित्र्यन्न	कव्यम्.
शूद्र	शूद्रः, वृषलः, पादजः, जघन्यजः, अन्त्यजः.	महाराजा	राजन्यः, मण्डलेश्वरः, सम्राट्.
विद्वान्	विपश्चित्, कोविदः, बुधः, पण्डितः.	दीवान	मन्त्री [पुं०], सचिवः अमात्यः.
वेदपाठी	वेदाध्यायी, श्रोत्रियः, छान्दसः.	ड्यौढ़ीवान्	प्रतिहारः, द्वारपालः वेत्रधरः, कञ्चुकी.
पढ़ानेवाला	उपाध्यायः, अध्यापकः, आचार्यः.	खोजा	षण्ढः, क्लीबः.
यज्ञ	क्रतुः, मखः यज्ञः, सवः, अध्वरः.	दुश्मन	रिपुः, वैरी, [पुं०] अरिः, शत्रुः, द्विट्.
पुरोहित	पुरोधाः [पुं०] पुरोहितः.	मित्र	वयस्यः, स्निग्धः, मित्रम्, सुहृत्.
आचमन	उपस्पर्शः, आचमनम्.	दूत	दूतः, सन्देशहरः.
पूजा	पूजा, सपर्या अर्चा, नमस्या.	गुप्तदूत	चरः, स्पशः, गुप्तदूतः.
सभा	समज्या, संसत्, सभा, गोष्ठी, परिषत् [स्त्री].	रास्तेगीर	पान्थः, पथिकः.
		भेट	उपायनम्, बलिः, उपहारः.
सभासद	सदस्याः, सभ्याः, सामाजिकाः.	विवाहः	परिणयः, उद्वाहः, पाणिपीड़नम्.
ज्योतिषी	दैवज्ञः, गणकः, ज्योतिर्विद्.	दहेज	यौतकम्, यौतुकम्.
व्रत	उपवासः, उपोषणम्, व्रतम्, नियमः.	स्त्रीप्रसंग	व्यवायः, ग्राम्यधर्मः, मैथुनम्.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
घूस	उत्कोचः, उपायनम् .	बहादुर	शूरः, वीरः.
चौर	चमरम्, चामरम् .	फौज	सेना, पृतना, चमूः, बलम् .
राजासन	नृपासनम्, सिंहासनम् .	लाश	कुणपः, शवम्.
सोनेकी-हारी	भृङ्गारः, कनकालुका.	मरघटा	श्मशानम्, पितृवनम् .
संग्राम	युद्धम्, आयोधनम्, समरः, मृधः.	छुरी	छुरी, छुरिका.
किला	दुर्गम्, कोटः, कोटिः.	मौगरा	मुद्गरः.
पहरा	सज्जनम्, उपरक्षणम् .	डेरा, छावनी	निवेशः, शिविरम् .
तलवार	असिः, खड्गः.	हाथीका-मद	मदः, दानम्.
ढाल	चर्म [न०]	हाथी को-झूल	कुथम् (शिपु).
धनुष	धनुः, [न०] चापः, शरासनः	„ चिंघाड़	चित्कारः.
बन्दूक, तोप	वह्नियन्त्रम् नालिकायन्त्रम्.	„ गलेफू	गण्डः, कटः, कपोलः.
बाण	शरम्, इषुः, मार्गणः.	हथिनी	करिणी, वेनुका, वशा.
तरकस	इषुधिः, तूणीरः, निषङ्गः.	आँकुश	अङ्कुशः, सूणिः
जेल-खाना	बन्दीगृहः, कारागृहः-गारः-प्रग्रहः.	घोड़ा	वाजी, [पुं.] वाहः, हयः, अश्वः.
मौत	मृत्युः, निधनः, पञ्चत्वम्, मरणम्.	घोड़ी	अश्वा, वडवा, वामी.
जन्म	जन्तुः [न०] जननम्, जन्म [न०]	घोड़ी की हिनहिनाट	हेषा, हेषा.
शिरस्त्र-बख्तर	वर्म [न.] कवचः, शिरस्त्रम् शीर्षण्यम्.	कोड़ा	कशा.
कटारा	परशुः.	लगाम	कविका, खलीनः [स्त्री.]
भाला	भल्लः.	रथ	रथः, स्यन्दनः, शतङ्गः.
		जूआ	कूबरः, युगन्धरः.
		पैदल	पत्तिः, पदातिः पदगः.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
उधार	उद्धारः, ऋणम्, पर्युदञ्चनम्	सुनार	स्वर्णकारः, कलादः रूपकारकः.
बदला	परिवर्तः, विनिमयः.		
जिंस	याचितकम्.	कसौटी	शाणः, निकषः, कषः मूत्र [सोना पकाने का पात्र].
साहूकार	उत्तमर्णः.	लुहार	लोहकारः अयस्कारः.
कर्जदार	अधमर्णः.	धौंकनी	भस्त्रा, चर्मप्रसेविका इति: [पु०].
रोजगार	जीविका, वृत्तिः आजीवः		
व्यापार	वाणिज्यम्.	राज	लेपकः, सुधाजीवी, पलग ण्ड
धन	वित्तम्, अकथम्, वसु, द्रविणम्, अर्थः.	घसूली	टङ्कः; पाषाणदारणः.
धरोहर	उपनिधिः, न्यासः.	धोबी	रजकः, निर्णेजकः.
परचूनिया	चूर्णविक्रेता (पु०)	हरी	अयोयन्त्रम्.
गाँठ	प्रसवः ग्रन्थिः	कुँभार	कुम्भकारः, कुलाल.
बोरा	शाणपुटः गोणी.	चाक	चक्रम्.
सुतली	सूत्रम्, तन्तुः.	अवा	पाकपुटी, आपाकः.
हलवाई	आपूपिकः, भक्ष्यकारः	चितेरे	कार, शिल्पी.
बजाज	वस्त्रविक्रेता-विक्रयी [पुं०]	माली	मालाकारः मालिकः.
अत्तार	औषधिविक्रेता—विक्रयी	मनिहार	काचकङ्कणविक्रेता.
ब्याज	अर्थप्रयोगः, कुसीदम्, वृद्धिजीविका.	चूड़ी	काचवलयम् कङ्कणम् कट-कम्.
पैसा	पणः, ताम्रखण्डम्	न्यारिया	द्रावकः
रुपया	रूपकः रजतमुद्रा,	भरभूजा	भर्जकः
अशर्फी	स्वर्णमुद्रा, दीनारः	भाड़	भर्जनयन्त्रम्
अठन्नी	रूपकार्धम्	रंगरेज	रञ्जकः वस्त्ररागकृत् [पुं०]
चौअन्नी	चतुरणकारः	चमार	चर्मकारः पादुकृत् [पुं०]
दुअन्नी	आणकद्वयम्	सक्का	शारा, चर्मप्रसेविकाः.
कायथ	कायस्थः.	खटीक	शाकविक्रेता

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
कंघावना-नेवाला	कङ्कतकृत्	सरोता	सङ्कुला,
खिकलगर	शस्त्रमार्जकः, असिधावकः	तमोली	ताम्बूलिकः
पखवाजी	मार्दङ्गिकाः, मौरजिकाः	कहार	जलवाहः, उदवाहः
कथक	चारणः, कुशीलवः	घँहगी	जलानयनयन्त्रम्
सितारिया	वीणावादाः, वैणिकाः	प्याऊ	पानीयशालिका, प्रपा.
बाजा	वादनम्, वाद्यम्	प्यास	सृट्, तर्षः, पिपासा.
सितार	वीणा, वल्लकी, चित्रवी	प्यासा	तृषितः पिपासितः
बांसरी	वंशी वेणुः	तेली	तैलिकः तैली [पुं०]
मृदग	मृदङ्गः, मुरजः	घोल्हू	तैलपेषणी
ढोल	आनकः, पटहः	कान का मैल निकालने-वाला	कर्णमल निस्सारयिता
नगारा	दुन्दुभिः		
डौंडी	डिण्डिमः		
तुरई	तूर्यम्, तूरी.		
कसाई	मांसविक्रेता, मांसिकः, वैतंसिकः	कलाल	शौण्डी, मण्डहारकः सुरा जीवी, शौण्डिकः
धुना	तूलमार्जकः	शराब	मदिरा, सुरा, मद्यम्.
बहुरूपिया	बहुरूपधारी-धारकः	शराबघर	शुण्डापानम्, मद्यस्थानम्
दर्जी	सूचिकः सौचिकः सूचि-कर्मा [पुं०]	प्याला	चषकः पानपात्रम्
कैंची	कतरी-रिका, छेदनी	छैनी	घरट्टमुद्रकः
जुलाया-(कोली)	तन्तुवायः, पटकारः	मल्लाह	नाविकः कर्णधारः
नाई	नापितः, क्षौरिकः, क्षुरिः, मुण्डी	आरा	क्रकचः, करपत्रम्
उस्तरा	क्षुरः	बढई	तक्षकः सूत्रधारः, रथकारः स्थपतिः, वर्धकिः,
		मेड़	मेधिः मेधिः [पुं०]
		किसान	कृषकः कृषीवलः, हालिकः
		खेती	कृषिः.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
खेत	क्षेत्रम्, केदारः, क्षेत्रं.	जूआ	कैतवम्, पणः, अक्षवती.
खेना	तोदनम्, प्राजनम्, तोत्रम्,	नचकैया	नर्तकः, लासकः
टोकरा च-नानेवाला	वैणवः, वैदलकारः.	धूरा	अवकरनिकरः
महतर	श्वपचः, संमार्जकः	कूड़ा	अवकरः, सङ्करः
नट	नटः, शैलाली, शैलूषः, जा-याजीवः	यज्ञकरना	यजति
		पूजाकर्ना	अर्चयति, पूजयति.
कंजर इत्यादि	अन्त्यजाः	आचमन-करना	उपस्पृशति, आचामति,
गड़रिया	जावालः, अजाजीवः	ठण्डहोना	शाम्यति
चिड़ीमार	जीवान्तकः, शाकुनिकः	भूनना	भर्जयति.
जालिया	वागुरिकः, जालिकः	जूआखेलना	दीव्यति
नौकर	भृतकः, भृत्यः, वैतनिकः	पैनाना, पैनवाना	उत्तेजयति.
होशियार	चतुरः, पेशलः, पटुः, दक्षः	बजाना	वादयति—ते
व्याध	मृगयुः लुब्धकः मृगवधा-जीवः	बजना	रणति, क्वणति, विरौति.
		गाना	गायति। कूजति, रौति [पक्षिणां]
शिकारी कुत्ता,	विश्वक्सेनः, पौलेयकः	हजामत-बनाना	मुण्डयति, आवपति
बकरा	वर्करः	डाँडी पिटना	घोषयति.
शिकार	मृगव्यम्, आखेटः मृगया	बोना	वपति—ते
चोर	स्तेनः, दस्युः, तस्करः, मोषकः	बदलना	प्रतियच्छति, विनि-मे-ते।
चोरी	स्तैन्यम्, स्तेयम् चौर्यम्	साँचना	
प्रतिमा	प्रतिमानम्, प्रतिबिम्बम्, प्रतिकृतिः, प्रतिनिधिः	बाहल्य	कर्पति
जवारी	क्षितयः, अक्षधूर्तः	जोतना	
पासे	अक्षः, देवन', पाशकः.		

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी।	संस्कृत ।	हिन्दी।	संस्कृत ।
कथावाचनेवाला	कङ्कतकृत्	सरौता	सङ्कुला.
कलिकलगर	शस्त्रमार्जकः, असिधावकः	तमोली	ताम्बूलिकः
कवैया	मार्दङ्गिकाः, मौरजिकाः	कहार	जलवाहः, उदवाहः
कत्थक	चारणः, कुशीलवः	कँहगो	जलानयनयन्त्रम्
सितारिया	वीणावादाः, वैणिकाः	प्याऊ	पानीयशालिका, प्रपा.
बाजा	वादनम्, वाद्यम्	प्यास	तृट्, तर्षः, पिपासा.
सितार	वीणा, बल्लकी, विपञ्ची	प्यासा	तृषितः पिपासितः
बांसरी	वंशी वेणुः	तेली	तैलिकः तैली [पुं०]
मृदङ्ग	मृदङ्गः, मुरजः	कोल्हू	तैलपेषणी
ढोल	आनकः, पटहः	कान का मैल निकालने-वाला	कर्णमल निस्सारयिता
नगारा	दुन्दुभिः		
डाँडी	डिण्डिमः		
तुरई	तूर्यम्, तूरी.		
फ़साई	मांसघिक्केता, मांसिकः, वैतांसिकः	फलाल	शौण्डी, मण्डहारकः सुरा जीवी, शौण्डिकः
धुना	तूलमार्जकः	शराब	मदिरा, सुरा, मद्यम्.
बहुरूपिया	बहुरूपधारी-धारकः	शराबघर	शुण्डापानम्, मद्यस्थानम्
दर्जी	सूचिकः सौचिकः सूचिकर्मा [पुं०]	प्याला	चषकः पानपात्रम्
कैंची	कतरी-रिका, छेदनी	छैपी	घस्रमुद्रकः
जुलाहा-(कोली)	तन्तुवायः, पटकारः	मल्लाह	नाविकः कर्णधारः
नाई	नापितः, क्षौरिकः, क्षुरिः, मुण्डी	आरा	क्रकचः, करपत्रम्
उस्तरा	क्षुरः	बढ़ई	तक्षकः सूत्रधारः, रथकारः स्थपतिः, वर्धकिः,
		मेंड़	मेधिः मेधिः [पुं०]
		किसान खेती	कृषकः कृषीवलः, हालिकः कृषीः.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी।	संस्कृत ।
खेत	क्षेत्रम्, केदारः, क्षेत्रं.	जूआ	कैतवम्, पणः, अक्षवती.
खैना	तोदनम्, प्राजनम्, तोत्रम्,	नचकैया	नर्तकः, लासकः
टोकरा व-नानेवाला	वैणवः, वैदलकारः.	घूरा	अवकरनिकरः
महतर	श्वपचः, संमार्जकः	कूड़ा	शवकरः, सङ्करः
नट	नटः, शैलाली, शैलूषः, जा-याजीवः	यज्ञकरना	यजति
		पूजाकर्ना	अर्चयति, पूजयति.
कंजर इत्यादि	अन्त्यजाः	आचमन-करना	उपस्पृशति, आचामति,
गड़रिया	जावालः, अजाजीवः	ठण्डाहोना	शाम्यति
चिड़ीमार	जीवान्तकः, शाकुनिकः	भूनना	भर्जयति.
जांलिया	वागुरिकः, जालिकः	जूआखे-लना	दीव्यति
नौकर	भृतकः, भृत्यः, वैतनिकः	पैनाना, पैनवाना	उत्तेजयति.
होशियार	चतुरः, पेशलः, पटुः, दक्षः	बजाना	वादयति—ते
व्याध	मृगयुः लुब्धकः मृगवधा-जीवः	घजना	रणति, क्वणति, विरौति.
		गाना	गायति । कूजति, रौति [पक्षिणां]
शिकारी कुत्ता,	विश्वकद्रुः, कौलेयकः	हजामत-बनाना	मुण्डयति, आवपति
बकरा	बर्करः	डाँडी पिटना	घोषयति.
शिकार	मृगव्यम्, आपेटः मृगया	बोना	वपति—ते
चोर	स्तेनः, दस्युः, तस्करः, मोषक	बदलना	प्रतियच्छति, विनि-मे-ते ।
चोरी	स्तैन्यम्, स्तेयम् चौर्यम्	सोचना	
प्रतिमा	प्रतिमानम्, प्रतिबिम्बम्, प्रतिकृतिः, प्रतिनिधिः	याद्दल	कर्षति
जुआरी	कितवः, अक्षधूर्तः	जोतना	
पासे	अक्षः, देवनः, पाशकः.		

जाति इत्यादि का वर्णन — ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
शकल-चबाना	रूपं—आकार-विदधाति ।	फाटना	धाति, छिनत्ति, छृन्तति, छु-नाति—ते
गोली मारना	आग्नेयास्त्रमुञ्चति, शरंमु-ञ्चति अस्यति ।	दशंत से काटना	दशनेन छिनत्ति
घिरना	घिरोति, विरचयति ।	आरे से	क्रकचेन-करपत्रेण-छणाति
पाँओं से कुचलना	पद्भ्यां—पंडयान-आक्रा-म्यति, मर्दयति	चीरना	दारयति पाटयति,छिनत्ति
चाकअ होना	समआपतति, उपतिष्ठति-ते, घटते, सम्पद्यते	इस्तरी करना	चिक्कणयति ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
चार जाति हैं ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र.	चत्वारोवर्णाः ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्यः शूद्रश्च.
चार आश्रम हैं ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वान-प्रस्थ और सन्यास.	आश्रमाश्चत्वारो ब्रह्मचर्यो गार्हस्थ्यःवान प्रस्थ सन्यासश्च.
न्यायजाननेवाला नैयायिक, मीमांसा जाननेवाला मीमान्सक, वेदान्त जाननेवाला वेदान्ती, वेद पढ़नेवाला श्रोत्रिय सांख्य जाननेवाला कापिल ऐसा कहा जाता है.	न्यायवेत्ता नैयायिकः मीमांसांवेमीमां-न्सकः वेदान्तशोवेदान्ती, वेदाध्यायी श्रोत्रियः साङ्ख्यज्ञः कापिल इत्यु-च्यते.
गंगा जमनाके बीच में श्रीमान् श्रीधर-नाम के पण्डित अत्यन्तविद्वान् हैं.	श्रीमच्छ्रीधराभिधेयपण्डितोऽतीवविद्वान् गंगायमुनयोर्मध्ये वर्सते.
ब्राह्मणोंके छः कर्म सुनेजातेहैं वे कौन से हैं.	विप्राणां षट्कर्माणि श्रूयन्ते तानिकानि सन्ति.
यज्ञकरना, पढ़ना, दानदेना, यज्ञकराना पढ़ाना और तैसेही दानलेना इन-कर्मोंसे युक्त छः कर्मवाला ब्राह्मण-कहलाता है.	इज्याध्ययनदानानि याजना-प्रतिग्रहश्च तैर्युक्तः षट्कर्माविप्रउ-च्यते.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
जिस तरह यह यज्ञकरनेवाला यज्ञ करताहै तैसे तुम भी यज्ञकरो.	यथायं याज्ञिकोयजति तथा त्वमपि यज.
देवदत्त देवताओं की पूजा करता है.	देवदत्तो देवानर्चयति.
भक्तलोग अपने इष्टदेवों की पूजाकरते हैं.	भक्ताः स्वेष्टदेवानां सपर्यां कुर्वन्ति।
पांच महायज्ञ कौन से हैं?	पञ्च महायज्ञाःके?
उनको तो पहिले अध्याय में देखलो.	तांस्तु प्रथमेऽध्याये पश्य.
जगत् का कारण शून्य है ऐसा माननेवाले नास्तिक होते हैं.	जगत्कारणं शून्यमिति मन्तारोनास्तिकाः
सभा काही दूसरा नाम गोष्ठी है.	सभाया एव द्वितीयं नाम गोष्ठी.
जो तुम व्याकरण जानते हो तो इसका अक्षरार्थकरो.	यदित्वं वैयाकरणोऽसिततोऽस्या अक्षरार्थं कुरु.
अच्छा! गो अर्थात् अनेक वाणी जहां पर हों वह गोष्ठी है.	यत्र! गावोऽनेकावाचस्तिष्ठन्त्यस्यां सा गोष्ठी.
अग्निद्वारा देवताओंके लिये जो अन्नदिया जाताहै वह हव्य होता है.	अग्निमुखेन देवेभ्योयद्दीयतेतद्धव्यम्.
ब्राह्मण मुख से पितृलोकों को दियाहुआ अन्न कव्य ऐसा कहाजाता है.	विप्रमुखेन पितृभ्योदीयमानमन्नंकव्यमित्युच्यते.
बूढे मनुष्योंके लिये और गुरुओं के लिये सदैव अभ्युत्थान दो.	वृद्धेभ्योगुरुभ्यश्च सदाभ्युत्थानं देहि.
न्हानेसे पहिले और भोजन से पीछे आचमन करे.	स्नानात्प्राक् भोजनान्तरञ्चोपस्पृशेत्.
खानेके वक्त चुप होकर रहे.	भोजनावसरे मौनमेवाधतिष्ठेत.
उपवास और दूसरे व्रत भी बालक बूढे और आतुर [मुसीबत जिदा] को छोड़कर कहे हैं.	उपोषणमन्यान्यपि व्रतानि बालवृद्धातुरान्विनोक्तानि.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
राजन्य और बाहुज, क्षत्रिय के ही पर्याय [हममानी] हैं.	राजन्यबाहुजौ क्षत्रियस्यैव पर्यायौ.
मामूली राजाओं के नाम भूप, क्ष्माभृत् नृप वगैरह हैं.	सामान्यराजानां नामानिभूपक्ष्माभृन्नृपाद्यस्सन्ति.
मण्डल अर्थात् बहुतसे देशोंका मालिक सम्राट् कहलाता है.	मण्डलेश्वरः सम्राडिलिकथ्यते.
उस राजराजेश्वर का दीवान वीरसिंह पुरोहित आदित्यशर्मा, और शंकरनाथ ड्यौढ़ीवान् है.	तस्य सम्राजोऽमात्यो वीरसिंहः आदित्यशर्मा पुरोधाः, शङ्करनाथः प्रतीहारः.
राजाओं के महलोंके दर्वाज़े पर पाँच खेजे हैं.	राज्ञामन्तःपुरद्वारि पञ्च पण्डा विद्यन्ते
उस प्रतापी राजाके शत्रु अपने आपही शान्त होजाते हैं.	तस्य प्रतापिनो राज्ञो रिपवः स्वयमेव शाम्यन्ति.
रामदेव उस राजाका लंगोटिया मित्र है.	रामदेवस्तस्यनृपस्य वयस्यः सुहृत्.
मेरेगाँव में एक मशहूर ज्योतिषी है.	मम ग्रामेऽस्त्येकः प्रसिद्धो दैवज्ञः.
जो राजाही घूस लेतो इन्साफ़ कौन करै.	यदि राजानएवोत्कोचं गृह्णीयुस्तदा न्यायं कः कुर्यात्.
राजाओं के बहुत से खुफ़िया पलचो घूमा करते हैं.	राज्ञां बहवो गुप्तदूताः पर्य्यटन्ति.
राजाओं के सुलहनामे दूत लोग लेजाते हैं.	राज्ञां सन्धिपत्रं सन्देशहरैर्नीयते.
राज्य के सात अङ्ग कहो ।	राज्यस्य सप्ताङ्गानि ब्रूत.
स्वामी, मंत्री, राज्य, किला, खजाना सेना, और आपस में मदद देनेवाले मित्र, ये सात अङ्गवाला राज्य कहलाता है.	स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रञ्च दुर्गं कोशो बलं सुहृत् । परस्परोपकारीदं सप्ताङ्गं राज्य मुच्यते.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
साम, दान, भेद, और दण्ड ये राजाओं के चार उपाय हैं.	सामदानञ्च भेदश्च दण्डश्चेत्युपायचतुष्टयं राज्ञाम्.
इसको भी आप खुलासाकरें। अच्छा साम अर्थात् मीठा बोलना, दान अर्थात् धनका देना, भेद अर्थात् फूट डलवाना वा मिलेहुओं का अलग कर देना और दण्ड अर्थात् सज़ा देना.	एतदपि स्पष्टीकुर्वन्तु भवन्तः। यथा, साम प्रियवचनादि; दानं धनादेः समर्पणं, भेदः (उपजापः) संहतयोर्द्वैधीकरणमित्यर्थः दण्डनंदण्ड इति.
दो तीन रोज़ में हमारे शाहंशाह महाराज अपने चरण पधारकर इस राजधानी को सुशोभित करेंगे यह अफ़ुआ कानोंकान सब नगर में फैल गया.	द्वित्रेषु दिनेषु राजराजेश्वरोस्माकं सम्राट् पादार्पणेन इमां राजधानीमलं करिष्यतीति किम्वदन्ती श्रोत्राथोत्रिअखिलेनगरेप्रथिताऽभवत्.
छोटे राजा मण्डलेश्वर अर्थात् चक्रवर्त्ती राजाके लिये भेंट देते हैं.	क्षुद्रराजानो मण्डलेश्वराय बलिं प्रयच्छन्ति.
राजा भोजदेव अपनी लड़की के व्याह के दहेज़ में एक अक्षौहिणी सेना, एक सोने की झारी फ़ीलवानों और सोनेके अंकुशों सहित पचास हाथी, घुड़ सवार सहित सौ घोड़े, साठ-रथ, तीनसौ छकड़े, दो सौ पालकियाँ, दो चमर, एक तख़्तशाही एक तलवार, तरकस सहित एक धनुष लड़ाई के वक्त में पहरनेके लिये एक ज़िरह बख़्तर (कवच), सिरटोप, एक फरसा, दो भले, एक छुरी, और एक मुद्गर अपने जमाई के लिये देता हुआ.	राजा भोजदेवः स्वकन्योद्वाहयौतुके एकामक्षौहिणीं सेनामेकं भृङ्गारं साधोरणान्सस्वर्णाङ्कुशान्पञ्चाशद्विपान्, ससादिनः शतं वाहान्, षष्टि स्यन्दनानि, शतत्रयमनांसि, शतद्वयं शिविकाः, द्वे चमरे, एकं सिंहासनं, एकमसिं, सतूणीरमेकं धनुः, युद्धसमये धारणार्थमेकं वर्म, शिरस्त्राणञ्चैकं परशुं द्वौ भल्लौ एकां छुरिकां मुद्गरञ्चैकं स्वजामात्रे ददौ.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
अक्षौहिणी का अन्दाज़ भी कृपाकर कहो.	अक्षौहिण्याः प्रमाणमपि कृपया वदतु.
अक्षौहिणी का अन्दाज़ तो यह है कि २१८७० हाथी, इतनेही रथ, इससे तिगुने घोड़े और पचगुने पैदल.	अक्षौहिण्याः प्रमाणन्तु खांगैर्षष्टैकाद्वैकैर्गजैः रथैरतैर्यैस्त्रिग्नैः पञ्चघ्नैश्च पदातिभिरिति.
राजा भोजके समधी ने भी व्याह की खुशी में १५० कैदी अपने जेलखाने से छोड़ दिये.	भोजस्य सम्बन्धिनापि विवाहहर्षे सार्धशतम्बन्दिनः स्वकाराद्गृहान्मोचिताः.
राजाओं के हरेक डेरेमें पहरा रहता है.	राज्ञां प्रत्येकशिबिरे उपरक्षणं वर्तते.
फ़ौजके जो बहादुर मरे (फौतहुए) वे मरघटों में लेजाकर सिपाहियोंने जलादिये.	पृतनाया ये वीराः पञ्चत्वमागता स्ते पितृवने नीत्वा राजपुरुषै र्दाहिताः.
न जलाई हुई लाशें पशु पक्षियों ने खा डालीं.	अदाहितानि शवानि पशुपक्षिभिः खादितानि.
व्यूह शब्दका क्या अर्थ है ?	व्यूहशब्दस्य कोऽर्थः ?
फ़ौज का तरतीव से रखना व्यूह कहलाता है.	सैन्यस्य रचनाविशेषेण स्थापनं व्यूहः कथ्यते.
जैसे किसीने कहा है.	यथा केनापि भणितम्.
मुहँपर रथ, पीछे घोड़े, उसके पीछे पैदल, और इधर उधर बगलों में हाथी करने चाहियें यह व्यूह कहा गया है.	मुखे रथा दयाः पृष्ठे तत्पृष्ठे च पदातयः पार्श्वयोश्च गजाः कार्याः व्यूहोऽयम्परिकीर्तितः.
लड़ाई के लिये जाते हुए फौजी लोग रास्तेमें बहुत से छोटेजीवों को पैरों से कुचलडालते हैं.	युद्धार्थं गच्छन्तः सैनिका मार्गे बहून् क्षुद्रजीवान् पद्भ्यामाक्रामन्ति,
किन्हीं साधियों के गले मुर्गों से मत्था करता है.	केषाञ्चिदस्तित्वां गण्डेभ्यो दानं प्रकल्पयति.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
हाथीसाल वारी कहलाती है.	गजशाला वारीत्युच्यते.
ये हथिनियाँ अपने बच्चों सहित जाती हैं.	इमाः करिण्यः सकरभा गच्छन्ति.
इस घोड़े की लगाम कहाँ है ?	अस्याश्वस्य कविका कुत्र वर्तते ?
यह तो तेरे सौंहीही ज़मीन पर रक्खी है मेरी आखों से तो देख.	सा तु तव सम्मुख एव पृथिव्यां धृता मदीयाक्षिभ्यां तु पश्य.
इस घोड़ी की पूँछ कैसी उम्दा मालूम होती हैं.	कथं शोभते लूममस्या बड़वायाः.
रथवान् इन दोनों घोड़ों को चाबुक से मार कर जूए में जोड़ता है.	सारथिरेतावश्वौ कशया ताड़यित्वा युगन्धरे योजयति.
अब वैश्यों के रोज़गारों को बताओ.	अथ वैश्यानां वृत्तीर्ब्रूहि.
खेत, व्यौहार उधार, ब्याज लेना, चीजों का अदल बदल करना, और ग़रीब किसानों के लिये साद (जिस) देना वग़ैरह जीविका हैं.	कृषिः, वाणिज्यं, उद्धारदानं कुसीदग्रहणं वस्तूनां विनिमयः अन्येभ्यो निर्धनेभ्यो कृषीवलेभ्यो याचितकस्य दानमित्यादयो जीविकाः सन्ति.
तुम्हारे गांव में कौन २ साहूकार हैं; कोई नहीं.	तव ग्रामे के के उत्तमर्णाः; न केऽपि.
ये साहब मेरे ५०० रुपये के कर्जदार हैं.	अधमर्णोऽयं महाशयो मे पञ्चशतमुद्राणाम्, अथवा एष महाशयः मह्यं पञ्चशतं धारयति.
अब सो सबही जाति खेती करते हैं.	इदानीन्तु सर्वे ज्ञातय एव कृषिं कुर्वन्ति.
मोहनसिंह हल कन्धे पर रखा, बैल जूए में जोड़ और आगे कर. सीधे हाथ में पैना ले, खेत जोतने के लिये जा रहा है.	मोहनसिंहो लाङ्गलं स्कन्धे कृत्वा धूर्यौ योक्त्रे नियुज्य पुरतश्च कृत्वा सव्यहस्ते तोदञ्च गृहीत्वा क्षेत्रकर्षणार्थं गच्छति.
उसका बेटा फावड़ा और कुदारी ले पीछे से जाता है.	तत्सुतः कुद्दालं कुठारीञ्च नीत्वा पृष्ठतो याति.

जाति इत्यादि का वर्णन — ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
हिंसं ईषा कहलाती है.	लाङ्गलदण्ड ईषेति कथ्यते.
अनाज और भुस अलग करने के लिये जो बहुत से बैल एक लकड़ी में बांधे जाते हैं वह मेढ़ कहलाती है.	धान्यं घुशञ्च पृथक्करणार्थं या बहूनां हति रेकस्मिन्काष्ठे निबध्यते सा मेधिरिति कथ्यते.
इस चनों को डोरे में भर कर सूए से और सुतली से सीम दो.	एताञ्चणकान्प्रसेवे भृत्वा बृहत्सूचिकया सूत्रेण च सीव्य.
बहुत से घनिये परचूनिया, हलवाई, दूध दही बेचनेवाले, बजाज, कसाई, लोहिया, कसेरे, अत्तार, घी तेल बेचनेवाले और आढ़तिये (नाज बेचनेवाले) होते है.	बहवो धैन्याश्चूर्णविक्रेतारः, आपूपिकाः, पयोदधिविक्रेतारः वस्त्रविक्रेतारः, मुञ्जशणरज्जुविक्रयिणः, अयोघस्तु विक्रयिणः, ताम्रकाँस्यगिलविक्रयिणः, औषधिविक्रयिणः आज्यानाज्यविक्रेतारः धान्यविक्रेतारश्च भवन्ति.
इस जिले में बहुत से कायस्थ कचहरी में नौकर हैं.	बहवोऽत्र मण्डले कायस्थाः राज्यद्वारे नियुक्ताः.
किसी पास के परचूनिये से दो आने का गेंहू का आटा आध आने की उरद की दाल डेढ़ आने का घी एक पैसे का मसाला जल्दी लाओ.	कस्माच्चित्समीपवर्तिनश्चूर्णविक्रेतुरापणकाद्यस्य गोधूमचूर्णमर्द्धाणकस्य माषद्विदला सार्धाणकस्य घृतमेकस्य पणस्य (ताम्रखंडस्य) पेसवाश्च क्षीघ्रमानय.
अच्छा सवा चार आने शुद्ध दो.	वरम् सपादचतुराणकान् मां देहि.
लो ! गोपालदत्त ! क्या बाजार जाते हो ? हां जाता तो हूँ.	गृहाण । गोपालदत्त ! किं पण्यवीथिकां व्रजसि ? ओम् । गच्छामि तावत्.
भला ! मेहरबानी कर मेरे लिये भी तीन पैसे का दूध बूरा और धेले के पान ले आना.	भद्र ! कृपया मदर्थमपि पणत्रयस्य दुग्धं शर्करां, पणार्धस्य ताम्बूलञ्चानय.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
और भी जातियों को बयान करो। सुनो. सुनार, लुहार, राज, बढ़ई, धोबी, कुम्हार, भरभूजा, रंगरेज, चमार, कोजड़ा, धुना, रुई बनानेवाले, दर्जी, जुलाहा, नाई, कहार, तेली, कलाल, मनेहार, छींपी, घोसी, माली, भङ्गी वगैरह जाति होती हैं.	अन्या अपि ज्ञातीर्वर्णय । श्रूयन्ताम्. स्वर्णकारोऽयस्कारः सुधाजीवी, तक्षकः रजकः कुम्भकारः, मर्जकः रञ्जकः चर्मकारः, शाकविक्रेता, तृलमार्जकः, फलकृत्, सूचिकः, तन्तुवायः, नापितः, जलवाहः, तैलिकः, शौण्डिकः, काचकङ्कणविक्रेता, चक्रमुद्रकः, गोपः, मालाकारः, श्वपच इत्यादयो ज्ञातयः सन्ति.
सुनार चान्दी के गहने आम की खटाई और चालू से साफ करता है.	स्वर्णकारो राजतान्याभूषणानि आम्लेन सिकतया च धवलीकरोति (स्वच्छीकरोति).
लुहार धौंकनी से लोहा आग में तपाकर अहरन के ऊपर रख कर पीटता है.	अयस्कारो भस्त्रया लोहमग्नौ ध्मात्वा घनोपरि निक्षिप्य ताडयति.
न्यारिया मिलाव की चांदी को मूसे में रख कर आग में सोधता है.	द्रावकोऽसंस्कृतं रजतं मूषायां धृत्वा ऽग्नौ शोधयति.
सोने की जाँच तो कसौटी परही होती है.	स्वर्णपरीक्षा तु शाण एव भवति.
राज घसूली के ज़रिये ईंट साफ कर भीत बनाता है.	लेपकः टङ्कद्वारेष्टकाः संशोध्य भित्तिं निर्मिमीते.
धोबी वस्त्र धोता है और इस्त्री से इस्त्री करता है.	रजको वस्त्राणि प्रक्षालयति अयोयन्त्रेण च चिक्कणयति.
कुँभार चाक पर मिट्टी के बर्तन बना कर अवे में पकाता है.	कुम्भकारश्चक्रे मृद्भाण्डानि निर्माया पाके पाचयति.
भरभूजा भार में जौ भून कर दूकान पर बेचता है.	भर्जको भर्जनयन्त्रे यवान्भृष्ट्वापणे विक्रीणाति.
रंगरेज़ अलग २ रंग के कपड़े रंगता और सुखाता है.	रञ्जकः पृथग्वर्णानि वस्त्राणि रञ्जयति शोषयति च.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
मोची रांपी से खाल साफ़ कर जूतियां बनाता है.	पादुकृदाख्या चर्म संशोध्यौपानहः करोति.
जुवारी पासों से जूआ खेलता है । शास्त्रों में जूआ मना है.	क्षितयो ऽक्षैर्दीव्यति । शास्त्रेषु कैतवं निषिद्धम्.
यह जयपुर की बनी हुई अत्यन्त सुन्दर संगमर्मर की गणेशजी की मूर्त्ति है इसे लो.	अतीवसुन्दरेयं जयपुरनिर्मिता स्फाटिक प्रतिमा गणेशस्य, गृह्यतामिति.
जुलाहा तुरी वेमादि से कपड़ा बुनता है.	तन्तुवायस्तुरीवेमादिना वस्त्रं वयति.
नाई उस्तरे और कैंची से बाल कतरता और बनाता है.	नापितः क्षुरेण कर्तर्या च कचान् कर्तयति मुण्डयति च.
यह नाई अपने उस्तरे को सिलीगर से पैनवाता है,	नापितोऽयं स्वक्षुरं शास्त्रमाजंकादुत्तेजयति.
बढ़ई आरे से लकड़ी चीरता है.	वर्द्धकिः करकचेन काष्ठं दारयति.
आज एक मेला है सो धीवरलोग प्याऊ के लिये जल लाते हैं.	अद्यैको महोत्सवः धीवराः पानीयशालिकार्थं जलमानयन्ति.
तेली कोल्हू में सरसों पेल कर तेल और खल बाजार में बेचता है.	तैलिकस्तैलपेषण्यां सर्षपं संपीड्य तैलं पिण्याकञ्चापणे विक्रीणाति.
और भी शूद्रजातियों को बताओ.	अन्या अपि शूद्रजातीस्सूचय.
चिरौंजी, शिकलगर, गड़रिया, पनाप जी, नट, कत्थक, सितारिया, कसाई चिड़ीमार, जालिया, बहेलिया वगैरह.	दारवः, शस्त्रमार्जकाः, अजाजीवाः, मार्द्वीकाः, नटाः, चारणाः, वैणिकाः, वैतासिकाः, जीवान्तकाः, वागुरिका, मृगयव इत्यादयः.
यह सितारिया सिर्फ सितारही नहीं बजाना बरन सब बाजों के बजाने में होशियार है.	एष वैणिकः केवलं वीणामेव न वादयति परञ्चास्त्रिलवाद्यानां वादने प्रवीणः.
इसकी उंगली में क्या है? मिजराब.	अस्याङ्गुलौ किम्? कोणः.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
बाजे बयान करो.	वाद्यानि वर्णय.
बांसुरी, मृदङ्ग, ढोल, नक़ारे, वग़ैरह हैं.	वंशी, मृदङ्ग आनको दुन्दुभिरित्यादीनि.
इस ब्याह में तुरई फौंग बजाता है.	अस्मिन्विवाहे तूरीं को वादयति.
दैगा एक मुसलमान.	अस्त्येको यवनः.
यह क्या मनादी है बाहर जाकर तो पूछो.	केयं घोषणा बहिर्गत्वा तु पृच्छ.
आज बहुत से हवा से गिराये हुए दरख्तों का नीलाम हमारे मदर्से में होगा.	अद्य दिने बहूनां पवनपातितावृक्षाणाम् घोषणापूर्वको द्रव्यविक्रयोऽस्माकं पाठशालायाम्भविष्यति.
ये होशियार शिकारी, शिकारी कुत्तों के साथ सूअर की शिकार के लिये बहुत से नौकरों के साथ जाते हैं.	एते दक्षा मृगयवः कौलेयकैस्सह शूकरस्य मृगयार्थं बहुभिर्भृत्यैस्सह गच्छन्ति.
एक मूसा अपने आपही सांप की पिटारी को कतर कर सांप के मुंह में घुसा और मर गया.	एको मूषकः स्वयमेव सर्पपेटकमित्वा सर्पमुखे प्रविष्टो मृतश्च.
यह किसका बछरा है इसको चोरों से बचाना.	कस्यायं वत्सरः एनं दस्युभ्यो रक्षय.
जो आदमी चोरी करते हैं वे राजपुरुषों से सजा दिये जाते हैं.	ये जना स्तैन्यं कुर्वन्ति ते राजपुरुषैर्दण्ड्यन्ते.
कोई आदमी शराबघर में जाकर कलाल सराब प्याले में लेकर पीताहै.	कश्चिज्जनः शुण्डापाने गत्वा मण्डहारकान्मद्यं चषक आदाय पिबति.
नचकैये शरमीले नहीं होते.	नर्तका ह्रीमन्तो न भवन्ति.
ठीक, जो वे शर्मीलेही हों तो उनका नाचना भी अच्छा न होवे.	सत्यम्, यदि ते व्रपावन्त एव भवेयुस्तर्हि तेषां ताण्डवमपि शोभनं न स्यात्.
यह बड़ी सभा है इस जगह बहुत से राजा और सभासद् जेवर पहने हुए दिखाई देते हैं.	महतीयं समज्याऽत्र बहवो राजानः सदस्याश्च सालङ्कारा दृश्यन्ते.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
ताराचन्द्र के पास तो बहुत धन है परञ्च वह अपने पास नहीं रखता उस को धरोहर बहुत से धनवानों पर रहती है.	ताराचन्द्रसमीपे तु विपुलं ऋक्थं परञ्च स स्वसमीपे न रक्ष्यति तस्योपनिधिर्बहुषु धनिषु वर्तते.
चौमासे से पहलेही आनें उपलों के दस घोरे धरीदूंगा.	चातुर्मास्मात्प्रागेव करीषाणां दशशाणपुटाः क्रेष्यामि.
मा यह देवदत्त मुझे विराता है.	मातर्देवदत्तोऽयं मां विरौति.
लावा पेन दरान्त से काटता है.	लावकः क्षेत्रं दात्रेण छिनत्ति.

पन्द्रहवां अध्याय—पञ्चदशोऽध्यायः ।

पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
पेड़	तरः, पादपः, वृक्षः.	पीपल	अश्वत्थः, पिप्पलः.
जड़	मूलम्.	,, लाख	लाक्षा, जतुः (न०)
धड़	प्रकाण्डः, स्कन्धः.	वड़	बहुपाद्, वटः, न्यग्रोधः.
शुद्दे	शाखा, लता.	गूलर	पनसः, उदुम्बरः.
छाल	वल्कलः-लम्, त्वच् [स्त्री.]	ढाक	किंशुकः, पलाशवृक्षः.
पत्ते	पत्रम्, पर्णम्, छदम्, दलम्	आक	अर्कवृक्षः
गुच्छा	गुच्छकः.	गोंद	निर्यास , रसः.
आम	आम्रः, रसालः, च्यूतः.	कंजा	करञ्जः.
बगीचा	उद्यानम्, उपवनम्, वाटिका.	कीकर	कण्टकवृक्षः, बबुरः.
जामन	जम्बुवृक्षः.	इमली	अम्लिका, चिञ्चावृक्षः.
शहतूत	तूतवृक्षः.	पिलखन	प्लक्षः.
अनार	दाडिमीवृक्षः.	महुआ	मधुकः.

पेड़, फल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाश्च संख्याविशेषाश्च।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
सँजना	शिग्रुः.	अरंड	एरण्डः, चित्रकः, चम्बुः.
नारंगी	नारङ्गः, भूमिजम्बुका.	छोंकरा	शमी.
बेल	बिल्वः शाण्डिल्यः.	फूल	पुष्पम्, कुसुमम्, सुमनः (न.)
खैर	खादिरः.	गुलाब	पाटलम्.
केला	कदली, रम्भा.	ओड़हुल	जपापुष्पम्, ओड्रपुष्पम्.
नारियर	नारिकेलः, कौशिकफलम्.	चम्बेली	जातीपुष्पम्, मल्ली, नव-मल्लिका.
बेर	बदरीवृक्षः.	बेला	बेला.
नीम	निम्बः, पारिभद्रः.	कनेर	कर्णीरः.
बकायन	महानिम्बः.	जुई	यूथिका.
अमरूद	अमृतफलम्.	कमल	सहस्रपत्रम्, उत्पलम्, शतपत्रम्.
कचनार	काञ्चनारः.		
पीलू	पीलुः.	मौरसिरी	बकुलम् पुष्पम्.
नीबू	दन्तशठः, जम्बीरः.	ढेखू	किंशुकः.
शीसम	शिंशिपा.	चम्पा	चम्पकम्.
कदम	कदम्बः.	नारंगी का फूल	जाम्भजम्.
सिरस	कपीतनः, शिरीषम्.	चन्दन का फूल	श्रीखण्डम्.
करील	करीरः, ककरः.	गुलाला	गोलालम्.
धतूरा	धातूरः.	मरुआ	मरुवम्.
सेमर का पेड़	शाल्मलिः.	नीला कमल	नीलोत्पलम्.
खिरनी	क्षीरिका.	कमोदनी	कुमुदम्.
खजूर	खर्जूरम्.	केतकी	केतकम्.
ताड़	तालः.	खिला फूल	विकचम्, स्फुटम्, प्रफुल्लम्, विकसितम्.
कदम	कदम्बः.		
अँगा	अपामार्गः.		

पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
बन्द फूल	मुकुचितम्-पुष्पम्.	इतना	इयत्.
मुरझाया हुआ	म्लानम्.	जितना	यावान्.
पुष्परस	मकरन्दः.	तितना	तावान्.
पुष्पकीधूल	परागः.	उतना	एतावान्.
पहिला	प्रथमः, आदिमः, अग्रिमः.	एक प्रकार से इत्यादि	एकधा, द्विधा, त्रिधा इत्यादि
दूसरा	द्वितीयः, अपरः.	गूंजना	गुञ्जति, विरौति.
तीसरा	तृतीयः.	नौतना	आमन्त्रयते.
चौथा	चतुर्थः, तुर्यः, तुरीयः.	मस्तलोना	माद्यति.
पाँचवां	पञ्चमः.	गिनना	गणयति.
छठी	षष्ठः.	मौखर- करना	अनुवासयति.
सातवां	सप्तमः.	हिलना	प्रकम्पते, वेपते, धुनोति-धुनाति.
आठवां	अष्टमः.	हिलाना	वेपयति, प्रचालयति, कम्पयति.
नवां	नवमः.	एक	एकः एका, एकम्.
दसवां	दशमः.	दो	द्वौ, द्वे, द्वे.
ग्यारहवां	एकादशः.	तीन	त्रयः, तिस्रः, त्रीणि.
बीसवां	विंशः, विंशतितमः.	चार	चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि.
तीसवां	त्रिंशः, त्रिंशत्तमः.	पाँच	पञ्च.
सौवां	शततमः इत्यादि.	छः	षट्.
एक बार	सकृत्.	सात	सप्त
दो ,,	द्विः.	आठ	अष्टौ, अष्ट.
तीन ,,	त्रिः.	नौ	नव
चार ,,	चतुः.	दश	दश
पाँच ,,	पञ्चकृत्वः (S).		
छः ,,	षट्कृत्वः इत्यादि (S).		
कितना	कियत्; कति (कितने).		

पेड़, फूल, गिनती का वर्णन वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाश्च संख्याविशेषाश्च।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
ग्यारह	एकादशः.	सैंतीस	सप्तत्रिंशत्.
बारह	द्वादशः.	अड़तीस	अष्टात्रिंशत्.
तेरह	त्रयोदशः.	उन्तालीस	एकोनचत्वारिंशत्.
चौदह	चतुर्दशः.	चालीस	चत्वारिंशत्.
पन्द्रह	पञ्चदशः.	इकतालीस	एकचत्वारिंशत्.
सोलह	षोडशः.	ब्यालीस	द्विचत्वारिंशत्, द्वाचत्वारिंशत्.
सत्रह	सप्तदशः.		
अठारह	अष्टादशः.	तेतालीस	त्रिचत्वारिंशत्, त्रयश्चत्वारिंशत्.
उन्नीस	एकोनविंशतिः.		
बीस	विंशतिः.	चौवालीस	चतुश्चत्वारिंशत्.
इक्कीस	एकविंशतिः.	पैंतालीस	पञ्चचत्वारिंशत्.
बाईस	द्वाविंशतिः.	छ्यालीस	षट्चत्वारिंशत्.
तेईस	त्रयोविंशतिः.	सैंतालीस	सप्तचत्वारिंशत्.
चौबीस	चतुर्विंशतिः.	अड़तालीस	अष्टचत्वारिंशत्-अष्टाचत्वारिंशत्.
पचीस	पञ्चविंशतिः.		
छब्बीस	षड्विंशतिः.	उनंचास	एकोनपञ्चाशत्.
सत्ताइस	सप्तविंशतिः.	पचास	पञ्चाशत्.
अट्ठाइस	अष्टाविंशतिः.	इकयावन	एकपञ्चाशत्.
उन्तीस	एकोनत्रिंशत्.	बावन	द्विपञ्चाशत्.
तीस	त्रिंशत्.	त्रेपन	त्रिपञ्चाशत्.
इकतीस	एकत्रिंशत्.	चौअन	चतुःपञ्चाशत्.
बत्तीस	द्वात्रिंशत्.	पचपन	पञ्चपञ्चाशत्.
तेतीस	त्रयस्त्रिंशत्.	छप्पन	षट्पञ्चाशत्.
चौंतीस	चतुस्त्रिंशत्.	सत्तावन	सप्तपञ्चाशत्.
पैंतीस	पञ्चत्रिंशत्.	अट्ठावन	अष्टपञ्चाशत्.
छत्तीस	षट्त्रिंशत्.	उनसठ	एकोनषष्टिः.

वेद, फल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
साठ	षष्टिः.	छयासी	षडशीतिः.
इकसठ	एकषष्टिः.	सतासी	सप्तार्शीतिः.
बासठ	द्विषष्टिः.	अठासी	अष्टाशीतिः.
तेसठ	त्रिषष्टिः.	नवासी	एकोननवतिः.
चौंसठ	चतुःषष्टिः.	नब्बे	नवतिः.
पैंसठ	पञ्चषष्टिः.	इक्यानबे	एकनवतिः.
छयासठ	षट्षष्टिः.	बानबे	द्विनवतिः.
सरसठ	सप्तषष्टिः.	त्रानबे	त्रिनवतिः.
अरसठ	अष्टषष्टिः.	चौरानबे	चतुर्नवतिः.
उनहत्तर	एकोनसप्ततिः.	पिच्चानबे	पञ्चनवतिः.
सत्तर	सप्ततिः	छयानबे	षण्णवतिः.
इकहत्तर	एकसप्ततिः.	सत्तानबे	सप्तनवतिः.
बहत्तर	द्विसप्ततिः.	अट्ठानबे	अष्टनवतिः.
तिहत्तर	त्रिसप्ततिः.	निन्यानबे	एकोनशतम्.
चौहत्तर	चतुःसप्ततिः.	सौ	शतम्.
पिचत्तर	पञ्चसप्ततिः.	एकसौ एक	एकोत्तरशतम्.
छियत्तर	षट्सप्ततिः.	डेढ़ सौ	सार्धशतम्.
सतत्तर	सप्तसप्ततिः.	दो सौ	द्विशतम्.
अठत्तर	अष्टसप्ततिः.	तीन सौ	त्रिशतम्.
उनासी	एकोनाशीतिः.	चार सौ	चतुःशतम्.
अस्सी	अशीतिः.	हज़ार	सहस्रम्.
इक्यासी	एकाशीतिः.	दस हज़ार	अयुतम्.
व्यासी	द्व्यशीतिः.	लाख	लक्षम्.
तिरासी	त्र्यशीतिः.	दस लाख	प्रयुतम्.
चौरासी	चतुरशीतिः.	करोड़	कोटिः.
पिचासी	पञ्चाशीतिः.	दस करोड़	दशकोटिः.

पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
अरब	अर्बुदम्.	दस नील	दशनिखर्वः.
दस अरब	दशार्बुदम्.	पदम	पद्मः.
खर्ब	खर्वः.	दस पदम	दशपद्मः.
दस खर्ब	दशखर्वः	सङ्ख	शङ्खम्.
नील	निखर्वः.	दस सङ्ख	दशशङ्खम्.

हिन्दी ।	संस्कृत ।
हवा से पेड़ हिला करते हैं.	वातेन वृक्षाः प्रकम्पन्ते.
करील के पेड़ जो रस पत्ते नहीं आते तो वसन्त का क्या दोष है.	करीरवृक्षे पत्राणि चेन्नागच्छन्ति तर्हि वसन्तस्य को दोषः.
पीपल के पेड़ में से बन्दा उखाड़ दो.	अश्वत्थवृक्षाद्वृन्दाकमुत्पाटय.
कीकर और ढाक का गोंद प्रायः स्त्री लोग खाती हैं.	कण्टकवृक्षाणां पलाशवृक्षाणां च निर्यासं प्रायस्त्रियः खादन्ति.
पीपल की लाख भी बड़े काम की होती है.	अश्वत्थस्य लाक्षापि महदुपयोगिनी भवति.
अमलतास का गूदा दस्त कराने को दिया जाता है.	(अमलतास) मस्तिष्कं गोर्दं वा विरेचनार्थं प्रयुज्यते.
आक के पेड़ अपने आपही पैदा हो जाते हैं.	अर्कवृक्षास्तु स्वयमेवोत्पद्यन्ते.
क्या अमरूद के पेड़ तुम्हारे बग़ीचे में नहीं हैं.	किं (अमरूद) वृक्षास्तव वाटिकायां न सन्ति.
महदी के पत्तों से स्त्रियां अपने हाथ रचाती हैं.	(महदी) पत्रैः स्त्रियः स्वहस्तौ रञ्जयन्ति.
अँगा की लकड़ी भी हवन में लीजाती है.	अपामार्गस्यापि समिद्धवने गृह्यते.
और भी बहुत सी समिध हैं.	अन्या अपि समिधो बह्व्यः सन्ति.

पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
जैसे—आक, ढाक, खैर जाँगा, पीपल, गूलर, छाँकर, दूब और कुशा यों नौ तरह की समिध होती हैं.	यथा—अर्कपलाशखादिरः अपामार्गोऽथपिप्पलः उदुम्बरशमीदूर्वा कुशेति नवधा समित्.
इस पेड़ का मोटा धड़ नरम पत्ते और कड़ी छाल है.	अस्य वृक्षस्य स्थूलः प्रकाण्डः कोमलानि पर्णानि कठिना त्वक् च वर्तते.
मेरे बगीचे में एक बड़का पेड़ दो पीपल के, तीन शहतूत के, चार अनार के, पांच गूलर के, छः इमली के, सात जामुन के, आठ पिलखन के, नौ ढाक के, दस आम के, ग्यारह महुए के, बारह कटैं के, तेरह सेंजने के, चौदह बेल के, पन्द्रह खैर के, सोलह नारियल के, सत्रह केले के, अठारह नारङ्गी के, उन्नीस बेर के, बीस नीम के, इक्कीस कचनार के, बाईस पीलू के तेईस सेमल के, चौबीस सिरी के, पचीस खजूर के, छब्बीस ताड़ के, सत्ताईस कदम्ब के, अट्ठाईस सिरस के, उन्तीस नीबू खट्टों के, तीस शीशम के, इकतीस कैत के, बत्तीस छोकरे के, तेंतीस चारों ओर बबूल के है.	ममोद्याने एको वटतरुर्द्वौ पिप्पलवृक्षौ चत्वारो दाडिमीवृक्षाः पञ्चोदुम्बराः षडाम्लिकावृक्षाः सप्त जम्बुवृक्षाः अष्टवृक्षाः नव पलाशवृक्षाः दशाम्रवृक्षा एकादशमधूकाः द्वादशकरञ्जवृक्षास्त्रयोदश शिग्रुवृक्षाश्चतुर्दशबिल्ववृक्षाः पञ्चदशखदिरवृक्षाः षोडशनारिकेलवृक्षाः सप्तदशरम्भावृक्षा, अष्टादशभूमिजम्बुकाः, एकोनविंशतिः चदरीवृक्षा विंशतिः पारिभद्रा एकविंशतिः काञ्चनारवृक्षाः, द्वाविंशतिः पीलवः, त्रयोविंशतिः शाल्मलिवृक्षाः, चतुर्विंशतिः सौरिकावृक्षाः पञ्चविंशतिः खर्जूरवृक्षाः षड्विंशतिस्तालाः सप्तविंशतिः कदम्बाः, अष्टाविंशतिः कपीतनाः, एकोनत्रिंशत् इन्तशठवृक्षाः त्रिंशत् शिंशिपावृक्षाः, एकत्रिंशत् कपित्थाः, द्वात्रिंशत् (छोकरा) वृक्षाः त्रयस्त्रिंशत् परितः कण्टकवृक्षाश्च सन्ति.

पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च।

हिन्दी।	संस्कृत।
जैसे एक चन्दन का वृक्ष फुल वनको सुगन्धित कर देता है तैसेही सत्पुत्र अपने खान्दान को शोभित कर देता है.	यथैकश्चन्दनवृक्षो ऽखिलमरण्यमनुवासयति तथैव सत्पुत्रः स्वकुलमनुभूषयति.
हे ज्योतिषी हिसाब की गिन्ती का क्रम श्लोक से कहिये.	गणितज्ञ गणितगणनाक्रमः श्लोकेन उच्यतां; धरम्.
एक १ दश १० शत १०० सहस्र १००० अयुत १०००० लक्ष १०००० प्रयुत १००००० कोटि १००००००० अर्बुद १०००००००० वृन्द १००००००००० खर्व १००००००००० निखर्व १०००००००००० शङ्ख १०००००००००००. पद्म १०००००००००००० सागर १००००००००००००० अनन्त्य १०००००००००००००० मध्य १००००००००००००००० परार्ध १००००००००००००००००.	एकम्, दश, शतम् (चैव) सहस्रम् अयुतं (तथा); लक्षञ्च प्रयुतञ्चैव कोटिर्बुदमेव च। वृन्दं खर्वो निखर्वञ्च शङ्खं पद्मञ्च सागरः; अन्त्यं मध्यं परार्धञ्च दशवृद्ध्या यथाक्रमम्.
आप की वगीची में कितनी तरह के फूल हैं.	भवदीय वाटिकायां कतिविधानि पुष्पाणि सन्ति.
सुगो, गुलाब, कनेर, चमेली, बेला, जूही, मौरसिरी, नारङ्गी का फूल, चम्पा, गुलाला, चन्दन का फूल, मरुआ, केतकी का फूल वगैरह फूल हैं.	शृणु, जपापुष्पम्, कर्णेर, जातीपुष्पम्, वेला, यूथिका, वकुलपुष्प, जाम्भज चम्पकं, गौलालं, श्रीखण्ड, मरुव [गुलाब], कैतक मित्यादीनि पुष्पाणि सन्ति.

पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
कमल, नील कमल, कमोदनी वग़ैरह फूल अक्सर बड़े तालाबों में पाये जाते हैं.	सहस्रपत्रं, नीलोत्पलं, कुमुदित्यादीनि पुष्पाणि प्रायः बृहत् कासारेषु लभ्यन्ते.
सूरजमुखी फूल तो अक्सर जैसे सूरज घूमता है वैसेही घूमता है.	सूर्यमुखाभिधं पुष्पं तु प्रायो यथा सूर्यो परिभ्रमति तथैव भ्राम्यति.
जितने बर्तन मिल सकें उतने ब्राह्मणों को न्योता दो.	यावन्तोऽमत्राणि सम्भवन्ति तावन्तो ब्राह्मणानामन्त्रयस्व.
यह लड़का शिशुमाही इम्तिहान में अपने दर्जे में आठवां है.	षाण्मासिकपरीक्षायामष्टमोऽयंछात्रः स्वकक्षायाम्.
तुम दोनों में से कौन नैयायिक है.	कतरो भवतो नैयायिकः.
तुम सब में कौन व्याकरण जाननेवाला है	कतमो भवतां वैयाकरणः.
परशुराम इक्कीस बार पृथ्वी को क्षत्रियरहित करते हुए.	परशुराम एकविंशतिकृत्वो निःक्षत्रियां महीमकार.
इस दफ़्अ में कितने लड़के हैं.	अस्मिन्वर्गे कतिच्छात्रास्सन्ति.
सौ तक भी तुम गिन सके हो या नहीं?	यावच्छतमपि गणयितु शक्नोषि नवा.
हां गिन सका हूं। यह कितनी गिनती है। मैं कुल गिनती गिन दूं.	ओम् शक्नोमि। एषा संख्या तु कियती। अहमखिलां संख्यां गणयेयम्.
रसिकभौंरे फूलों से रस लेकर मस्त होते हैं.	रसिका भ्रमराः पुष्पेभ्यो रसमाकृष्य माद्यन्ति.
रुद्रदत्त बीस ब्राह्मणों के लिये रोज़ अन्न देता है.	ब्राह्मणानां विंशतये रुद्रदत्तः प्रत्यहमन्नं प्रयच्छति.
बीस क्षत्रिय सौ शूद्रों से मुक़ाबला कर सक्ते हैं.	विंशतिः क्षत्रियाः शतशूद्रेभ्यः प्रतियोद्धुं क्षमाः.
तेंतीस करोड़ देवता, आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह सूर्य्य हैं.	त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवा अष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्यास्सन्ति.
शहद की मक्खी फूलों पर गूँजती हैं.	मधुपाः पुष्पेषु गुञ्जन्ति.

सोलहवां अध्याय—षोडशोऽध्यायः।

आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन-आकाशपदार्था अहोरात्रादिविभागाश्च

हिन्दी।	संस्कृत।
आकाश	नभः, वियत्, व्योम, गगनं, स्वम्.
बादल मेह	मेघः, वारिवाहः, अभ्रम्, घनः
चन्द्रमा	चन्द्रमाः, चन्द्रः, शशी, मृगाङ्कः, कलानिधिः.
ग्रहण	उपरागः, ग्रहः.
सूर्य्य	सूर्य्यः, अर्यमा, आदित्यः.
तारे	नक्षत्रम्, ऋक्षम्, भम्, ताराः, तारकाः, उडुगणः.
बिजली	तड़ित्, विद्युत्, चपला.
ओला	वर्षोपलः, करकाः.
इन्द्रधनुष	इन्द्रधनुः, चापम्.
पारस	परिवेशः, परिधिः.
बरफ	तुषारः, तुहिनम्, हिमम्.
ध्रुव	ध्रुवः, औत्तानपादिः.
मेह की बौछार	शीकरः, अम्बुकणाः.
,, झड़ी	आसारः, धारासम्पातः.

अहोरात्रादिविभागाः।

दिन	घस्रः, दिनम्, अहः, (न०) दिवसः.
सवेरे	प्रभातः, प्रत्यूषः.
दुपहर	मध्याह्नः.

हिन्दी।	संस्कृत।
कौम्हरा दुपहर	पूर्वाह्णः, प्राह्णः.
पहर	यामः, प्रहरः.
तीसरा पहर	अपराह्णः.
साँझ	सायम्, सन्ध्या.
आधीरात	अर्धरात्रिः, निशीथः.
दिन रात	अहोरात्रः, नक्तन्दिवम्, नक्तंदिवा.
रात	निशा, रात्रिः, त्रियामा, रजनी, क्षपा.
वक्त	कालः, दिष्टः समयः.
गुड मोर्निंग	शुभस्तेप्रातःकालोभूयात्.
सबेरे का भजन	प्रातरुपासना.
लालटेन	प्रच्छन्नदीपः, आवृतदीपिका.
अफ़ुआ	किम्वदन्ती, जनश्रुतिः.
आज	अद्यदिनं.
कल [बीता हुआ]	ह्यः.
परसों [बीता हुआ]	परह्यः.
कल [आने वाला]	श्वः.

आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन-आकाशपदार्थाः अहोरात्रादिविभागाश्च

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
परसों [आ नेवाला]	परश्वः.	२ पाख	= एकोमासः.
चार	चासरः.	१२ महीना	= एकःसम्वत्सरः, वत्सरः, अब्दः, वर्षः, हायनः.
अंधेरी रात	तमिस्रा.	इस साल	एषमः (ऽ).
उजेली रात	ज्योत्स्ना.	पार साल	परुत् (ऽ).
उजाला	चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना.	त्यौरस ,,	परारि (ऽ).
१८ पलक	काष्ठा.	ठहरने की जगह	विरतिः, विरामः, यतिः.
३० काष्ठा	एकाकला.	बरसना	वर्षति.
३० कला	एकःक्षणः.	घेरना	आवृणोति-ते.
१२ क्षण	मुहूर्त (दो घड़ी) एकः.	जमना	श्यायते, शिली-घनी-भवति.
३० मुहूर्त्त	अहोरात्र एकः.		
१५ अहोरात्र	एकःपक्षः.		

हिन्दी ।	संस्कृत ।
देखो बादलों से घिरा हुआ यह आकाश कैसा अच्छा लगता है.	पश्य मेघैरावृतमिदं नभः कथं शोभते.
शीघ्रही मेह बरसेगा नीली घटाओं से यह अनुमान होता है.	सद्य एव वारि वर्षिष्यतीति सम्भाव्यते नीलघटाभिः.
कभी पूर्व में कभी दक्षिण में कभी पश्चिम में कभी उत्तर में बिजलियाँ भी चमकती हैं; तारे भी तो अब अच्छी तरह नहीं चमकते.	कदाचित्प्राच्यां कदाचिदवाच्यां कदाचित्प्रतीच्यां कदाचिदुदीच्यां विद्युतोऽपि चकासन्ते; नक्षत्राण्यपि तु यथावन्न द्योतन्तेऽधुना.
चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहण पर बहुत से यात्री कुरुक्षेत्र वगैरह पवित्र स्थानों में जाकर और वहां नहाकर दीन ब्राह्मणों के लिये वित्तानुसार दान देते हैं.	चन्द्रसूर्योपरागे बहवो यात्रिणः कुरुक्षेत्रादिपुण्यस्थलेषु गत्वा तत्र स्नात्वा च यथाशक्ति दीनेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दानमप्रयच्छन्ति.

आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन-आकाशपदार्था अहोरात्रादिविभागाश्च

हिन्दी ।	संस्कृत ।
यहां कौओं की तरह अपनाही पेट पालनेवाले नास्तिक आजकल के नवीन मतों को ग्रहण करनेवालों की यह बात नहीं है.	नात्र काकवदुदरम्भरीणां नास्तिकाना-माधुनिकमतावलम्बिनामेषा वार्ता.
मेह की बौछार ओलों के साथ तिरछी पड़ रही हैं.	मेघासारः सकरकास्तिर्यक् पतन्ति.
ध्रुव तो उत्तर दिशा में ही हमेशा रहता है.	ध्रुवस्तूदीच्यामेव दिशि सदा वर्तते.
कल मैंने चन्द्रमा के मण्डल में पारस देखा था इसी से यह मेह बरसता है.	ह्यो मया चन्द्रमण्डले परिधिर्दृष्ट अत एवायं मेघो वर्षति.
जल के आने का यह एक सगुन है.	जलागमनस्येव शकुनः.
जलके किनके ही शीकर कहलाते हैं.	अम्बुकणा एव शीकरा इत्युच्यन्ते.
आज ज़्यादह जाड़ा है इसी से आज रात को ज़रूर ही पाला जमेगा.	अद्याधिकः शीतो वर्तते ऽतएवाद्य-रात्राववश्यमेव हिमं द्यायिष्यते.
१८ पलकों की एक कला; ३० कलाओं का एक क्षण; १२ क्षण का एक मुहूर्त; ३० मुहूर्त का एक दिनरात; १५ दिन रात का एक पाख; २ पाख का एक महीना; १२ महीनों का एक वर्ष; मनुष्यों के एक महीने का पित्रीश्वरों का दिनरात; मनुष्यों के एक बरस का देवताओं का दिनरात होता है.	अष्टादश निमेषाणा (पलाना) मेकाकला त्रिंशत्कलानामेकः क्षणः, द्वादशक्षणानामेको मुहूर्तः, त्रिंशन्मुहूर्तानामेकोऽहोरात्रः, पञ्चदशाहोरात्राणामेकः पक्षः, द्वयोः पक्षयोरेको मासः, द्वादशमासानामेको वर्षः, मनुष्यमासेनैकोऽहोरात्रः पितॄणां, मनुष्यवर्षेण देवानामहोरात्रः स्यात्.
तहां उत्तरायण देवताओं का दिन और दक्षिणायन रात होती है.	तत्रोत्तरायणं दिनं, दक्षिणायनं रात्रि-र्देवानाम्.

00762

आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन आकाशपदार्थो अहोरात्रादिविभागश्च

हिन्दी ।	संस्कृत ।
देवताओं के ३६५ दिनरात का एक दिव्य वर्ष होता है.	देवाहोरात्राणां षष्ट्युधिकत्रिशतत्रयेण दिव्यं वर्षम्.
देवताओं के १२ हज़ार वर्षों के मनुष्यों के चार युग होते हैं, और यही देवताओं का एक युग होता है, ऐसे देवताओं के हजार युग का ब्रह्मा का एक दिन होता है यही प्राणियों का स्थितिकाल है, और उतनीही रात्रि प्राणियों का प्रलयकाल है.	दिव्यैर्द्वादशभिर्वर्षसहस्रैर्मानुषचतुर्युगं भवति, तच्चैव देवानामेकं युगं एतादृशानां देवयुगानां सहस्रस्य ब्रह्मण एकं दिनम् ततस्तु भूतानां स्थितिकालः तावत्येव रात्रिर्भूतानां प्रलयकालः.
इसही क्रम से सौ वर्ष की ब्रह्मा की परमायु है उसके बाद महाप्रलय होती है जिसमें चौदह लोकों का खातिमा होजाता है.	अनेनैव क्रमेण वर्षाणां शतस्य परमायुर्ब्रह्मणस्तदनन्तरं महाप्रलयो यस्मिँश्चतुर्दशलोकानां परिसमाप्तिर्भवति.
ब्रह्मा के रोज़मर्रे की प्रलय में तो तीन लोकही नष्ट होते हैं.	दैनन्दिनप्रलये तु त्रयो लोका एव नश्यन्ति.
अथवा, देवताओं के ७१ युगों का एक मन्वन्तर होता है, एक मन्वन्तर में चौदह इन्द्र राज्य भोगते हैं ऐसे चौदह मन्वन्तरों का ब्रह्मा का एक दिन होता है.	अथवा, दिव्यानां युगानां यैकसप्ततिस्तन्मन्वन्तरम्; एकस्मिन्मन्वन्तरे चतुर्दशेन्द्राः राज्यं भुञ्जते; तैश्चतुर्दशमन्वन्तरैर्ब्रह्मणो दिनम्भवति.
मरने के बाद जीव के साथ पुण्य पाप ही जाते हैं.	मरणानन्तरं जीवेन सह पुण्यपाप एव गच्छतः.
मोक्ष में रोक लगानेवाले काम क्रोध लोभ मोह चार ही हैं.	मुक्तौ प्रतिबन्धका कामक्रोधलोभमोहाश्चत्वार एव.
अज्ञानही संसार की पैदायश का सबब है	अविद्यैव जगदुत्पत्तेः कारणम्.
किस्मतही प्राणियों का कल्याण और अकल्याण करती है.	भाग्यमेव जीवानां मङ्गलञ्चामङ्गलं विदधाति.

आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन—आकाशपदार्था अहोरात्रादिविभागाश्च

हिन्दी।	संस्कृत।
यह मेरा कहना पण्डितों की खुशी के लिये और मूर्खों के घमण्ड दूर करने के लिये हो.	एषा मदीयोक्तिर्विदुषां मुदेऽविदुषाञ्च दर्पापहाराय भवतु.
हमारे हेडमास्टर जल्दही इन्स्पेक्टर होंगे यह अफ़ुआ मैंने मोतक़िद आदमियों से सुना है.	अस्मद्धेडमास्टरः सद्य एवेन्स्पेक्टरो भविष्यतीति किम्वदन्ती मया विश्वासपात्रेभ्यः पुरुषेभ्यः श्रुता.
जैसे दिन में चार पहर होते हैं तैसे रात में भी.	यथा दिने चत्वारो यामास्तथा रात्रावपि भवन्ति.
(गुडमौर्निंग) तुम्हारे लिये सवेरा मङ्गलदाता हो.	शुभस्ते प्रातःकालो भूयात्.
कृष्णदत्त सवेरे की संध्या करता है.	कृष्णदत्तः प्रातरुपासनां करोति.
आज मैं दुपहर को, कल तीसरे पहर को, परसों कोम्हरे दुपहर अपनी नौकरी से लौटूंगा। अच्छा.	अद्य दिनेऽहं मध्यान्हे श्वो ऽपराह्णे परश्वः पूर्वाह्णे स्ववृत्तितो निवर्तिष्ये। वरम्.
कल शाम को और परसों आधी रात को मेरी भी बारी थी.	ह्यः सन्ध्यायां परह्योऽर्धरात्रौ च ममापि वार आसीत्.
आजकल तो अंधेरी रात है और शुक्र से चांदनी आवेगी.	अधुनैव तु तमिस्रा रात्रिः शुक्राच्च ज्योत्स्ना आगमिष्यति.
यह रात तो उजाली है यहां लालटैन की ज़रूरत नहीं.	एषा रात्रिस्तु चन्द्रिकयान्विता वर्तते नास्त्यावश्यकतात्र प्रच्छन्नदीपस्य.
समय का इतनाही विभाग मैंने दिखाया.	एतावानेव कालविभागो मया प्रदर्शितः.
महरबानी करके आप विराम की निशानियां भी वर्णन करें.	विरतेश्चिह्नान्यपि कृपया वर्णयतु भवान्.

आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन—आकाशपदार्था अहोरात्रादिविभागाश्च

हिन्दी ।	संस्कृत ।
, यह निशान अल्प विराम का है, ; यह चिह्न अर्ध विराम का है, : यह चिह्न अपूर्ण विराम का है, . या । यह चिह्न पूर्ण विराम का है, " " यह चिह्न दूसरे के कथन का है, ? यह चिह्न सवाल का है, ! यह चिह्न विस्मयबोधक व सम्बोधन का है, ( ) यह चिह्न कोष्ठ अथवा अन्तरित वाक्य का है, वगैरह.	, एतच्चिह्नमल्पविरामस्य, ; एतच्चिह्नमर्धविरामस्य, : एतच्चिह्नमपूर्णविरामस्य, . वा । एतच्चिह्नम्पूर्णविरामस्य, " " एतच्चिह्नम्परोक्तेः, ? एतच्चिह्नंप्रश्नस्य, ! एतच्चिह्नंविस्मयसम्बोधनयोः, ( ) एतच्चिह्नंकोष्ठनामान्तरितवाक्यस्य इत्यादीनि.
इस्साल जेठकी सब तपा पण्डित हो गई इससे ऐसा भान होता है कि सूखा पड़ेगा.	एषमो ज्यैष्ठस्य वर्षाप्रतिबन्धकानि नक्षत्राणि पण्डितानि अतो वृष्टिर्न भविष्यतीति सम्भाव्यते.
पारसाल और त्योरस साल दुनियाँ के लिये आनन्ददायक थे.	परुत्परारिवर्षौ प्रजाभ्य आनन्ददायिनावास्ताम्.

सत्रहवाँ अध्याय—सप्तदशोऽध्यायः ।

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
परमेश्वर .	विष्णुः, नारायणः, कृष्णः, गोविन्दः, इत्यादि.
लक्ष्मी .	पद्मालया, पद्मा, श्रीः, हरिप्रिया, कमला, इत्यादि.
हरिवाहन .	गरुड़ः, तार्क्ष्यः, वैनतेयः, खगेश्वरः, इत्यादि.
हरि गदा, शंख, खड्ग, चक्र और मणि.	कौमोदकी, पाञ्चजन्यः, नन्दकः, सुदर्शनम्, कौस्तुभः.
ब्रह्मा .	स्रष्टा, प्रजापतिः, धेधाः, विधाता, विधि इत्यादि.
ब्रह्मा की स्त्री .	सरस्वती, वाग्देवी, इत्यादि.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
महादेव .	शिवः, शङ्करः, उग्रः, श्रीकण्ठः, हरः इत्यादि.
महादेव की स्त्री .	सती, दाक्षायणी, अपर्णा, पार्वती, दुर्गा, उमा इत्यादि.
इन्द्र .	मघवा, पुरन्दरः, शक्रः, शचीपतिः, वासवः, इत्यादि.
इन्द्र की स्त्री .	शची, इन्द्राणी, पुलोमजा इत्यादि.
इन्द्र का लोक .	स्वर् (ऽ) स्वर्गः, नाकः, त्रिदशालयः, त्रिदिव इत्यादि
इन्द्र का हथियार .	वज्रम्, कुलिशम्, भिदुरम्, पविः इत्यादि.
गणेश .	विनायकः, गणाधिपः, लम्बोदरः, गजाननः, इत्यादि
देव सेनापति .	कार्तिकेयः, षडाननः, स्कन्दः, गुहः, इत्यादि.
देवताओं के ख़ज़ानची .	कुबेरः, त्र्यम्बकसखः, यक्षराट्, पौलस्त्यः इत्यादि.
ख़ज़ाना .	निधिः (पुं.), शेवधिः (पुं.) इत्यादि.
अग्नि .	वैश्वानरः, वह्निः, ज्वलनः, हुताशनः, अनलः इत्यादि.
अग्नि की चिनगारी .	स्फुलिङ्गः, अग्निकणः.
धर्मराज .	कृतान्तः, यमः, दमनः, पितृपतिः, काल, इत्यादि.
जलदेवता .	प्रचेताः, वरुणः, पाशी, यादःसांपतिः अपांपतिः इत्यादि
पवन .	समीरः, मारुतः, गन्धवहः, वायुः, अनिलः, इत्यादि.
देव भोजन .	पीयूषम्, अमृतम्, सुधा इत्यादि.
देव वृक्ष .	मन्दारः, पारिजातकः, सन्तान , कल्पवृक्षः, हरि-चन्दन-नः.
देहस्थ पवन .	प्राणः, अपानः, समानः, उदानः, व्यानः.
देवता .	अमराः, निर्जराः, देवाः, सुराः, आदित्याः इत्यादि.
दैत्य .	असुराः, दनुजाः, दानवाः, शुक्रशिष्याः इत्यादि.
राक्षस .	कौणपाः, क्रव्यादः, असृपाः इत्यादि.
कामदेव .	पुष्पधन्वा, रतिपतिः, मकरध्वजः, कामः, स्मरः. इत्यादि.
रवि, .	सूरः, सूर्यः, आदित्यः, दिवाकरः.
किरण .	मयूखः, उक्षः, अंशुः.

आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन—आकाशपदार्थो अहोरात्रादिविभागाश्च

हिन्दी ।	संस्कृत ।
, यह निशान अल्प विराम का है, ; यह चिह्न अर्ध विराम का है, : यह चिह्न अपूर्ण विराम का है, . या । यह चिह्न पूर्ण विराम का है, " " यह चिह्न दूसरे के कथन का है, ? यह चिह्न सवाल का है, ! यह चिह्न विस्मयबोधक व सम्बोधन का है, ( ) यह चिह्न कोष्ठ अथवा अन्तरित वाक्य का है, वगैरह.	, एतच्चिह्नमल्पविरामस्य, ; एतच्चिह्नमर्धविरामस्य, : एतच्चिह्नमपूर्णविरामस्य, . वा । एतच्चिह्नम्पूर्णविरामस्य, " " एतच्चिह्नम्परोक्तेः, ? एतच्चिह्नंप्रश्नस्य, ! एतच्चिह्नंविस्मयसम्बोधनयोः, ( ) एतच्चिह्नंकोष्ठनामान्तरितवाक्यस्य इत्यादीनि.
इससाल जेठकी सब तपा खण्डित हो गई इससे ऐसा भान होता है कि सूखा पड़ेगा.	एषमो ज्यैष्ठस्य वर्षाप्रतिबन्धकानि नक्षत्राणि खण्डितानि अतो वृष्टिर्न भविष्यतीति सम्भाव्यते.
पारसाल और त्योरस साल दुनियाँ के लिये आनन्ददायक थे.	परुत्परारिवर्षौ प्रजाभ्य आनन्ददायिनावास्ताम्.

सत्रहवाँ अध्याय—सप्तदशोऽध्यायः ।

स्वर्गीयदृष्टान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
परमेश्वर .	विष्णुः, नारायणः, कृष्णः, गोविन्दः, इत्यादि.
लक्ष्मी .	पद्मालया, पद्मा, श्रीः, हरिप्रिया, कमला, इत्यादि.
हरिवाहन .	गरुडः, तार्क्ष्यः, वैनतेयः, खगेश्वरः, इत्यादि.
हरि गदा, शंख, खड्ग, चक्र और मणि.	कौमोदकी, पाञ्चजन्यः, नन्दकः, सुदर्शनम्, कौस्तुभः.
ब्रह्मा .	स्रष्टा, प्रजापतिः, वेधाः, विधाता, विधि इत्यादि.
ब्रह्मा की स्त्री .	सरस्वती, वाग्देवी, इत्यादि.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
महादेव	शिवः, शङ्करः, उग्रः, श्रीकण्ठः, हरः इत्यादि.
महादेव की स्त्री	सती, दाक्षायणी, अपर्णा, पार्वती, दुर्गा, उमा इत्यादि.
इन्द्र	मघवा, पुरन्दरः, शक्रः, शचीपतिः, वासवः, इत्यादि.
इन्द्र की स्त्री	शची, इन्द्राणी, पुलोमजा इत्यादि.
इन्द्र का लोक	स्वर् (ऽ) स्वर्गः, नाकः, त्रिदशालयः, त्रिदिव इत्यादि.
इन्द्र का हथियार	वज्रम्, कुलिशम्, भिदुरम्, पविः इत्यादि.
गणेश	विनायकः, गणाधिपः, लम्बोदरः, गजाननः, इत्यादि.
देव सेनापति	कार्तिकेयः, षड्राननः. स्कन्दः, गुहः, इत्यादि.
देवताओं के ख़ज़ानची	कुबेरः, त्र्यम्बकसखः, यक्षराट्, पौलस्त्यः इत्यादि.
ख़ज़ाना	निधिः (पुं.), शेवधिः (पुं.) इत्यादि.
अग्नि	वैश्वानरः, वह्निः, ज्वलनः, हुताशनः, अनलः इत्यादि.
अग्नि की चिनगारी	स्फुलिङ्गः, अग्निकणः.
धर्मराज	कृतान्तः, यमः, शमनः, पितृपतिः, काल, इत्यादि.
जलदेवता	प्रचेताः, वरुणः, पाशी, यादसांपतिः अप्पतिः इत्यादि
पवन	समीरः, मारुतः, गन्धवहः, वायुः, अनिलः, इत्यादि.
देव भोजन	पीयूषम्, अमृतम्, सुधा इत्यादि.
देव वृक्ष	मन्दारः, पारिजातकः, सन्तानः, कल्पवृक्षः, हरिचन्दनं-नः.
देहस्थ पवन	प्राणः, अपानः, समानः, उदानः, व्यानः.
देवता	अमराः, निर्जराः, देवाः, सुराः, आदितेयाः इत्यादि.
दैत्य	असुराः, दनुजाः, दानवाः, शुक्रशिष्याः इत्यादि.
राक्षस	कौणपाः, क्रव्यादः, असृपाः इत्यादि.
कामदेव	पुष्पधन्वा, रतिपतिः, मकरध्वजः, कामः, स्मरः इत्यादि.
रवि,	सूरः, सूर्यः, आदित्यः, दिवाकरः.
किरण	मयूखः, उत्रः, अंशुः.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
रवि सारथी	सूरसूतः, अरुणः, अनूरुः.
चन्द्र	हिमांशुः, चन्द्रमाः, चन्द्रः, ग्लौः, मृगाङ्कः, इत्यादि.
मङ्गल	अङ्गारकः, कुजः, भौमः, महीसुतः, इत्यादि.
बुध	रौहिणेयः, बुधः, सौम्यः, इत्यादि.
बृहस्पति	गीष्पतिः, सुराचार्यः, गुरुः, इत्यादि.
शुक्र	उशना भार्गवः दैत्यगुरुः इत्यादि.
शनिश्चर	शौरिः, शनैश्चरः इत्यादि.
राहु, केतु	तमः, (ऽर्का) स्वर्भानु, सैंहिकेयः, विधुन्तुदः इत्यादि.
अगहन.	मार्गः, मार्गशीर्षः, सहाः (पुं०)
पूस	पौषः, तैषः, सहस्यः.
माह	तपाः, [पुं०] माघः.
फागुन	तपस्यः, फाल्गुनिकः, फाल्गुनः.
चैत	चैत्रः मधुः चैत्रिकः.
बैसाख	वैशाखः, माधवः राधः.
जेठ	ज्यैष्ठः शुक्रः.
आषाढ	शुचिः, आषाढः.
सावन	श्रावणः, नभा [पु०] श्रावणिकः.
भादों	नभस्यः, भाद्रः, प्रौष्ठपदः.
क्वार	आश्विनः, इषः, आश्वयुजः.
कातिक	घाहलः ऊर्जः, कार्तिकिकः.
दिशाएँ	दिशः, ककुभः काष्ठा, आशाः, हरितः, इत्यादयः.
जीतना, जयहोना	जयति, विजयते.
पैदाहोना, करना	उत्पद्यते, जायते, रोहति, स्फायते, सञ्जनयति-ते, उत्पादयति.
जाना	गच्छति, व्रजति, चरति, याति, एति, सरति, क्रामति.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तारीफ़करना .	स्तौति, श्लाघते, प्रशंसति, विकत्थते.
प्राप्तकरना .	लभते, आप्नोति, अधिगच्छति, अर्जति, विन्दति-ते
उपासनाकरना .	उपासते.
गिरना .	पतति, च्यवते, स्रंसते, भ्रंशते, भ्रश्यति, गलति,
तरना, धारकेसामने तैरना	तरति, प्लवते । प्रतीपंतरति.
बयानकरना .	वर्णयति, कथयति, आचष्टे वदति, ब्रवीति, ब्रूते, वक्ति, व्याख्याति, भणति.
नामलेना .	अभिदधाति, नामगृह्णाति.
कहाजाना .	उच्यते शब्द्यते, निगद्यते, अभिधीयते.
होना .	अस्ति, भवति, वर्तते, विद्यते, सम्पद्यते.
सुनना .	शृणोति [प्रे०] श्रावयति । आकर्णयति, निशाम्यति [प्रे०] निशामयति.
जानना .	वेत्ति, जानाति, अवगच्छति.
खुलासाकरना .	विवृणोति—ते.
समाना .	माति.
उड़ना .	डीयते, उड्डयते, उत्पतति, आकाशेनयाति, खे विसर्पति.
देखना वा ढूंढना .	पश्यति, ईक्षते, आ-अवलोकते । निरूपयति, निर्वर्णयति, लक्षयति, अन्विष्यति, मृगयति.
रक्षाकरना वा रखना .	रक्षति, पाति, त्रायते, निदधाति, स्थापयति, न्यस्यति—ते.
पढ़ना, सीखना .	शिक्षते, अधीते, पठति, अधिगच्छति । वाचयति, अध्येति.
निकालना .	निष्काशयति, अपवाहयति, नि.सारयति.

स्वर्गारोहवृत्तान्ताः धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
रवि सारथी	सूरसूतः, अरुणः, अनूरुः.
चन्द्र	हिमांशुः, चन्द्रमाः, चन्द्रः, ग्लौः, मृगाङ्कः, इत्यादि.
मङ्गल	अङ्गारकः, क्षुजः, भौमः, महीसुतः, इत्यादि.
बुध	रौहिणेयः, बुधः, सौम्यः, इत्यादि.
बृहस्पति	गीष्पतिः, सुराचार्यः, गुरुः, इत्यादि.
शुक्र	उशना भार्गवः दैत्यगुरुः इत्यादि.
शनिश्चर	शौरिः, शनैश्चरः इत्यादि.
राहु, केतु	तमः, (स्त्री) स्वर्भानु, सैंहिकेयः, विधुन्तुदः इत्यादि
अगहन.	मार्गः, मार्गशीर्षः, सहाः (पुं०)
पूस	पौषः, तैषः, सहस्यः.
माह	तपाः, [पुं०] माघः.
फागुन	तपस्यः, फाल्गुनिकः, फाल्गुनः.
चैत	चैत्रः मधुः चैत्रिकः.
बैसाख	वैशाखः, माधवः राधः.
जेठ	ज्यैष्ठः शुक्रः.
आषाढ	शुचिः, आषाढः.
सावन	श्रावणः, नभा [पुं०] श्रावणिकः.
भादौं	नभस्यः, भाद्रः, प्रौष्ठपद्रः.
क्वार	आश्विनः, इषः, आश्वयुजः.
कातिक	पाद्गुलः ऊर्जः, कार्तिकिकः.
दिशाएँ	दिशः, ककुभः काष्ठा, आशाः, हरितः, इत्याद्यः.
जीतना, जयहोना	जयति, विजयते.
पैदाहोना, करना	उत्पद्यते, जायते, रोहति, स्फायते, सञ्जनयति-ते, उत्पादयति.
जाना	गच्छति, व्रजति, चलति, याति, एति, सरति, काम्यति.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तारीफ़करना .	स्तौति, श्लाघते, प्रशंसति, विकत्थते.
प्राप्तकरना .	लभते, आप्नोति, अधिगच्छति, अर्जति, विन्दति-ते
उपासनाकरना .	उपासते.
गिरना .	पतति, च्यवते, स्रंसते, भ्रंशते, भ्रश्यति, गलति,
तरना, धारके सामने तैरना	तरति, प्लवते । प्रतीपंतरति.
बयानकरना .	वर्णयति, कथयति, आचष्टे वदति, ब्रवीति, भूते, वक्ति, व्याख्याति, भणति.
नामलेना .	अभिदधाति, नामगृह्णाति.
कहाजाना .	उच्यते शब्द्यते, निगद्यते, अभिधीयते.
होना .	अस्ति, भवति, वर्तते, विद्यते, सम्पद्यते.
सुनना .	शृणोति [प्रे०] श्रावयति । आकर्णयति, निशाम्यति [प्रे०] निशामयति.
जानना .	वेत्ति, जानाति, अवगच्छति.
खुलासाकरना .	विवृणोति—ते.
समाना .	माति.
उड़ना .	डीयते, उड्डयते, उत्पतति, आकाशेनयाति, खे विसर्पति.
देखना वा ढूंढना .	पश्यति, ईक्षते, आ-अवलोकते । निरूपयति, निर्वर्णयति, लक्षयति, अन्विष्यति, मृगयति.
रक्षाकरना वा रखना .	रक्षति, पाति, त्रायते, निदधाति, स्थापयति, न्यस्यति—ते.
पढ़ना, सीखना .	शिक्षते, अधीते, पठति, अधिगच्छति । धाक्षयति, अध्येति.
निकालना .	निष्काशयति, अपवाहयति, निःसारयति.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
राधामाधवको जयहो ।	राधामाधवौ विजयेताम् ।
परमेश्वर ही जगत् का कारण है उसही से स्थावरजङ्गमरूपसृष्टि उत्पन्नहोतीहै और उसही में लयको प्राप्तहोती है.	परमेश्वरोहि जगतां कारणं तस्मादेव स्थावरजङ्गमरूपं जगतां उत्पद्येते तस्मिन्नेव लयं गच्छतश्च.
भक्त उसको "हरि कृष्ण, गोविन्द नारायण, वासुदेव" इत्यादि नामों से स्तुति करते हैं.	भक्तास्तं हरि कृष्ण गोविन्द नारायण वासुदेवेत्यादिनामभिः स्तुवन्ति.
ईश्वरपाने केलिये दोही मार्ग पहिले आचार्यों ने कहेहैं पहिला प्रवृत्तिमार्ग और दूसरा निवृत्ति मार्ग.	ईश्वर प्राप्तये द्वावेव मार्गौ पुराणाचार्यैः प्रोक्तौ प्रथमः प्रवृत्तिमार्गः द्वितीयो निवृत्तिमार्गश्च.
नष्ट हुए हैं सम्पूर्ण पाप जिनके और जानना रहाहै जाननेयोग्य पदार्थ जिनको ऐसे अल्पज्ञ, भृगु इत्यादि महर्षियों से दिखाया हुआजो प्रवृत्तिमार्ग तिससेही श्रीकृष्ण की भक्ति में तत्पर हुए उस ईश्वरको प्राप्तकरते हैं.	अहताखिलकल्मषाः विदितवेदितव्या अल्पज्ञा भृग्वादिप्रदर्शितप्रवृत्तिमार्गेणैव श्रीकृष्णभक्तितत्परास्सन्तः तमीश्वरं लभन्ते.
नष्टहोगये हैं सम्पूर्ण पाप जिनके और रागद्वेषादि दोषरहित महात्मालोग सनकादि महर्षियों से दिखाये हुए रास्तेसेही योगादि के जरिये से उस सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्मको प्राप्त करते हैं.	निर्धूताखिलकल्मषाः रागद्वेषादिदोषशून्या यतयः सनकादिप्रदर्शितमार्गेणैव योगादिद्वारा तत्सच्चिदानन्दस्वरूपं ब्रह्माधिगच्छन्ति.
अपने धर्म में मौतभी अच्छी है और दूसरों का धर्म भयदायक होता है.	स्वधर्मे मृत्युरपि श्रेयान् परधर्मश्च भयप्रदः.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च।

हिन्दी।	संस्कृत।
जो पुरुष चित्तकी सफ़ाई और रागद्वेषादि रहित हुएविना निवृत्त मार्ग को ग्रहण करते हैं वे अनधिकारी कहने मात्र के ज्ञानी दोनों ओर से (इसलोक व परलोक से) भ्रष्ट हुए नरक मेंही अवश्य पड़ेंगे (क्योंकि) उनमें पाण्डित्यका अभाव होने से.	ये जनाः चित्तशुद्धिं रागद्वेषादिदोषराहित्यञ्च विना निवृत्तिमार्गमुपासते तेऽनधिकारिणो वाचकज्ञानिन उभयतो भ्रष्टा निरयं एवाव्श्य पतिष्यन्ति तेषु पाण्डित्याभावात्.
इससे संसार समुद्र को तरने की इच्छा करता हुआ मनुष्य हमेशा आस्तिक होकर सनातनधर्मरूपी नौका का आश्रय ले कर भक्ति रूपी डाँड़े के ज़रिये से संसार समुद्र को तरजाय.	अतः संसारार्णवं तितीर्षुर्बुद्धिमान् जनः सदास्तिको भूत्वा सनातनधर्मपोतमेवावलम्ब्य भक्तिक्षेपणीद्वारा तं तरेत्.
चतुर्भुज रूप विष्णु के हथियार वर्णन-करो कौमोदकी नाम गदा, नन्दक-नाम तलवार पाञ्चजन्यनाम शंख, सुदर्शन नाम चक्र.	चतुर्भुजरूपिणः विष्णोरायुधानि वर्णय कौमोदकी गदा, नन्दकः खड्गः, पाञ्चजन्यः शङ्खः चक्रं सुदर्शनमिति.
भगवान् की सवारी कौन है? गरुड़.	हरिवाहनः कः? गरुडः.
भगवान् की पत्नी का क्या नाम है? श्रीं लक्ष्मी वगैरह.	तत्पत्न्याः किं नाम? श्रीः लक्ष्मीरित्यादि.
रुद्र और प्रजापति की स्त्रियों का क्या नाम है.	रुद्रप्रजापत्योः स्त्रियोः किं नाम?
उमा, और सरस्वती.	उमा सरस्वती च.
(१)—विद्याविनय संपन्न ब्राह्मण में गौमें और हाथी में कुत्ते में और चाण्डाल में पण्डित समदर्शी होते हैं। यह गीताका वाक्य है।	(१)—विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि-हस्तिनि शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः। १। इति गीता वाक्यात्.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
यही भगवान् सृष्टि के उत्पन्न करने के समय स्रष्टा, प्रजापति इत्यादि नामों से, और पालन समय में विष्णु इत्यादिनामों से, और प्रलय समय में रुद्र इत्यादि नामों से बोले जाते ह.	स एव भगवान् सृष्टेरुत्पादनसमये स्रष्टा प्रजापतिरित्यादिनामभिः, पालनसमये विष्णुरित्यादिनामभिः प्रलयसमये रुद्र इत्यादिनामभिः शब्द्यते (अभिधीयते निगद्यते वा).
देवताओं का राजा कौन है? और उस की पत्नी कौन है?	देवराजः कः? तत्पत्नी च का?
इन्द्र । शची.	इन्द्रः । शची.
गणेशजी की पूजा सबही सनातन धर्म को मानने वालों के घर सबही अच्छे कामों में विघ्न दूर करने के लिये पहिलेही होती है.	गणेशस्य पूजा सर्वेषामेव सनातनधर्ममतावलम्बिनां गृहे सर्वेषु शुभकार्येषु विघ्नविघाताय प्रथममेव भवति.
देवताओं के सेनापति और खज़ानची का क्या नाम है?	देवसेनान्यः, धनाध्यक्षस्य च किं नाम?
कार्तिकेय और कुबेर.	कार्तिकेयः कुबेरश्च.
धनके खज़ाने के दोनाम निधि और शेवधि हैं.	द्रव्यसमूहस्य निधिः शेवधिश्च द्वे नाम्नी स्तः.
आंच के धौंकने से चिनगारी उड़ती हैं.	अग्नेः प्रधमापनात्स्फुलिङ्गाः उत्पतन्ति.
धर्मराज के नाम भी कृपा कर सुनाओ.	धर्मराजनामान्यपि कृपया भावयतु.
कृतान्त, यम, शमन वग़ैरह.	कृतान्तः यमः शमनः, इत्यादीनि.
जलके अधिष्ठाता देवके नाम अब कृपा कर जताओ.	विज्ञापयाधुना कृपया जलाधिष्ठातृदेवस्य नामानि.
वरुण, प्रचेता और अप्पति वग़ैरह.	वरुणः प्रचेताः, अप्पतिः, इत्यादीनि.
हवा के नाम भी कहो.	वायोर्नामधेयान्यपि ब्रूहि.
समीर, मारुत और अनिल वग़ैरह.	समीरः, मारुतः, अनिलः, इत्यादीनि.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
देहकी वायु कितनी हैं उनके स्थान भी अलग २ वर्णन करो । सुनो.	कतिसंख्याका देहस्थवायवः तेषां स्थानान्यपि पृथक्तया व्याख्याहि 'शृणु.
हृदय में प्राण, गुदा में अपान, टूंडी में समान, कण्ठ में उदान, सबदेह में व्यान इस प्रकार पांच देहकी वायु हैं.	हृदि प्राणः, गुदेऽपानः, नाभौ समानः कण्ठे उदानः अखिलशरीरे व्यान. इत्थं पञ्च देहस्था वायवः सन्ति.
संसार को वश करने वाले कामदेव के नाम भी कहो.	जगद्वशकर्तुः कामदेवस्य नामान्यपि भण.
काम, स्मर, कन्दर्प वगैरह जानो.	कामः, स्मरः, कंदर्पः इत्यादीनि विद्धि.
स्वर्ग में देवता और दानवों के नाम भी बताओ.	त्रिदिवे सुरासुराणां नाम्यप्याख्याहि
देवता तो देव. निर्जर, अमर वगैरह नामों से और असुर दैत्य, दनुज, दानव वगैरह नामों से मशहूर हैं.	सुरास्तु देवाः, अमराः, निर्जरा इत्यादि नामभिः, असुराश्च दैत्याः, दनुजा, दानवा इत्यादिनामभिः प्रसिद्धाः.
आठसिद्धि जो सुनीजाती हैं उन्हे खुलासा कहो.	अष्टसिद्धयो याः श्रूयन्ते ताः समासेन ब्रूहि.
अणिमातो पहिलीसिद्धि है दूसरी महिमा कहलाती है, तीसरी गरिमा कही है चौथी लघिमा, तैसेही	अणिमातु प्रथमा सिद्धिः द्वितीया महिमोच्यते तृतीया गरिमा प्रोक्ता चतुर्थी लघिमा तथा पञ्चमी
१ अणिमा=सूक्ष्म शरीर धारण करना.	१ अणोर्भावः=अणिमा कोऽर्थः सूक्ष्म शरीरधारित्वम्.
२ महिमा=जिससे ब्रह्माण्ड में न समाय.	२ महतोभावः=महिमा कोऽर्थः येन ब्रह्माण्डे न माति.
३ गरिमा=इतना भारी होजाय कि बडे बलवानों से भी न उठाया जा सके.	३ गरिमा=गुरोर्भावः कोऽर्थः येनोत्कृष्टबलवद्भिरपि अनूह्यः स्यात्.
४ लघिमा=जिससे रुई के तुल्य होकर जहां मन में आवे वहां उड़जाय.	४ लघोर्भावः=लघिमा कोऽर्थः येन तूलसदृशो भूत्वा यथेष्टमुड्डीयेत्.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
पाचवी प्राप्ति नाम की है छठी प्राकाम्य, यहां से आगे सातवीं ईशित्व और तैसेही आठवीं वशित्व कही है.	प्राप्तिर्नाम्नीस्यात्षष्ठी प्राकाम्यं सित्यत ईशित्वं सप्तमी प्रोक्ता वशित्वं चाष्टमी तथा.
इनके अर्थ भी क्रमसे टिप्पणी में देखो नवग्रहों के प्रसिद्धपर्यायों कोभी अलग २ इसी पाठकी लफ्जों की श्रेणी में देखो.	एतासामर्थानपि टिप्पण्यां क्रमतः पश्य नवग्रहाणां प्रसिद्धपर्यायानपि पृथक्कयास्यैव पाठस्य शब्दश्रेण्यां पश्य.
सप्तर्षी कौनहैं उनके नाम श्लोक बद्ध कहो. सुनिये.	सप्तर्षयः के तन्नामानि श्लोकबद्धानिवद. श्रूयन्ताम्.
मरीचि, अङ्गिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वशिष्ठ ये सात बुद्धिमानों ने सप्तर्षि माने हैं.	मरीचि रङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः। वशिष्ठश्चेति सप्तैते ब्राह्मेरसप्तर्षयो मताः.
चोदह लोक कौन से हैं ?	चतुर्दशलोकाः के ?
भूः भुव, स्वर, जन, तप, मह और सत्य ये सात ऊपरके लोक हैं.	भूः, भुवः, स्वः, जनः, तपः, महः सत्यः एते सप्तोपरिस्था लोकाः.
तल, वितल, सुतल, महातल, तलातल रसातल, पाताल ये सात नीचे के लोक जानने.	तलः, वितलः, सुतलः, महातलः, तलातलः, रसातलः, पातालः एते सप्ताधःस्था लोका ज्ञेयाः.
१ प्राप्ति=उगली की नोक से चन्द्रमा आदि अलभ्य चीजोंका जिससे लाभ हो.	१ प्राप्तिः=कोऽर्थः अंगुल्यग्रेण चन्द्रादीनामलभ्यवस्तूनां येन लाभः.
२ प्राकाम्य=इच्छा न मारी जाय.	२ प्रकामस्य भावः= प्राकाम्यं कोऽर्थः इच्छानभिघातः.
३ ईशित्व=जिससे स्थावर भी आज्ञाकारी हों.	३ ईशिनो भावः=ईशित्वं कोऽर्थः येन स्थावरा अपि आज्ञाकारिणः स्युः.
४ वशित्व=जिससे पृथ्वीमें भी उन्मज्जन निमज्जन होजाय.	४ वशिनोभावः=वशित्वं कोऽर्थः येन भूमावपि उन्मज्जननिमज्जने स्याताम

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च।

हिन्दी।	संस्कृत।
साल के दो अयन होते हैं दक्षिणायन और उत्तरायण.	वर्षस्य द्वेअयने स्तः दक्षिणायनमुत्तरायणञ्च.
एक साल में छः ऋतु नीचे लिखी तरतीब से होती हैं.	एकस्मिन् वत्सरे षड्ऋतवो निम्न क्रमेण भवन्ति.
अगहन और पूस में हेमन्त; माघ और फागुन में शिशिर याजड़; चैत्र और वैशाख में वसन्त; जेठ और असाढ़ में ग्रीष्म; सावन और भादों में वर्षा या प्रावृट्; क्वार और कातिक में शरद्	मार्गशीषेच हेमन्तः जैष्ठो (शिशिरः) माघे च फाल्गुने; चैत्रेराधे (वैशाखे) वसन्तः स्यात्, शुचौश्रुके (आषाढ़े) चग्रीष्मकः, वर्षस्तुः श्रावणेभाद्रे; आश्विने कार्तिके शरद् इति.
पूर्वदिशा प्राची, पश्चिमदिशा प्रतीची दक्षिणदिशा अवाची और उत्तर दिशा उदीची कहलाती है.	पूर्वादिक् प्राची, पश्चिमा दिक् प्रतीची, दक्षिणा दिगवाची उत्तरादिगुदीचीति मण्यते.
साहित्य सम्बन्धी आठ रस बयान करने चाहियें.	साहित्यविषयकाः अष्टौ रसाः वर्णनायाः.
शृङ्गार, वीर करुण, अद्भुत, हास्य, भयानक, वीभत्स, रौद्र ये आठ रस जानने.	शृङ्गारः, वीरः करुणः, अद्भुतः, हास्यः, भयानकः, वीभत्सः, रौद्रः इत्यष्टौरसा ज्ञेयाः.
कान, त्वचा, नेत्र, जीभ और नाक ये पाँच ज्ञानेन्द्रिय; वाणी, हाथ, पाँव, गुदा और लिंग ये पाँच कर्मेन्द्रिय हैं इस प्रकार मिलकर दस इन्द्रिय हैं। और दिल दोनों तरह का है.	श्रोत्रं, त्वक, चक्षुः, रसना, घ्राणमिति पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, वाक्, पाणिः, पादः, पायुः, उपस्थः, इति पञ्च कर्मेन्द्रियाणि एवं मिलित्वा दशेन्द्रियाणि सन्ति. उभयात्मकं मनः.
शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये पाँच तरतीब चार ज्ञानेन्द्रियोंके विषय हैं.	शब्दः, स्पर्शः, रूपम्, रसः, गन्धः इत्येते पञ्च क्रमशो ज्ञानेन्द्रियाणां विषयाः.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
पाचवीं प्राप्ति नाम की है छठी प्राकाम्य, यहां से आगे सातवीं ईशित्व और तैसेही आठवीं वशित्व कही है.	प्राप्तिनाम्नीस्यात्षष्ठी प्राकाम्यं मित्यत ईशित्वं सप्तमी प्रोक्ता वशित्वं चाष्टमी तथा.
इनके अर्थ भी क्रमसे टिप्पणी में देखो नवग्रहों के प्रसिद्धपर्यायों कोभी अलग २ इसी पाठकी लफ्जों की श्रेणी में देखो.	एतासामर्थानपि टिप्पण्यां क्रमतः पश्य नवग्रहाणां प्रसिद्धपर्यायानपि पृथक्कयास्यैव पाठस्य शब्दश्रेण्यां पश्य.
सप्तर्षि कौनहैं उनके नाम श्लोक बद्ध कहो. सुनिये.	सप्तर्षयः के तन्नामानि श्लोकबद्धानिवद. श्रूयन्ताम्.
मरीचि, अङ्गिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वशिष्ठ ये सात बुद्धिमानों ने सप्तर्षि माने हैं.	मरीचि रङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः। वशिष्ठश्चेति सप्तैते प्राजैरस्तर्षयो मताः.
चोदह लोक कौन से हैं ?	चतुर्दशलोकाः के ?
भूः भुव, स्वर, जन, तप, मह और सत्य ये सात ऊपरके लोक हैं.	भूः, भुवः, स्वः, जनः, तपः, महः सत्यः एते सप्तोपरिस्थां लोकाः.
तल, वितल, सुतल, महातल, तलातल रसातल, पाताल ये सात नीचे के लोक जानने.	तलः, वितलः, सुतलः, महातलः, तलातलः, रसातलः, पातालः एते सप्ताधःस्था लोका ज्ञेयाः.

१ प्राप्ति=उंगली की नोंक से चन्द्रमा आदि अलभ्य चीजोंका जिससे लाभ हो.
२ प्राकाम्य=इच्छा न मारी जाय.
३ ईशित्व=जिससे स्थावर भी आज्ञाकारी हों.
४ वशित्व=जिससे पृथ्वीमें भी उन्मज्जन निमज्जन होजाय.

१ प्राप्तिः=कोऽर्थः अंगुल्यग्रेण चन्द्रादीनामलभ्यवस्तूनां येन लाभः.
२ प्रकामस्य भावः= प्राकाम्यं कोऽर्थः इच्छानभिघातः.
३ ईशिनो भावः=ईशित्वं कोऽर्थः येन स्थावरा अपि आज्ञाकारिणः स्युः.
४ वशिनोभावः=वशित्वं कोऽर्थः येन भूमावपि उन्मज्जननिमज्जने स्याताम्

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
साल के दो अयन होते हैं दक्षिणायन और उत्तरायण.	वर्षस्य द्वेअयने स्तः दक्षिणायनमुत्तरायणञ्च.
एक साल में छः ऋतु नीचे लिखी तरतीब से होती हैं.	एकस्मिन् वत्सरे षड्ऋतवो निम्नक्रमेण भवन्ति.
अगहन और पूस में हेमन्त; माघ और फागुन में शिशिर याजड़; चैत्र और वैशाख में वसन्त; जेठ और असाढ़ में ग्रीष्म; सावन और भादों में वर्षा या शरद्; क्वार और कातिक में शरद्	मार्गशीषेच हेमन्तः जडो (शिशिरः) माघे च फाल्गुने; चैत्रेराधे (वैशाखे) वसन्तः स्यात्, शुचौशुक्रे (आषाढ़े) चग्रीष्मकः, वैभवेतुः श्रावणेभाद्रे; आश्विने कार्तिके शरद् इति.
पूर्वदिशा प्राची, पश्चिमदिशा प्रतीची दक्षिणदिशा अवाची और उत्तर दिशा उदीची कहलाती है.	पूर्वादिक् प्राची, पश्चिमा दिक् प्रतीची, दक्षिणा दिगवाची उत्तरादिगुदीचीति भण्यते.
साहित्य सम्बन्धी आठ रस बयान करने चाहियें.	साहित्यविषयकाः अष्टौ रसाः वर्णनीयाः.
शृङ्गार, वीर करुण, अद्भुत, हास्य, भयानक, वीभत्स, रौद्र ये आठ रस जानने.	शृङ्गारः, वीरः. करुणः, अद्भुतः, हास्यः, भयानकः,, वीभत्सः, रौद्रः इत्यष्टौरसा ज्ञेयाः.
कान, चाल, नेत्र, जीभ और नाक ये पाँच ज्ञानेन्द्रिय; पाणी, हाथ, पाँव, गुदा और लिंग ये पाँच कर्मेन्द्रिय हैं इस प्रकार मिलकर दस इन्द्रिय हैं। और दिल दोनों लरह का है.	श्रोत्रं, त्वक्, चक्षुः, रसना, घ्राणमिति पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि,वाक्,पाणिः,पादः, पायुः,उपस्थः,इति पञ्च कर्मेन्द्रियाणि एवं मिलित्वा दशेन्द्रियाणि सन्ति. उभयात्मकं मनः.
शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये पाँच तरतीब वार ज्ञानेन्द्रियोंके विषय हैं.	शब्दः, स्पर्शः, रूपम्, रसः, गन्धः इत्येते पञ्च क्रमशो ज्ञानेन्द्रियाणां विषयाः.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
जीभ से अनुभव किये हुए छः रसों को कौन २ रस कहां २ हैं इस प्रकार खुलासा वर्णन करो.	जिह्वानुभूतान् षड्रसान् कुत्र कुत्र कः कः रसः इति समासेन व्याख्याहि.
पहिला मीठा जलमें; दूसरा लवण लावेरी नमक में; तीसरा कडुआ मिर्च इत्यादि में, चौथा तीखा नीम धतूरह में; पाँचवा खट्टा इम्ली इत्यादि में; छटवाँ कसैला हरड इत्यादि में यह छः रस जानने.	प्रथमो मधुरः जले, द्वितीयो लवणः सैन्धवादौ, तृतीयः कटुः मरीचादौ, चतुर्थस्तिक्तः निम्बादौ, पञ्चमोऽम्लः तिन्तिडयादौ, षष्ठः कषायः हरीतक्यादौ इतिषड् रसाः ज्ञेयाः.
गाने बजाने की विद्या में सात स्वर कहां २ और कैसे २ हैं अलग २ वर्णन करो.	गानवाद्यविद्यायां सप्त स्वराः कुत्र कुत्र च कीदृशाः इतिपृथक्तया वर्णय.
पहिला निषादं (हाथी के नाद सरीखा), दूसरा ऋषभं (गौओं के नाद तुल्य), तीसरा गान्धारं (बकरियों के नाद तुल्य), चौथा षड्जं (मोरों के नाद तुल्य), पांचवा मध्यमं (क्रौंच के नाद तुल्य), छटा धैवतं (घोड़े के नाद तुल्य), सातवां पञ्चमं (कोइल के नाद तुल्य) ये सात स्वर वीणा के कण्ठ से निकलते हुए जानने.	प्रथमो निषादः (गजनादवत्), द्वितीयो ऋषभः (गवांनादवत्) तृतीयो गान्धारः(अजादीनांनादवत्), चतुर्थः षड्जः (मयूरनादवत्), पञ्चमो मध्यमः (क्रौञ्चनादवत्), षष्ठो धैवतः (अश्वनादवत्), सप्तमः पञ्चमः (कोकिलनादवत्) इति सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिता स्वराः ज्ञेयाः.
चौदह विद्या कौन हैं? ब्रह्मज्ञान, रसायन, शुनिकथा, वैद्यक, ज्योतिष, व्याकरण, धनुर्विद्या, तैरना, गाना, नाचना, घोड़े पर चढ़ना, कोकशास्त्र, चोरी में होशियारी, चतुराई ये १४ विद्या हैं.	चतुर्दश विद्याः काः? ब्रह्मज्ञानं, रसायनं, शुनिकथा, वैद्यकं, ज्योतिषं, व्याकरणं, धनुर्धरत्वं, जलतरत्वं, सङ्गीतं, नाटकं, अश्वारोहणं, कोकशास्त्रं, स्तेयप्रागल्भ्यं, द्यूतेनाश्चतुर्दशविद्याः.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च।

हिन्दी।	संस्कृत।
जीव की चार अवस्था कौन हैं?	चतस्रोऽवस्था जीवस्य काः?
जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीया ये चार अवस्था हैं.	जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुरीया इत्यवस्थाश्चतस्रः.
कृपा कर नौ प्रकार की भक्ति भी बयान करो.	कृपया नवधां भक्तिमपि वर्णयतु.
भगवान् का स्मरण, कीर्तन, कथा श्रवण, पाद सेवन, पूजन, वन्दना, दास्य, और सख्य और अपने आपे का निवेदन करना इस प्रकार नौ प्रकार का है.	स्मरणं कीर्तनं विष्णोः; श्रवणं पादसेवनं; अर्चनं वन्दनं दास्यं; सख्यमात्मनिवेदनमिति नवधा.
पृथ्वी, अप्, अग्नि, वायु, आकाश आदि पांच तत्व हैं.	पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशानि पञ्च तत्त्वानि.
छः दर्शन शास्त्र उन २ के आचार्यों सहित वर्णन करो.	षड्दर्शनानि तत्तदाचार्यसहितानि वर्णय.
गौतम का किया हुआ न्याय, कणाद का किया हुआ वैशेषिक, कपिल का किया हुआ सांख्य, पतञ्जलि का किया हुआ योग, व्यास का किया हुआ वेदान्तदर्शन, जैमिनि का किया हुआ मीमांसादर्शन ये छः दर्शन हैं.	गौतमकृतो न्यायः, कणादकृतं वैशेषिकम्, कपिलकृतं साङ्ख्यम्, पतञ्जलिकृतो योगः, व्यासकृतं वेदान्तदर्शनम्, जैमिनिकृतं मीमांसादर्शनमिति षड् दर्शनानि सन्ति.
६४ कला जो भक्तवत्सल श्रीकृष्ण भगवान् ने ६४ दिन में श्रीसान्दीपन नाम के गुरु से पढ़ीं उन को स्पष्ट रीति से सुनो.	चतुःषष्टिः कला या भक्तवत्सलेन श्रीकृष्णेन भगवता चतुःषष्टिदिवसेषु श्रीसान्दीपनाभिधाद्गुरोरधीताः ताः समासेन श्रूयन्ताम्.

स्वर्गीयदृष्टान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
गाना, बाजा, नाच (गात्रविक्षेप), नाटक (भावप्रदर्शन), तस्वीर, अति सूक्ष्म वस्तु का छिधा करना, तण्डुलकुसुमबलि प्रकार, फूलों का बिछौना, दाँत वस्त्र और शरीर का रंगना, मणियों की भूमि (फ़र्श) बनाना, शय्या का रचना, जल का बाजा, उदकघात, चित्रों का योग करना, फूलों का गूँथना, मुकुट बनाना, नेपथ्ययोग (अलङ्कार धारण) कर्णभूषण रचना, अतर निकालना, भूषणों की योजना, इन्द्रजाल, कामोद्दीपन करना, हाथ की फुर्ती, विचित्र शाक पूआ इत्यादि भक्ष्य पदार्थों की क्रिया, ठंडाई रस अनेक प्रकार के रङ्गयुक्त आसव बनाना, दर्ज़ी का काम, सूत्रक्रीड़ा, पहेली बनाना व जानना, माला सभतुल्य कुछ बनाना, दुर्वचकयोग, पुस्तकवाचन, नाटक की कथा का दिखाना काव्य समस्या पूर्ति, पट्टी बेत और बाण इनकी रचना, तक्षकर्म, बढ़ई का कर्म, घर बनाना, रूपारत्न परीक्षा, धातुओं का कहना, मणिरंगज्ञान, खानों का ज्ञान, वृक्षों के आयुर्वेद का योग, मेंढा, तीतर,	गीतं, वाद्यं, नृत्यं, नाट्यं, आलेख्यं, विशेषकच्छेद्यम्, तण्डुलकुसुमबलिप्रकाराः, पुष्पास्तरणं, दशनवसनाङ्गरागाः, मणिभूमिकाकर्म, शयनरचनं, उदकवाद्यं, उदकघातः, चित्रयोगाः, माल्यग्रन्थनविकल्पाः, शेखरापीड़योजनं, नेपथ्ययोगाः, कर्णपत्रभङ्गाः, सुगन्धयुक्तिः, भूषणयोजनं, ऐन्द्रजालं, कौतुमारयोगाः, हस्तलाघवं, विचित्रशाकपूपभक्ष्यविकारक्रियाः, पानकरसरागासवयोजनं, सूचीकर्म, सूत्रक्रीड़ा, प्रहेलिका, प्रतिमाला, दुर्वचकयोगाः, पुस्तकवाचनं, नाटकाख्यायिकादर्शनं, काव्यसमस्यापूरणं, पट्टिकावेत्रबाणविकल्पाः, तक्षकर्माणि, तक्षणं, वास्तुविद्या, रूप्यरत्नपरीक्षा, धातुवादः, मणिरागज्ञानं, आकरज्ञानं, वृक्षायुर्वेदयोगाः, मेषकुक्कुटलावकयुद्धविधिः, शुकसारिकाप्रलापनं, उत्सादनं, केशमार्जनकौशलं, अक्षरमुष्टिकाकथनं, म्लेच्छितकुतर्कविकल्पाः, देशभाषाज्ञानं, पुष्पशकटिकानिमित्तज्ञानं, यन्त्रमातृका, धारणमातृका, संवाच्यं, मानसीकाव्यक्रिया, अभिधानकोषाः, छन्दोज्ञानं,

स्वर्गीयदृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च।

हिन्दी।	संस्कृत।
मुर्गा इत्यादि लड़ाने की रीति, तोता मैना का घुलावना, ध्यानान्तर दूरीकरण, केश मार्जनकी चतुराई, अक्षरों से और मुष्टिका से कथन शुद्ध तर्क रचना, देशभाषा ज्ञान, फूलों की गाड़ी बनाने की क्रिया, यन्त्रों के निर्माण की विधि, धारण करने की विधि, समय की कहना मानसी काव्यक्रिया, अभिधानकोष छन्दज्ञान, अनेक क्रियाओं का करना छलने के उपाय, वस्त्र रक्षण, जूआ विशेष, आकर्ष (खींचनेकी) क्रीड़ा बालकों के खिलोने बनाना, वैनायक (विघ्नकर्ता) और वैतालों की विद्या का ज्ञान ये चौंसठ कला हैं.	क्रियाविकल्पा, छलितकयोगाः, वस्त्रगोपनानि, द्यूतविशेषः, आकर्षक्रीड़ा, बालक्रीड़नकानि, वैनायिकानां वैतालिकानाञ्चविद्यानांज्ञानमितिचतुःषष्टिः कलाः.
जो इन ऊपर की कही हुई कलाओं को ६४ दिन में पढ़लेते हुए और जो पांचवर्ष के गोवर्धन पहाड़ को उखाड़कर कानी उंगली की नौक पर धारण करते हुए और इन्द्रके डर से ब्रजवासियों को बचातेहुए उनको आजकल के मन्दमति "मनुष्य" मानते हैं यह उनकी भूल है.	य एता उपरोक्ताःकलाश्चतुःषष्टिदिवसेष्वेवाधिजगे, यः पञ्चहायनो गोवर्द्धनगिरिमुत्पाट्य कनिष्ठिकया सप्तदिवसपर्य्यन्तं दधार ब्रजवासिनश्चेन्द्रत्रासाद् रक्ष तमाधुनिकाः क्षुद्रमतयः मनुष्यं मन्यन्त इति तेषां मतिभ्रमः.
तीन ताप हैं-आध्यात्मिक, आधिभौतिक, और आधिदैविक.	तापास्त्रयः आध्यात्मिकः, आधिभौतिकः, आधिदैविक इति.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तीन प्रकारके कर्म हैं-सञ्चित, प्रारब्ध, और क्रियमाण.	त्रिविधंकर्म्म—सञ्चितं, प्रारब्धं, क्रियमाणञ्चेति.
तीन अवस्था देहकी बाल, युवा और वृद्ध हैं.	अवस्थास्तिस्रोदेहस्य-बाल्यं यौवन, वार्धक्यञ्चेति.
चारवेद ऋक्, यजु', साम और अथर्व हैं.	चत्वारो वेदाः ऋग्यजुःसामाथर्वेति.
उपवेद भी चार हैं ऋग्वेदका आयुर्वेद, यजुर्वेदका धनुर्वेद, (शस्त्रविद्या) सामवेद का गान्धर्व (गानविद्या) अथर्व का स्थापत्य (शिल्प विद्या.)	उपवेदा अपि चत्वारः-ऋग्वेदस्यायुर्वेदः यजुर्वेदस्य धनुर्वेदः (शस्त्रविद्या) सामवेदस्य गान्धर्वः [गानविद्या] अथर्वणश्चस्थापत्यः [शिल्प]
दश उपनिषद् कौन से हैं ?	दशोपनिषदः के ?
ईश केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, मांडूक्य, तैत्तिरीय ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, दश उपनिषद् हैं.	ईशकेनकठप्रश्नमुण्डकमाण्डूक्यतैत्तिरीयैतरेयछान्दोग्यबृहदारण्यका दशोपनिषदः.
अठारह स्मृतियों के नाम लिखो.	अष्टादशस्मृतीनां नामानि लिख.
मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत, याज्ञवल्क उशना, अंगिरा, यम, आपस्तम्ब, सवर्त, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास शङ्ख, लिखित, दक्ष, गौतम, शातातप, वशिष्ठ इन २ नामोंके ऋषियों से बनाई हुई स्मृति जाननी.	मनु', अत्रिः, विष्णु', हारीतः, याज्ञवल्क्य', उशना, अङ्गिराः, यम', आपस्तम्ब', सवर्तः, कात्यायनः, बृहस्पतिः, पाराशरः, व्यासः, शङ्खः, लिखितः, दक्षः, गौतमः, शातातप', वशिष्ठ', इत्येतन्नामभिः ऋषिभिः प्रणीता स्मृतयो ज्ञेयाः.
द्विजातियों के १६ संस्कार वर्णनकरो.	द्विजातीनां षोडश संस्काराः वर्ण्यन्ताम्.

स्वर्गीयदृष्टान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नाम क्रिया, निष्क्रम, अन्नप्राशन, पवनक्रिया कर्णवेध, व्रतादेश, वेदारम्भ क्रियाविधि केशान्तःस्नान, उद्वाह, विवाहाग्निपरिग्रह, त्रेता अग्नि संग्रह ये १६ संस्कार हैं.	गर्भाधानं, पुंसवनं सीमन्तो जातकर्मच, नामक्रिया निष्क्रमोऽन्नप्राशन पवनक्रिया। कर्णवेधोव्रतादेशो वेदारम्भक्रियाविधिः केशान्तःस्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रहः त्रेताग्निसंग्रहश्चेव संस्कारापोडशस्मृताः.
अठारहों पुराणों के नाम सुनो.	अष्टादशपुराणानां नामानि शृणुत.
ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, विष्णुपुराण शिवपुराण, श्रीमद्भागवत या देवी भागवत, वा नारद पुराण, मार्कण्डेय पुराण अग्नि पुराण, भविष्यपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, लिंगपुराण, वाराह पुराण, स्कन्दपुराण, वामनपुराण कूर्मपुराण, मत्स्यपुराण, गरुड़पुराण और ब्रह्मांडपुराण ये अठारह पुराण हैं.	ब्रह्मपुराणं, पद्मपुराणं, विष्णुपुराणं शिवपुराणं, श्रीमद्भागवतं देवीभागवतं वा, नारदपुराणं, मार्कण्डेयपुराणं, अग्निपुराणं, भविष्यपुराणं, ब्रह्मवैवर्तपुराणं, लिङ्गपुराणं वाराहपुराणं, स्कन्दपुराणं वामनपुराणं। कूर्मपुराणं, मत्स्यपुराणं, गरुड़पुराणं ब्रह्माण्डपुराणञ्चैतान्यष्टादशपुराणानि.
खाने की चीजें कै प्रकार की हैं? चाटे जाने योग्य, चौसने योग्य, पीने योग्य, खाने योग्य, चाबने योग्य ये छः तरह की हैं.	भोजनपदार्थाः कतिधाः? लेह्यं, चोष्यं, पेयं, भक्ष्यं, भोज्यं, चर्व्यमिति षड्धाः.
नौ रत्न सुनिये. मोती, सुवर्ण, वैडूर्य, पद्मराग, पुष्पराग और गोमेद, नीलम, गारुतमत तंसद्दी प्रवाल ये नौ रत्न कहे हैं.	नवरत्नानि शृयन्ताम्. मुक्ताफलं; हिरण्यञ्च, वैडूर्यं, पद्मरागकं, पुष्परागञ्च गोमेद, नील, गारुतमतं, तथाप्रवालयुक्तान्युक्तानि महारत्नानि वै नव.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
मांग में सिंदूर, भाल में तिलक, ठोढ़ी में तिलक लगाना, मेहदी लगाना, आभूषण पहरना, पुष्पधारण, सुगन्ध लगाना, मुखराग, अधरराग, चन्दन अंग में लगाना, दान्त रँगना, काजल लगाना.	सीमन्तकः(शिरसि सिन्दूरधारणम्) भालतिलकः, चिबुकतिलकः, हस्तरञ्जनम्, आभरणधारणम्, पुष्पधारणम्, सुगन्धलेपनम्, मुखरागः, ओष्ठरागः, चन्दनलेपनम्, दशनरागः, कज्जलनिवेशनमित्यायः.
वेद के अंग ६ हैं–१ शिक्षा में वर्णस्थानोच्चार वर्णन, २ कल्प में कर्म करने की रीति, ३ व्याकरण में शब्द सिद्धि और शुद्धता का वर्णन, ४ निरुक्त में वेद के कठिन शब्दों का अर्थ वर्णन, ५ छन्द में अक्षर और मात्रा के वृत्तों का वर्णन, ६ ज्योतिष में गणितादि वर्णन,	वेदस्याङ्गानिषट्—प्रथम शिक्षा यस्यां वर्णस्थानोच्चारवर्णनम्; द्वितीय कल्पः यस्मिन् कर्मकाण्डरीतिः, तृतीयं व्याकरणम् यस्मिन्शब्दसिद्धिशुद्धतावर्णन, चतुर्थम् निरुक्तं यस्मिन्वेदस्य गूढशब्दार्थादिवर्णनम् पञ्चमं छन्दः यस्मिन्नक्षरमात्रावृत्तवर्णनं षष्ठं ज्योतिष यस्मिन्गणितादिवर्णनम् .
योनि चौरासी लाख हैं-जिनमें जलचर नौ लाख, मनुष्य चार लाख, स्थावर बसाईसलाख, कृमि ग्यारह लाख, पक्षी दश लाख, चौपाये तेईस लाख	चतुरशीतिलक्षं योनयः, यासु जलचराः नवलक्षं, मनुष्याः चतुर्लक्ष, स्थावराः सप्तविंशतिलक्ष, कृमय एकादशलक्ष, पक्षिणो दशलक्षं, चतुष्पादस्त्रयोविंशतिलक्षमिति.



अठारहवां अध्याय—अष्टादशोऽध्यायः ।

रोग इत्यादि का वर्णन—रोगविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
रोग	रुक्, रोगः, गदः, आमयः.	कोढ़	कुष्ठः-ष्ठम्, श्वित्रम्, मण्डलकम्.
शफाखाना	चिकित्सालयः.		
दवाखाना	औषधालयः.	लकुआ	वातरोगः, अर्दितः.
बुखार	ज्वरः.	हैज़ा	विसूचिका.
जाड़ा	शीतज्वरः.	जिरियान	प्रमेहः, मेहः.
दवा	अगदः, भेषजम्, औषधम्.	पेरजारी होना	प्रदरः [स्त्रीरोगः].
कफ	कफः, श्लेष्मन् [पु०]	घाव	व्रणः, ईर्मम्, क्षतः.
पित्त	मायुः, पित्तम्.	आतशक, सूजाक	उपदंशः.
वात	वातः.	आंखदुखना	अक्षिशूलम्, चक्षुःपीड़ा.
शीतला	विस्फोटकः, शीतला, मसूरी-रिका.	अफरा	आनाहः.
खांसी	कासः खथुः.	बवासीर	अर्शः.
दस्त के	सङ्ग्रहणी, प्रवाहिका.	शिरकादर्द	शिरोवेदना.
	अच्छर्दिका, वमिः, वमथुः.	दांतकादर्द	दन्तवेदना.
खूनफ़ेसाद	रक्तविकारः.	कानकादर्द	कर्णवेदना.
बदहज़मी	मन्दाग्निः.	पथरी	अश्मरी.
खुजली	कण्डूः, खर्जूः.	बहुमूत्र	मूत्रकृच्छ्रम्.
दाद	दद्रुः द्रूः.	मृगी	अपस्मारः.
शूलका दर्द	शूलम्.	फीलपाया	श्लीपदम्, पादचल्मीकम्.
पीनस	प्रतिश्यायः, पीनसः.	हकीम	वैद्यः, भिषक्, चिकित्सकः.
सूजन	शोथः शोफः.	बुचकी	क्षिका.
फोड़ा फुंसी	विस्फोटकः, पिटकः.	छींक	क्षिका.
बिवाई	पादस्फोटः, विपादिका.	घाव	व्रणः, क्षतः.
श्वेत कोढ़	किलासम्, सिध्मम्.		

रोग इत्यादि का वर्णन रोगविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
फ़स्त	शिरामोक्षः.	मालूम	आ-प्रति-भाति, दृश्यते ल-
भोगना	उपभुङ्क्ते, विहसते, क्लिश्यते	होना	क्ष्यते.
(दुःख)	पीड्यते, तप्यते.	फूटना	स्फुटति, दलति,
बढ़ना	वर्धते, एधते.	फोड़ना	स्फोटयति दलयति.
चीरना	विदारयति.		

हिन्दी।	संस्कृत।
कोई दवाखाना और शफ़ाखाना तुम्हारे शहर में है. बहुत हैं.	स्तः कोचिद्दौषधालयचिकित्सालयौ भवदीयपत्तने. बहवस्सान्ति.
यह रोज़मर्रह कमज़ोर होता जाता है इसके रोग का किसी होशियार हकीम से इलाज कराओ और मा- फ़ूल दवाइयां दिलाओ.	प्रतिदिनमयं निर्बलो जायते ऽस्य रुजः केनापि सुशिक्षितेन वैद्येन चिकि- त्सां कारयानुकूलामौषधिञ्च दापय.
वात पित्त कफ़ इनके ज़ोर होनेपर जब सन्निपात हो जाताहै तभी हकीम की अक्लमन्दी देखी जाती है.	वातपित्तकफानां वेगे सञ्जाते यदा स- न्निपातो जायते तदैव वैद्यस्य बुद्धि- कौशलं दृश्यते.
मैं एक हफ्ते से जाड़े बुखार में मुब्ति- लाहूं.	अहमेकसप्ताहाच्छीतज्वरेण क्लिश्ये.
क्या तुम्हारा बेटाभी शिरमें फोड़ो से पीड़ित है.	किं तव पुत्रोऽपि शिरसि विस्फोटकैः परिपीड्यते.
पांचदिन से देवदत्त को खांसी और मन्दाग्नि दिक् कर रही है.	आपञ्चदिवसेभ्यः खवथुर्मन्दाग्निश्च दे- वदत्तम्बाधते.
कमज़ोर आदमी की फ़स्त कभी न खोले.	दुर्बलस्य शिरामोक्षो कदापि न कुर्वीत.
यह बिचारा मुसल्मान दस्त, खून फि- साद और खुजली से दुखी है.	अयमेोऽय दराकः संग्रहण्या, वमथुना, रक्तविकारेण कंद्वाच्च परितप्यते.

रोग इत्यादि का वर्णन—रोगविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
इसने ज्वर में खटाई खाकर सब शरीर में सूजन करली.	अनेन ज्वरेऽम्लतामत्वा सर्वाङ्गेषु शोथः कृतः.
हमारा कमलासिंह भी दाद, जुकाम और प्रमेह से दुखी है इसको रोगशान्ति डाक्टरी इलाज सेही होगी ऐसा मालूम होता है.	अस्मत्कमलसिंहोऽपि, शूलेन, प्रतिश्यायेन, मेहेन च परिक्लिश्यतेऽस्यरोगशान्तिराङ्ग्लौचिकित्सयैव भविष्यतीति प्रतिभाति.
रामदत्त के पावों में बड़ी बिवाई हैं.	रामदत्तस्य पादयोर्महत्यो विपादिकास्सन्ति.
इस साल तो खुदाके फ़ज़ल से हैज़ा और मरीरोग नाम कोभी नहीं सुना. रामसिंह के शिर में बड़े फोड़े हैं इनको शफाखाने में जाकर चिरवाओ.	अस्मिन्वर्षेत्वीश्वरकृपयाविसूचिकारोगो महामारीरोगश्च नाम्नाऽपिन श्रुतः रामसिंहस्य शिरसिमहान्त. [अधिकाः] पिटकास्सन्ति एनांश्चिकित्सालयंगत्वा विदारय.
मेरा फोड़ा रात में फूटगया.	मम स्फोटको रात्रौ अस्फुटत्.
क्या इस बीमारी का कोई इलाज है.	अस्ति काचिच्चिकित्साऽस्य रोगस्य?
देवदत्त फोतों की सूजन व दिक्की की बीमारी से पीड़ित है । लीलावती वायरोग से और पैर रोग से पिड़ित है.	देवदत्तो वृषणशोथेन दिक्कारोगेण च पीडितोस्ति । लीलावती वातरोगेण प्रदररोगेणच परितप्यते.
यह मनुष्य सफेद कोढ़ में मुब्तिला है.	किलासग्रस्तोऽयजनः.
किलास क्या? कोढ़काही यहएक भेद है.	किलास किम्? कुष्ठस्यैवायमेको भेदः.
मेरी बाँह में एक घाव है.	मद्बाहावेको व्रणः वर्तते.
ग्यारह दिनों से मैं नेत्र पीड़ा और दाँत का दर्द भोग रहाहूं.	एकादशेभ्यो दिनेभ्योऽहमक्षिशूलन्तदन्तशूलञ्चोपभुञ्जे.
मेरा दुश्मन सूजाक जलधर और भगन्दर वगैरह रोगों स पीड़ित है.	मम शत्रुरूपर्दशजलन्धरभगन्दरादिभिर्गदैः पीडितोऽस्ति.

रोग इत्यादि का वर्णन—रोगविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
केदारसिंह जाट सिरके दर्द और बवासीर से दुखी है.	केदारसिंहोजट्टः शिरोवेदनयार्शोरोगेण च परितप्यते.
अंग्रेजी डाक्टर ने कल कृष्णसिंह की पथरी निकाली.	आङ्ग्लवैद्यो ह्यः कृष्णसिंहस्याश्मरीं निरकाशयत्.
मृगी का रोग बड़ा भयङ्कर होता है यह आरा और पानी को देखकर बढ़ता है यह हमने सुना है.	अपस्मारोगो महद्भयङ्करो भवति सोऽग्निञ्जलञ्च दृष्ट्वैधत इतिश्रुतमस्माभिः
पादवल्मीकवालारोगी भाषामें फीलपाँव कहलाता है.	पादवल्मीकयान् रोगी फीलपाँव इति भाषायां कथ्यते.
और भी बहुत से रोग हैं ग्रन्थ बढ़ने के डरसे नहीं लिखे.	सन्त्यन्येऽपि बहवो रोगा ग्रन्थभूयस्त्व भयान्न लिखिताः.

उन्नीसवां अध्याय-एकोनविंशोऽध्यायः ।

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
लौंग	लवङ्गम्, देवकुसुमम्.	सनिहारी नमक	सौवर्चलः.
सोंठ	शुण्ठिः-ण्ठी, विश्वा-श्वम्.	सैंधानमक	सैन्धवः—वम्.
मिर्च	मरीचम्, कालकम् [रक्ष्यावौ भेदौ अस्य]	सांभर	रौमकम्, सामुद्रम्.
पीपर	पिप्पली, कणा, वेल्लजम्	काला	पाक्यः, विडम्, क्षारम् [खारी.]
ज़ीरा सफेद	जीरकः-कम्, जरणः, शजाजी.	हींग	हिङ्गु [न०] जतुकम्, रामठम्, पलिकम्.
,, काला	सुषवी, कारवी, उपकुञ्चिका.	हड़	हरीतकी.
सौंफ	शतपुष्पिका.		

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
आमले	शिवः.	धनिया	छत्रा, धान्याकम्, धन्याकम्.
बहेड़ा	विभीतकः.	घेलगिरी	विल्वमज्जकः, बिल्वजाफलम्.
„ मींग	मज्जकः.	अजवाखार	यवक्षारः यवजः.
घड़ी	पला, निष्कुटिः.	हलदी	हरिद्रा, काञ्चनी, पीता.
हलायची छोटी „	त्रिपुटा, तुत्था.	चौलाई	पयोनादः.
अद्रक	आर्द्रकम्, शृङ्गवेरम्, गुल्ममूलम्.	पान	ताम्बूलम्.
शहद	क्षौद्रम्, माक्षिकम्, मधु [न०]	चूना	चूर्णकम्.
छत्ता	मधुकोषः, करण्डः.	कत्था	खदिरम्.
अजमाइन	यालेयः, मधुरिका.	सुपारी	पूगम्—पूगीफलम्.
भांग	जया, भङ्गा.	कमलगट्टा	अरविन्दबीजकम्.
अमचूर	आम्रचूर्णः—र्णं	सिरका	शुक्तम्, शौक्तिकम्.
गिलोय	अमृता, गुडूची.	राल	यक्षधूपः, रालः.
अरक	रसः, द्रवः, आसवः.	कस्तूरी	मृगमदः, कस्तूरिका.
काढ़ा	क्वाथः, कषायः.	गावजवा	गोजिह्वा.
चटनी	अवलेहः ——	अगर —	अगरु.
मिश्री	सिताखण्डः, खण्डमोदकः.	असगंध	अश्वगन्धा.
दारचीनी	त्वचा.	खसखस	खाखसम्.
यष्टी लोचन	त्वक्क्षीरी, वंशरोचना.	केशर —	घुसृणम्, कुङ्कुमम्.
नागरमोथ	मुस्ताभम्.	कपूर —	कर्पूरम्, घनसारः.
मुनक्का	शुष्कद्राक्षा, गोस्तनी.	चन्दन —	मलयजः, भद्रश्रीः, चन्दनः.
जायफल	जातिफलम्, जातीफलम्.	लाल „	पत्राङ्गम्, रक्तचन्दनम्.
		अफीम	अहिफेनम्, अफेनम्.
		जवासा	यासः, यवासः, धन्वयासः.
		फिटकरी	स्फटी, तुवरी, सौराष्ट्री.
		चौंटनी	शुञ्जा, कृष्णला.

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च।

हिन्दी।	संस्कृत।
पारा	सूतः, पारदः चपलः.
अभ्रक	अभ्रजम्, गिरिजामलम्.
सुरमा	स्रोतोञ्जनम्, सौवीरम्, यामुनम्, अञ्जनम्.
तूतिया	तुत्थम्.
गन्धक	गन्धाश्मा, गान्धि-(न्ध)कः,
जस्तका-सुर्मा	रीतिपुष्पम्, कुसुमाञ्जनम्.
हरताल	पिञ्जरम्, पीतनम्, तालम्, हरितालम्.
शिलाजीत	शिलाजतु, गैरेयम्, अश्मजम्.
सिन्दूर	सिन्दूरम्, नागसम्भवम्.
मनसिल	मन-शिला, नागजिह्विका.
सजीखार	सांजिकाक्षारः, खजिकाक्षारः.

मानविशेषाः.

कांटा	पणः, पणिका, नाराची.
तोल	मानम्, भारः, तोलः परिमाणम्.
तराजू	तुला, धटः तुलायन्त्रम्.
१ तोला	कर्षः.
½ तोला	टङ्कः.
४ तोले	पलः.
१६ तोले	कुडवः.
६४ तोला	प्रस्थः.
१ सेर	
३२ तोला	शरावकम्.
½ सेर	
१०० पल	तुला.
२० तुला	भारः.
रुपया	कार्षापणः, कार्षिकः.
पैसा	पणः, ताम्रखण्डम्.
५ प्रस्थ	आढकम् (५ सेटक.)
८ आढक वा १ मन	द्रोणः.
२ द्रोण वा २ मन	शूर्पः
२ मन सार्ध शूर्प	खारी.
२ शूर्प वा ४ मन	द्रोणी वा भारः.
४ भार वा ८ मन	वाहः.
घाट	घण्टकः.
तोलना	तोलयति.
इकट्ठा करना	सञ्चिनोति.

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
गरम मसालेके लिये सौंग कालीमिर्च-जीरा और इलायची लाओ.	ऊष्णचसंभारार्थं लवङ्गानि कृष्णमरीचानि जीरकमेलाध्यानय.
सौंठ, मिर्च, पीपल, दोजीरे, सैंधा नमक अजमोद और हींग इकट्ठाकर हिंग्वा एक चूर्ण बनताहै.	शुण्ठि, मरीच, पिप्पली जीरके ढे सैन्धवमजमोदं हिङ्गुचं पिण्डीकृत्य हिङ्ग्वष्टकाभिधचूर्णं सम्पद्यते.
सौंफ विना पूएअच्छे और स्वाद नहीं होते.	शताह्विकाम्बना पूपाः शामना सुस्वादवो वा न भवन्ति.
शहद के साथ अदरक खांसी दूर करनेवाला है.	सक्षौद्रमार्द्रकं कासहरम्.
बड़ी हर, बहेड़ा आमले मिलाकर त्रिफला और सोंठ मिर्च पीपल मिलाकर त्रिकुटा कहलाती है.	बृहद्धरीतकी विभीतकः आमलकाः पिण्डीकृत्य त्रिफलेति शुण्ठिमरीचपिप्पलयः त्रिकुटेति शब्द्यते.
पांच नमक सैंधा, सांभर, काला, मीठा, खारी वगैरह होते हैं.	पञ्चलवणानि सैन्धवं, रौमक, विडं, सौवचलः, क्षारमित्यादीनि सन्ति.
मिश्री, बड़ालोचन, छोटी इलायची पीपर [छोटी] दालचीनी, तिलोपल ये इकट्ठी करके हलके बुखार के दूर करने वाला, भूख बढ़ाने-वाला सितोपलादि चूरन होता है.	सिता त्वक्क्षीरी, त्रिपुटा, पिप्पली, दारुचीनी अमृतासार एताः पिण्डीकृत्य मन्दज्वरघ्न सुभुक्षाधर्धनञ्च सितोपलादिचूर्णम्भवति.
बैंगन के शाग केलिये एक पैसेकी अदरक लाओ.	वृन्ताकशाकार्थमेकस्य पणस्याद्रचूर्णमानय.
नमक के साथ अनारका खोपटा, या अजमाइन भी खांसी दूर करनेवाली है.	सलवणः दाडिमत्वक् सालेयोऽपि वा श्रवशुद्धरः.
इस छत्ते में शहद है वा नहीं.	अस्मिन्मधुकोषे मध्यस्ति न वा.
क्या भाँग भी भूखलगानेवाली है ?	किञ्चापि बुभुक्षा दायिका.

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
है तो मगर अक़ल को गुम करने-वाली है.	अस्ति तु परञ्च बुद्धिहरा.
पञ्चभद्र [गिलोय, चित्तपापड़ा, सौंठ, नागर मोथा चिरायता] का काढ़ा सब बुखारों को दूर करनेवाला है.	पञ्चभद्रस्य क्वाथोऽखिलज्वरहरो भवति.
सिरके की चटनी दीपन और पाचन है.	शुक्तस्यावलेहो दीपकः पाचनश्च.
आलूबुखारा और मुनक्का प्यास बुझाने केलिये दियाजाता है.	बदराम्लुका गोस्तनी च तृट्शान्त्यर्थं दीयते.
बेलगिरी दस्तों में हित होती है.	बिल्वमज्जकः सङ्ग्रहण्यां हितम्.
कीड़े के काटने पर सिरके का लेप योग्य है.	कीटदष्टे शुक्तस्य लेपो युक्तः.
बेदाना चन्द रोनेपर मिश्री सहित धनिया जल में पीसकर और कपड़े में छानकर पीवे.	मूत्रावरोधे सशित धान्याकजले पिष्ट्वा पटे स्रावयित्वा पिबेत्.
सुपारी चून कत्था सहित पान मनुष्य खाते हैं.	सपूगचूर्णरञ्जिर ताम्बूलं जनैः खाद्यते.
क्या चौलाई भी व्रत में है ? है तो. क्या कमल गट्टा भी कोई दवा है ? न मालूम.	किं पयोनाट्योऽपि व्रतेऽस्ति अस्तितु. अस्ति काचिदौषधिरराविन्दबीजक मपि ? न जाने.
और दवाओं के भी नाम बताओ.	अन्यासामप्योषधीनां नामानि कथय.
राल, कस्तूरी, जायफल, अगर, असगन्ध, सिंदूर, सुहागा, केसर, मनसिल, फिटकरी, कपूर, सिरेटी. सुर्मा, जस्ते का सुर्मा, सिलाजीत, जवासा, चन्दन, लाल चन्दन, गावज़बा, सज़ीखार, अफ़ीम चोटनी वग़ैरह हैं.	यक्षधूपः, मृगमदः, जातिफल, अगरु, अश्वगन्धा. सिन्दूरं, खासस, कुङ्कुम, मन शिला, सुवर्ण, कर्पूर, पुनर्नवा, स्रोतोञ्जन, रीतिपुष्प शिलाजतु, यवास., मलयज, पत्राङ्गं, गोजिह्वा, सज्जिकाक्षारः, अहिफेनं गुञ्जेत्यादीनि सन्ति.

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च।

हिन्दी।	संस्कृत।
इसी सिलिसले में तोल भी सुनो.	प्रसङ्गवशात् मानमपि शृणु.
६४ तोलों का एक प्रस्थ या सेर.	तोलकानां चतुःषष्टेरेकः प्रस्थःसेटको वा.
१६ तोलों का एक कुड़व या पावसेर.	षोडशतोलकानामेकः कुडव.[पावसेर].
४ तोलों का एक पल.	चतुर्णां तोलकानामेकः पलः.
तोले का चौथाहिस्सा टंक होता है.	कर्षस्य चतुर्थांशष्टङ्कः स्यात्.
१ तोले का एककर्ष होता है.	एकस्य तोलकस्य एकः कर्षः स्यात्.
३२ तोलोंका एक शरावक होता है.	द्वात्रिंशत्तोलकानामेकं शरावकम्.
१०० पलों की एक तुला होती है.	पलानां शतस्यैका तुला स्यात्.
२० तुला का एक भार होता है.	तुलाया विंशतेरेको भारः.
८ चावलोंकी एक रत्ती होती है.	अष्टाक्षतानामेका रक्तिका भवति.
८ रत्तियोंका एक मासा.	अष्टरक्तिकानां (गुञ्जानां) एको माषः.
१२ मासों का एक तोला, पांच तोलों-की एक छटाँक, सोलह छटाँकों का एक सेर, ४० सेर का एक मन.	द्वादशमाषानामेकस्तोलकः, पञ्चतोलकानामेकश्छटकः, षोडशच्छटकानामेकस्सेटकः, चत्वारिंशत्सेटकानामेको मणः.
यह आजकल की तोल है.	एतत्त्वाधुनिकम्मानम्.
उपधातु भी दवाओं में इस्तेमाल की-जाती है.	उपधातवोऽपि भेषजेषु प्रयुज्यन्ते.
चान्दी, सोना, पीतल, तामा, लोहा काँसा, सीसा, पारा, भुरभुरा, तूतिया, गन्धक, हरताल वग़ैरह जलाकर इनकी खाक मुख्तलिफ़ रोगों में हकीम काम में लाते हैं.	रजतं, स्वर्णं, पित्तलं, ताम्रं, लोहं कांस्यं, सीसं, सूतं, अभ्रकं, तुरथं, गन्धकं, पिञ्जरमित्यादीन्, दग्धैतेषां भस्म विविधेषु गदेषु प्रयुञ्जन्ति वैद्याः.
यह पुरुष अफ़ारे से पीड़ित है इसे हकीम को दिखलाओ.	आनाहेन पीडितोऽयञ्जन एनं भिषजं प्रदर्शय.

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च।

हिन्दी।	संस्कृत।
जस्त का सुर्मा आंखों के लिये बड़ा लाभ दायक होता है.	रीतिपुष्पमाक्षिभ्यां महदुपयोगि भवति.
लड्डूगूर शिलाजीत खाता है इसी सबब बहुत दूर कूदजाता है और जो अपनी चाहीहुई जगह को पाने में नाकाबिल होता है तो पहिली ही जगह पर फिर लौट आता है यह सुना है.	दीर्घलाङ्गूलः शिलाजत्वक्ति अत एव स महदन्तरमुत्प्लवते यद्यशक्तश्चेन्निर्दिष्टस्थानमाधिगन्तुं तर्हि पूर्वस्थान एव पुनरावर्तते इति श्रुतं.
शहद की मक्खी फूलों से शहद बटोरती है.	सरघाः पुष्पेभ्यो मधु सञ्चिन्वन्ति.

बीसवां अध्याय—विंशोऽध्यायः।

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः।

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
भाग्यवान्	सुकृती (पुं०) पुण्यवान्, धन्यः	दाता खुशदिल	दानशौण्डः, वदान्यः. हर्षमाणः, प्रमनाः (पुं०) हृष्टमानसः.
फ़ैय्याज़ उदार	महेच्छः, महाशयः.	व्याकुल-चित्त	विमनाः, दुर्मनाः.
साफ़दिल	हृदयालुः, सुहृदयः, महोत्साहः, महोद्यमः.	उत्कण्ठित	उत्कः, उन्मनाः.
प्रवीण होशियार	निपुणः, अभिज्ञः, विज्ञः, निष्णातः.	सीधा	दक्षिणः, सरलः.
फ़िकरमन्द	सांशयिकः, संशयापन्नमानसः.	योग्य	समर्थः, क्षमः, शक्तः.
		मशहूर	प्रतीतः, प्रथितः, ख्यातः, विश्रुतः.

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
धनी	द्रव्यः, धाढ्यः, धनवान्, सधनः.	घहरावा	दीर्घसूत्री—त्रः, विलम्बी, मन्दः, मन्थरः.
ग़रीब	निर्धनः, दरिद्रः, दीनः.	गजा	मलाढ्यः.
मालिक	नायकः, पतिः, अधिपतिः, प्रभुः.	कुचड़ा	कुब्जः, न्युब्जः.
		नकटा	विम्रः, घिखुः, विनासिकः,
दयावान्	दयालुः, कृपालुः, कारुणिकः	घौना	खर्वः, ह्रस्वः, वामनः.
स्वाधीन	स्वतन्त्रः, अपावृतः.	चपटी-ना	अवटीटः, नतनासिकः.
पराधीन	परतन्त्रः, परायत्तः.	कवाला	
आधीन	अधीनः, आयत्तः.	लोभी	गृध्नुः, लुब्धः, अभिलाषुकः.
अन्धा	अन्धः, नेत्रविकलः, अडक्.	अति लोभी	लोलुपः, लोलुभः.
बहरा	बधिरः, श्रोत्रविकलः, पङ्गुः.	ढीठ	धृष्टः, अविनीतः, समुद्धतः.
काना	वलिरः, केकरः, काणः.	घातड़जीव	साध्यः, ग्रथितः, सुशीलः, सुविनीतः.
लूला लंगड़ा	खञ्जः	मतवाला	मत्तः, शौण्डः, क्षीवः.
हकलागूगा	अवाक्, मूकः.	कामी	कामुकः कम्रः, कमनः कामयिता.
आलसी	मन्दः, अलसः.	वश में रहने वाला	वश्यः, प्रणेयः.
भूखा	बुभुक्षितः, क्षुधार्तः, क्षुधितः, बुभुक्षुः.	नम्रतायुक्त	निभृतः, ग्रथितः.
प्यासा	पिपासितः, पिपासार्तः, पिपासुः.	शरमिन्दा	सलज्जः, सव्रीडः, सत्रपः, लज्जालुः.
पिटमरू	आत्मम्भरिः.	आस्तिक (श्रद्धावान्)	श्रद्धालुः, आस्तिक्यबुद्धिमान्.
खानेवाला	अद्मरः, भक्षकः, घसमरः.	घबड़ाया हुआ	अधीरः, कातरः.
बहादुर	शूरः, वीरः.	गुस्सेवर	क्रोधी (पुं०) कोपी, क्रोधनः अमर्षणः.
डरपोक	त्रस्तः, भीरुकः, भीतः.		
बदमाश	शठः, धूर्तः, कितवः.		
लुटेरा	लुण्टाकः		

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
जागनेवाला	जागरूकः.	दिलपसद	अभीष्टम्, अभीप्सितम्, हृद्यम्, प्रियम्.
सोनेवाला	निद्रालुः, शयालुः, सुप्तः, शयितः.	खराब	निकृष्टः, प्रतिकृष्टः.
विमुख	पराङ्मुखः, पराचीनः.	नीच	अधमः, कुत्सितः, अवद्यः, गर्ह्यः.
बहुत बोलनेवाला	वावदूकः, अतिवक्ता.	मैला	मलीमसम्, कश्चरम्, मलिनम्.
निन्द्यवचन बोलनेवाला	वाचालः, वाचाटः.	पवित्र	पूतम्, पवित्रम्, मेध्यम्.
शंडबंड बकनेवाला	मुखरः दुर्मुखः अवद्यमुखः.	रीता	शून्यम्, रिक्तकम्, तुच्छम्.
अतिमूढ	अज्ञः, जड़ः.	प्रधान	प्रधानम्, प्रमुखः, उत्तमः, वरेण्यः, वर्यः.
चुपचाप	तूष्णींशीलः, तूष्णीकः.	मामूली	अग्राम्यम्, उपसर्जनम्.
नंगा	नग्नः, अवासाः (पुं०) दिगम्बरः.	बड़ा	पृथु (न०) विशालम्, बृहत्, महत्, विपुलम्.
ठगा हुआ	वञ्चितः, विप्रलब्धः.	मोटा	पीनम्, पीवरम्, पीवन् (न०)
ठग	धूर्तः, वञ्चकः, प्रतारकः.	थोड़ा	स्तोकः, अल्पः, क्षुल्लकः.
चुगल	पिशुनः, दुर्जनः, खलः.	सूक्ष्म	सूक्ष्मम्, श्लक्ष्णम्, कृशम्, तनु, अणुः.
मंगता	मार्गणः, याचकः, अर्थी (पु०)		
घमंडी	अहंयुः, अहङ्कारवान्.	बहुत	प्रचुरम्, प्रभूतम्, अदभ्रम्, बहुलम्.
मनोहर	सुन्दरम्, रम्यम्, रुचिरम्, मनोज्ञम्, मञ्जुलम्.	सब	विश्वम्, कृत्स्नम्, समस्तम्, अखिलम्, पूर्णम्.
कठोर	नृशंसः, क्रूरः.	गाढ़ा घना	घनम्, निरन्तरम्, सान्द्रम्.
वस्तुविशेषणानि ।		पासका	समीपः, आसन्नः, निकटः, अभ्यासः-शः, उपकण्ठः, अन्तिकः.
दिलचस्प	सुन्दरम्, रुचिरम्, चारु, मनोरमम्.		

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
बहुत पास का	नेदिष्टम्, अन्तिकतमम्.	नया	प्रत्यग्रः, अभिनवः, नव्यः, नवः, नूतनः.
दूर	दूरम्, विप्रकृष्टम्.	मुलायम	कोमलम्, मृदुलम्, मृदु.
बहुत दूर	दवीयः, दविष्ठम्, सुदूरम्.	फिजूल	व्यर्थम्, निरर्थकम्, मोघम्.
दीर्घ, चौड़ा	दीर्घम्, आयतम्.	साफ़	स्पष्टम्, स्फुटम्, प्रत्यक्षम्, स्वच्छम्, निर्मलम्.
गोल	वर्तुलम्, निस्तलम्, वृत्तम्.	उलटा	प्रसव्यम्, प्रतिकूलम्, अपसव्यम्.
ऊंचा	उच्चः, प्रांशुः, उन्नतः, तुङ्गः.	सस्ता	अल्पार्घः, अल्पमूल्यः, सुलभः
छोटा	वामनः, खर्वः, ह्रस्वः.	अकरा	महार्घः, दुर्लभः.
टेढ़ा	अरालम्, वृजिनम्, जिह्मम्, कुटिलम्, वक्रम्.	मारना पीटना	प्रहरति.
नित्य	शाश्वतः, ध्रुवः, सनातनः.	मांगना	प्रार्थयते, अभ्यर्थयते, याचते
स्थिर	स्थास्नुः, स्थिरतरः.	छलकाना-गिराना	अधः क्षिपति, अवपातयति.
कड़ा, कठिन	कठिनम्, क्रूरम्, निष्ठुरम्, दृढ़म्, कर्कशः.	ढूंढना	अन्विष्यति, मृगयते, निरूपयति, विचिनोति.
पुराना	पुराणम्, प्रतनम्, अग्र्यम्, पुरातनम्, चिरन्तनम्.		

हिन्दी ।	संस्कृत ।
सम्पूर्ण शास्त्रों में प्रवीण महर्षि वशिष्ठ अतिदानी परम पुन्यात्मा, उदार, साफ़ दिल, भक्तवत्सल श्री रामजी को दुश्मन की विजय रूप आशीर्वाद देतेहुए.	अखिलशास्त्रप्रवीणो महर्षिर्वशिष्ठः वदान्याय परमसुकृतिने, महेच्छाय, भक्तवत्सलाय श्रीरामाय शत्रुविजयात्मिकामाशिषं ददौ.
मैंने गोविन्द को हमेशा खुशदिल और सब कामों में समर्थ देखा.	मया गोविन्दः सदैव हृष्टमानसः सर्वकार्येषु क्षमश्च दृष्टः.

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन-विशेषणशब्दाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
यह आदमी भूखा और प्यासा है इसी से घबड़ाया हुआ दिखाई पड़ता है.	बुभुक्षितः पिपासितश्चायं जनः अत एव विमना इव लक्ष्यते.
आजकल के बहुत से पिटभरू लोभी ख़ैरात को फ़िज़ूल मानते हैं.	आधुनिका बहव उदरम्भरयो लोलुपाः पुण्यं व्यर्थं मन्यन्ते.
यह तो पापियों की बात है.	एषातु पापघस्मराणां वार्ता.
मेरे काम की सिद्धि होगी वा नहीं यों फ़िक्रमन्द हूं.	मत्कार्यसिद्धिर्भविष्यति नवेति सांशयिको ऽहम्.
मैं आपके दर्शन के लिये बड़ा उत्कण्ठित था अब ईश्वर ने मेरी उम्मेद पूरी की.	अहमतीवोन्मना आसं श्रीमतां दर्शनायाधुनेश्वरेण ममाशा पूरिता.
यह मशहूर धनवान् बड़ा लोभी सुना जाता है.	विश्रुतो धनवानयं महदगृध्नु श्रूयते.
रहीम मालिक लोग ग़रीबों पर भी दया करते हैं.	दयालवः प्रभवो निर्धनेष्वपि दयां कुर्वन्ति
मैं तो खुद मुख्तार हूं और तुम पराधीन हो इतनाही तुम्हारे मेरे में फ़र्क़ है.	अहन्तु स्वतन्त्रस्त्वञ्च परायत्त एतावानेव हि त्वयि मयि च भेदः.
बहरा वा और आलसी मत बने.	दीर्घसूत्र्यलसश्च मा भव.
गूंगे भी कलकत्ता राजधानी में पढ़ाये जाते हैं.	मूका अपि कलिकातायां राजधान्यां पाठ्यन्ते (मूकान् पाठयन्ति वा).
यह बड़ा भला आदमी है इसको मत ठगो	अतीव सज्जनोऽयज्ञनो मैनं प्रतारय.
बातहजीव तालियहलम ही विद्या सीखते हैं नकि बदतहजीब.	प्रार्थिता विद्यार्थिन एव विद्यां शिक्षन्ते न धृष्टाः.
श्रद्धालुही ज्ञान प्राप्त करता है दूसरा नहीं.	श्रद्धालुरेव ज्ञानं लभते नेतरः.
शराबी और कामी यह आदमी रण्डी के पास बैठा है.	मत्तो कामुकश्चायज्ञनो वेश्यासमीपे तिष्ठति.

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
यह स्त्री भलीमानस और घबड़ाई हुइ है इसको तसल्ली दो.	अधृष्टा धीरा चेय स्त्री एनां विश्वासय.
डरपोकहो संग्राम से भागन हैं नाकि बहादुर.	भीरुका एव सङ्ग्रामान्पलायन्ते न शूराः.
देवदत्त का बेटा शरमीला और सतोगुणी है.	देवदत्तस्य पुत्रो ह्रीमाञ्छीलवांश्च.
तुम्हारे घरमें कौन जागने वाला और कौन जगादेह सोनेवाला है.	तव गृहे को जागरूकः कश्चाऽतीव निद्रालुः.
लज्जाराम अपने मा बाप से बराबिलाफ़ निन्द्य वचन बोलनेवाला और कठोर है इसकी सङ्गति न करो.	लज्जारामः पितृभ्यां पराङ्मुखो वाचालो नृशंसश्चास्ति मास्य सङ्गतिं कुरु.
मर्द या औरत कोई भी जल में नंगा न न्हाय.	पुरुषो ऽथवा स्त्री न कोपि नग्नो जले स्नायात्.
ठग ठगे हुओं को भी फिर ठगते हैं.	धूर्ता विप्रलब्धानपि पुनर्वञ्चयन्ति.
यह आदमी चुगल और झूठ बकने वाला है इसका यकीन न करो.	पिशुनो ऽवद्यमुपधायकश्चनः मैनं विश्वसिहि.
गोविन्दरामशर्मा ज्यादह बोलनेवाला और होशियार होनके कारण सभा के योग्य है.	सभायोग्यो गोविन्दरामशर्मा वाचालत्वाच्चिपुणतरत्वाच्च.
घमंडी और मँगता सत्कार नहीं किये जाते.	अहंयवो मार्गणाश्च न सत्क्रियन्ते.
यह बौना चपटी नाकवाला है इस पर न हसो.	अवटीटोऽयं वामनो मैनमुपहस.
नकटे, बहरे, कुबड़े, लूले, काणे, गंजे और अन्धों को देखकर कभी न हँसे.	विप्रान्, बधिरान्, कुब्जान्, खञ्जान्, काणान् खल्वाटानन्धाँश्च दृष्ट्वा न कदाप्युपहसेत्.

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
यह खुशनुमा ज़ेवर है इसे अपनी औरत को पहिराओ.	रम्यमाभूषणमिदमेतत्स्वस्त्रियं परिधापय.
धुगल का कोई भी यक़ीन नहीं करता.	पिशुनाय कोऽपि प्रत्येति.
लुटेरों ने अलीगढ़ से लौटते वक़्त मेरा रास्ता रोकलिया.	लुण्टाका अलीगढात्परिवर्तनकाले मम मार्गमवारुन्धन्.
रामके दूत हनुमान् रामके आने का अभीष्ट वृत्तान्त भरत के पास आकर सुनाते हुए.	रामदूतो हनुमान् रामागमनस्याभीप्सितं वृत्तं भरतान्तिक आगत्य श्रावयामास.
तू सूना घर छोड़ कहां गया था ?	त्वं शून्यं गृहं मुक्त्वा कुत्र गतः ?
कहीं भी नहीं सिर्फ पानी लाने को.	न क्वापि केवलं जलमानेतुम्.
यह आदमी नीच है इसकी आदत बड़ी खराब है और दिल भी बहुत मैला है.	अधमोऽयज्ञनोऽस्य प्रकृतिरतीव निकृष्टा मानसमप्यतीव मलोमसमास्ति.
देखकर पाँव रक्खे, छानकर जलपीवे सत्य वचन बोले और मन साफ़ रक्खे.	दृष्टपूतं न्यसेत्पाद वस्त्रपूतम्पवेज्जलम्, सत्यपूतम्वदेद्वाक्यं मनःपूतं समाचरेत्.
सब व्याकरणों में सिद्धान्तकौमुदी नाम व्याकरण मुख्य है.	अखिलेषु व्याकरणेषु प्रधानमिदं व्याकरणं सिद्धान्तकौमुदीनाम.
आज गाढ़े बादल बहुत जल बर्सावेंगे.	अद्य सान्द्रा मेघा प्रभूतं वारि मोक्ष्यन्ति.
दर्वाज़े पर एक भिखारी है उसको थोड़ा खानादो, उसके पास एक लक्ष्मी की सुन्दर मूर्ति है उसे लेलो.	द्वार्येको भिक्षुको वर्तते तं स्तोकम्भोजनं प्रयच्छ, तत्समीपे चैका मनोरमा लक्ष्म्याः मूर्तिर्वर्तते तां गृहाण.
इस राजा की बड़ी कीर्ति, मोटा शरीर गोल मुँह चौड़े नेत्र ऊँचे कन्धे हैं.	अस्य राज्ञो विपुलं यशः पीनं शरीरं वर्तुलं वक्त्रं, आयते नेत्रे उन्नताधर्मो स्तः.
इसका थोड़ा हाल भी कहो.	अस्य सूक्ष्मं वृत्तमपि वर्णय.

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन–विशेषणशब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
इसकी जगह से मेरी जगह दूर है गोविन्द की ज्यादह दूर है और रामसिंह की बहुतही ज्यादह दूर है.	अस्य स्थानान्मम स्थानं दूरं, गोविन्दस्य दवीयो, रामसिंहस्य दविष्टमस्ति.
जीव दो तरह के हैं स्थावर और जङ्गम.	जीवा द्विप्रकारा स्थास्नवश्चरिष्णवश्च.
इस सवाल की तरकीब सहल है और उसकी टेढ़ी है.	अस्य प्रश्नस्य प्रक्रिया ऋजी नस्य च वक्रा वर्तते.
महर्बानी कर अपना पुराना और नया हाल साफ कहिये.	कृपया स्वपुराणमभिनवञ्च वृत्तं स्पष्टं कथयन्तु भवन्तः.
पहिले तो ब्राह्मणों की वाणी सफल थी आजकल तो उलटी होती है.	पूर्वदा तु विप्राणां वाचो ऽमोघा आसन्निदानीन्तु प्रतिकूला भवन्ति.
तप का प्रभाव नष्ट होगया यही कारण है.	तपःप्रभावो नष्ट इत्येव हेतुः.
बैंगन मुलायम पथ्य होते हैं और काशी फल मुलायम जहर होता है.	वृन्ताकं कोमलं पथ्यं कूष्माण्ड कोमलं विषम्.
क्या यह भैंस खड्डर (बांझ) है.	किमेषा महिषी वशा.
इसका पेन बड़ा है इसको खूँटे में बाँधो.	अस्या ऊधस्तु विपुलमेनां शिवके बधान.
गुरुओं की पूजा, साँझ और दिन में सोना और स्त्री प्रसंग, खाने के आदि और अखीर में आचमन और एकादशी को अन्नत्याग यह सदा का कायदा है.	गुरूणां सपर्या, सायंकालेऽहिच स्वापो ग्राम्यधर्मनिषेधश्च भोजनादावन्ते चोपस्पर्शं एकादश्यामन्नत्याग एष नियमः सनातनः.
सिपाही (जल्लाद) लोग उस ठग को बेतों से पीटते हैं.	राजपुरुषा तं भूतं वेत्रैः प्रहरन्ति.
गरीब लोग धनवानों से नाज मागते हैं.	दरिद्रा धनिकानन्नं याचन्ते.

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
इस गोपी की लड़की ने दूध गिरादिया.	एषा ऽऽभीरकन्या दुग्धमध्यक्षिपत्.
देवदत्त उदासीन है न उसका किसी के साथ विरोध है न मित्रता.	उदासीनो देवदत्तः न तस्य केनापि सह विरोधो न मैत्री.
जो हुआ सो हुआ इसमें पछतावा क्या.	यज्जातं तज्जातं कोऽत्र पश्चात्तापः.
दुनियाँ के पाखण्ड और तमाशों को छोड़ कर ईश्वर की शरण में जाऊं नहीं तो नरक में गिरना होगा.	सांसारिकाऽऽडम्भान्कौतूहलाँश्च हित्वा ईश्वरशरणे यायां नो चेन्निरयपातो भविष्यति.
इस अशुभ पहेली और अकाल की खबर को सुनकर मेरे देह में शरीर-कम्पा होती है.	इमां किम्वदन्तीं प्रहेलिकां दुर्भिक्षवृत्तान्तञ्च श्रुत्वा मम शरीरे वेपथुर्जायते.
तू कहां से आया है तेरे कपड़े पसीनों से बहुत तर दिखाई देते हैं.	कुत आगतोऽसि तव वस्त्राणि स्वेदैरतीवार्द्रीभूतानि दृश्यन्ते.
आज यहां ढोल बजते हैं यह क्या उत्सव है न मालूम.	अद्याऽत्र पटहा वाद्यन्ते कोऽयमुत्सवः न जाने.

इक्कीसवां अध्याय—एकविंशतितमोऽध्यायः।

व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः।

अंग्रेजी।	संस्कृत।	अंग्रेजी।	संस्कृत।
Vowel	= स्वरः, अच्	Lengthened	= त्रिमात्रिकः.
Consonant	= व्यञ्जनम्, हल्.	Orthography	= वर्णविचारः.
Short Vowel	= लघुः, ह्रस्वः, एकमात्रिकः.	Letter	= वर्णः, अक्षरम्.
Long Vowel	= दीर्घः, गुरु, द्विमात्रिकः.	Alphabet	= वर्णमाला.
		Word	= शब्दः.
		Noun	= संज्ञा, नाम.

व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

अंग्रेजी ।	संस्कृत ।	अंग्रेजी ।	संस्कृत ।
Proper noun	= व्यक्तिवाचकः.	8 Interjection	= विस्मापनादिबोधकमव्ययम्.
Common Do	= जातिवाचकः.	Gender	= लिङ्गम्.
Abstract	= भाववाचकः.	M. Do.	= पुल्लिङ्गम्.
Collective	= समूहवाचकः.	F. Do.	= स्त्रीलिङ्गम्.
Material	= पदार्थवाचकः.	N. Do.	= क्लीबम्, नपुंसकम्.
Adjective	= गुणवाचकः.	Com. Do.	= संयुक्तलिङ्गम् उभयलिङ्गम्
Primitive word	रूढिसञ्ज्ञा.	Number	= वचनम्.
Derivative	= यौगिकः.	Singular	= एकवचनम्.
Compound word	= योगरूढिः.	Dual	= द्विवचनम्.
Conjunction of letters	= सन्धिः, संहिता.	Plural	= बहुवचनम्.
Do. vowels	= स्वर(अच्)सन्धिः.	Case	= कारकम्, विभक्तिः.
Do. consonant	= हल्(व्यञ्जन)सन्धि.	Nominative	= कर्ता.
Do. visarga	= विसर्गसन्धिः.	Accusative	= कर्म.
Etymology	= शब्दविचारः शब्दसाधनम्.	Instrumental	= करणम्.
Inflection or declension	= शब्दरूपम्.	Dative	= सम्प्रदानम्.
Derivative	= व्युत्पत्तिः.	Ablative	= अपादानम्.
Part of speech	= शब्दभेदः.	Genetive	= सम्बन्धः.
1 Noun	= संज्ञा, विशेष्यः.	Locative	= अधिकरणम्.
2 Adjective	= विशेषणः, गुणवाचकः.	Vocative	= सम्बोधनम्.
3 Pronoun	= सर्वनाम.	Parsing	= पदसाधनम्, पदच्छेदः.
4 Verb	= क्रिया.	Person	= पुरुषः.
5 Adverb	= क्रियाविशेषणः.	1st ,,	= उत्तमः (अहम्, आवाम्, वयम्).
6 Preposition	= उपसर्गः, अव्ययम्.	2nd ,,	= मध्यमः (त्वम्, युवाम्, यूयम्).
7 Conjunction	= समुच्चायकम् अव्ययम्.		

व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन--व्याकरणपरिभाषाः।

अंग्रेजी।	संस्कृत।	अंग्रेजी।	संस्कृत।
3rd Person	= अन्यपुरुषः (सः, तौ, ते इत्यादयः).	3rd Preterite	= लुङ्(सामान्यभूतः)
Transative	= सकर्मका क्रिया.	Potential	= विधिलिङ्
Intransative	= अकर्मका क्रिया.	Benedictive	= आशीर्लिङ्
Verb having two objects	= द्विकर्मकाःक्रियाः.	1st Future	= लुट् (आसन्न भविष्यत्)
Causative	= प्रेरणार्थकाक्रिया, णिजन्ताः.	2nd Do.	= लृट् (सामान्य भविष्यत्)
Desederative	= इच्छार्थकाः, सन्नन्ताः.	Conditional	= लृङ् (हेतुहेतुमद्भविष्यत्)
Frequentative verbs	= यङन्ताः, पौनःपुन्यद्योतकाःक्रियाः.	Imperative	= लोट् (आज्ञा).
Nominal verbs	= नामधातवः.	Direct	= स्पष्टोक्तिः.
Verbal affixes	= कृदन्तःकृत्प्रत्ययाः.	Indirect	= वक्रोक्तिः.
Nominal affixes	= तद्धितप्रत्ययाः.	Explanation	= व्याख्या, विवृतिः, विवरणम्
Root	= धातुः.	Abbreviation	= संक्षिप्तरूपम्.
Conjugation	= धातुरूपाणि.	Example	= दृष्टान्तः उदाहरणः.
Voice	= वाच्यः.	Pronounciation	उच्चारणः.
Active	= कर्तृवाच्यः.	Synonyms	= पर्य्यायः समानार्थवाची.
Passive	= कर्म „	Autonyms	= विपरीतार्थवाची.
Intransative Passive	= भाव „	Homonyms	= द्व्यर्थकः.
Tense	= कालः.	Compound	= समासः.
Present tense	= वर्तमानः, लट्.	Indeclinable *compound*	= अव्ययीभावः.
Past „	= भूतः.	Subordinate compound	= तत्पुरुषः २
Future „	= भविष्यत्.	*Relative* compound	= बहुव्रीहिः ३
1st *Preterite*	= लङ् (आसन्नभूतः)		
2nd Do.	= लिट् (पूर्णभूतः)		

व्याकरण के संज्ञी शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

अंग्रेजी ।	संस्कृत ।	अंग्रेजी ।	संस्कृत ।
Appositional compound	= कर्मधारयः ४	Prosody	= छन्दोनिरूपणम्.
Numeral compound	= द्विगुः ५	Prose	= गद्यम्.
Copulative compound	= द्वन्द्वः ६	Verse, poetry	= पद्यम्.
Syntax	= वाक्यविचारः.	Metre, stanza	= वृत्त., छन्दोजातिः
Prose order	= अन्वयः.	Feet	= चरणः, पादः.
Analysis	= वाक्यविभागः.	Poem	= काव्यम्
Sentence	= वाक्यः, पदः.	Short syllable	= लघुः.
Figures of speech	= अलङ्कारः.	Long Do	= गुरुः.
Do. words	= शब्दालङ्कारः.	ऽऽऽ	= मगणः
Do. thought	= अर्थालङ्कारः.	।।।	= नगणः
Simile	= दृष्टान्तः, उपमालङ्कारः.	ऽ।।	= भगणः
Metaphor	= रूपकालङ्कारः.	।ऽऽ	= यगणः
Synecdochee	= उपलक्षणः.	।ऽ।	= जगणः
Hyperbole	= अत्युक्त्यलङ्कारः.	ऽ।ऽ	= रगणः
Analogy	= सादृश्यालङ्कारः.	।।ऽ	= सगणः
Antithesis	= विरोधाभासः.	ऽऽ।	= तगणः
Allegory	= उद्देशः ?	,	= विरामः
Irony	= व्यङ्गोक्तिः.	;	= द्विविरामः
Personification	पुरुषभावारोपणम्.	:	= त्रिविरामः
		.	= पूर्णविरामः
		?	= प्रश्नचिह्नम्
		!	= सम्बोधनचिह्नम्
		( )	= कोष्ठः
		' '	= परोक्तिचिन्हम्



व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन — व्याकरणपरिभाषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
इस अध्याय में संस्कृत के व्याकरण सारको अंग्रेजी भाषाके पढ़नेवाले विद्यार्थियों के उपकारार्थ प्रायः कुछ लिखता हूं.	अस्मिन्नध्याये व्याकरणसारमाङ्गलभाषाध्येतॄणां छात्राणामुपकारार्थम्प्रायोऽनुसरामि.
संस्कृत वैयाकरणतो अच्छी तरह जानतेही हैं.	संस्कृतवैयाकरणास्तु समीचीनतया जानन्त्येव.
वर्णमाला में कितने अक्षर हैं ?	वर्णमालायांकत्यक्षराणि सन्ति.
अकार से लेकर चौदहस्वर, ककार से ले तेतीस व्यञ्जन इस प्रकार मिलाकर ४७ अक्षर हैं.	अकारादयः चतुर्दशस्वराः ककारादयस्त्रयस्त्रिंशद्व्यञ्जनानीत्येवं पिण्डीकृत्य सप्तचत्वारिंशद्वर्णाः.
स्वर, ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेद से तीन प्रकारके और व्यञ्जन भी स्पर्श, अन्तस्थ और ऊष्म भेद से तीन प्रकार के हैं.	स्वरा ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदेन त्रिधाः, व्यञ्जनान्यपि स्पर्शान्तस्थोष्मभेदेन त्रिविधानि.
शब्द दो प्रकार का है सार्थक और निरर्थक.	शब्दो द्विविधः सार्थको निरर्थकश्च.
सार्थक शब्द संज्ञा, क्रिया, अव्यय, भेद से तीन प्रकार का है.	सार्थकाः शब्दाः संज्ञाक्रियाऽव्ययभेदेन त्रिधाः.
चीज़का नाम मात्र बतानेवाला शब्द संज्ञा कहलाता है.	वस्तुनो नाममात्रप्रवक्ता शब्दः संज्ञेत्यभिधीयते.
वह छः प्रकार की है जाति वाचक जैसे आदमी; व्यक्तिवाचक जैसे कृष्ण भाव वाचक जैसे लघुता; समूह वाचक जैसे सेना; पदार्थ वाचिका जैसे जल; गुणवाचिका जैसे सुन्दर.	सा षड्विधा, जातिवाचिका [यथामनुष्यः], व्यक्तिवाचिका [यथा कृष्णः] भाववाचिका [यथालघुत्वम्], समूहवाचिका [यथा सेना] पदार्थवाचिका [यथा जलम्], गुणवाचिका [यथासुन्दरः.]

व्याकरण के संज्ञी शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

अंग्रेजी ।	संस्कृत ।	अंग्रेजी ।	संस्कृत ।
Appositional compound	= कर्मधारयः ४	Prosody	= छन्दोनिरूपणम्.
Numeral compound	= द्विगुः ५	Prose	= गद्यम्.
Copulative compound	= द्वन्द्वः ६	Verse, poetry	= पद्यम्.
Syntax	= वाक्यविचारः.	Metre, stanza	= वृत्तः, छन्दोजातिः
Prose order	= अन्वयः.	Feet	= चरणः, पादः.
Analysis	= वाक्यविभागः.	Poem	= काव्यम्
Sentence	= वाक्यः, पदः.	Short syllable	= लघुः.
Figures of speech	= अलङ्कारः.	Long Do	= गुरुः.
Do. words	= शब्दालङ्कारः.	ऽऽऽ	= मगणः
Do. thought	= अर्थालङ्कारः.	।।।	= नगणः
Simile	= दृष्टान्तः, उपमालङ्कारः.	ऽ।।	= भगणः
Metaphor	= रूपकालङ्कारः.	।ऽऽ	= यगणः
Synechdoche	= उपलक्षणः.	।ऽ।	= जगणः
Hyperbole	= अत्युक्त्यलङ्कारः.	ऽ।ऽ	= रगणः
Analogy	= सादृश्यालङ्कारः.	।।ऽ	= सगणः
Anicthesis	= विरोधाभासः.	ऽऽ।	= तगणः
Allegory	= उद्देशः ?	,	= विरामः
Irony	= व्यङ्गोक्तिः.	;	= द्विविरामः
Personification	पुरुषभावारोपणम्.	:	= त्रिविरामः
		.	= पूर्णविरामः
		?	= प्रश्नचिह्नम्
		!	= सम्बोधनचिह्नम्
		( )	= कोष्ठः
		' '	= परोक्तिचिन्हम्



व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन — व्याकरणपरिभाषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
इस अध्याय में संस्कृत के व्याकरण सारको अंग्रेजी भाषाके पढ़नेवाले विद्यार्थियों के उपकारार्थ प्रायः कुछ लिखता हूं.	अस्मिन्नध्याये व्याकरणसारमाङ्गलभाषाध्येतॄणां छात्राणामुपकारार्थम्प्रायोऽनुसरामि.
संस्कृत वैयाकरणतो अच्छी तरह जानतेही हैं.	संस्कृतवैयाकरणास्तु समीचीनतया जानन्त्येव.
वर्णमाला में कितने अक्षर हैं ?	वर्णमालायांकत्यक्षराणि सन्ति.
अकार से लेकर चौदहस्वर, ककार से ले तेतीस व्यञ्जन इस प्रकार मिलाकर ४७ अक्षर हैं.	अकारादयः चतुर्दशस्वराः ककारादयस्त्रयस्त्रिंशद्व्यञ्जनानीत्येवं पिण्डीकृत्य सप्तचत्वारिंशद्वर्णाः.
स्वर, ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेद से तीन प्रकारके और व्यञ्जन भी स्पर्श, अन्तस्थ और ऊष्म भेद से तीन प्रकार के हैं.	स्वरा ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदेन त्रिधाः, व्यञ्जनान्यपि स्पर्शान्तस्थोष्मभेदेन त्रिविधानि.
शब्द दो प्रकार का है सार्थक और निरर्थक.	शब्दो द्विविधः सार्थको निरर्थकश्च.
सार्थक शब्द संज्ञा, क्रिया, अव्यय, भेद से तीन प्रकार का है.	सार्थकाः शब्दाः संज्ञाक्रियाऽव्ययभेदेन त्रिधाः.
चीज़का नाम मात्र बतानेवाला शब्द संज्ञा कहलाता है.	वस्तुनो नाममात्रप्रवक्ता शब्दः संज्ञेत्यभिधीयते.
वह छः प्रकार की है जाति वाचक जैसे आदमी; व्यक्तिवाचक जैसे कृष्ण भाव वाचक जैसे लघुता; समूह वाचक जैसे सेना; पदार्थ वाचिका जैसे जल; गुणवाचिका जैसे सुन्दर.	सा षड्विधा, जातिवाचिका [यथा मनुष्यः], व्यक्तिवाचिका [यथा कृष्णः] भाववाचिका [यथा लघुत्वम्], समूहवाचिका [यथा सेना] पदार्थवाचिका [यथा जलम्], गुणवाचिका [यथा सुन्दरः.]

व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन — व्याकरणपरिभाषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
फिर वह रूढि, यौगिक, योगरूढि भेद से तीन प्रकारकी है.	पुनः सा रूढियौगिकयोगरूढिभेदेन त्रिधा.
रूढि जैसे (घड़ा); यौगिक जैसे (पाचक) योगरूढि जैसे (पङ्कज).	रूढियथा [घटः] यौगिको यथा [पाचक.] योगरूढियथा (पङ्कजः).
स्वर, व्यञ्जन और विसर्ग भेद से सन्धि तीन प्रकार की है. *	अज्झलघिमर्गभेदेन संहिता*स्तिस्रः.
स्वर संहिता जैसे सुधी+उपास्य.=सुधुपास्यः.	अच्संहिता यथा सुधी+उपास्यः=सुधूपास्यः.
व्यञ्जन सन्धि जैसे काद्यां मरणात्+मुक्तिः=काद्यां मरणान्मुक्तिः.	हलसंहिता यथा काद्यांमरणात्+मुक्तिः=मरणान्मुक्तिः.
विसर्ग सन्धि जैसे देवः+याति=देवोयाति.	विसर्गसंहिता यथा देवः+याति=देवोयाति.
जहां सन्धि का निमित्त होने परभी संहिता न हो वह प्रकृति भाव सन्धि कहलाती है जैसे माले + आनय= माले आनय इत्यादि.	यत्र सन्धिनिमित्तेऽपि संहिता न स्यात् सा प्रकृतिभावसंहितेत्युच्यते यथा माले+आनय इत्यादि.
शब्दों के भेद भी अंग्रेजी में आठ हैं.	शब्दभेदा अपि आङ्गभाषायामष्ट.
पहिला भेद संज्ञा है जैसे पेड़; दूसरा विशेषण या गुणवाचक संज्ञा जैसे मनोहर; तीसरा सर्वनाम संज्ञा जैसे आप; चौथा क्रिया जैसे जाता है; पांचवां क्रियाविशेषण जैसे भली प्रकार; छटा उपसर्ग वा अव्यय जैसे पास, भी, नहीं इत्यादि; सातवां	प्रथमो भेदः संज्ञा यथा वृक्षः; द्वितीयो विशेषणः गुणवाचिका संज्ञा वा यथा—मनोहरः; तृतीयःसर्वनामसंज्ञा—यथा—भवान्; चतुर्थः क्रिया—यथा गच्छति; पञ्चमः क्रियाविशेषणः यथा—सुष्ठु प्रकाशते; षष्ठः उपसर्गःअव्ययं वा यथा—उप,

* नोट-इनका विशेषवर्णन दूसरे भाग के पहिले तरंग में देखो.

* एषां विशेषवर्णनं द्वितीयभागस्य प्रथमे तरङ्गे पश्यत.

व्याकरण के संज्ञाशब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
जोड़नेवाला या अलग करनेवाला अव्यय जैसे और, या वगैरह; आ- ठवां आश्चर्यादि द्योतक अव्यय जैसे—आः, हा, हंहो.	अपि, न इत्यादि; सप्तमः समुच्चायकं पृथक्त्वबोधकञ्चाव्ययं यथा च, वा इत्यादि; अष्टमः विस्मापनादिबो- धकमव्ययं यथा—आः, हा, हंहो.
लिङ्ग तीन प्रकारके हैं पुल्लिंग जैसे म- नुष्य स्त्रीलिंग जैसे स्त्री; नपुसक जैसे मित्र.	लिङ्गं त्रिविधम् पुं० (यथा नरः); स्त्री (यथा-नारी) नपुंसकं (यथा मित्रम्).
संस्कृत में लिंग व्यवहार प्रत्यय और डिक्सनरी द्वारा जैसा होता है अं- ग्रेजी में वैसा नहीं.	संस्कृते तु लिङ्गव्यवहारः प्रत्ययकोषा- दिद्वारा यथा भवति ननु तथा ऽङ्गल भाषायाम्.
वचन भी तीन तरह का है अंग्रेज़ी में तो दोही तरह का है.	वचनं चापि त्रिविधमाङ्गलभाषाया- न्तु द्विविधमेव.
एक वचन जैसे रामः, द्विवचन जैसे रामौ बहुवचन जैसे रामाः.	एकवचनं यथा रामः; द्विवचन यथा रामौ; बहुवचनं यथा रामाः.
कारक (केस) भी अंग्रेजी जबान के माफिक आठ हैं पहिला कर्ता (ना- मिनेटिव) जैसे राम दूसरा कर्म (अब्जक्टिव) जैसे रामको, तीसरा करण (इन्स्ट्रूमन्टेल) जैसे रामने; चौथा सम्प्रदान(डुटिव) जैसे रामके लिये; पांचवां अपादान (एब्लेटिव) जैसे रामसे, छठा सम्बन्ध (जैनि टिव) जैसे रामका; सातवां अधि- करण [लौकेटिव] जैसे राम में आ- ठवां सम्बोधन [वाकेटिव] जैसे हे राम.	कारक*काण्यष्याङ्गलभाषानुसारेण अ- ष्ट, प्रथमंकर्ता-यथा रामः; द्वितीयं कर्म यथा रामं; तृतीयं करणम् यथा रामेण; चतुर्थं सम्प्रदानम् यथा रा- माय; पञ्चमं अपादानम् यथा रामा- त्; षष्ठं सम्बन्धकारकम् यथा रा- मस्य; सप्तममाधिकरणम् यथा रामे; अष्टमं सम्बोधनम् यथा हे राम.

व्याकरण के संज्ञाशब्दों का वर्णन — व्याकरणपरिभाषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
इस फिकरे में रक्खे हुए पदोंका पद साधन [पार्सिंग] करो.	अस्मिन् वाक्ये स्थितानां पदानां पदसाधनं कुरुत.
तीन पुरुष [पर्सन] हैं तृतीय वा अन्य, दूसरा वा मध्यम, पहिला वा उत्तम इस प्रकार.	पुरुषास्त्रयः तृतीयोऽन्यो वा, द्वितीयो मध्यमो वा, प्रथम उत्तमो वेति.
अकर्मक धातुगण को खुलासा रीति से सुनो.	अकर्मकं धातुगणं संश्लिसरीत्या शृणुत.
लजाना, रहना वा होना, ठहरना, जागना बढ़ना, नष्टहोना, डरना, जीना, मरना, सोना, क्रीड़ा करना, प्रीति करना, दीप्तहोना [जलना शोभित होना] इत्यादिधातुगण अकर्मक कहा है.	लज्जासत्तास्थितिजागरणं वृद्धिक्षयभय जीवितमरणम् । शयनक्रीडारुचि दीप्त्यर्थं धातुगणं तमकर्मकमाहुः.
क्रियाएं तीन प्रकारकी हैं अकर्मक जैसे सोता है, सकर्मक जैसे खाता है द्विकर्मक जैसे मांगता है.	क्रियास्त्रिविधा, अकर्मका यथा स्वपिति, सकर्मका यथा भुङ्क्ते; द्विकर्मका यथा याचते.
देवदत्त बेटेको सुलाता है यहां प्रेरणार्थक क्रिया है.	देवदत्तः पुत्रं शाययतीत्यत्र प्रेरणार्थका क्रिया.
कृष्णदत्त व्याकरण पढ़ना चाहता है इस वाक्य में इच्छार्थक.	कृष्णदत्तो व्याकरणं पिपठिषतीत्यत्र सन्नन्ता क्रिया.
आज जाड़ा बहुतही है और हवा बहुतही चलती है.	अद्य शीतं घरीवर्ति सरीसर्ति समीरणः.
यहां दोनों क्रियाही अतिशयार्थ द्योतक हैं.	अत्र क्रिया द्वयमेव पौनःपुन्यद्योतकं.
क्यों गधेकी तरह करता है यह नाम धातु है.	किमर्थं "रासभायसे" इति नामधातुः.

व्याकरण के संज्ञाशब्दों का वर्णन -- व्याकरणपरिभाषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
क्रियाओं में जो प्रत्यय लगाई जाती है वे कृत्प्रत्यय हैं जैसे द्रष्टुम् । शब्दों में जो प्रत्यय लगाई जाती हैं वे तद्धित प्रत्यय होती हैं जैसे राघव.	तिङ्व्यतिरिक्ता, धातुभ्यः कर्त्राद्यर्थे ये प्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते ते कृत्प्रत्ययाः* कथ्यन्ते यथा द्रष्टा, द्रष्टुम् शब्देषु ये प्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते ते तद्धिताः* प्रत्ययाः यथा राघवः.
तिङ् प्रत्ययान्त धातु क्रियापद और सुप् प्रत्ययान्त शब्द संज्ञा पद ये कहलाते हैं.	तिङ्प्रत्ययान्तो धातुः क्रियापदमिति, सुप्प्रत्ययान्तः शब्दः संज्ञा पदमित्यभिधीयते.
वाच्य (वचस) भी तीन हैं, कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य.	वाच्या अपि त्रयः कर्तृवाच्यः, कर्मवाच्यः भाववाच्यः.
मैं पुस्तक पढ़ता हुं यह कर्तृवाच्य है.	अहं पुस्तकं पठामीति कर्तृवाच्यः.
पुस्तक मुझ से पढ़ी जाती है यह कर्म वाच्य है.	पुस्तकं मया पठ्यते इति कर्मवाच्यः.
मुझ से बैठा जाता है यह भाववाच्य है.	मया स्थीयते एष भाववाच्यः.
भाववाच्य तो अकर्मकही क्रिया से बनता है.	भावाच्यस्तु अकर्मकैयव क्रियया भवति.
काल वा लकार दस हैं—	काला लकारा वा दश.
पहिला वर्तमान वा लट्—जैसे भवति (होता है)	प्रथमः वर्तमानो लट् वा यथा भवति.
दूसरा अनद्यतनभूत वा लङ् जैसे अभवत्.	द्वितीयः अनद्यतभूतः लङ् वा यथा अभवत्.
तीसरा परोक्षभूत वा लिट्—जैसे बभूव.	तृतीयः परोक्षभूतो लिट्वा—बभूव.
चौथा विधि वा लिङ्—जैसे भवेत्.	चतुर्थः विधिः लिङ्वा—भवेत्.
पांचवां आशीः—लिङ्—जैसे भूयात्.	पञ्चमः आशीः लिङ्वा—भूयात्.
छठा अनद्यतनभविष्य वा लुट्—जैसे भविता.	षष्ठः अनद्यतनभविष्यः लुट्वा-भविता.

व्याकरण के संज्ञाशब्दों का वर्णन–व्याकरणपरिभाषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
सातवां सामान्यभविष्य वा लृट् जैसे भविष्यति.	सप्तमः सामान्यभविष्यः लृट् वा–यथा भविष्यति.
आठवां क्रियातिपत्ति वा लृङ् जैसे अभविष्यत्.	अष्टमः क्रियातिपत्तिः–लृट् यथा अभविष्यत्.
नवां सामान्यभूत वा लुङ् जैसे अभूत.	नवमः सामान्यभूतः—लुङ्—अभूत्.
दशवां आज्ञा वा लोट्—जैसे भवतु.	दशमः आज्ञा—लोट्—यथा भवतु.
इस श्लोक की व्याख्या करो.	अस्य श्लोकस्य व्याख्यां कुरु.
अंग्रेजी ज़बान में बहुत से शब्दों के मुत्फ़र्रिक़ (संश्लिष्ट) रूप होते हैं.	आङ्ग्लभाषायां बहूनां शब्दानां संश्लिष्टरूपाणि भवन्ति.
बड़े शर्मकी बात है कि तुम इस शब्द का उच्चारण भी नहीं करसक्ते.	अस्य शब्दस्योच्चारणमपि कर्तुं न शक्नोषीति घातेयं महत्याः लज्जायाः.
गूढ़ शब्द का हम मानी और विरुद्धार्थवाची शब्द लिखो.	गूढशब्दस्य पर्यायार्थविपरीतार्थवाचकौ शब्दौ लिखत.
समास छः हैं.	समासाः षट्. *
पहिला अव्ययीभाव जैसे उपकूलम्.	प्रथम अव्ययीभावः यथा कूलस्य समीपे उपकूलम्.
दूसरा तत्पुरुष ,, राजपुत्रः.	द्वितीयः तत्पुरुषः–राज्ञः पुत्रः राजपुत्रः.
तीसरा बहुव्रीहि ,, लम्बकर्णः.	तृतीयः बहुव्रीहिः यथा लम्बौ कर्णौ यस्य स लम्बकर्णः.
चौथा कर्मधारय ,, रक्तलता.	चतुर्थः कर्मधारयः यथा रक्ताचासौलता रक्तलता.
पाँचवाँ द्विगु [संख्या वाची शब्द पूर्व] जैसे त्रिलोकी.	पञ्चमः द्विगुः [संख्यापूर्वः] यथाणां लोकानां समाहारः त्रिलोकी.
* इनका स्पष्ट विवरण दूसरे भाग में क्रमशः मिलेगा.	* अस्य विवरणो द्वितीये भागे क्रमशः स्पष्टतया मिलिष्यति.

व्याकरण के संज्ञाशब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
छठा छन्द [चार्थक] जैसे हरिहरौ.	षष्ठः छन्दः [चार्थकः] यथा हरिश्चहरश्च हरिहरौ.
नीचे लिखहुए श्लोक का अन्वय वर्णन करो.	निम्नश्लोकस्यान्वयो वर्णनीयः.
यत्कृपा मूकं वाचालंकरोति पङ्गुं गिरिं लङ्घयते तम् परमानन्दमाधवम अहंवन्दे	मूकं करोति वाचालं पङ्गुंलङ्घयते गिरिम्। यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्.
अन्वय दो प्रकार का है खण्डान्वय और दण्डान्वय.	अन्वयो द्विविधः खण्डान्वयो दण्डान्वयश्च.
जहां श्लोक का टुकड़े २ व्याख्यान है वह खण्डान्वय है.	यत्र श्लोकस्य खण्डशः व्याख्यानं स खण्डान्वयः.
जहां श्लोक की एक साथही व्याख्या सो वह दण्डान्वय है.	यत्र श्लोकस्य युगपदेव व्याख्या स दण्डान्वयः.
तो कहो किसरीति से अन्वय करूं.	तर्हि कथयं कतरया रीत्याऽन्वयं करोमि.
दण्डान्वय से। अच्छा.	दण्डान्वयेन। वरम्.
अन्वय—जिसकी कृपा गूंगे को बोलने वाला बनाती है और पंगे को पहाड़ लँघाती है उस परमानन्द माधवको मैं वन्दना करता हूँ.	अन्वयः—यत्कृपा मूकं वाचालं करोति पङ्गुं गिरिं लङ्घयते तं परमानन्द माधवं अहं वन्दे.
तुम पनेलिसिस भी जानते हो या नहीं। जानताहूं.	वाक्यविभागमपि त्वं वेत्सि न वा। वेद्मि.
काव्य अलङ्कारों के विना ऐसे नहीं अच्छा लगता जैसे विना नमक शाक.	काव्योऽलङ्काराविना तथा न शोभते यथा लवणं विना व्यञ्जनम्.
तीन गुरुका मगण, और तीन लघु का नगण, आदिगुरु भगण और फिर	मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः जो गुरुमध्यगतो र

व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
आदि लघु यगण, गुरुमध्य जगण और लघु मध्य रगण, अन्तगुरु सगण और अन्त लघु तगण होता है.	लमध्यः सोन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः । १ ।
उपसर्ग से धातुका अर्थ जबर्दस्ती दूसरी जगह ले जायाजाता है जैसे प्रहार (चोट) आहार [खाना] संहार, [नाश] विहार [क्रीड़ा] और परिहार [त्याग.]	उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत्.
अगला अध्याय देखो ।	अग्रिमं अध्यायं पश्य ।

बाईसवां अध्याय—द्वाविंशोऽध्यायः ।

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
दूर करना हटाना	स्थानान्तरयति, अपसारयति विचालयति, दूरीकृ, निर्वासयति निष्कासयति.	फिसलना	च्यवते, स्खलति, भ्रंशते, भ्रदयति.
मरोड़ना निचोड़ना	सं निष्पीडयति, (बलवत्) आकुञ्चयति शोधयति, स्रावयति [पटात्] निर्गलयति.	मुलम्मा करना	स्वर्णेन रञ्जयति, हेमरसेन हेमद्रवेण लिम्पति.
छिपाना	प्रच्छादयति, गोपायति-अन्तः-तिरः—धा, अपधारयति.	लपेटना बांधना	परि-अधि वेष्टयति, परि-वृ आवध्नाति, परिधत्ते, निसं-यच्छति.
		उधार देना	अविहितकालात्-दा, ऋणं दा; निक्षिपति, न्यस्यति, समर्पयति.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
खोना	त्यजति, जहाति, क्षपयति.	लटकाना	निदधाति, उद्धनाति, आ+अव-लम्बयति, व्यापादयति.
ढीला होना	श्लथते, स्रंसते.	फांसीदेना	
" करना	शिथिलयति, श्लथयति.	लटकना	प्र-अव-लम्बते, दोलायते.
भेजना	प्रहिणोति, प्रेरयति प्रेषयति.	झूलना	आन्दोलयति, प्रेङ्खति, प्रे*ङ्खोलयति, दोलायते.
निश्चय करना	सं-व्यव-स्थापयति, व्यवस्यति निर्-अव-धारयति.	खिलाना	भोजयति, आशयति, परि
पौंछना	प्रमार्ष्टि, परिमार्जयति, प्रक्षालयति.	चराना	पोषयति-पुष्णाति.
ख्वाब देखना	स्वप्नंपश्यति.	मिलना	समेति, सङ्गच्छते, सम्मिलति, समागच्छति.
सलूककर्ना	आचरति, वर्तते, व्यवहरति.	जल्दी चलना	शीघ्रं—सवेगं—गच्छति;
मालूम करना	अनुभवति, विभावयति, उपलभते	,, करना	त्वरयति, त्वरते.
चूमना	चुम्बति.	चक्कर देनाघुमाना	जिह्मं—कुटिलं—गच्छति-सर्पति, परि-आवर्तयति.
महरूम करना	वियोजयति, विना—कृ०;	बसना	वसति, तिष्ठति, वर्तते, प्रतीक्षते.
इल्तजा कर्ना	अनुनयति, प्रार्थयते.	लज्जित होना	लज्जते, जिह्रेति.
नुक्सान पहुंचाना	क्षिणोति, लुदति, अर्दति. बाधते, व्यथयति.	,, करना	ह्रेपयति, लज्जयति अपयति.
उखाड़ना	उन्मूलयति.	कमहोना	ह्रस्यति, न्यूनीभवति.
नाद कर्ना	उद्भावयति.	,,करना	ह्रसयति, लघयति, न्यूनीकरोति.
काम कर्ना	कार्यं करोति.		
खयाल करना,	चिन्तयति, ध्यायति, विमृशति, आ-पर्या-लोचयति	बाज रहना	विरमति, निवर्तते परिहरति, सहते, क्षमते.
ज़ोर से फैंकना	सहासा बलेन क्षिपति, पातयति, अस्यति.		

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
हिम्मत करना	शृण्णोति, उत्सहते साहस करोति.	याद करना	स्मरति.
फैलना	प्र वि सर्पति, विस्तारयति, प्रसारयति.	भूलना	विस्मरति.
पसीने निकलना	प्रस्विद्यति, परिधाम्यति, स्वेदयति.	कूच करना	
नफरत करना	द्वेष्टि, असूयति, स्पर्धते.	अनुष्ठा न करना	प्रतिष्ठते, अनुतिष्ठति.
होना, अनुभव करना	भवति. अनुभवति.	देना	ददाति.
हारना	परिभवति.	ठहरना	विरमति.
उत्पन्न होना	उद्भवति.	ढूढना	अन्विष्यति [इष इच्छादि]
समर्थ होना	प्रभवति.	धारण करना	दधाति, धत्ते
जीतना	जयति.	करना	विदधाति.
हराना	पराजयति.	कहना	अभिधत्ते.
		पहिरना	परिधत्ते.
		लेना	आदत्ते.
		जाना [भ्वादिका]	व्यादत्ते.
		जाना	गच्छति.
		जानना	अवगच्छति.

हिन्दी ।	संस्कृत ।
यह चीज यहां अच्छी नहीं लगती इसलिये इसको दूसरी जगह लेजाओ	वस्त्वेतदत्र न शोभते एनद्गृहान्तरं नय.
देवदत्त ने मेरी बाँह मरोड़दी तो भी मैंने कुछ न कहा.	देवदत्तो मद्बाहु बलवत्समपीडयत्तदापि मया किञ्चिन्नोक्तम्.
अच्छे लोग दूसरों के दोषों और अपने गुणों को छपाया करते हैं.	सज्जना. परेषां दोषान्स्वगुणांश्च प्रच्छादयन्ति.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
महल की चोटी पर मत जाओ वहां से ज़रूरही फिसल जाओगे.	प्रासादशिखरस्योपरि मागच्छ ततोऽवश्यं क्ष्यविष्यसे.
आजकल बहुत से मुलम्मेसाज़ ऐसे गहने सोने चाँदी से मुलम्मा कर बनाते हैं कि बहुत से अक्लमन्द भी ठगों से धोखा खाजाते हैं.	अद्यत्वे बहवः स्वर्णरजका इंदृश्याभूषणानि स्वर्णेन रजतेन वा रञ्जयन्ति यद्बहवो बुद्धिमन्तोऽपि धूर्तैः प्रतार्यन्ते.
आज शीत बहुतही ज्यादह है और हवा भी तेज चलती है इसलिये तुम गुलूबन्द सिरपर लपेटलो.	अद्य शीतं चरीवर्ति सरीसर्ति समीरणोऽतस्तं गलबन्धनं शिरस्यधिवेष्टय.
किसी आदमी को कर्ज न दो क्योंकि कर्ज़दार देते वक्त दुश्मन होजाता है यह निश्चय है.	कस्मैचित्पुरुषाय धनं मानिक्षिप यतोऽधमर्णः प्रतिसमर्पणसमये शत्रुर्भवतीति निश्चयः.
इस काच केरी बर्तन में मेरे पास शहद भेजो मैं उसको अपने बर्तन में धरके और साफकर तुम्हारे बर्तन को फिर लौटा दूंगा.	अस्मिन् काचपात्रे हि मत्सन्निधौ मधु प्रेषय अहं तत्स्वपात्रे कृत्वा प्रमार्ज्य च तत्र पात्रं पुनरावर्तयिष्यामि.
मा बेटेका मुंह चूमती और लड़ाती है.	माता पुत्रस्य मुखं चुम्बति लालयति च.
मुझे आप इनाम से क्यों महरूम करते हैं.	कथं मां पारितोषिकेण वियोजयन्ति भवन्तः.
यह भिखारी रोटी केलिये प्रार्थना [इल्तजा] करता है.	एष भिक्षुकः करपीडकार्थमनुनयति.
किसी जीव को कभीभत सताओ.	कमपि जीवं कदापि मा व्यथय.
आनेवाले चैत के महीने में भूकम्पहोगा.	आगामिनि चैत्रे मासि भूकम्पो भविष्यति.
तेज हवा बड़े दरख्तों को भी उखाड़ देती है.	प्रकम्पनो महतो वृक्षानपि उन्मूलयति.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
इसचीज़ को ज़ोर से न फेंको क्योंकि शायद बिखर जायगी.	एतद्वस्तु सहसा माक्षिप यतः प्रकिरेत्.
अक्सर स्त्रियां सावन के महीने में झूला झूलती हैं.	प्रायः स्त्रियः श्रावणे मासि दोलायं प्रेङ्खन्ति.
कभी ऐसा मत सोचो मैं कभी तुम्हारे खिलाफ़ न करूंगा.	कदापीदृग्मा विमृशाहं तव विरुद्धं नाचरिष्यामि.
जल्लाद ने जज साहब के हुक्म से उस बालक के मारने वाले को फांसी दी.	घातको न्यायाधीशाज्ञया तं बालघातिनमबालम्बयत्.
मैं आज सौ ब्राह्मणों को खिलाऊंगा.	अहमद्य शतं ब्राह्मणान्भोजयिष्यामि.
यह पुस्तक कहां से मिलती है । बम्बई से.	तत्पुस्तकं कुतस्तन्मिलति। मुम्बापुरीतः
महर्बानी कर जल्दी कीजिये यह बहाने का वक्त नहीं है.	कृपया त्वरय नास्त्ययं समयो दीर्घसूत्रतायाः.
चौद अँधेर पाख में रोज़ना घटता है और उजाल पाख में बढ़ता है.	चन्द्रमा कृष्णपक्षे प्रतिदिनं ह्रस्यति शुक्ले पक्षे वर्धते.
इस अशुभ आचरण से तू मुझको क्यों लज्जित करता है.	कथं मां खेदयसि एतेनाशुभाचरणेन.
यह बालक बड़ी हिम्मत करता है जो अकेला बियाबान में रात को फिरता है.	अतीवोत्सहतेऽयं बालो यदेकाकी निर्जने नक्तं परिभ्रमति.
जैसे बुराई जल्दीही आदमियों में फैल जाती है तैसे भलाई नहीं.	यथाऽपयशस्तूर्णमेव जनेषु प्रसरति न तथा यशः.
आज बड़ी धूप है इसी से मेरे देह में पसीने आते हैं.	अद्याधिको घर्मोऽत एव मम गात्राणि प्रस्विद्यन्ति.
बहुत से मुसलमान आर्यों से नफ़रत करते हैं.	बहवो यवना आर्य्येभ्यो द्विषन्ति.

चाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
अर्जुन ने कहा कि गाण्डीव हाथ से निकला जाता है और खाल जली जाती है.	अर्जुनेनोक्तं गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक् चैव परिदह्यते.
यह कौन आदमी है जो बाहर दर्वाजे पर है है कोई फकीर। नहीं यह फकीर नहीं है. फकीर का लक्षण तो सुनो.	कोऽयं जनो योबहिर्द्वारि वर्तते ? अस्ति कश्चित् फकीरः। नो नायं फकीरः. फकीरलक्षणं तु शृणु.
शिवजी के चरणों में दिया है चित्त जिसने और कीडे आदि में ब्रह्मबुद्धि देखनेवाला, रक्षा के लिये और भिक्षा केलिये अहे महे हैं वस्त्र जिसके वह कवियों ने फकीर कहा है.	फणीशभूयांघ्रिनिविष्टचेताः कीटादिषु ब्रह्ममतिप्रकाशी। रक्षार्थमिक्षार्थं विघर्णवासा निगद्यतेऽसौ कविभिः फकीरः.
अनेक प्रकार के, व अनोखे वाक्य और ४८ मशहूर सांसारिक कहावतें.	विविधवक्त्यानि, विशिष्टस्वरूपाणि वाक्यानि, अष्टचत्वारिंशत्प्रसिद्धलौकिकन्यायानि च.
आपका दौलतखाना कहां है और इस समुवारिक क्या है और किसलिये आप यहां आये हैं?	कुत्रस्या भवन्तः किंमभिधानं किमर्थमिहावाताश्च.
मैं बंगाल देश में रहनेवाला कृष्णदत्त नाम अतिथी हूँ रात को ठहरने की जगह ढूँढता हुआ आपको कुछ परिश्रम देने के लिये यहां आया हूं.	वङ्गदेशवास्तव्योऽतिथिः कृष्णदत्तनामाहं रात्रिवासगृहमन्विष्यमाणो भवते परिश्रमं दातुमत्रागतः.
बहुत अच्छा इस आसन पर तशरीफ़ रखिये और अपने घर से ज्यादह सुखपूर्वक रहिये.	घरम्, इदमासनमलङ्करोतु भवान् (आर्य्यतामम्बा) स्वगृहनिर्विशेषं यथा सुखमुष्यताम्.
मुझे अपने बापकी क़सम है कि मैं कभी तुम्हारे खिलाफ़ न करूंगा.	कदापि तव विरुद्धं नाचरिष्यामीत्ययं शपथस्तातपादानाम्.

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
हाथ धोने केलिये मिट्टी तो लाओ.	हस्तप्रक्षालनार्थं मृत्तिकां त्वानय.
ऊसर धरती की मिट्टी नाज के लिये अच्छी नहीं होती.	ऊषरभूमेर्मृत्स्नाशादिभ्यो न धरा.
लेकिन चमड़े की मिट्टी लिपाई के लिये पक्की होती है.	परञ्च चामत्वरस्य मृत्तिका लेपार्थपक्का.
यह रास्ता तो बड़ा रेतीला है तो और रास्ते से जायँगे.	शर्करासनाथोऽयम्मार्गस्तदन्येन पथा गमिष्यावः.
पटना नामक शहर यहां से दो कोश है.	पाटलिपुत्रं नाम नगरमतः क्रोशयुगं वर्तते.
इस गाँव में सिर्फ़ पांच दुकान हैं बाज़ार नहीं.	अस्मिन्ग्रामे केवलं पञ्चापणा विद्यन्ते नच पण्यवीथिका.
इस गली में एक घरकी दीवार गिरने वाली है इसलिये होशियारी से जाना स्त्री लोगों के और मुसल्मानों के राज्य में शहरों के परकोटे थे.	विपतिपत्तेका गृहभित्तिरस्यां प्रतोल्यामतस्सावधानतया गच्छ स्त्रियराज्ये यवनराज्ये च नगराणाम्प्राकारा आसन्.
यह किसका झोंपड़ा है ? ब्रह्मानन्द नाम सन्यासी का.	कस्य एष कुटीरः ? ब्रह्मानन्दनाम्नः सन्यासिनः.
यह पत्थर की प्याऊ तुम्हारी घुड़साल के नज़दीक किसकी बनवाई हुई है. गोविन्द की.	पाषाणप्रपेयं तव मन्दुरासमीपे केन निर्मापिता वर्तते । गोविन्देन.
पत्थर यहां कहां से आते हैं ?	प्रस्तरा अत्र कुत आगच्छन्ति ?
पहाड़ों से.	महीध्रेभ्यः.
पहाड़ के पास की भूमि उपत्यका और नीचे की अधित्यका होती है.	उपत्यकाद्रेरासन्ना, अधोभूमिरधित्यका.
पहाड़ों में मझुई जगह कन्दरा और गैर मझुई गुफ़ा कहलाती है.	पर्वतेषु कृत्रिमं स्थानं कन्दराऽकृत्रिमं गुहेति कथ्यते.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
बेलों से ढंका हुआ स्थान कुञ्ज पेड़ों की पंक्ति आराम [बगीचा] कहलाता है.	लतादिपिहितं स्थानं कुञ्जः महीरुहावलिः आराम इति भण्यते.
इस घर की छत पर बड़ा कूड़ा है इसलिये यहां नसेनी लाकर इसको साफ करो.	अस्य गृहस्य पटले महानवकरः अतोऽत्राधिरोहिणीमानीय एनं शोधय.
इस पेड़ की खोड़र में बहुत साँप हैं.	अस्य द्रुमस्य निष्कुहे बहवस्सर्पास्सन्ति.
बन में तो ईंधन थोड़े से मोल से मिल जाता है.	अरण्ये त्विन्धनमल्पीयसा मूल्येन लभ्यते.
इस पेड़ की कलियाँ, गुच्छे और फूल कैसे अच्छे लगते हैं.	अस्य वृक्षस्य कलिकाः स्तवकाः पुष्पाणि च कथं शोभन्ते.
जो तुम मेरा वचन ठीक मानते हो तो यह छः महीने के भीतर राजा होगा.	यदि मद्वचः श्रद्धेयं मन्यसे तर्ह्ययं षण्मासाभ्यन्तरे राजा भविष्यति.
फंदा बाँधकर राम त्रिलोकी केभी मुकाबला करने को समर्थ हैं.	बद्धपरिकरो रामस्त्रैलोक्यमपि प्रत्यवस्थातुं क्षमः.
श्री कृष्ण महाराज के दर्शन के अनन्तर उसको कुछ भी अभीप्सित न था.	श्रीकृष्णदर्शनानन्तरं न किमपि तस्य स्पृहणीयमासीत्.
बहुत से मनुष्य बहुत जगहों पर शारदापीठाधीश्वर शंकर स्वामी ने लाजवाब करदिये परन्तु वे ऐसे निर्लज्ज हैं कि हारे हुए भी नहीं शरमाते.	निरुत्तरीकृता बहवो जना बहुषु स्थलेषु शारदापीठाधीश्वरेण शङ्करस्वामिना परञ्चैतादृशा निर्लज्जास्ते यत् पराजिता अपि न लज्जन्ते.
मैंने एक हाथी बनके बीच में देखा.	दृष्टो मयैको गजः कान्तारमध्यवर्ती.
ईश्वर इच्छा बलवान होती है.	ईश्वरेच्छा बलीयसी वा प्रभवति भगवान् विधिः.

चाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
दोस्त । तुम्हारे मुकद्दमे में कितने गवाह हैं और कौन तारीख है? किस हाकिम की कचहरी में तुम्हारा मुकद्दमा है? मेरी रायमें तो मुद्दई मुद्दाइलह मिलकर राजीनामा करलो नहीं तो दोनों का बड़ा खर्च पड़ेगा.	मित्र तवाभियोगे कति साक्षिणः कतमाङ्गलतिथिः कस्य न्यायाधीशस्य न्यायालये तवाभियोगोऽस्तीति मां पूर्वमेव सूचय मम सम्मतीत्यर्थिप्रत्यर्थिनौ मिलित्वा सन्धिं कुरुतम् नोचेद्द्वयोरपि महान्व्ययो भविष्यति
चाहे जिस पुरुष के लिये यह अन्न देदो.	यस्मै कस्मैचित्पुरुषायेदमन्नं देहि.
उस वचन के समाप्त होनेपर बलराम जी बोले.	वचस्यावसिते तस्मिन् बलरामोऽब्रवीदिदम्.
क्रोधमें भरकर तू क्यों बुरे मार्ग में पैर बढ़ाता है.	क्रोधेद्धो भूत्वा त्वं किमर्थमपथे पदं पंयसि.
तैंने उस मुसीबत ज़दह को समझा दिया यह बड़ा उपकार किया.	प्रत्यासन्नापदं तं त्वं प्रावोधय इति महानुपकारः कृतः.
कुछ देर इन्तजार करिये.	कालः कश्चिदत्रप्रतीक्ष्यताम्.
तुम्हारा दुश्मन दुश्मनी निकालना चाहता है उससे होशियार रहो.	वैरनिर्यातनोत्सुकस्ते शत्रुस्तस्मात्समवहितो भव.
उपकार प्रत्युपकार से पलटा देना चाहिये.	उपकारः प्रत्युपकारेण निर्यातयितव्यः.
ईश्वर की व्याहृतियाँ कभी लोक में विपरीत अर्थ नहीं बनातीं.	ईश्वरव्याहृतयः कदाचिल्लोके विपरीतमर्थं न पुष्णन्ति.
उनमें से एक पैरों से कुचल कर मर गया.	तेषामेकतमः पादाक्रान्तो ऽम्रियत.
पकड़ने वालों से चोर, माल और खोज से पकड़ा गया है.	ग्राहकैर्गृहीते चौरो लो*प्त्रेणार्थपदेनवा.

* लोप्त्रं स्तेयधनम्.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तू तो सब तरह से घरवाली के कहने में है इसलिये यन्त्र की तरह चलायाजाता है.	त्वन्तु सर्वथा गेहिन्याज्ञानुवर्ती तेन यन्त्रवच्चाल्यसे.
दाँत निकलने और डाढ़ी मूँछ निकलने पर बालक अच्छीतरह रक्षा करनी चाहिये.	दन्तोद्भेदे श्मश्रूद्गमे च बालस्सुतराम् रक्षणीयः.
वह जल्दीही आरोग्य होगया इससे मैं खुश हुआ.	सोऽचिरात्सुस्थोऽभवद्येनाहं प्रमुदितोऽभवम्.
उठो, यह वक्त न्हाने और खाने का है.	उत्तिष्ठत, समयोऽयं स्नानभोजनं सेवितुम्.
जैसे २ जवानी ढलती गई तैसे २ ही सन्तान न होने का दुःख बढ़ता गया.	यथा यथा यौवनमतिचक्राम तथा तथा ऽनपत्यताजन्मा अधंतास्य सन्तापः.
गरीब ने रक्षाकरने वाले से कहाकि आपसे मैं अनुग्रहीत हुआ.	भवतानुगृहीतोस्मीति राक्षितारमुवाच दीनः.
जिनके चित्त आपत्तियों में भी नहीं बिगड़ते वेही धीर हैं.	आपत्तिष्वपि येषां चेतांसि न विक्रियन्ते त एव धीराः.
मारने में यह भी मददगार था इसीसे सजावार है.	विशेषतेऽयमेव सहायो बभूवात एव दण्ड्यः.
बहुत से हमारे वैभव में सुखी होते हैं.	बह्वोऽस्मदभ्युदये सुखभाजो भवन्ति [मोदन्ते प्रीयन्ते]
वह बड़ी धार्मिका है उस दुःख पाती हुई का स्वर्गवास निश्चयही है.	साचि धार्मिका सीदंत्याः तस्याः स्वर्गवासोऽवस्थित एव.
बहुत काल सोचते हुए मेरे यह उपाय मन में पैदा हुआ.	चिराच्छोचतो मेऽयमुपायो मनसि प्रादुर्बभूव.
दुर्वृत्ति करेतो हुए और फल भोगे सज्जन.	खलः करोति दुर्वृत्तिं नूनं फलति साधुषु.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन-अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
मुझ भूखे की तृप्ति के लिये यह अन्न बहुत है.	मम क्षुधितस्य तृप्त्यै इदमन्नमलं [पर्याप्तं]
मैं अब क्या करूं मेरी सब कोशिश फिजूल हुई.	किं करोम्यद्य मम सर्वे प्रयत्ना अफला [अनिष्पन्ना] अभवन्.
मृग सिंह की गर्जना सुनतेही बेहोश हो जाते हैं.	मृगाः सिंहनादश्रवणेनैव मूर्च्छन्ति.
यह अजीब मामला सुन मेरे दिल में अचम्भा होगया.	एतदद्भुतं वृत्तमाकर्ण्य विस्मयो मे हृदयमस्पृशत्.
महल की शिखर की शोभा को देख मैं अचम्भे में आगया.	प्रासादशिखरशोभां दृष्ट्वाऽहं विस्मयमापन्नः.
वामनजी ने कहा कि जितनी धरती मैं तीन पैंड से नापलूँ उतनी मुझेदो.	यावतीं भूमिं त्रिपदेनाहं व्यामुयाम् [आक्रमेयं] तावतीं मे देहीत्युवाच वामनः.
थक पर की हुई थोड़ीसी भी कोशिश पीछे की जानेवाली बड़ी कोशिश की देर देती.	स्वल्पोऽपि कालातीतो यत्नो महान्तमुत्तरकरणीयं यत्नं व्यर्थयति.
यह युक्ति भी बहुत देर न ठहरेगी.	इयमपि युक्तिर्न चिरं स्थास्यति (अचिरात्खंडयिष्यते).
यह सबके ऊपर है इसी लिये उसका वचन सयुक्तिक और सोपपत्तिक भान होता है.	स सर्वेषां मूर्ध्नि तिष्ठति अत एव तस्य वचः सयुक्तिकं सोपपत्तिकञ्च भाति.
यह बड़ा बुद्धिमान् है मेरे भावार्थ को ही लेकर उसने मेरी आज्ञा करदी.	महानयं बुद्धिमान् मद्भावार्थमेव गृहीत्वा ममाज्ञामनुष्ठितवान्.
इस दुःखको आप से कहना मुझे बहुत दुःख देता है.	अस्य दुःखस्य भवते निवेदनं मे महद्दुःखमावहति.
यह कहना सहल है करना सहल नहीं.	वक्तुं सुकरमिदं न तु कर्तुम्.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
यह पराभव (हार) मेरे दिल में लगे हुए चाणकी नाईं हुई.	पराभवोऽयं मम हृदि प्रत्युप्तं शल्यमिवाभवत्.
मुझसे भी इस मामले में चुप चाप नहीं रहा जाता.	मयाप्यस्मिन्विषये न शयानेन स्थीयते.
रामसिंह को तप तपते हुए कितने वर्ष हुए.	रामसिंहस्य कतिपये वत्सरास्तपस्तपतोऽभवन्.
गोविन्द ने अपने पुत्रको आँखों के इशारे से बलाया.	गोविन्दः स्वपुत्रं नेत्रसंज्ञयाऽऽह्वयत्.
वह विषय तो दूर रहे.	आस्तां [तिष्ठतु] तावद्दूरे स विषयः.
विनाश धर्म वाले विषयों में मन मत दो.	विनाशधर्मेषु विषयेषु मनो मा संनिवेशय.
आप चाहे जैसे इस दास को काम में लगाइये.	भवद्भिर्यथेच्छं नियुज्यतामयं दासः.
देवदत्त ने अपने मालिक का नमक हलाल किया जो अपने मालिक के दुश्मनों से लड़कर मारागया.	सफलीकृतभर्तृपिण्डो देवदत्तो यत् स्वस्वामिशत्रुभिस्सह युद्धेनिधनं गतः.
वह औरत बाँए हाथ पर मुँह रक्खे हुए बैठी है.	सा स्त्री वामहस्तोपहितवदना तिष्ठति.
सज्जन लोग दूसरों के दोषों को भी गुण पक्ष में लगाते हैं.	सज्जनाः परदोषमपि गुणपक्षे समापयन्ति.
मित्र मेरी अर्ज तुमको टालना न चाहिये.	मित्र नार्हसि त्वं मे प्रणयं विहन्तुम्.
यह उसके गुण और दोषों को छिपाता है.	तस्यायं गुणान्दोषांश्च प्रमार्ष्टि (लोपयति).
हाथों से गिराई हुई गेंद भी ऊपर को उछलतीही है.	पातितोऽपि कराघातेरुत्पतत्येव कन्दुकः.
मरना भला अपमान नहीं.	वरं मृत्युर्न पुनरपमानः.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
बाँई आँख फड़कने से मेरा मन कुछ अनिष्ट की शङ्का करता है.	वामाक्षिस्फुरणात्किमप्यनिष्टमाशङ्कते मे मनः.
यह चोर लानत देकर शहर से निकाला जाता है.	एष चौरः सनिकारं नगरान्निर्वास्यते.
उपाय सफल हो यह अनुमान तो किया जाता है.	उपायस्सफलो भवेदित्यनुमीयते तु.
श्रीमान् विद्वद्वर्य्य बालशास्त्री सब शास्त्रों में परम प्रतिष्ठा को प्राप्त हुए.	श्रीमद्विद्वद्वर्य्यो बालशास्त्रिणः सर्वेषु शास्त्रेषु परां प्रतिष्ठां गताः.
तेरे दुःख का क्या कारण है यह मुझ से कह.	किं निमित्तं ते सन्ताप इति मां कथय.
क्यों कीच में ईंट डाली और छींटे खाई कीच को धोने से न छूना ही अच्छा है.	प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरमस्पर्शनं वरम्.
यहां आप तशरीफ़ रखिये आप की क्या जीविका है.	अत्रोपविशत्वार्य्यः कां वृत्तिमुपजीवति भवान्.
इस काम के करने में उसने पुण्य को बीच रक्खा.	एतत्कार्यकरणे तेन सुकृतमन्तरे धृतम्.
मेरी भेटोंको उसने बड़े प्रसन्न मन से स्वीकार किया.	ममोपायनानि स सुप्रीतमनसा (सुप्रसन्नं) स्वीचकार.
यह धूर्त अपने को पण्डित मानता है.	पण्डितम्मन्योऽसौ धूर्तः.
यह क्या, अक्सर सभही समाजी ऐसे ही होते हैं.	स किम्, प्रायोऽखिल एव सामाजिकाः तादृशाः भवन्ति.
बाँझ, बच्चे होने की बड़ी भारी तक्लीफ को क्या जाने.	नहि वन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम्.
यह दुःख समाचार तो हो लिया अब अपने भेटों की राजी खुशी कहो.	आस्तां तावदयं दुःखवृत्तान्तः, अधुना स्वशिशूनां कुशलं कथय.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन–अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
वह बिना तग़मा लिये क्यों फ़ौज से निकलता है.	किमर्थमगृहीतमुद्रः कटकाच्चिष्क्रामति.
अपने आदमी के आगे दुःख खुले हुए दर्वाजे की तरह हो जाता है.	स्वजनस्य हि दुःखमग्रतो विवृतद्वार-मिवोपजायते.
आपकी जो मर्ज़ी हो सो कीजिये.	स्वरुच्या वर्ततां भवान्.
इस जगह से भागजाओ नहीं तो तू मार दिया जायगा.	अपसरास्मात्स्थानान्नोचेरवं जीवितेन-वियोक्ष्यसे.
पहिले उसकी अक्ल में यह बात नहीं आई थी.	इति तस्य बुद्धौ पूर्वं न सञ्जातम्.
दुष्ट सरसों सरीखे दूसरों के ऐबों को देखता है और अपने बेल सरीखे ऐबों को देखता हुआ भी नहीं देखता है.	खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि प-श्यति, आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्य-न्नपि न पश्यति.
अच्छा मौका तूने खोदिया.	शोभनावसरस्त्वयाक्षिप्तः (त्यक्तः).
राजा लोग तो सेवापर दूर रहो खु-शामदी प्रजाभी तो पीछेही लगी चली जाती है.	तिष्ठन्तु तावत्सेवापरा राजानः, प्रजा अपि तु चाटुपरा पृष्ठतो लगति.
तुम्हारी कृपा से मैं कृतार्थ होऊं.	कृतार्थो भूयासं तवानुकम्पया.
उसने जल्दीही सब का सार लेलिया.	अचिरादेव तेन सर्वस्य सारो गृहीतः.
संसार में बड़प्पन या नीचपन मनुष्य को अपनेही कर्तव्य प्राप्त कराते हैं.	लोके गुरुत्वं विपरीतताम्वा स्वचेष्टिता-न्येव नरं नयन्ति.
ऋषि लोग और वनवासी वन के फलों से अपना शरीर वृत्ति करते हैं.	ऋषयो वनवासिनश्च वन्यफलैः शरी-रवृत्तिं निर्वर्तयन्ति.
तू बहुतही झूठ बोलता है सब तरह से तेराही कसूर है.	त्वं नितान्तमनृतं वदसि सर्वथा तवै-वायं दोषः.
विषय के सुखों में लगे हुए राजा ने अपना जीवन बिताया.	विषयसुखनिरतो राजा जीवितमत्य-वाहयत्.

वाक्य क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
मूर्खों के लिये उपदेश करना गुस्से का कारण होता है शान्ति के लिये नहीं.	उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये.
देवदत्त मारेज्वर के उठ नहीं सका.	देवदत्तो ज्वरेणोत्थातुमक्षमः.
चित्रकूट को जानेवाले रास्ते में मैंने अपना मित्र देखा.	चित्रकूटयायिनि वर्त्मनि स्वमित्रमद्दमपश्यम्.
अपने घर की तरह यहां रहिये.	स्वगृहनिर्विशेषमत्र वस.
मेरे आगे उनकी क्या असल है.	कियती (का) मात्रा तेषां मत्पुरतः.
भाग्य अपने आप नहीं देता पुरुषार्थ की अपेक्षा करता है.	न स्वयं दैवमादत्ते पुरुषार्थमपेक्षते.
वह दिलोजान से उस काम में लगा हुआ है.	स सर्वात्मना तस्मिन्कर्मणि व्यापृतः.
उसने गंगा में बहुत पुत्र पैदा किया.	स गङ्गायां बहून्पुत्रानुदपादयत्.
अनुकूल अवसर पर इष्टसिद्धि करो.	अनुकूलेऽवसरे इष्टसिद्धिं कुरु.
यह ही मेरा बड़ा भाग्य है कि मेरा पुत्र इस छकड़े से बच गया.	इदमेव तावन्मम परमभाग्यं यन्मत्पुत्रोऽस्माच्छकटान्मुक्तः.
जो धन जाता जानिये आधा दीजे बाँट.	सर्वनाशे समुत्पन्नेऽर्धं त्यजति पण्डितः.
उस की तो मेरे दर्शन सेही आँखों से आसुओं की धार बहने लगी.	तस्यास्तु मद्दर्शनादेव आयद्धारमश्रु प्रावर्तत.
इस हालत में मैं तुझ को देख कर दुखी हूँ.	एतदवस्थं त्वां वीक्ष्य दुःखितोऽस्मि.
वह किताब तो मेरे पास है.	तत्पुस्तकन्तु मत्सकाशे वर्तते.
पीछे आकर वह इस हाल को सुनाता हुआ.	पश्चादेत्य स एतद्वृत्तं श्रावयामास.
उसको मैंने अपनी युक्तियों से निस्सन्देह कर दिया.	तं निर्मुक्तसंदेहमकरवम् स्वयुक्तिभिः.
इस किताब का मोल सवा रुपया है.	सपादरूपकं मूल्यमस्य पुस्तकस्य.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
राम के वर्ष वनमें रहे । चौदह वर्ष.	कियन्ति वर्षाणि वनेऽवसद्रामः । चतुर्दशसमाः.
मैं तुम्हारे लिये दुःखी हूं तू अपने आचरण को क्यों नहीं बदलते.	अहं तव कृते दुःखाकुलोस्मि त्वं स्ववृत्तं कथं न परिवर्तयसि.
मैं तुम्हारेही पक्ष को पुष्ट करता हूं.	अहं त्वत्पक्षं समर्थये.
ऐसे कष्टों को भी कुछ न समझ कर हरिश्चन्द्र सत्यही में रहा.	एवंविधान्यपि कृच्छ्रान्यविगणय्य हरिश्चन्द्रः सत्य एव स्थितः.
इस काम को सिद्ध करने को वह समर्थ है.	तत्कार्यं साधयितुं सोऽलम्.
बहादुरी में कोई भी मेरे समान नहीं है.	न कोऽपि शौर्येण मम समानः.
आप मेरी प्रार्थना मंजूर कीजिये.	मम प्रार्थनामनुमन्तुं प्रसीदतु भवान्.
औरों के अभ्युदय से हमेशा खुश हो न कि जलो.	अन्येषामभ्युदयेन सर्वदा मोदस्व न तु स्पर्धस्व.
तुम्हारे दर्शन के लिये मेरा दिल चाहता है.	उत्ताम्यति मे हृदयं तव दर्शनाय.
मनुष्यों में पक्षियों से ज्ञानही विशेष है.	नरेषु तिर्यग्भ्यः प्रबोध एव विशेषः.
बहुत से धन से यह दोष दूर हो सक्ता है.	भूरिद्रव्येणायं दोषः प्रमार्ष्टुं शक्यः.
घर के जलने पर कूँआ खोदना यह कैसा उद्यम.	मोहीते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः.
यह अर्थ विचार के योग्य है.	अयमर्थोऽवेक्षामर्हति.
मेरे पिता अब घड़ी हो रहे हैं.	मम पिता जीवितसंशये वर्तते.
राम ज्वर के दूर होने से नीरोग हो गया.	रामो ज्वरोपशमनान्नीरोगः (प्रकृतिस्थः) सञ्जातः.
इसकी सब कोशिश कामयाब हुई.	सर्वेऽस्य प्रयत्नाः सफलतां ययुः (फलिताः).

वाक्य क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
हज़ार रुपये में यह घर मैंने ख़रीदा है.	सहस्ररूपकेणेदं गृहं मया क्रीतम्.
बहुत से धन से विवाह की विधि की.	बहुधनव्ययेन निष्पादितो विवाहविधिः.
इसका मुख सीता के मुख की बराबरी करता है.	अस्य मुखं सीताया मुखेन सम्यद्यति.
अपनाही भला मत चाहो मनुष्यों का हित भी तो तुमको अपने मन में धारण करना चाहिये.	स्वहितपरायणो माभूः जनाहितमपि तावत्त्वया मनसि धार्यं-(अवेक्षणीयं) मेव.
यह पद इस तरह नहीं बनता है.	इदं पदमेवं न सम्यद्यति.
ज्योतिषी जन्मपत्री में शुभ, अशुभ विचारता है.	ज्योतिर्वित्जन्मपत्रिकायां शुभाशुभं पर्य्यालोचयति.
जज साहब ने हुक्म दिया कि यह चोर शूली पर चढ़ाना चाहिये.	शूलमारोप्यतामसौ चौर इतिदण्डः समादिष्टो न्यायकारिणा.
च्यवनजी के लिये मेरा नमस्कार कहना.	च्यवनाय मदीयो नमस्कारो वाच्यः मां प्रणिपत्य.
कृष्णदत्त ने भाई के अविनय आचरण को पिता से निवेदन किया.	कृष्णदत्तो भ्रातुरविनयाचरणं पित्रे न्यवेदयत्.
रामदत्त जबर्दस्ती मुझ नचाहते हुए को भी पूछने के काम में लगराता है.	बलादनिच्छन्तमपि मां प्रष्टकर्मणि नियोजयति रामदत्तः.
इसी युक्ति से तूला जबाब किया.	अनया युक्त्यैव निगृहीत (निरुत्तरीकृतः) स्त्वम्.
जो करना है वह विचार कर करो.	यत्कर्तव्यं तद्विमृश्य (समीक्ष्य) कुरुत.
राज (राजा का नाम) के मार्ग को रोक कर खड़ा हो गया.	आवृत्य पन्थानमजस्य तस्थौ.
मैं इन तरीकों से पाबन्द नहीं हूं.	नाहमेभिर्विधिभिर्नियन्त्रितोस्मि.
तुमको युद्धुम्ब पालन जरूरही करना चाहिये.	त्वया युद्धुम्बपोषणमवश्यमेव कर्तव्यम्.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
कौए की तरह पेटभरू न होना चाहिये.	काकवदुदरम्भरिण मा भवितव्यम्.
वह फिर भी अपने काम में मन लगाता हुआ.	स पुनरपि स्वकार्ये मनो न्यदधात् (न्यवेशयत्).
भक्त गोविन्दराम कृष्ण की कथाओं से दिन को बिताता है.	गोविन्दरामो भक्तः कृष्णकथाभिर्दिवसमतिवाहयति.
जब परशुराम की बहुत इलाज करने पर भी रोग शान्ति न हुई तब जो होनहार है सो होउ ऐसा कह कर वह भाग्य पर छोड़ दिया.	यदा परशुरामस्य बहुचिकित्सानन्तरमपि रोगशान्तिर्नाभूत्तदा यद्भावि तद्भवतु इत्युक्त्वा स परित्यक्तः (दैवाधीनःकृतः).
सब गुणों को छोड़ कर स्वभाव सिर पर रहता है.	गुणान्कृत्स्नान्परित्यज्य स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते.
शिवकी सती की परित्याग रूप दारुण प्रतिज्ञा संसार में प्रसिद्ध हुई.	शिवस्य सतीपरित्यागरूपा दारुणा प्रतिज्ञा लोके प्रसिद्धाऽभूत् (लोके प्रकाशतां गता).
सम्पत्तियाँ आपत्तियों का स्थान हैं.	सम्पदः पदमापदाम्.
प्रमाण का भोजन ही सुख का हेतु है.	मितभोजनं हि सुखहेतुः.
तेजस्वियों की अवस्था नहीं देखी जाती है.	तेजस्विनां न वयः समीक्ष्यते.
वे अपने काम को भली प्रकार करते हुए.	ते स्वकर्म साधु निरवाहयन्.
यह दूसरा गंडस्थल पर फोडा हुआ, (फोड़ेमें खाज का होना)	अयमपरो गण्डस्योपरि विस्फोटः.
तुम्हारा वचन विलास कब शुबेके है.	तव वचनं न सन्देहास्पदम्.
भाई से बैर रखने वाले उसकी मदद करो.	भ्रातरि बद्धवैरस्य तस्य साहाय्यं कुरु.
वर्म्बई में मेरा रहना तन्दुरुस्तीदह नहीं है.	मुम्बापुरनिवासो ममारोग्याय न कल्पते.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
खयाली पुलाव मत पकाओ.	गगनपुष्पाणि मा चिनुहि, आकाशे मन्दिरं न निर्माणय.
बस इतनी ही खातिर मुझसे आपकी होसक्ती है, बस मेरी तो इतनी ही सामर्थ्य है.	एतावान्मे विभवो भवन्तं सेवितुम्.
एक रुपया घी का पांच पुस्तकों के और चौदह तनख्वाह के ऐसे मिलाकर मुझे २०) रुपये दो ।	एको रूपको घृतस्य पञ्च पुस्तकानां चतुर्दशवेतनस्येत्थं पिण्डीकृत्य मह्यं विंशतिं रूपकान्देहि.
नदी के वेग से लाई हुई मिट्टी पुलिन कहलाती है.	नदीरयसमाहृता मृत्तिका पुलिनमित्यभिधीयते.
तुम्हारा उद्योग मेरे उद्योग का सौवाँ हिस्सा भी नहीं है.	तव व्यवसायो ममोद्योगस्य शततमीमपि कलां न स्पृशति.
मेरे लिखे का जवाब भेजो.	मम लेखस्योत्तरं प्रहिणु (प्रेषय.)
यह मेरी इष्ट सिद्धि के लिये हो.	इदं म इष्टसिद्धये कल्पेत.
इस मामले में आप को मुन्सिफ़ बनाता हूं.	अत्र विषये भवन्तं प्रमाणीकरोमि.
रामदत्त अपने मुक़द्दमे में अपील चाहता है मगर कोई गवाह नहीं है.	रामदत्तः स्वविषये पुनर्विचारं प्रार्थयते परञ्च न कोऽपि साक्ष्युपतिष्ठति.
श्रोतागणों की प्रशंसा की वाणी कहने पर भाई के कन्धे पर हाथ रख कर कहने को उठ खड़ा हुआ.	उच्चैः प्रशंसावाचं उदीरयत्सु श्रोतृषु सभ्रातुरंसे हस्तंनिवेद्य स वक्तुमुदतिष्ठत्.
यह उद्योग ठीक नहीं कोई दूसरी तरकीब करनी चाहिये.	अनेनोद्योगेनालं कोऽपरो नियोगोऽनुष्ठीयताम्.
इन दोनों का झगड़ा ही मुझे अच्छा नहीं लगता और न तेरे वचन की ताईद करता हूं.	एतयोर्विवाद एव मे न रोचते, न चापि ते वचोऽभिनन्दामि.
आलसी बालक अक्सर दुराचारी होते हैं.	आलसा बालकाः प्रायो दुर्वृत्ता भवन्ति.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
उसका ऋण कैसे अदा करना चाहिये यह भी तो सोच.	तस्य ऋणं कथं प्रतिदेयमित्यपितु चिन्तय.
सब बाकि ऋण को निपटा दूंगा.	सर्वं मवशिष्टंदेयं परिशोधयिष्यामि.
जीवधारियों को विपत्ति मौजूद है.	विपदुत्पत्तिमतामुपस्थिता.
अब "लौकिकन्यायसंग्रह" से निकाले हुए लौकिकन्याय वर्णन किये जाते हैं	अथ लौकिकन्यायसङ्ग्रहाद्धृतानि लौकिकन्यायानि वर्ण्यन्ते.
पहिली-अन्धे और हाथी की कहावत.	१ प्रथम. अन्धगजन्यायः.
अस्खलित से नहीं जाना है शास्त्र का अभिप्राय जिन्होंने ऐसे वादी लोग अपनी २ अक्ल से कल्पना की हुई बातों को ही सिद्धान्त मानते हुए आपस में झगड़ा करते हैं वहां अन्ध गजन्याय प्रवृत्त होता है। जैसे किसने एक जन्मांध किसी सूझते हुए पुरुष से बोले कि हमको हाथी दिखाओ। सूझता आदमी उनको हाथीखाने में ले जाकर हरेक हाथी के अंग को हरेक से पकड़वा कर बोला कि यह हाथी है तब वे लोग उसी २ गज के अङ्ग को ही हाथी निश्चय कर अपनी २ जगह आकर सूप के बराबर गज होता है ऐसा कान का छूने वाला, मूसल सा हाथी होता है ऐसा सूंड का छूनेवाला, खम्भे सा हाथी होता है ऐसा जांघ पकड़ने वाला और चिटौरे सा हाथी	याथार्थ्येना विदितशास्त्राभिप्राया वादिनः, स्वस्वबुद्धिकल्पितानर्थानेव सिद्धान्त मन्यमानाः परस्परं विवदन्ते तत्रान्धगजन्यायः प्रवर्तते यथा केचिज्जन्मान्धाः कञ्चिदनन्धं पुरुषमूचुरस्मान्गजं प्रदर्शयेति। अनन्धस्तान् गजशालायां नीत्वा प्रत्येकं गजावयवं तेन तेन ग्राहयित्वोवाचायं गज इति। ततस्ते तं तं गजावयवमेव गजं निश्चित्य स्वस्थानमागत्य सूर्पसदृशो गज इति कर्णस्पर्शी, मुशलसदृशो गज इति शुण्डास्पर्शी, स्तम्भतुल्यो गज इति जङ्घाग्राही कर्णपराशिसमो गज इति पृष्ठस्पर्शी स्थूलरज्जुतुल्यो गज इति पुच्छग्राहीति मिथः कलह चक्रुः

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन-अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
होता है ऐसा पीठ छूने वाला, मोटी रस्सी सा हाथी होता है ऐसा पूंछ पकड़ने वाला, आपस में झगड़ा करते हुए.	
दूसरी-"कूप के मैंडक की कहावत"	द्वितीयः कूपमण्डूकन्यायः.
दूसरे के मजहब के न जानने वाले और उस में दोष निकालने वाले कूप के मैंडक के नाईं हंसी के पात्र होते हैं.	अन्यमतानभिज्ञास्तद्दूषणपराः कूपमण्डूकवदुपहासास्पदं भवन्ति.
जैसे कोई समुद्र का मैंडक किसी प्रकार उस के किनारे के कूप में घुस आया, वहां उसको अजनबी मान कर कूप के मैंडक ने पूछा कि आप कहां से आये हैं। 'समुद्र से' यह वचन सुनकर उसने पूछा कि वह कितना होता है उस (समुद्रमण्डूक) ने जवाब दिया कि 'बड़ा होता है' तो कूप के मैंडक ने अपनी जाँघ फैलाकर कहा कि क्या वह इतना है, 'नहीं शतगुना बड़ा' यह सुन कर दूसरी जांघ भी फैलाकर बोला कि तो इतना होगा फिर भी उसने मनाकिया तब तीसरा और चौथा जांघ फैलाकर और डेढ़ हाथ उछल कर पूछता हुआ क्या इतना होता है, नहीं उसने मनाकिया तो फिर बोला कि हद है कूप सा होगा	यथा कश्चित्समुद्रमण्डूकःकथञ्चित् तत्तीरस्थकूपे प्रविष्टस्तमतमपूर्वं मत्वा कूपमण्डूकोऽपृच्छत् कुत आगतो भवान् इति. समुद्रादिति वचनं श्रुत्वा कियान् स इति पृष्टवान् महानिति तेन प्रत्युक्तः तर्हि कूपमण्डूकः स्वजङ्घां प्रसार्यावाच किमेतावान्सः, नहि महत्तमः, तच्छ्रुत्वा द्वितीयामपि जङ्घां प्रसार्य तथैतावान् भविष्यतीत्युवाच पुनरपि तेन निराकृतः, ततस्तृतीयां तुरीयां जङ्घांच प्रसार्योत्प्लुत्य प्रादेशद्वितस्तिहस्तपरिमितं देशं किमेतावानिति पृच्छंस्तेन निरस्तः तर्हि कूपसदृशो भविष्यतीत्युवाच, न हि भ्रातः सहि सरितांपतिरनवगाह्यगाम्भीर्योऽलक्ष्यपारावारोऽतीवमहत्तमः इतितेन प्रत्युक्तः, तर्हि नास्त्येव स यः कूपा-

वार्त्ता क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
तो उसने फिर जवाब दिया "कि नहीं भाई यह नदियों का स्वामी गहराई को थाह न देनेवाला पार न दिखाई देनेवाला बहुत ही बड़ा है, तो यह कुछ नहीं है जो कूप से भी बड़ा है तूतो झूठही बोलता है इस प्रकार उसको झूठा बनाता हुआ इसे सुनकर समुद्र का मंडूक अपने मन में उसपर हंसा.	दपि महत्तमस्त्वं तु मिथ्यैव प्रलपसीति तं निराचक्रे तच्छ्रुत्वा समुद्रमण्डूकः स्वमनसि तं हसितवानिति.
३ "राजा और नाई के बेटे की कहावत.	३ तृतीयः नृपनापितपुत्रन्यायः.
अन्धा बांटे रेवड़ी फिर २ घरको कोही देय. घा	
कूकरी को कूकर प्यारा शूकरी को शूकर.	
पूर्व जन्म के संस्कार जन्य प्रेम के अधिक होने से अति तुच्छ भी देवता में हरिहर आदिकों को छोड़ कर सर्वोत्तमत्व बुद्धि होती है जैसे कोई नाई 'प्रातःकाल सब नगर में ढूढकर बहुतही सुन्दर बालक मेरे दर्शन के लिये लाओ' राजा से यह आज्ञा दिया गया। वह नाई सवेरे उठकर सब नगर में तलाश कर और बहुत२ बड़े २ सुन्दर बालकों को देखकर भी अपने बेटे के बराबर न मान कर उसी को राजा के घर ले जाकर	जन्मान्तरीयसंस्कारजन्यरागातिशयवशात् अतिक्षुद्रेऽपि देवे, हरिहरादीन्परित्यज्य सर्वोत्तमत्वधीर्भवति यथा कश्चिन्नापितः प्रातः सर्वं पुरमन्विष्यातीवरम्यो बालो मे दर्शनाय त्वयाग्रानेयः इति नृपेणाज्ञप्तः। स नापित प्रातरुत्थायाखिलं पुरमन्विष्य दृष्ट्वापि च तत्र तत्रातिरम्यान्बालान्स्वसुतसमानानमत्वा तमेव राजवेश्मनि नीत्वा राज्ञे निवेदयामास स्वामिन्नानीतोऽयं रम्यतमो बाल इति।

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
राजा से निवेदन करने लगा कि स्वामी सब से सुन्दर यह बालक ले आया.	
राजा उस लड़के को बुझे हुए अंगारे के समान, काणा, गञ्जा, लटा हुई बांह और जघा वाला और बड़े और लम्बे पेटवाला देख कर 'यह दुष्ट मेरी हसी करता हुआ' ऐसा मान कर गुस्सा होगया और कहने लगा कि अरे नाई यह क्या है । नाई राजा को क्रुद्ध देख कर हाथ जोड़ कर बोला । हे राजाधिराज ! मैं आपका चरण पकड़ता हूं यह हंसी नहीं है बल्कि मेरे दिल में यही निश्चय है कि ऐसा [सुन्दर बालक] त्रिलोकी में नहीं है आपकी नगरी की तो कथा बात है । राजा, माह रूपी ग्रह से पकड़े हुए चित्तवालों की यही हालत होती है यह मान कर कोप त्यागता हुआ यह दुनिया की कहावत है .	राजा च तमुपशान्तानलाङ्गारागं काणं खल्वाटं कुब्जाहस्वबाहुजङ्घं स्थूलल-म्बोदरं दृष्ट्वोपहासमयं खलः कृत-वान्मयीति मत्वा चुकोप, उवाच च रे जाल्म किमिदमिति । नापितश्च कुपितं नृपं ज्ञात्वा कृताञ्जलिर्भूत्वो-वाच राजेन्द्रमाले ! तव चरणमुपा-ददेऽयमुपहासः किन्तु मे मनसी-त्थमेव निश्चयो यन्नास्तीदृक्त्रिलो क्यां तव पुर्य्यास्तु का कथा । राजा च सत्यमीदृगेव रागग्रहगृहीतचि-त्तदशेति मत्वा कोपं त्यजतीति लौकिकी गाथा.
चौथी–'अंधे के हाथ बटेर' कहावत है. जैसे अचानक अंधे के हाथ आई हुई चिड़िया अंधे ने पकड़ली यह लोक में मशहूर होगई तैसेही भाग्य ने प्राप्त किया जो अभीष्ट है उसे अपने	४ चतुर्थः अन्धचटकन्यायः. यथाऽकस्मादन्धस्य हस्ते पतितश्चट-कोऽन्धेन गृहीत इति लोके प्रसिद्धि-मगात् तथा दैवाल्लब्धमभीष्टं स्वेष्ट-देवादिदत्तं मन्यन्तेऽबुधाः.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
इष्ट देवादि से दिया हुआ अज्ञानी मानते हैं.	
पाँचवाँ 'घुणाक्षरन्याय' है.	५ पञ्चमो घुणाक्षरन्यायः.
जैसे घुन [कीड़े] से खाये हुए काष्ठादि में अचानकही ककारादितुल्य छिद्रहो जाने पर घुनने अक्षर बनाये हैं ऐसा अज्ञानी लोगों से मान लिया जाता है.	यथा घुणेन भक्षिते काष्ठादावकस्मात् ककारादिसदृशाच्छिद्रेषु सत्सु घुणैर्नाक्षराणि निर्मितानीति कल्प्यतेऽबुधैः.
छठा-'मंडूक के तोलने की कहावत' साफ है.	षष्ठः मण्डूकतोलनन्यायः (स्पष्टः)
सातवां-'छेदवाले घड़े में जल की कहावत' साफ है.	सप्तमः सच्छिद्रघटाम्बुन्यायः (स्पष्टः)
जहां फिजूलही परिश्रम हो और कुछ मतलब न सिद्ध हो वहां ये दोनों न्याय प्रवृत्त होते हैं.	यत्र वृथैवपरिश्रमः स्यात् नकाचिदभीष्टसिद्धिस्तत्रोपरोक्तौ द्वौ न्यायौ प्रवर्तेते.
जैसे कुछ तोलने के लिये कुछ मँडकों को तराजू में रक्खा तो दूसरे उछल कर चले गये, तैसेही और २ जगह भी जानना.	यथा केपुन्चिद्दर्दुरेष्वभीष्टमानपूर्त्यर्थं तुलायामारोपितेष्वन्ये उत्प्लुत्य गच्छन्ति तथा प्रकृतेऽपि.
८ "बूढी कारी के वाक्य की कहावत,, जहां एकही बात या काम से सब मनोरथों की सिद्धि होजाय,वहां ऊपर कही हुई कहावत काम में आती है। जैसे किसी बूढ़ी अनब्याही स्त्री से इन्द्र ने कहा कि वर मांग। उसने वर	अष्टमः वृद्धकुमारीवाक्यन्यायः. यत्रैकयैव क्रिययाखिलाभीष्टसिद्धिः स्यात् तत्रोपरोक्तो न्यायः प्रयुज्यते। यथा काचिद्वृद्धकुमारी इन्द्रेणोक्ता वरं वृणीष्व सा च वरमवृणीत "पुत्रा मे बहुक्षीरघृतमोदनं कांस्य-

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

राजा से निवेदन करने लगा कि स्वामी सब से सुन्दर ये बालक ले आया.

राजा उस लड़के को बुझे हुए अंगारे के समान, काणा, गञ्जा, लटो हुई बांह और जंघा वाला और बड़े और लम्बे पेटवाला देख कर 'यह दुष्ट मेरी हसी करता हुआ' ऐसा मान कर गुस्सा होगया और कहने लगा कि अरे पाजी यह क्या है । नाई राजा को क्रुद्ध देख कर हाथ जोड़ कर बोला । हे राजाधिराज ! मैं आपका चरण पकड़ता हूं यह हंसी नहीं है बल्कि मेरे दिल में यही निश्चय है कि ऐसा [सुन्दर बालक] त्रिलोकी में नहीं है आपकी नगरी की तो क्या बात है । राजा, मोह रूपी ग्रह से पकड़े हुए चित्तवालों की यही हालत होती है यह मान कर कोप त्यागता हुआ यह दुनिया की कहावत है .

बांधी-'अंधे के हाथ बटेर' कहावत है. जैसे अचानक अंधे के हाथ आई हुई चिड़िया अंधे ने पकड़ली यह लोक में प्रसिद्ध होगई तैसेही भाग्य ने प्राप्त किया जो अभीष्ट है उसे अपने

संस्कृत ।

राजा च तमुपशान्तानलाङ्गारामं काणं खलाटं दृष्ट्वाहस्वबाहुजङ्घं स्थूललम्बोदरं दृष्ट्वोपहासमयं खलः कृतवान्मयीति मत्वा चुकोप, उवाच च रे जाल्म किमिदमिति। नापितश्च कुपितं नृपं ज्ञात्वा कृताञ्जलिर्भूत्वोवाच राजेन्द्रमौले ! तव चरणमुपालभे नायमुपहासः किन्तु मे मनसीत्थमेव निश्चयो यन्नाल्पीदृक्त्रिलोक्यां तव पुर्य्यास्तु का कथा। राजा च सत्यमीदृश्येव रागग्रहगृहीतचित्तदशेति मत्वा कोपं तत्याजेति लौकिकी गाथा.

४ चतुर्थः अन्धचटकन्यायः.

यथाऽकस्मादन्धस्य हस्ते पतितश्चटकोऽन्धेन गृहीत इति लोके प्रसिद्धिमगात् तथा दैवाल्लब्धमभीष्टं स्वेष्टदेवादिदत्तं मन्यन्तेऽबुधाः.

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
इष्ट देवादि से दिया हुआ अज्ञानी मानते हैं.	
पाँचवां 'घुणाक्षरन्याय' है.	५ पञ्चमो घुणाक्षरन्यायः.
जैसे घुन [कीड़े] से खाये हुए काष्ठादि में अचानकही ककारादितुल्य छिद्रहो जाने पर घुनने अक्षर बनाये हैं ऐसा अज्ञानी लोगों से मान लिया जाता है.	यथा घुणेन भक्षिते काष्ठादावकस्मात्ककारादिसदृशाच्छिद्रेषु सत्सु घुणेनाक्षराणि निर्मितानीति कल्प्यतेऽघुधैः.
छठा-'मेंडक के तोलने की कहावत' साफ है.	षष्ठः मण्डूकतोलनन्यायः (स्पष्टः)
सातवां-'छेदवाले घड़े में जल की कहावत' साफ है.	सप्तमः सच्छिद्रघटाम्बुन्यायः (स्पष्टः)
जहां फ़िजूलही परिश्रम हो और कुछ मतलब न सिद्ध हो वहां ये दोनों न्याय प्रवृत्त होते हैं.	यत्र वृथैवपरिश्रमः स्यात् नकाचिदभीष्टसिद्धिस्तत्रोपरोक्तौ द्वौ न्यायौ प्रवर्तेते.
जैसे कुछ तोलने के लिये कुछ मेंडकों को तराजू में रक्खा तो दूसरे उछल कर चले गये, तैसेही और २ जगह भी जानना.	यथा केषुचिद्दर्दुरेष्वभीष्टमानपूर्त्यर्थं तुलायामारोपितेष्वन्ये उत्प्लुत्य गच्छन्ति तथा प्रकृतेऽपि.
८ "बूढी कारी के वाक्य की कहावत,, जहां एकही बात या काम से सब मनोरथों की सिद्धि होजाय,वहां ऊपर कही हुई कहावत काम में आती है। जैसे किसी बूढ़ी अनब्याही स्त्री से इन्द्र ने कहा कि वर मांग।उसने वर	अष्टमः वृद्धकुमारीवाक्यन्यायः. यत्रैकयैव क्रिययाखिलाभीष्टसिद्धिः स्यात् तत्रोपरोक्तो न्यायः प्रयुज्यते। यथा काचिद्वृद्धकुमारी इन्द्रेणोक्ता वरं वृणीष्व सा च वरमवृणीत "पुत्रा मे बहुक्षीरघृतमोदनं कांस्य-

वाक्य क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
मांगाकि "मेरे पुत्र बहुतसा दूध घी भात कांसे के बर्तनों में खाया करें" इसने एकही वाक्य से पति, पुत्र, गौ, धन और धान्य सबही मांगलिये ऐसेही और जगह भी.	पाद्यां भुञ्जीरन्निति" अनया एकेनैव वाक्येन पतिः पुत्राः गावो धनं धान्यं सर्वमेव संगृहीतम्भवति इत्य प्रकृतेऽपि.
९ "कीड़े और घिरोरी की कहावत" जैसे कीड़ा घिरोरी से पकड़ा हुआ उसी को हरवक्त ध्यान करता हुआ उस कीड़ी शकल बन जाता है वैसेही हरिभक्त प्रेम से वा द्वेष से उस ईश्वर को ध्यान करते हुए उसी के रूप में लीन हुए और आगे होंगे.	नवमः कीटभृङ्गन्यायः यथा कीटो भृङ्गेण गृहीतस्तमेव प्रतिक्षणमभिध्यायन् तत्स्वरूपतामेति तथाहरिभक्ताः प्रेम्णा द्वेषेण वा तमीश्वरं ध्यायन्तस्तत्स्वरूपतां गता यास्यन्तिचेति.
१० "बेल और गञ्जे की कहावत". कमबख्त सब जगह ही दुःख पाते हैं यह जहां जाहिर किया जाता है वहां यह कहावत होती है भर्तृहरि राजा की नीचे लिखी कहन इस कहावत को स्पष्ट करती है.	दशमः बिल्वखल्वाटन्यायः. हतभाग्यास्सर्वत्रैव दुःखमनुभवन्तीति यत्र सूच्यते तत्रायं न्यायः प्रवर्तते भर्तृहरेरुक्तिरेनं न्यायं निम्नपद्येन स्पष्टीकरोति.
"सूर्य की किरणों से सिर में सन्तापित हुआ कोई गंजा छायाकी जगह चाहता हुआ भाग्यवश ताड़ के नीचे गया वहां भी शीघ्रही एक गिरे हुए बड़े फल से आवाज के साथ खोपड़ी पिल गई, अक्सर जहां मन्दभागी जाता है वहीं आपत्ति जाती है.	खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः सन्तापितो मस्तके, वाञ्छन्देशमनातपं विधिवशात्तालस्य मूलं गतः; तत्राप्याशुमहाफलेन पतता भग्नं सशब्दं शिरः, प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः.
११ नेत्र कंगन को आरसी क्या ?	एकादशः नहि करकङ्कणदर्शनायादर्शापेक्षा न्याय.

घाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
प्रत्यक्ष प्रमाण में यह कहावत इस्तेमाल होती है.	प्रत्यक्षप्रमाणे उपरोक्तो न्यायः प्रयुज्यते.
१२ मरे को मारना.	द्वादशः मृतमारणन्यायः.
१३ पानी को मथना.	त्रयोदशः जलमन्थनन्यायः.
१४ कौए के दान्त जाँचना.	चतुर्दशः काकदन्तपरीक्षान्यायः.
१५ गधे के रोम गिनना	पञ्चदशः गर्दभरोमगणनन्यायः.
१६ रस्सी और साँप की कहावत.	षोड़शः रज्जुसर्पन्यायः.
भ्रम से जहां उलटा दिखलाई देता है वहां यह कहावत होती है ! जैसे सांप में रस्सी का भ्रम और रस्सी में सांप का भ्रम । ऐसेही और जगह भी.	यत्र विपरीताभासो भवति तत्रायं न्यायः प्रवर्तते । यथा सर्पे रज्जुभ्रान्तिः रज्जौ सर्पभ्रान्तिस्तथा प्रकृतेऽपि.
१७ "कौए की आंख की कहावत"	सप्तदशः काकाक्षिन्यायः.
जैसे कौए की एकही आँख दोनों आँखों से सम्बन्ध रखती है तैसे और जगह भी जानना.	काकस्यैकमेव चक्षुरिन्द्रियं गोलकद्वये यथा सम्बध्यते तथा प्रकृतेऽपि.
१८ जो अन्त में रण्डा का विवाह हो तो पहिलेही क्यों नहो । जो करना वह पहिलेही करना चाहिये इस मतलब में यह कहावत होती है.	अष्टादशः अन्त्ये रण्डाविवाहश्चेदादावेव कुतो न स्यः यत्कर्तव्यं तत्पूर्वमेव करणीयमित्यभिप्राये ऽयं न्यायः प्रवर्तते.
१९ जितनी सम्पत्ति उतनी विपत्ति. या जितना सिर उतनी तश्वीफ़	एकोनविंशः यावच्छिरस्तावती शिरोवेदनान्यायः स्पष्टः.
२० "सुई और फड़ाह की कहावत"	विंशः सूचीकटाहन्यायः.
अनेक व्याख्येय वाक्य और पदों में पहिले पढा हुआ वाक्य या पद जिस-	अनेकेषु वाक्येषु पदेषु वा व्याख्येयेषु प्रथमपठितमपि वाक्यं पदम्वा बहु-

वाक्यों क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
मे बहुत देर लगे उस छोड़कर बीच- मे या अन्धेर मे पड़ा हुआ थोड़ी देर मे व्याख्या किये जानेवाला वाक्य या पदको पहिले कहाजाता है वहां यह कहावत है.	वक्तव्ये परित्यज्य मध्येऽन्ते वा पठिते केवलमवक्तव्यं पूर्वमभ्याख्याय- तेऽत्रायं न्यायः प्रयुज्यते.
जैसे लुहार के पास पहिले कोई कड़ाह बनवाने वाला आया पीछे सुई बन वाने वाला आ मौजूद हुआ, तहां जैसे लुहार पहिले बनाने योग्य क- ड़ाह को: बहुत देर में बनने के का- रण, छोड़ कर पीछे बनाने को आई हुई थोड़े काल में बनाने योग्य सुई को पहिले बनाता है तैसेही और २ बातों में समझना.	यथा लोहकारमति पूर्वं कथित् कटा- होत्पादनार्थी आगतः पश्चात्सूच्यु- त्पादनार्थी प्राप्तः, तत्र यथा लोह- कारः प्रथमं कर्तव्यत्वेन प्राप्तमपि कटाहं बहुकालसाध्यत्वात्परित्यज्य पश्चात्कर्तव्यतया प्राप्तामपि स्वल्प- कालसाध्यां सूचीं पूर्वमुत्पादयति तथा प्रकृतेऽपि.
इक्कीसवाँ ऊँट और लठिया की कहावत है अपने मत में दूसरे से आरोपण किये हुए दूषण उसीके मत में डाल दिये जांय वहां यह कहावत होती है. जैसे ऊंट से लेजाई हुई लठियों से ऊंटही स्वयं पिटता है। तैसे नैया- यिकों के उठाये हुए दोषों से उन- का मतही वेदान्तियों से काट दिया जाता है.	एकविंशः उष्ट्रलगुडन्यायः. स्वमते परेणोद्भाव्यमानानां दूषणानां तन्मत एव पातनेऽयं न्यायः प्रव- र्तते. यथोष्ट्रेणोह्यमानेनैव लगुडेन तत्प्रहारः क्रियते तथा तार्किकैरर्थापितदूषणै- स्तन्मतमेव वेदान्तिभिर्निराक्रियते.
बाईसवीं मुर्दे के उघटने की कहावत.	द्वाविंशः शवोद्वर्तनन्यायः.
तेईसवीं अन्धे को दर्पण की ,,	त्रयोविंशः अन्धदर्पणन्यायः.
चौबीसवीं कुत्ते की पूंछ को सीधा करना.	चतुर्विंशः श्वपुच्छोन्नामनन्यायः.

फहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
पच्चीसवाँ वन में रोने की कहावत.	पञ्चविंशः अरण्यरोदनन्यायः.
छब्बीसवीं बहिरे के कान में जप की कहावत.	षड्विंशः बधिरकर्णजापन्यायः.
यह पाचों न्याय कहावत फिजूलपन ज़ाहिर करता है.	एतन्न्यायपञ्चकं वैयर्थ्यद्योतकं.
सत्ताईसवीं मक्खी और जोंक की कहावत.	सप्तविंशः मक्षिकाजलौकान्यायः.
स्वभाव से सब आदमी अपनी इष्ट वस्तुही को लेता है जैसे मक्खी सब देह को छोड़ कर घाव परही बैठती है और स्त्री के दुखी पर लगाई हुई जोंक दूध छोड़ खून को पीती है तैसेही और २ जगह भी.	प्रकृत्याखिलो जनः स्वेष्टं वस्त्वेव गृह्णाति यथा मक्षिका सर्वं देहं परित्यज्य व्रणमेवावलम्बते, जलौकाऽपि स्तनाग्रे लग्ना क्षीरं त्यक्त्वा रुधिरं पिबति तथा प्रकृतेऽपि.
२८ हंस दूध की कहावत और सूप की कहावत है जहां सार मात्रही ग्रहण किया जाता है वहां यें दोनों कहावत होती है.	अष्टाविंशः हंसक्षीरन्यायः, शूर्पन्यायश्च यत्र सारमात्रमेव गृह्यते तत्रैतौ न्यायौ प्रवर्तेते.
जैसे हंस जल को छोड़ कर दूध को ही लेता है जैसे छाज भुस वगैरह कूड़े को छोड़ कर शुद्ध अन्न को ही रख लेता है तैसेही जो पुरुष इन दोनों न्यायों से सज्जनों के गुणों को ही ग्रहण करता है वही शिष्य भाव से अङ्गीकार करना चाहिये.	यथा हंसः जलं त्यक्त्वा क्षीरमेव गृह्णाति यथा शूर्पः सुशाद्यवकरं त्यक्त्वा शुद्धमन्नमवशेषयति तथा यः एताभ्यां न्यायाभ्यां सतां गुणानेव गृह्णाति स एव शिष्यत्वेन स्वीकार्यः.
२९ ब्याये पीछे जात पूछना, या ब्याह पीछे घर की जांच करने की कहावत है	एकोनत्रिंशः विवाहानन्तरं वरपरीक्षान्यायः.

कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
शिष्य और वैराग्य वगैरह की परीक्षा अच्छवल ही करना चाहिये क्योंकि विवाह के पीछे दुलह की जांच नहीं होती.	शिष्यवैराग्यादिपरीक्षा प्राक्कार्यैव कर्तव्या यतः नहि विवाहानन्तरं वरपरीक्षा भवतीति.
३० कल करे सो आज कर यह कहावत साफ़ है.	श्वः श्व कर्तव्यमद्य कुरु न्यायः स्पष्टः.
३१ जूओं के डर से कथरी छोड़ना साफ़ है.	एकोनत्रिंशः यूकाभिया कन्थात्यागन्यायः स्पष्टः.
३२ कैमुतिकन्यायः जब सदाशिव सम्पूर्ण पापयुक्त शरणागतों को भी बन्धन से छुड़ाते हैं तो शरणागत थोड़े पापियों या साधुओं को छुड़ा दें इस में तो कहनाही क्या है.	त्रयस्त्रिंशः कैमुतिकन्यायः. यदि सदाशिवोऽखिलपापयुतानपि शरणागतान् बन्धनात् मोचयति तदाल्पपापान्वितान्साधून्वा शरणागतान् मोचयतीतिकिमुवक्तव्यं.
शिष्य जरूर जांचलेना चाहिये क्योंकि कुत्ते की खाल में रक्खा हुआ गौ का दूध इस कहावत से असत्पात्र में अच्छा उपदेश भी अपवित्र हो जाता है. इसी प्रकार शिष्य से भी शास्त्र जांच करकेही परम शील सम्पन्न दयालु, शास्त्र वेत्ता, अद्वैत निष्ठ गुरु करना चाहिये.	अवश्यं परीक्ष्यश्च शिष्यः यतो नहि पयित्रं स्याद्दोहपात्रं श्वदृतौ धृतमिति न्यायेन असत्पात्रे सदुपदेशोऽप्यपवित्रतां याति. एवं शिष्येणापि यथाशास्त्रं परीक्ष्यैव परमशीलसम्पन्नोऽनुरागः श्रोत्रियोऽद्वैतनिष्ठो गुरुराश्रयणीयः.
३३ दृढ़ारि की कहावत. दृढ़ निश्चय वाले की ईश्वर की कृपा से कार्य सिद्धि होती है.	त्रयस्त्रिंशः दृढ़ारिन्यायः. दृढाध्यवसायिन ईशानुग्रहात् कार्यसिद्धि र्भवतीति.

कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
जैसे किसी टिट्टिभ नाम के पक्षी के किनारे पर रक्खे हुए अण्डों को समुद्र अपने लहरों से बहा लेगया। वह पक्षी इस को सुखा दूंगा इस प्रकार प्रवृत्त हुआ उसकी स्त्री आदि से बहुत प्रकार से रोका हुआ भी न माना वरन उनको भी सहायक होने के लिये बुलाया । उनको उड़ने और फिर नीचे आने से बहुधा क्लेश पाते हुए सब को देख कर दयालु नारद उस के पास गरुड़ को भेजते हुए, तब उनके पंखों की हवा से सूखता हुआ समुद्र डरा हुआ अण्डे लाकर पक्षी को देता हुआ.	यथा कस्यचिट्टिट्टिभाख्यस्य पक्षिणः तीरस्थान्यण्डानि समुद्र ऊर्मिणापजहार स च पक्षी एनं शोषयामीति प्रवृत्तः भार्यादिभिर्बहुधा वार्यमाणोपि नोपरराम । प्रत्युत तानपि सहकारिणो चक्रे। तांश्च यत्नेनोत्पतनाभ्यां बहुधा क्लिशतः सर्वानवलोक्य कृपालुर्नारदः तत्समीपे गरुडं प्रेषयामास ततस्तत्पक्षवातेन शुष्यन् समुद्रो भीतोऽण्डान्यानीय पक्षिणे ददौ.
३४ अहङ्कार (राज पुरुष) सेवन करने चाहिये और राजा भी सेवन करना चाहिये सिर्फ़ राजाही नहीं यह कहावत साफ़ है.	३४ चक्रं सेव्यं नृपः सेव्यो न सेव्यः केवलो नृपः न्यायः स्पष्टः.
तत्व जानने की इच्छा वाले पुरुष से केवल श्रवणही नहीं सेवन करना चाहिये बल्कि उसके अङ्ग रूप शम दमादि और मननादि सेवन करने चाहिये इसी प्रकार राजा को सेवन करने की इच्छा वाला पुरुष उसके मंत्री वग़ैरह की भी सेवा करे.	तत्वबुभुत्सुना केवलं श्रवणमेव न सेव्यं किन्तु तदङ्गभूताः शमादयो मननादयश्च सेव्याः इत्थमेव राजानं सिषेवयिषुस्तन्मन्त्र्यादीनपि सेवेत.

कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
शिष्य और वैराग्य वग़ैरह की परीक्षा अव्वल ही करना चाहिये क्योंकि विवाह के पीछे दुलह की जांच नहीं होती.	शिष्यवैराग्यादिपरीक्षा चादावेव कर्तव्या यतः नहि विवाहानन्तर वरपरीक्षा भवतीति.
३० कल करे सो आज कर यह कहावत साफ़ है.	श्वः कर्तव्यमद्य कुरु न्यायः स्पष्टः.
३१ जूआँ के डर से कथरी छोड़ना साफ़ है.	एकांवराः यूकाभिया कन्थात्यागन्यायः स्पष्टः.
३२ कैमुतिकन्यायः जब सदाशिव सम्पूर्ण पापयुक्त शरणागतों को भी बन्धन से छुड़ाते हैं तो शरणागत थोड़े पापियों या साधुओं को छुड़ा दें इस में तो कहनाही क्या है.	३२ कैमुतिकन्यायः. यदि सदाशिवोऽखिलपापयुतानपि शरणागतान् बन्धनान् मोचयति तदाल्पपापान्विनान्साधून्वा शरणागतान् मोचयतीतिकैमुत्यकल्प्यं.
शिष्य जरूर जांचलेना चाहिये क्योंकि कुत्ते की खाल में रक्खा हुआ गौ का दूध इस कहावत से असत्पात्र में अच्छा उपदेश भी अपवित्र हो-जाता है.	अवश्य परीक्ष्यश्च शिष्यः यतो नहि पवित्रं स्याद्दोक्षीरं श्वचर्मी धृतमिति न्यायेन असत्पात्रे सदुपदेशोऽप्यपवित्रतां याति.
इसी प्रकार शिष्य से भी शास्त्र जांच करकेही परम शील सम्पन्न दयालु, शास्त्र वेत्ता, अद्वैत निष्ठ गुरु करना चाहिये.	पत्रे शिष्येणापि यथाशास्त्रं परीक्ष्यैव परमशीलसम्पन्नोऽनृशंसः श्रोत्रियोऽद्वैतनिष्ठो गुरुराश्रयणीयः.
३३ टटीरी की कहावत. दृढ़ निश्चय वाले की ईश्वर की कृपा से कार्य सिद्धि होती है.	३३ त्रयस्त्रिंशः टिट्टिभन्यायः. दृढाध्यवसायिन ईशानुग्रहात् कार्यसिद्धि र्भवतीति.

कहावत इत्यादि का वर्णन–लोकोक्तिविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
जैसे किसी टिट्टिभ नाम के पक्षी के किनारे पर रक्खे हुए अण्डों को समुद्र अपने लहरों से बहा लेगया। वह पक्षी इस को सुखा दूंगा इस प्रकार प्रवृत्त हुआ उसकी स्त्री आदि से बहुत प्रकार से रोका हुआ भी न माना वरन उनको भी सहायक होने के लिये बुलाया। उनको उड़ने और फिर नीचे आने से बहुधा क्लेश पाते हुए सब को देख कर दयालु नारद उस के पास गरुड़ को भेजते हुए, तब उनके पंखों की हवा से सूखता हुआ समुद्र डरा हुआ अण्डे लाकर पक्षी को देता हुआ.	यथा कस्यचिट्टिट्टिभाख्यस्य पक्षिणः तीरस्थान्यण्डानि समुद्र उत्सेकेनापजहार स च पक्षी एनं शोषयामीति प्रवृत्तः भार्यादिभिर्बहुधा वार्यमाणोपि नोपरराम। प्रत्युत तानपि सहकारिणो चक्रे। तांश्च पतनोत्पतनाभ्यां बहुधा क्लिशतः सर्वानवलोक्य कृपालुर्नारदः तत्समीपे गरुडं प्रेषयामास ततस्तत्पक्षवातेन शुष्यन् समुद्रो भीतोऽण्डान्यानीय पक्षिणे ददौ.
३४ अहङ्कार (राज पुरुष) सेवन करने चाहिये और राजा भी सेवन करना चाहिये सिर्फ़ राजाही नहीं यह कहावत साफ़ है.	३४ चक्रं सेव्यं नृपः सेव्यो न सेव्यः केवलो नृपः न्यायः स्पष्टः.
तत्व जानने की इच्छा वाले पुरुष से केवल श्रवणही नहीं सेवन करना चाहिये बल्कि उसके अङ्ग रूप शम दमादि और मननादि सेवन करने चाहिये इसी प्रकार राजा को सेवन करने की इच्छा वाला पुरुष उसके मंत्री वग़ैरह की भी सेवा करे.	तत्वबुभुत्सुना केवलं श्रवणमेव न सेव्यं किन्तु तदङ्गभूताः शमादयो मननादयश्च सेव्याः इत्थमेव राजानं सिषेविषुस्तन्मन्त्र्यादीनपि सेवेत.

कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
३५ सांप छछून्दर की कहावत. जहां सब तरह से एकही चीज़ का नुक़्सान हो वहां यह दोनों कहावतें इस्तेमाल होती हैं. जैसे किसी साँपने मूस के धोखे छछून्दर पकड़ली अब उसको उगलना चाहता हुआ भी कोढ़ के डर से नहीं उगलता और अन्धे पनके डर से न निगलताही है इसी से बड़े संकट में पड़ा हुआ है (अर्थात् दोनों तरह से सांपही की हानि है) छुरी जब खर्बूजे पर गिरे तो भी खर्बूजे काही नुक़सान और जो खर्बूजा छुरी पर गिरे तो भी खर्बूजे काही नुक़सान होता है.	३५ पञ्चत्रिंशः सर्पछुछुन्दरीन्यायः. यत्र सर्वथा एकस्य वस्तुन एव हानिः सम्भाव्यते तत्र इमौ न्यायौ प्रवर्तेते । यथा केनचित्सर्पेण मूषकभ्रमाद्दीर्घं तुण्डिका कवलिता अधुना तद्गन्धा त्तामुज्जिगीर्षुरपि कुष्ठभयान्नोद्गिरति अन्धत्वभयान्न गिलत्येवानः महत्सङ्कटे पतितः क्षुरिका यदि चिर्भटिकामुपरिपतेत्तदापि चिर्भटिकाया एव हानिः यदि चिर्भटिका क्षुरिकामुपरि पतेत् तदापि चिर्भटिकाया एव हानिः.
३७ घड़े के भीतर दीपक की कहावत. जहां कहन मात्रही किया जाय अपनी अक्ल से कुछ कम ज्यादह नहीं वहां, अथवा तालिबइल्म को केवल किताब में ही बोध हो और जगह नहीं वहां यह न्याय प्रवृत्त होता है. जैसे घड़े में रक्खा हुआ दीपक घड़े के उदर मात्र को ही प्रकाशित करता है तैसेही और भी जानो.	३७ घटप्रदीपन्यायः. यत्र कथनमात्रमेव क्रियते नतु न्यूनाधिक्यं स्वबुद्ध्या, तत्राथवा चिद्यार्थिनः पुस्तकमात्र एव बोधः नत्वन्यत्र तत्रायं न्यायः प्रवर्तते. यथा घटनिष्ठो दीपो घटस्योदरमात्रमेव भासयति तथा मङ्कतेऽपि.

कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
३८ पोस्ती और मल्लाह की कहावत इस कहावत से तादात्म्य (अपने आपेका) अध्यास (भ्रम) जानना । जैसे कोई पोस्ती नाव पर चढ़ा वह वहां बहुत से आदमियों को देखकर किसी से मैं बदल न जाऊं इस अक़्ल से अपने पांव में रस्सी बांध कर पीनक में आगया मल्लाह ने हंसी के लिये उसके पाँव से उस रस्सी को खोल कर अपने पाँव में बाँध लिया.	३८ अहिभुक्कैवर्तन्यायः. एनेन न्यायेन तादात्म्याध्यासएव ज्ञेयः यथा कश्चिदहि (पोस्ती) भुग्नाधमारोहं सच तत्र बहुजनसमुदायं दृष्ट्वा केनचिन्मे विनिमयो न स्यादिति धिया स्वपादे रज्जुं बद्ध्वा तन्द्रां प्राप कैवर्तश्चापहासार्थं तत्पादात्तां मोचयित्वा स्वपादेबबन्ध.
नाव के पार जाने पर उतरते वक्त वह पोस्ती अपने पाँव में रस्सी न देख कर और मल्लाह के पांव में उसे देख कर यह मैं हूं और मैं यह हूं यह अपने दिल में निश्चय कर यह झगडा करने लगा कि अरे मल्लाह तू मैं हूं और मैं तू हूं.	नावि पारंगतायामवरोहणसमयेऽहिभुक् स्वपादे रज्जुमदृष्ट्वा कैवर्तपादे च तांदृष्ट्वाऽहमयमयमहमिति स्वहृदि निश्चित्यारे कैवर्त त्वमहं महञ्च त्वमिति तेन विवादं कृतवान् इति.
३९ रीता घड़ा बोले घन[1].	३९ रिक्तो घट एवाधिकं शब्दायते न्यायः
मूर्ख लोगही अक्सर इधर उधर बका करते हैं पण्डित नहीं.	अपण्डिता एव बहुधा इतस्ततो विकत्थन्ते नतु पण्डिताः.
४० बाँझ क्या जाने प्रसूता की पीर जिस के लगे सोई जाने.	४० प्रसूतैव हि जानाति पुत्रप्रसववेदनामितिन्यायः स्पष्टः.
४१ अन्धों में काणा सरदार जहां पेड़ नहीं वहां अण्डही रूख.	४१ निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपिद्रुमायते.
४२ जितने मुंह उतनी बात.	४२ यावन्ति मुखानि तावतीः वार्ताः.

कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
४३ जैसा देव वैसी पूजा.	४३ यादृशो यक्षस्तादृशो बलिः.
४४ गये थे हरि भजने वहां दुये कपास ओटन लगे.	४४ बुद्धि मिष्टवतो मूलं विनष्टम्.
४५ नई नाइन चांस का नहप्पा.	४५ नूतना नापिती काचित् तस्या न गर्छिद्विवैणुकः.
४६ नये बाबाजी गाजर को संख, बज्यो तो बज्यो नहीं कुतर खायो.	४६ विरागी नूतनो गृञ्जनस्य शङ्खः यदि ध्मातस्तर्हि ध्मातोनोचेद्ध्मातः
४७ नाच न जाने आंगन टेढ़ा.	४७ अङ्गणं शंसते वक्रं नर्तनाकुशलो जनः.
४८ किसी का घर जले कोई तापे.	४८ कस्यचित्तुदहेद्गेहं कश्चिद्वस्त्रो अतापयेत्.

जमाई, उदर, स्त्री, अग्नि, और तालाब ये पाँच जकार मुश्किल से भरे जाते हैं.

जामाता जठरं जाया जातवेदा जलाशयः पूरिता नैव पूर्यन्ते जकाराः पञ्च दुर्भराः । १

माता पैदाइश की जगह, गंगाजी, भगवान और पिता ये पांच जकार मुश्किल से मिलते हैं.

जननी जन्मभूमिश्च जाह्नवी च जनार्दनः जनकः पञ्चमश्चैव जकारा पञ्च दुर्लभाः । २

—अब हंसी के श्लोक हैं—

—अथ हास्यरस श्लोकाः—

१ दो स्त्रियोंवाला मनुष्य बिल के बाहर और बिल के भीतर बैठे हुए बिल्ली और साँप के बीच में मूसे के नाईं भान हुआ करता है.

बिलाद्बहिः बिलस्यान्तः स्थितमार्जारसर्पयोः मध्ये चाखुरिवाभाति पत्नीद्वययुतो नरः । १

२ विष्णु का आगमन सुन जल्दी से सर्पकी रस्सी बना हाथी के चर्म का कौपीन पहन शिव जी आगे दौड़े; अब सांप गरुड़ जी को देख कर कम्पित चित्त हुआ पृथ्वी पर गिर

विष्णोश्चागमनं निशम्य सहसा कृत्वा फणीन्द्रं गुणं, कौपीनं परिधाय चर्मकरिणः शंभुः पुरो धावति, दृष्ट्वा विष्णुरथं सकम्पहृदयः सर्पोऽपतद्भूतले, हस्तिविस्मरणिता हिया न-

कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
पड़ा और गज चर्म-फिसल पड़ी अब लज्जा से नीचे को हुआ है मुख जिनका ऐसे नग्नहर हमारी रक्षा करो.	तमुखो नग्नो हरः पातु वः। २॥
३ दूसरों का अन्न पाकर हे मूर्ख अपने प्राणों पर दया मत कर, दूसरों का अन्न इस लोक में दुर्लभ है और प्राण तो हर जन्म में मिलते हैं.	परान्नं प्राप्य दुर्बुद्धे मा प्राणेषु दयां कुरु परान्नं दुर्लभं लोके प्राणा जन्मनि जन्मनि। ३।
४ हे असंख्य मनुष्यों की सफ़ाई करने वाले हकीम जी तुम्हारे लिये नमस्कार है यमराज तुम पर अपना भार रख आप मौज करता है.	वैद्यराज नमस्तुभ्यं क्षपिताशेषमानव त्वयि विन्यस्तभारोऽयं शेतान्तः सुखमेधते। ४।
५ गणेशजी के वाहन मूषक को भूखा सर्प खाना चाहता है उस सर्प को स्वामकार्तिक का मोर खाना चाहता है और पार्वती का सिंह गणेशजी को खाना चाहता है पार्वती गंगाजी से द्वेष करती हैं और शिवके मस्तक की अग्नि चन्द्रमा से ईर्षा करता है इस लिये कुटुम्ब के कलह से दुखी हुए महादेव जी भी ज़हर पीगए.	अत्तुं वाञ्छति वाहनं गणपतेराखुं क्षुधार्तः फणी, तञ्च क्रौञ्चपतेः शिखी च गिरिजासिंहोऽपि नागाननम्, गौरी जह्नुसुतामसूयति कलानाथं कपालानलो, निर्विण्णः स पपौ कुटुम्बकलहादीशोऽपि हालाहलम्। ३॥
अथ विवाहों में निमन्त्रणी के श्लोक छ.	अथोद्वाहामन्त्रणश्लोकाः षट्.
१ आप सज्जनों के सम्बन्ध से मुझ को क्या २ न लाभ हुआ! बरन सबही लाभ हुआ, प्रथम जन्म सफल	जातं जन्म कृतार्थतां विकसितं पुण्याम्बुजानां वनं छिन्ना संप्रति सर्वपापपटलिर्दुःसान्धकारो गतः, आ-

कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
हुआ, पुण्य रूपी कमलों के वन खिले, सम्पूर्ण पाप रूपी वृक्ष अङ्ग कटा, दुःख रूपी अन्धकार गया आनन्द रूपी अङ्कुर कोटि प्रगट हुए, और विघ्न रूपी वन दूर हुआ इत्यादि । १ ।	नन्दाङ्कुरकोटयः प्रकटिता विघ्नाटवी पाटिता, सम्बन्धे भवनो कृते सुकृतिनां किं किं न लब्धं मया । १।
हे द्विजेन्द्र शिरोमणे ! तीनों जगत के बीच में आप के दूध के समुद्र तुल्य निर्मल यशको सुन कर कौन से पुरुष शिर नहीं कँपाते हैं! वरन सबही शिर कपाते हैं। इसी लिये भगवान् महाराजा ने पृथ्वी के नाश होने की शंका से शेषजी के फन नहीं बनाये।२	न कम्पयन्ति तावके यशो निशम्य के शिरः पयः पयोधिनिर्मलं द्विजेन्द्र लिङ्गगलये । अतः पितामहो विभुर्भुजङ्गमेश्वरस्य नो चकार शब्दधारकान्धरविघातशङ्कया । २ ।
आपकी कीर्ति रूपी लता ने, हवा के आश्रय को लेकर तीनों लोक रूपी मांचे को पाकर नक्षत्र रूपी कलियां धारण की तिन में से एक चन्द्रमा रूपी कली मिली जिसने त्रिलोकी को दीप्त किया। अब मैं नहीं जानता कि उन सब कलियों के खिलने पर कैसा फल होगा । ३ ।	त्वत्कीर्तिवल्लिरसमीरपदवीमासाद्य-लोकत्रयं, मञ्चं व्याप्य चिरम्बभार कलिकाः नक्षत्ररूपेण याः तासां प्रस्फुटमेकमिन्दुकुसुमं त्रैलोक्यमादीपयन्, नो जाने विकचासु तासु भविता सर्वासु कीदृक् फलम् । ३ ।
—वर की ओर का— हमने आप के यहां, घरों में जो अलभ्य सुख भोगा है सो इसकी कैसे प्रशंसा करूँ, दूसरे संसार में प्राणों सेभी प्यारा अतिदुर्लभ यह कन्या रूपी	वर पक्षे । अस्माभिर्यदभोजि गेहविरलं शान्तं सुखं यमः कथम् । कन्यारत्नमदाभ्यलङ्कृतमिदं प्राणादपीष्टं सुतौ । यावद्वित्तमकारि मित्र भवतासेत्राश्रया-

कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
रत्न दिया। और हे मित्र! चित्तानुसार आपने अन्न जलादि से सेवाभी की। अब उन श्री कृष्ण महाराज की जय हो जिनकी कृपा से हम और आप सम्बन्धी हुए.	नादिभिः। श्रीकृष्णो जयताद्धि यस्य कृपया सम्बन्धिनः स्मो वयम्। १।
—दोनों और की—	उभय पक्षे।
हे प्रभो! जो अभिलाषा हमारी आपके दर्शनो की बहुत दिनोंसे थी यह आज जिसने पूर्ण की वह श्रीकृष्ण महाराज आपका (हमारा) कल्याण करे।२।	यदौत्कण्ठ्यं चिरादासीद्दर्शने भवता प्रभो। तदद्य पूरितं येन स कृष्णः शन्तनोतु वः। २।
—कन्या पक्षवालों की—	कन्या पक्षे।
हे प्रियवर। जिस समय से आपका दर्शन इस जगह हुआ तभी से हमारे दुःख समूह आप की कृपा से नष्ट हुए और हर्षका पार नहीं है। और दासी तुल्य कन्या, भोजनविधि में शाक और द्रव्यविधि में सुपारी जो२ भक्ति से आपको समर्पण किया वही२ हर्ष पूर्वक आपने स्वीकार किया यह एक हमारा बड़ाही भाग्य है। ३।	कालादारभ्य यस्मात्प्रियवर भवतां दर्शनं नोऽध जातम्। दुःखौघा नो विनष्टाः प्रभुवर कृपया नास्ति हर्षस्य पारः दासीकल्पा च कन्या ह्यशनविधौ शाकपूगीफलादि यद्यद्भक्त्यार्पितं वो नियतिरियमहो स्वीकृतं तत्सहर्षम्। ३।
पक्षियों का राजा गरुड़ उनका राजा विष्णु उनका पुत्र मदन तिनके शत्रु शिव उनके चार अक्षर का नाम मृत्युञ्जय सो इसका पहला आधा आप के शत्रुओं के यहां और पिछला आधा आप के यहां रहे। १।	अथाशीर्वादात्मकाः श्लोकाः विराजगजपुत्रारेर्यन्नामचतुरक्षरम्। अर्धं वसतु शत्रूणामुत्तरं तव मन्दिरे १

कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
१ आकाश में कौन शोभित होते हैं— (ग्रहाः) २ राक्षसपति किसने मारा- (रामेण) ३ समुद्र में कौन डूबता है- (मैनाकः) ४ तरुणियों का विलास कैसा है (मंथरं) ५ सज्जनों से क्या किया जाता है (सत्कारः) ६ राजा का पत्र क्या है (सारङ्गः) ७ अर्जुन का धनुष कौन है (गांडीव) ८ राम की स्त्री का हरने वाला कौन (रावणः) मेरे प्रश्न के उत्तर का जो मध्यमाक्षर पद है यह तुम्हारे लिये आशीर्वाद है । २ ।	कः खे भाति हतो निशाचरपतिः केनाम्बुधौ मज्जति । कः कीदृक् तरुणी विलासगमनं किं कार्यते सज्जनैः । पत्रं किं नृपतेः किमर्जुनधनुः को रामरामाहरः मत्प्रश्नोत्तरमध्यमाक्षरपदं यत्तत्तवाशीर्वचः । २ ।
स्त्रियों की लावण्यता कहां है-(वपुषि) आकाश में कौन विचरते हैं-(अण्डजाः) सब से ऊंची आवाज़ किनकी होती है- (भेरीणां) स्त्री पुरुष कहां विहार करते हैं-(एकान्ते) भगवान् सीतापति ने किन में अपना पौरुष दिखाया-(रक्षःसु) इन प्रश्नों के उत्तर का जो बीच के अक्षर घटित देव है यह तुम्हारे कल्याण के लिये हो । ३	लावण्यं क्व नु योषितां नभसि के सञ्चारमातन्वते । केषामुच्चतरा भवन्ति निनदाः क्व क्रीडतो दम्पती । केषु स्वं प्रकटीचकार भगवान् सीतापतिः पौरुषम् तत्प्रश्नोत्तरमध्यवर्णघटितो देवोऽस्तु वः श्रेयसे । ३ ।

तेईसवां अध्याय—त्रयोविंशोऽध्यायः ।

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, महेलिकाश्च ।

श्रीमच्छारदापीठाधीश्वरश्रीजगद्गुरुशङ्कराश्रमाचार्येभ्यो
निवेदितं प्रशंसापत्रम्मयपुरवासिभिः ।

प्रशंसापत्रम् ।

श्रीशः पायात् ।

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यवर्य्यपदवाक्यप्रमाणपारावारपारीण, यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाध्यष्टाङ्गयोगानुष्ठाननिष्ठ, तपश्चर्याचरणचञ्चत्पर्य्यनाद्यविच्छिन्नगुरुपरम्परागप्राप्तषण्मतस्थापनाचार्य, साङ्ख्यत्रयप्रतिपादकवैदिकमार्गप्रवर्तक, निखिलनिगमागमसारहृदयश्रीमत्सुधन्वनः साम्राज्यप्रतिष्ठापनाचार्यश्रीमद्राजाधिराजगुरुभूमण्डलाचार्यचातुर्वर्ण्यशिक्षकगोमतीतीरवासश्रीमद्द्वारकापुरवराधीश्वरपश्चिमाम्नायश्रीमच्छारदापीठाधीश्वरभिनवकेशवाश्रमस्वामिदेशिकवरकरकमलसञ्जातश्रीशारदापीठाधीश्वरश्रीमद्राजराजेश्वरदाङ्कराश्रमस्वामिनांपदारविन्देषु मयराष्ट्रनगरीनिवासिनां हार्दसौहार्दवतीनां प्रणतिपुरस्सरा विज्ञप्तयस्समुल्लसन्तुतराम् ।

भगवतामेतद्देशे श्रीमच्छारदापीठपूर्वाचार्यपादरविन्दसेवनोत्सुकमानसानां मधुपुरीप्रमुखेभ्यः प्रस्थानेभ्यः एतच्चातुर्मास्यप्रयुक्तहि वन्दिरत्न नगर (मेरठ)पत्तने समासीनत्वाप्राप्तपत्राः यथैवेदानीं जनपदसदावनगरबदौदेयपुरेन्दूरकन्दिरपुरेषु तथा अहमदावादसूरतसिद्धपुरोज्जैन्यागरमधुपुरेषु पक्षेषु तत्तद्देशेषु वैदिकसिद्धान्तान्तर्हृदयप्रधानपदार्थाः सनातनधर्मावलम्बिनः प्रजाः प्रजनयादिकाः स्वस्वनियतधर्मानुवर्तिन्यः स्वास्थ्येनकालं नयन्ति सकलेषु सम्प्रदायावधि मयपत्तने (मयराष्ट्रे) श्रुतिस्मृतीतिहासपुराणसदाचारनवकैर्नवैः प्रमाणगणैर्वेदानां परमेश्वरैकनिर्मातृत्वस्वतः प्रामाण्यकसंस्थापनपरोत्साहेषु सत्सु यत्वप्रतिमाधनस्योपासनान्तर्गतनया यथोद्दीरितोपकल्पकर्मकलापप्रवृत्तिप्रक्रियायाः पुनः श्रुतिमतनर्कविशेषप्रतिपत्तिवशाद्भुतमन्यथा

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, मल्लिकाश्च ।

धत्वतीर्थादिसेवनप्रमाणमात्रसञ्चारितत्वादयो धर्माः तत ऊर्द्ध्वं योगज्ञानयोस्तद्देव सपरिकरनिरूपणं चात्युच्चैरादरभरादध्यधायि । एतावता सर्वं चात्र सदसद्विचारचातुरीधुरीणाद्यपगतशङ्काकलङ्कसामान्याध्यासितः प्रसन्नात्मानोऽजायन्त यथावत् येच तत्र विप्रतिपन्नमानसाः प्रमादिजनाः तेऽपि चात्यर्थं निजमतिकर्दमेभ्यो यथोदाहृतप्रबोधवारिधारासिभिः प्रविमुक्ततराः भवन्त्येव तावतः इत्थमत्र सर्वे वयं ब्रह्मश्चत्रवैश्यादयो जगद्गुरुभिरतितरां कृतार्थीकृताश्चानन्दिता भवामः शिष्यगणाः । इत्थञ्च जगद्गुरुचरणेष्वस्मत्कर्तव्यतानुरूपञ्च श्रद्धाभक्तिभ्यां यथोचितः सत्कारः प्रयुक्तः प्रेम्णा परं स्वीकृतोऽयं गुरुभिरतिमङ्गलमेव सर्वशो नः सर्वेषाम् । सदैव वयमेवमेव विजयया श्रया कृतार्थाः कर्तव्याः शिष्यजनाः श्रीमद्भिर्जगद्गुरुभिरिति महतीहायमस्माकमभ्यर्थना ।

भवदीयकृपाभिलाषिणो
मयराष्ट्रनिवासिनो शिष्यजनाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
गुरु के लिये चिट्ठी ।	गुरून्प्रतिपत्रमिदम् ।
श्रीमान् कृष्णमहाराज के लिये नमस्कार है श्रीमान् विद्वानों में अति श्रेष्ठ, सम्पूर्ण गुणी लोगों के गुण समूहों से सुशोभित, अविद्या और जड़तारूपी अन्धेरे के दूर करने वाले, अमित प्रभाव वाले, सम्पूर्ण विद्या रूपी समुद्र के पारगत, अत्यन्त सज्जनता की मैत्री दया उदारता और चतुराई की खान, विनय सौधापन और ज्ञानके स्थान श्रीमान् लक्ष्मीनारायण जी को ब्राह्मण वंश के चरण पंकज सेवक सुखानन्द त्रिपाठी की अनेक नमस्कार वचना.	श्रीमते रामानुजाय नमः । श्रीमत्परमविद्वद्वर्य्याखिलगुणिगुणगणालङ्कृताविद्याजाड्यान्धकारापहारिमप्रभावाखिलविद्यापारावारपारीणानिर्लोलन्यायधिद्धर्यौदार्य्यवदान्यशिष्यनिधिविनयार्जवविवेकनिलयेषु श्रीमल्लक्ष्मीनारायणशर्मसु विप्रावर्य्यांघ्रिपङ्कजसेवियसुखानन्दत्रिपाठिकृता अनेकशो नतयः समुल्लसन्तुतराम् .

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पद्यानि, छन्दोबोधः, पहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
ईश्वर कृपा से दोनों जगह कल्याण हो आगे हाल यह है कि क्वार के महीने से लेकर अबतक कोई पत्र आपने मेरे पास नहीं भेजा इस लिये मैं आपकी राजी खुशी जानने को बहुत फ़िकर मन्द हूँ अब आशा है कि आप चिट्ठी भेजने में जल्दी करेंगे.	भव्यं स्यादुभयत्र श्रीशानुकम्पया उदन्तोऽयमग्रे वाच्यः यत् आश्विनमासादारभ्याधाधि भवद्भिर्न किमपि दलम्प्रापितं मम सन्निधायतोऽतीवोत्कण्ठितोऽस्मि श्रीमतां श्रेयो ज्ञातुमधुना त्वरिष्यन्ति भवन्तः पत्रप्रेषण इत्याशासे.
यहां लोग रोग भादों से बहुत ज्यादह है हजारों मनुष्य और स्त्री इसके ग्रास होगये जीते हुए भी और मनुष्यों के होश फ़ाख्ता है ईश्वर अब तो कल्याणही करे । और कोई नया हाल नहीं है जिस को लिखूं.	अत्र महामारीरोगो घरीवर्ति नन्वाभाद्रपदात् सहस्रशो नराश्चास्य कवलत्वङ्गताः जीवन्तश्चाप्यन्येऽस्वस्थचित्तास्सन्ति ईश्वरोऽधुनास्तु शमेय विदध्यात् । नचान्यद्भूतनं वृत्तं यल्लिख्येयम्.
संवत १९६१ वैक्रमीयः आश्विनकृष्ण पक्षे द्वितीयारविवार आपका कृपापात्र सुखानन्दत्रिपाठी	सम्वत् १९६१ वैक्रमीये वन्दे आश्विनेऽसिते पक्षे द्वितीयारवियुता भवदीयः कृपापात्र सुखानन्दत्रिपाठी

२ शिष्य के लिये चिट्ठी ।

स्वस्ति श्री विनयार्जव आदि सम्पूर्ण गुण सम्पन्न, विद्यारूपी कमल के भ्रमर, अपने कुलके गुण रूपी भूषणों से भूषित परम श्रद्धालु गुरु शुश्रूषा में तत्पर द्वारकाप्रसाद गुप्त को हमेशा अपने अच्छे शिष्यों की कुशल चाहने वाले सुखानन्द त्रिपाठी की अनेक आशीर्वाद पहुंचना.	स्वस्तिश्रीमद्विनयार्जवाद्यखिलगुणसम्पन्नविद्याकुशेशयच्छरीकस्वकुलगुणभूषणभूषित परमश्रद्धालुगुरुशुश्रूषणतत्परद्वारकाप्रसादाख्ये गुप्ते सदैव सच्छिष्यकुशलाभिलाषिणस्सुखानन्दत्रिपाठिनोऽनेका आशिषो वाच्याः.

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, पहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
यहां कुशल है तुम्हारे यहां भी कुशल रहे । प्रिय ? बहुत दिन बीते तुमने कोई भी चिट्ठी नहीं भेजी यह बड़ा अचम्भा है क्योंकि पहिले हर महीने राजी खुशी की चिट्ठी भेजने का तुम्हारा एक मामूली कायदा था अब न मालूम क्या हुआ.	अत्र सं नवास्तु । भद्र ? बहून्यहानि व्यतीतानि त्वया न किमपि पत्रमत्रेषितमिनिमहदाश्चर्यम् यतस्त्व पूर्वं प्रतिमासं कुशलपत्रप्रेषणे साधारणोनियम आसीदधुना किंजातमिति न जाने.
खैर तुम्हारा सब ओर से कल्याण हो और विद्या में ज्यौंकी त्यौं महनत करके हम गुरुजन लोगों के आनन्द देने वाले हो यह मेरा आशीर्वाद है. तुम्हारे संस्कृत पढ़ाने वाले यहां कौन हैं यह भी ख़बर देना और कोई नया हाल हो वह भी । मिती पौष कृष्णापड़वा शुक्रवार सम्वत् १९६४ वैक्रमी.	परं कुशलमस्तु सर्वतस्ते विद्यायाञ्च यथाविधि परिश्रमं कृत्वाऽस्मदादीनां गुरुजनानामानन्दधुरन्धरो भवतादितीयम्मदीयाशीः.
तुम्हारा कुशलेच्छुक, सुखानन्द त्रिपाठी ।	तव संस्कृताध्यापकास्तत्र के इत्यपि सूचनीयमन्यच्चापि नव्यं वृत्तमिति । एकपञ्चयुत्तरैकोनविंशतितमे विक्रमेऽब्दे पौषकृष्णप्रतिपच्छुक्रपुत्तापत्रलेखतिथिः.
वृन्दावन निवासी पौराणिक पं० प्यारे लालजी मिश्र कोलिये छन्दो बद्ध चिट्ठी.	युष्मत्कुशलाभिलाषी, सुखानन्दत्रिपाठी ।
सो० चिट्ठी पाई काल, तुम्हरे कर कमलन लिखी। जिनज्वर दशा सँभाल, मोहि स्वस्थता देहई ।	वृन्दावननिवासिनं पुराणाचार्यं प्यारेलालशर्माणम् सुहृदम्प्रतिपत्रमिदम् पद्यैः
सो० क्षमहु मोर अपराध, पत्र न भेजन कर जो। कारण देह सुसाध, अनुन नहीं कछु या विषे ।	पत्रिका हो मया प्राप्ता युष्मद्धस्ताञ्जलिङ्किता । यया ज्वरदशा मेऽपि कृता वै विगतज्वरा । १ ॥ क्षम्यतामपराधो मे, पत्राप्रेषणहेतुकः कारणं देहवैकल्यं, नाक्षयत्नरयं वचोऽत्रमे । २ ।

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, महेल्लिकाश्च ।

हिन्दी ।

दो० स्मरण योग्य है आप के, सुखानन्द सेवक सदा। ते अनुशासन योग्य है, योग्य कार्य होवहि यदा.

दो० ग्रामहिं जबहीं जाइहौं, पत्र तुम्हार सुनाँउ । घर जेम्बो कोई कहँ, पुनि प्रिय तुमहिं जनाउँ.

दो० जो कछु उत्तम जीविका, मम भ्राता को जोय। तोतिहिको भेजौं तभी, जय अनुशासन होय ।

सात पाँच नव एक युत, वर्ष मास आसोज। शुक्ल पक्ष दुतिया लिखी, सुखानन्द निज ओज । एतम शुद

और भी मित्र कैलिये—

श्री शङ्करजी कल्याण करें २८।११।०४

कानपुर

मित्रवर्य सुखानन्द त्रिपाठीजी नमस्कार ईश्वर की कृपा से अभी तक हम लोग कुशल हैं और आप की कुशल चाहते हैं। बहुत दिन से आप की चिट्ठी न मिलने से मैं फ़िकर मन्द हु इसलिये जल्दी अपने राजी खुशी के समाचार से यह मित्र खुश करना चाहिये। तीन महीने से यहां प्लेग की बीमारी भी रोज सैंकड़ा बेशुमार मनुष्यों को ग्रास करती जाती है। अब मैं कुटुम्ब सहित गङ्गा किनारे

संस्कृत ।

सर्वदा स्मरणीयोऽयं, सुखानन्दाख्य सेवकः। सदैवाज्ञापनीयश्च, मद्योग्यैः कार्यग्रामकैः । ३ ।

ग्रामं यदा गमिष्यामि, श्रावयिष्यामि ते छदः। पुनस्ते सूचयिष्यामि, अनुशास्ति यथा प्रभोः ।४ ।

यदि स्यादुत्तमावृत्तिर्ग्रामे मे मृगयन्तु ताम्। तदैव प्रेषयिष्यामि यदाज्ञाऽत्र लप्स्यते । ५ ।

नगबाणाङ्कभूवर्षे आश्विनस्य परे दले। लिखितेयं द्वितीयायां सुखानन्दत्रिपाठिना । ६ । इत्यलम्

अन्यच्च मित्रम्प्रति—

श्रीशङ्करः शङ्करोतु २८।११।०४

कर्णपुरम्

मित्रवर्य सुखानन्दत्रिपाठिन्। नमोनमः विश्वेशकृपयाद्य यावत्कुशलिनो वयं भवतां कुशलं चाशंसामहे । चिरात्स्मृतवताम् कृपापत्रमलब्ध्वा चिन्तान्तोस्मीति शीघ्रं स्वकुशलप्रवृत्तान्तोऽस्मीति शीघ्रं स्वकुशलप्रवृत्तान्दयितव्योऽयं मित्रजनः। मासत्रयादत्र महामारीरोगोऽपि प्रत्यहमसंख्यजनान् कवलयति । सम्प्रत्यहं सपरिवारो गङ्गातटे गङ्गामन्दिरे निवसामि । गृहे पुत्रादयः सर्वे ज्वरपीडिता आसन्नतः स्वकुशलवृत्तान्ते-

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, पहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
गङ्गा मंन्दिर में रहता हूं घर में लड़के धेंगरह सवजर से पीड़ितथे इसलिये अपनी राजी खुशी के समाचार से आप को खुश न कर सका ऐसा जान कर यह मिश्र क्षमा योग्य है। सब उस्तादों से मेरी यथा योग्य प्रणाम आशीर्वाद कहना। यहां भी रोग रोग अब है यह सुना जाता है इसलिये यहां का सब हाल लिखना.	न श्रीमन्तं मोदयितुं नाशक्नवमित्यवगम्य क्षन्तव्योऽयं वयस्यः । सर्वेभ्योऽध्यापकेभ्यो मदीया यथोचितं प्रणामा आशिषो वा वक्तव्याः । तत्रापि महामारीरोगो वर्तते इदमीमिति श्रूयतेऽतः कृपया तत्रार्यं सर्वं वृत्तं लेख्यमितिशम्.
पुराने विद्यार्थियों को मेरी आशीर्वाद कहना.	प्राचीनछात्रेषु मदीया आशिषो वाच्याः
अगहन } आपका मित्र बदि६ } रामचन्द्र शास्त्री	मार्गशीर्ष } भवदीयो वयस्यः कृष्णषष्ठी } रामचन्द्रशास्त्री
और दूसरी मित्र के लिये चिट्ठी—	अन्यच्च मित्रप्रतिपत्रम्.
श्री राधा माधव की जय हो. श्रीमान् सम्पूर्ण गुणसमूहयुक्त, विद्या समुद्रपारगामी, भ्रमरूपी अन्धकार को दूर करने वाले सूर्यरूप, अपनी वाणी समूह से तिरस्कृत किया है कालिदासादि पण्डितों को जिन्होंने, नवीन केशर से शोभित है पूज्य चरणकमल जिनके, मित्र शिरोमणि, हस्तस्थ शास्त्री जी को यहां से विद्या रूपी भूषणों से भूषित जो भवरमति	श्रीराधामाधवौ विजयेतेतराम् अलीगढ़तः श्रीमदीक्षितगुणौघाढ्यविद्यापारावार-पारीणभ्रमतिमिरोच्छेदकमार्तण्डन्यक्कृतवाग्जालकालिदासादिप्रह्व,नूतन किंजल्कभूषितपूज्यपादपङ्कजेषु सुहृद्वरेषितो विद्यालङ्कारालङ्कृतभवरमतिभृत्यभृत्यविद्वद्वर्य्यचरणसरोजषट्पदसंसारसरित्तुङ्गलगदंवद— यमानगूढमेधीयभारभराक्रांतसुखानन्दत्रिपठिनः कृता अनेकशो नतयः

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

(पंडित) उनके सेवकों का सेवक, परम विद्वानों के चरण कमलों का भ्रमररूप, संसाररूपी नद में तृष्णा-रूपी जल के सर्प से डसा हुआ गृहस्थ के भार से थके हुए सुखानन्द त्रिपाठी की अनेक नमस्कार प्रणाम पहुंच । आगे हाल यह है कि मेरे अधैर्य रूपी वृक्ष को काटनेवाले, अनोखी और रसीली काव्य के से पदों की लावण्यता को जाहिर करते हुए, आपके करकमल से लिखे हुए पत्र से जो अपूर्व आनन्द प्रकट हुआ सो कहने तथा लिखने से बाहर है । वसन्त भगवान् वृक्षों के पत्तों की नाईं हमारी और आप की अभिलाषा को सफल करेगा इस प्रकार आप के वाक्य में आपही प्रमाण हैं जो यह होभी जाय तोभी आपकाही भाग्य है मुझ सरीखों का नहीं । शरीर के अस्वास्थ्य से मैंने यह चिट्ठी देर से भेजी है सो आप क्षमा करना.

मिति पोष शुदी
५ शुक्रवार
सं. १९५९ वि०

आपका
दर्शनाभिलाषी
सुखानन्द त्रिपाठी

संस्कृत ।

समुल्लसन्तुतराम् वृत्तमिदमग्रे वाचयम् ममाधैर्यद्रुमलोलूयमानेनाद्भुतरसिककाव्यपदच्छटासोत्प्रेक्ष्यमाने न श्रीमत्करकुड्मलाङ्कितदलेन यो निरतिशयानन्दः सूचितः सोऽगोचरः । भगवान्पुष्पसमयः तरुपत्राणि इव नाद्यभिलाषां सफलां विधास्यतीति श्रीमद्वाक्ये श्रीमन्त एव प्रमाणम् यदि स्यात्तर्ह्यपि श्रीमतामेव दिष्टं नच मादृशानां । शरीरास्वास्थ्यान्मया चिरादिदमपत्रं प्रेषितमिति क्षन्तव्यं भवद्भिः श्रीमद्भिरिति.

पौषशुद्धा पञ्चमी
भृगुयुता
सं. १९५९

भवतां दर्शनेच्छुः
सुखानन्द-
त्रिपाठी

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, महेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

यह अर्ज़ी है अलीगढ़

श्री मन्महोदय हेडमास्टर साहब

(या ग़रीबपरवर सलामत) सलामत

महाशय !

पिछले शुक्रवार से मेरी माता जाड़े बुखार से पीड़ित है और उसका यहां कोई निरीक्षक नहीं है इसलिये मेरी हाजिरी यहां ज़रूरी है इसीलिये आपसे प्रार्थना की जाती है कि मुझे एक हफ्ते की छुट्टी मञ्जूर करें। आप ऐसी हालत में अवश्यही मञ्जूर करेंगे यह मेरी पूरी उमेद है.

ईश्वर आप सरीखे अनुग्रह शील स्वामियों की सकुटुम्ब कुशल करे और वैभव बढ़ावे यह हमारी प्रार्थना है.

अंग्रेजी तारीख़ १८।१२।०४

आपका
आज्ञाकारी सेवक
श्रीकृष्णदास गुप्त
दर्जा ७

लड़के का यह बयान ठीक है (कैफ़ियत लड़के के उस्ताद की) मणिराम उस्ताद.

संस्कृत ।

निवेदनपत्रमिदम् अलीगढ़तः

श्रीमन्महामहिममहोदयानां मुख्याध्यापक (हेडमास्टर) महाशयानाम्पुरतः सविनयं निवेदनमिदम्.

महाशयाः !

गतशुक्रवासरान्मदीया माता शीतज्वरार्तास्ति नकोऽप्यत्र तस्या निरीक्षकः अतो ममोपस्थितिरत्रात्यावश्यिका ऽत एव मां सप्ताहमेकमवकाशं मनुमन्तुं प्रार्थयन्ते भवन्तो ऽस्यां दशायां मदीयमेव स्वीकरिष्यन्तीत्याशापि मदीया पूर्णा.

ईश्वरः कुशलं विदध्यात्तेभवञ्च वर्धयेत सपरिवारेषु युष्मच्छिष्येष्वनुग्रहशीलिषु स्वामिन्वितीयमस्माकमभ्यर्थना.

आङ्ग्लतिथ्यादि १८।१२।०४

श्रीमत्तामति-
क्रम्योपचरः
सममकक्षाध्येता
श्रीकृष्णदासोगुप्तः

सत्योऽयंबालकश्छात्रश्चेति (व्यवच्छाताध्यापकस्य) मणिरामोऽध्यापकः.

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, महेलिकाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
लाहौर १९।५।०४	लवपुरम् १९।५।०४
	श्रीरामः सर्वमङ्गलम्.
पादप्रणामानन्तर निवेदन.	पादप्रणामोत्तरं निवेदनम्.
आप की चिट्ठी के माफ़िक ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का सूक्तसंग्रह इम्तहान के उपयोगी डाक महसूल न देकर भेजा है डाँक महसूल आपही देदेना. आप कौन जाति हैं और मुझ को अपना आज्ञा पालक बना कैसे कृतकृत्य किया ?	भवतां पत्रानुसारेण ऋग्वेदप्रथममण्डलीयसूक्तसंग्रहः परीक्षोपयोगी प्रेषितो डाक्व्ययमदत्वेतिडाक्व्ययो भवद्भिरेव देयः. किं जातीया भवन्तो मां कथं स्वाज्ञापालकं कृत्वा कृतकृत्यं कृतवन्तः.
अबकी परीक्षा के समय मैं अपने देश को गया थी इसी से मेरे पास प्रश्न पत्र नहीं आये, कोशिश करने पर जो आजायंगे तो भिजवादूंगा.	अत्रत्यपरीक्षाकालेऽहं स्वजनपदे गतवानतो मत्समीपे प्रश्नपत्राणि नागतानि यत्ने कृते आगमिष्यन्ति चेत्प्रेषयिष्ये.
आपका आज्ञापालक पण्डित शिवदत्त दाधीच हेडपण्डित (प्रोफेसर) लाहौर कालेज.	भवदाज्ञापालकः पण्डितशिवदत्तो दधीचः लवपुरीयविश्वविद्यालयस्य प्रधानसंस्कृताध्यापकः.
ईश्वररक्षा करे अलीगढ़ २२।५।०४	श्रीशः पायात् अलीगढ़तः २२।५।०४
श्रीमान् पं. शिवदत्त दाधीचजी के— चरणकमलों में नमस्कार.	नमोनमः श्रीमच्छिवदत्तदाधीच— चरणपङ्कजेभ्यः
सेवक की प्रार्थनानुसार आपने जो ऋग्वेद सूक्तसंग्रह भेजा सो मिला । आप से महात्माओं की परोपकार	सेवकाभ्यर्थनानुसारेण श्रीमद्भिर्ऋग्वेदसूक्तसंग्रहः प्रेषितः स लब्धः धन्येयं परोपकारशीलता भवादृशां महा-

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, पहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
शीलता धन्य है जो मुझ न जानते हुए पर भी कृपा कर के मुझे कृतकृत्य करने हुए। बहुत कहने से क्या है विद्वान् महात्माओं का परोपकार करना स्वभाव सिद्ध होता है। आप को कृपा के देखे सैकड़ों हजारों धन्यवाद भी थोड़े हैं.	तमनाम् यन्नामपरिचितस्योपर्य्याप्य-नुकम्पां विधाय कृतकृत्यं कृतवन्तो भवन्तः । किम्बहुना महतिसिद्धाऽयं परोपकृतिर्विदुषां महात्मनाम् । अतः शः सहस्रशो धन्यवादा अपि न्यूनतराः श्रीमदनुकम्पापेक्षया.
यह सेवक धशिष्ठ गोत्री गौड़ वंशीय है दिल्ली में अमृतसर निवासी पण्डित चुन्नीलाल शर्मा से आप का गुणानुवाद सहित नाम सुना था.	धशिष्टगोत्रजो गौड़वंशीयोऽयं सेवकः इन्द्रप्रस्थेऽमृतसरनिवासी पण्डितचुन्नीलालशर्म्मणः सकाशाच्छ्रुताख्या सगुणानुवादा श्रीमतां भवताम्.
गुरुजी! मेरे एक भजनलाल शर्मा विद्यार्थी ने पिछली संस्कृत परीक्षा में विशारद इम्तहान दिया था और इम्तहान देनेवालों में उसका रोल-नम्बर २७ था। इम्तहान का नतीजा अबतक उसको नहीं मिला इसी से उसका नतीजा जानने के लिये बहुत ही उत्कण्ठित है। दो चिट्ठी भी उसने रजिष्टरार के पास भेजीं मगर किसी का उत्तर न मिला। इसी से सेवक की यह प्रार्थना है कि जब मेरी चिट्ठी आप के कर कमल में पहुंचे तभी अ-खबार (गज़ट) से निश्चय कर इम्तहान का नतीजा लिखना चाहिये। फेल होने की हालत में किस मजमून में गिरा	गुरुवः ! ममैकेन भजनलालशर्म्मणा विद्यार्थिना गतसंस्कृतपरीक्षायां विशारदपरीक्षा दत्ता तत्र परीक्षदेषु तस्य गणना (रोलनम्बर) सप्तविंशत्तमाऽऽसीत् । परीक्षाफलं तु तेनाद्यावधि नलब्धमत एवातीवोत्कण्ठितोऽस्ति तत्फलपरिज्ञानाय । द्वे पत्रेऽपितेन रजिस्टरारसन्निधौ प्रेषिते परञ्च न कस्माप्युत्तरं लब्धे । अतएवास्यभ्यर्थनपासेवकस्य यदा मम दलं श्रीमत्करकमलगतं भवेत् तत्क्षणमेव समाचारपत्रान्विधिल्य परीक्षाफलं लेखनीयम् अनुत्तीर्णदशायां कस्मिन्विषये पतित इत्यपि सूचनीयं श्रीमद्भिः परोपकारिभिर्गुरुजनैः यावच्छक्यं शीघ्र-

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, पहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

यह भी श्रीमान् परोपकारी गुरुजन सूचित करें। जहां तक हो सकेगा शीघ्रही उत्तर इस सेवक को मिलेगा यह मानाजाता है.

आप का सेवक
सुखानन्द त्रिपाठी

दिल्ली
६।१२।०३

आप को प्रणाम करके.

अमृतसर निवासी चुन्नीलाल शर्मा अपनी राय प्रकाश करता है कि हे श्रीमान् अब संस्कृत भाषा निस्सार है इससे अङ्गरेज़ी भाषाही पैंटा बांध कर आप को पढ़ानी चाहिये उसी से आप के सब मनोरथ सिद्ध होंगे वरन विशारद परीक्षा पास करके भी मुनासिब जगह का मिलना नामुम्किन है, मुम्किन भी हुआ तो २५) से अधिक जन्म भर मुम्किन नहीं। जो संस्कृत में आप का बहुतही आग्रह है तो शास्त्रीपरीक्षा में यत्न करना चाहिये। यह परीक्षा दृढ़ उद्योगी आप से पांच छः महीने में ही पास करली जायगी और मैं भी इस में मदद दूंगा। छुट्टी के दिनों में मैं कहां जाऊंगा यह निश्चय नहीं.

आपका मित्र चुन्नीलाल शास्त्री
(मिशनस्कूल देहली)

संस्कृत ।

मेघोत्तरं लप्स्यते ऽयमनुचरइतिमन्यते.

भवतामनुचरः
सुखानन्दत्रिपाठी.

इन्द्रप्रस्थ
६।१२।०३

तत्रभवत्सु प्रणम्य.

प्रगट्यति स्वसम्मतिममृतसरनिवासी चुन्नीलालशर्म्मा, तथाहि, श्रीमन्तः ! निःसारा साम्प्रतं संस्कृतभाषा ऽतइङ्गलिशभाषैव वद्धपरिकरैरत्रभवद्भिः संवर्द्धनीया तयैव सेत्स्यन्ति सर्वे वो मनोरथाः किञ्च विशारदपरीक्षामुत्तीर्य्यापि नानुकूलस्थानप्राप्तिसम्भवः, सम्भवेऽपि पञ्चविंशतेरधिकस्याजन्मासम्भवः। यदि संस्कृतेऽतीवाग्रहो भवतां तदा शास्त्रिपरीक्षायां यतितव्यं साच दृढोद्योगैः श्रीमद्भिः पञ्चषैरेव मासैरुत्तीर्णाभविष्यदि दास्यामिचत्राहमपिसाहाय्यमिति। अयकाशादिनेषु क्वयास्यामीति न निश्चयः.

भवदीयो वयस्यः चुन्नीलालशास्त्री
(मिशनस्कूल देहली)

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, मल्लिकाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
दूसरी अर्ज़ी हेडमास्टर साहब कॉलेज ।	अन्यन्निवेदनपत्रमिदं पाठशालाध्यक्षसमीपे ।
श्रीमन् परमदयालु हमारे हेडमास्टर महाशय चिरञ्जीवरहो.	श्रीमत्परमदयालूनामस्मत्पाठशालाध्यक्षमहाशयानामग्रेऽभ्यर्थनेयम्.
प्रभो !	प्रभो !
शुभाशिष यह है कि मैं पिछली आधीरात से पेट में शूल के दर्द और शिर के दर्द में मुब्तिला हूं इसलिये मदरसे में जाने और वहां बैठने के लिये समर्थ नहीं हूं । महर्बानी कर आज कोही छुट्टी मञ्जूर फ़र्माइये यह मेरी आप के सामने प्रार्थना है.	अस्ति सविनयनिवेदनमेतत्तदहं गतार्धरात्रौ जात उदरशूलग्रस्तः शिरोवेदनया च पीडितोऽस्मतः पाठशालां गन्तुं तत्र स्थातुञ्च न शक्नोमि । कृपयाऽद्यैव दिवसस्यावकाशं स्वीकर्तुमर्हन्ति भवन्त इतीयमस्माकमभ्यर्थना श्रीमतामग्रे.
मेरे बेटे का यह लिखता ठीक है (यह लड़के के पिता को कैफ़ियत है) दस्तख़त राम प्रसाद शर्मा.	सत्येवमुक्तिर्मम पुत्रस्येति ज्ञापयितुर्यथा हस्ताक्षराणि रामचन्द्रशर्मणः.
आपका सेवक गोपाल प्रसाद शर्मा	अयमेतामनुचरः दशमकक्षाध्यः
१५।१।०५ पेन्ट्रस क्लास.	१५।१।०५ गोपालप्रसादशर्मा.

—*—

इक़रार नामा ।

मैं मुसम्मी हरदत्त शर्मा वल्द पण्डित दुर्गादत्त क़ौम ब्राह्मण साकिन अलीगढ़ काहू अपने बेटे की शादी के लिये १५० रुपये जिन के आधे ७५ रुपये होते हैं लाला रामचन्द्र वल्द गोपाल दास क़ौम बनिया साकिन मेरठ से क़र्ज़ लेता हू और वादा

प्रतिज्ञापत्रमिदम् ।

श्रीमद्विप्रवंशावतंस अलीगढ़वास्तव्यदुर्गादत्तसूनुहरिदत्तशर्म्माहं स्वपुत्रविवाहार्थं मुद्राणां सार्धशतं यद्यं पञ्चसप्ततिमुद्रा भवन्ति मथुराप्तनगरनिवासिवैश्यवंशोत्पन्नगोपालदाससूनवे रामचन्द्रायापरार्कं द्रव्यं धारयामि प्रतिजाने चैकस्य वत्सरस्यान्ते शतत्रय-

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
कर्ता हूं कि एक साल के अन्दर में ढाईरुपये सैकड़े के सूद के साथ कुल धन दे दूंगा न देने की हालत में मैं अपना घरही आड़ किये देता हूं। लिहाज़ा यह इक़रार नामा लिख दिया ताकि सनद रहे.	ति सार्धद्वयरूपकेण शुल्केन सहावि-लं रिक्थं प्रतिदास्यामि अनर्पणदशायां मम गेहमेव पणत्वेन धृतमिति प्रतिज्ञा पत्रलिखितं प्रमाणत्वेनेदम्.
गवाह दस्तखत श्रीकृष्णदत्त हरिदत्त शर्मा बकलम खुद	श्रीकृष्णदत्तः हस्ताक्षराणि- (साक्षी) हरिदत्त शर्मणः(स्वयं)
अब मशहूर छन्दों का लक्षण कहता हूं.	अथ प्रसिद्धवृत्तानां लक्षणं ब्रवीमि.
मात्रावाला—आर्या छन्द है.	मात्रात्मकं—आर्या छन्दः.
जिसके पहिले चरण में तैसेही तीसरे में १२मात्रा हों और दूसरे में अठारह और चौथे चरण में १५ हों वह आर्या छन्द होता है.	यस्याः पादे प्रथमे, द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि अष्टादश द्वितीये चतुर्थ-के पञ्चदश सार्या.
अब अक्षरात्मक छन्द बयान किये जाते हैं	अक्षरात्मकानि छन्दांसि वर्ण्यन्तेऽधुना.
८ अक्षर का अनुष्टुप् छन्द है उसका लक्षण, श्लोक में छठा गुरु, पाँचवा सब जगह लघु, दूसरे और चौथे चरणों में सातवां ह्रस्व और पहिले तीसरे में सातवां दीर्घ जानना.	८ अष्टाक्षराणामनुष्टुच्छन्दः तल्लक्षणम् श्लोके षष्ठं गुरुज्ञेयं सर्वत्र लघुपञ्च-मम् द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दी-र्घमन्ययोः.
११ अक्षरों के इन्द्रवज्रा वगैरह पांच छन्द हैं.	११ एकादशाक्षराणां पञ्चछन्दांसि इ-न्द्रवज्रादीनि.
,, इन्द्रवज्रा-दो तगण, एक जगण, दो गुरु, जिसके एक चरण में हों.	,, इन्द्रवज्रा—स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः.

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, पहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
„ उपेन्द्रवज्रा—ज, त, ज, ग, ग जहां हों.	„ उपेन्द्रवज्रा—उपेन्द्रवज्रा ततजास्ततो गौ.
„ उपजाति—जिसमें इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के क्रम से लक्षण हों.	„ उपजातिः—अनन्तरोदीरितलक्षणभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः.
„ रथोद्धता—र, न, र, ल, ग जिसके १ पाद में हों.	„ रथोद्धता—रान्नगविह रथोद्धता लगौ.
„ स्वागता—र, न, भ, ग, ग जिसके १ पाद में हों.	„ स्वागता—स्वागतेति रनभाद्गुरुयुग्मम्.
१२ अक्षरों के पादवाला एक छन्द वंशस्थ नाम है.	१२ द्वादशाक्षराणामेकं छन्दः वंशस्थनाम.
„ वंशस्थ—ज, त, ज, र जिसके एक पाद में हों.	वंशस्थम् जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ.
बारह तेरह अक्षरों का मिला हुआ पुष्पिताग्रा छन्द है.	द्वादशत्रयोदशाक्षराणां मिश्रीभूतं पुष्पिताग्रावृत्तम्.
१२ १३ पुष्पिताग्रा छन्द { जिसके पहिले तीसरे पाद में न, न, र, य हों और दूसरे चौथे में न, ज, ज, र, ग हों.	१२ १३ पुष्पिताग्रा वृत्तम् { अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा.
तेरह अक्षर के पादवाले दो छन्द रुचिरा और महर्षिणी हैं.	त्रयोदशाक्षराणां द्वे वृत्ते—रुचिरा महर्षिणीति.
१३ रुचिरा—जिसमें ज, भ, स, ज, ग हों और चार और नौ अक्षरों पर विराम हो.	१३ रुचिरा—चतुर्मदैरिह रुचिराज्भौ सजौ गः.
१३ महर्षिणी—जिसमें म, न, ज, र, ग हों और ३ और १० पर विराम हो.	„ महर्षिणी—स्यौ यौ गस्त्रिदशयतिः महर्षिणीयम्.
चौदह अक्षरों का वसन्ततिलक नाम एक छन्द है.	चतुर्दशाक्षराणामेकं वृत्तं—वसन्ततिलकाख्यं.

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
१४ वसन्ततिलक—त, भ, ज, ज, ग, ग जिसमें हों.	१४ वसन्ततिलका—उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः.
पन्द्रह अक्षरों का एक छन्द मालिनी.	पञ्चदशवर्णाना मेकं वृत्त—मालिनी.
१५ मालिनी—न, न, म, य, य जिसमें हो और ८ और ७ पर विराम हो.	१५ मालिनी—ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः.
सोलह अक्षरों का है तो लेकिन अप्रसिद्ध है.	षोडशाक्षराणामस्ति तु परञ्चाप्रसिद्धम्.
सत्रह अक्षरों के तीन है हरिणी, शिखरिणी और मन्दाक्रान्ता.	सप्तदशाक्षराणां त्रीणि-हरिणी, शिखरिणीमन्दाक्रान्तेति.
१७ हरिणी—जिसमें न, स, म, र, स, ल, ग हो और छः चार और दस अक्षर पर विराम हो.	१७ हरिणी—रसयुगहयैर्नसौ म्रौ स्लौ गो यदा हरिणी तदा.
१७ शिखरिणी—जिसमें ६ और ११ पर विराम और य, म, न, स, भ, ल, ग हों.	,, शिखरिणी—रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलाग. शिखरिणी.
,, मन्दाक्रान्ता-जिसमें ४ ६ और ७ पर विराम हो और म,भ,न,त,त,ग,ग हों.	,, मन्दाक्रान्ता—मन्दाक्रान्तजलधिषड गैर्मभौ नतौ तादृगुरुचेत्.
अठारह अक्षरों का अक्सर अप्रसिद्ध है.	अष्टादशाक्षराणां प्रायोऽप्रसिद्धम्.
उन्नीस अक्षर का एक शार्दूल विक्रीडित होता है.	एकोनविंशत्यक्षराणामेक शार्दूलविक्रीडितम्.
१९ शार्दूलविक्रीडित—जहां १२ और सात पर विराम हो और म, स, ज, स, त, त, ग जिसमें हों.	१९ सूर्याश्वैर्मसजस्तता सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्.
बीस अक्षर का एक छन्द है सुवदना.	विंशत्यक्षराणामेकं वृत्तंसुवदना.
२० सुवदना—म, र, भ, न, य, भ, ल, ग जिसमें हों और ७,८ और ६ पर विराम हो बत्तीस अक्षर का स्रग्धरा छन्द है.	२० सुवदना—ज्ञेया सप्ताश्वपड्भिर्मरभनययुता भ्लौगः सुवदना.
	एकविंशत्यक्षरात्मकं स्रग्धरावृत्तम्.

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
२१ स्रग्धरा—जिसमें ७, ७, ७ पर विराम हो और म, र, भ, न य, य, य ये हों.	२१ म्रभ्नौयानांत्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धराकीर्तितेयम.
अपरवक्त्र—	अपवक्त्रम्
जिसके विषम अर्थात् पहिले तीसरे पाद में न, न, र, ल, ग हों और सम अर्थात् दूसरे चौथे में न, ज, ज, र हों.	अयुजि नयुगरेफतो यकारः समनञ्जमपरवक्त्रमिदं जन्तेजरो.
(अब समस्या का पूरण करना)	(अथ समस्यापूरणम्)
श्रीरामचन्द्र महाराज के अभिषेक में मद से विह्वल हुई (किसी) तरुणी के हाथ से गिरा हुआ स्वर्ण घट सोपान (ज़ीना) मार्ग में ठठ इत्यादि शब्द करता है.	रामाभिषेके मदविह्वलाया हस्तात्च्युतो हेमघटस्तरुण्याः। सोपानमार्गे प्रकरोति शब्दं ठठठठठठठठठः ।
यह चौथे पाद की समस्यापूर्ति है.	अत्रचतुर्थपादसमस्या पूर्तिः
* (सबके दो) सुमति और कुमति सम्पत्ति और आपत्ति का कारण होती है	* सर्वस्य द्वे सुमतिकुमती सम्पदापत्तिहेतू.
* (एकही गोत्र में) समर्थ पुरुष होता है जो कुटुम्ब को पालता है.	* एको गोत्रे प्रभवति पुमान् य. कुटुम्बं बिभर्ति.
* (बूढ़ा, जवान के) साथ परिचय से स्त्रियों से त्याग दिया जाता है.	* वृद्धो यूना सह परिचयात् त्यज्यते कामिनीभिः.
* स्त्री, पुरुष की तुल्य जब प्रभु हो जाय तभी वह घर नष्ट जानो.	* स्त्री पुंवश्च प्रभवति यदा तद्धि गेहं विनष्टम् । १
(पहेलियां)	(प्रहेलिकाश्च)
दूर जाय पर पग नहीं, साक्षर पण्डित नाहिं। बेमुख स्फुट बोले सदां जान सो पण्डित माहिं ॥ (चिट्ठी).	अपदो दूरगामी च साऽक्षरो नच पण्डितः अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति सपण्डितः। २ (पत्रम्)
* ये चार पाणिनि महाराज के सूत्र हैं इन सूत्रों को ही अवलम्बन कर किसी कवि ने समस्या पूरण की है.	* इमानि चत्वारि पाणिनेः सूत्राणि, एतान्येवावलम्ब्य केनचित्कविना समस्यापूर्तिः कृता.

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
एक आंख एक काक नहिं, बिल चाहे नहिं सर्प । बड़े बड़े जलधी न गलो कहो जो रागी दर्प ॥ (सुई)	एकचक्षुर्न काकोऽयं बिलमिच्छन्न पन्नगः क्षीयते वर्धते चैव न समुद्रो न चन्द्रमाः । २ (सूचिका)
वृक्ष अग्रवासी न खग, तीन नेत्र नहिं शर्व। वल्कल धारी सिद्ध नहिं, जल धारी नहिं अभ्र ॥ (नारियल.)	वृक्षाग्रवासी नच पक्षिराजस्त्रिनेत्रधारी नच शूलपाणिः त्वग्वस्त्रधारी नच सिद्धयोगी जलं च बिभ्रन् घटो नमेघः ।४। (नारिकेलफल)
अंस्थि नहीं और मिंस नहीं, वे अङ्गुलि की बाँह । नहिं पदयुग पर आपही दृढ़ चिपटे वपुमांहि ॥ (अंगरखा.)	अस्थि नास्ति शिरो नास्ति बाहुरस्ति शिरङ्गुलिः नास्ति पादद्वयं गाढमङ्गमालिङ्गति स्वयम् (५) (कञ्चुकः)
आदि नहीं जेहि अन्त नहिं, बीच में ठहरे जोय। है तेरे मेरे भी वह, कह सुनाय जो होय ॥ (आंख.)	न तस्यादिर्नतस्यान्तो मध्ये यस्तस्य तिष्ठति तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद्वद ६ (नयनम्.)
पैदा हुई नरनारि से, देह रहित वह नारि। वेमुख पर बोले अधिक, जात मात्र बिनशाहि । (चुटकी.)	नरनारी समुत्पन्ना सा स्त्री देहविवर्जिता । अमुखी मुखते शब्दं जातमात्रा विनश्यति क्षोटिका (चुटकी.),
काली क्या है (कौओं की पंक्ति); मीठी या प्रियक्या है (स्त्री); शीतल वहनेवाली गङ्गा कौन सी है (काशी के नीचे बहनेवाली); किसको कृष्ण ने मारा (कंसको); किसको शीत नहीं सताता (कम्बल वाले को) । इसी श्लोक में सवाल जवाब हैं किम् शब्दको अलग करके पढ़ने में प्रश्न हैं और उसे मिलाकर पढ़ने में उत्तर है.	काकाली, का मधुरा काशीतलवाहिनी गङ्गा । कंसंजघान कृष्णः कंबलवन्तं न बाधते शीतः ।१। अस्मिन् श्लोके एव प्रश्नोत्तरे स्तः किम् शब्दस्य पृथक्पठने प्रश्नः तत्संयोज्यपठने उत्तरम्.

चौबीसवां अध्याय—चतुर्विंशोऽध्यायः ।

बृहच्चर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
अब प्रातःकाल सेही दिन का कृत्य कहते हैं.	अथ प्रातःकालादेव दिनकृत्यमाह.
सम्पूर्ण पापों की शांति चाहने वाला और आयु की रक्षा चाहने वाला मनुष्य चार घड़ी के तड़के उठकर अपने इष्टदेव का स्मरण करे तब "महाभारत में श्रीमद्वेदव्यासकृत प्रातःस्मरणीय स्तोत्र को पढ़े वैसेही "महर्षि भगवान् वेदव्यास धर्मात्मा चार श्लोकों से इस संहिता को पहिले बनाकर अपने पुत्र शुकदेव को पढ़ाते हुए ।१। हजारों माता पिता और सैकड़ों पुत्र और स्त्री संसार में देखेगये देखेजाते हैं और देखे जायंगे ।२। हज़ारों शोक की जगह सैकड़ो भय की जगह हररोज मूढ़ को मालूम होती है पण्डित को नहीं ।३। भुजा उठाकर मैं चिल्लाता हूं और कोई मेरी नहीं सुनता धर्म से अर्थ और काम होते हैं यह किसलिये सेवन नहीं कियाजाता ।४। मनुष्य न कभी कामना से न भय से न लोभ से जीवन के लिये भी धर्म	सर्वाघशान्त्यर्थं, आयुषोरक्षार्थं च मनुष्यो मासे मुहूर्त उत्थाय स्वेष्टदेवं स्मरेत् तत श्रीमद्वेदव्यासकृतं महाभारतान्तर्गतं प्रातःस्मरणीय "महर्षिर्भगवान्व्यासः कृत्वेमां संहितां पुराण्येकैकयतुर्भिर्धर्मात्मा पुत्रमध्यापयच्छुकम् ।१। माता पितृसहस्राणि पुत्रदारशतानि चासंसारेष्वनुभूतानि यान्ति यास्यन्ति चापरे ।२। शोकस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि च । दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति न पण्डितम् ।३। ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष न च कश्चिच्छृणोतु मे धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते ।४। न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतो धर्मो नित्यः सुखदुःखेत्वनित्ये जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः ।५। इमां भारतसावित्रीं प्रातः प्रातः पठेत्तु यः स भारतफलं प्राप्य परं ब्रह्माधिगच्छति" ।६। पठेत् । तदनन्तरं

बृहच्चर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच।

हिन्दी।	संस्कृत।
को न छोड़े क्योंकि धर्म नित्य है और सुख दुःख अनित्य हैं तैसेही जीव नित्य है और इस का हेतु अनित्य है।५। हररोज़ सवेरे जो मनुष्य भारतसावित्री को पढ़ेगा वह महाभारत का फल प्राप्त करके पर ब्रह्म को प्राप्त होगा। इस के अनन्तर "पवित्रकीर्तिं राजानल, - पवित्र कीर्तिं राजा युधिष्ठिर और पवित्र कीर्तिं श्रीजानकीजी और पवित्र कीर्तिं श्रीभगवान" स्मरण करे फिर "अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनूमान् और विभीषण कृपाचार्य और परशुराम ये सात चिरंजीवी हैं इन सातों को तथा आठवें मार्कण्डेय ऋषि को जो स्मरण करता है वह सम्पूर्ण व्याधियों से रहित हुआ सौ वर्ष जीता है"। फिर "अहल्या द्रौपदी, सीता, कुन्ती तथा मन्दोदरी इन पांचों को जो नित्य स्मरण करता है महापातक का नाश करने वाला है."	"पुण्यश्लोको नलोराजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः" अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमाँश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविन॥ सप्तैतान्सस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः॥ पुनः, अहल्याद्रौपदी सीता, कुन्ती मन्दोदरी तथा। पञ्चकन्या स्मरेन्नित्यं, महापातकनाशनम्.
फिर खोटे स्वप्न के फल को दूर करने वाला यह श्लोक पढ़े—	पुनः दुःस्वप्ननाशनमिमं श्लोकं पठेत्.
काशी की उत्तर दिशा में कुक्कुट नाम का एक द्विज है उसके स्मरण सेही दुःस्वप्न सुस्वप्न होजाता है.	काशीत उत्तरे भागे, कुक्कुटो नाम वै द्विजः। तस्य स्मरणमात्रेण, दुःस्वप्नः सुस्वप्नो भवेत्.

वृद्धचर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तब मनुष्य सवेरे उठ कर दही, घी दर्पण, सफ़ेद सरसों, बेल, सोना, माला घोड़ा हाथी, गौ ब्राह्मण हल्दी, दूब इनको या इन में से किसी को देखे। नकि अधर्मी, कुत्ता, बिल्ली इत्यादि को, यदि ये चीज पास में नहीं तो अपनेही हाथ देख ले.	ततो जनः प्रातरुत्थाय दधि, आज्यं, मुकुरं सिद्धार्थं (श्वेतसर्षपं) बिल्वं, स्वर्णम् स्रजं. अश्वं गजं, गां, विप्रं, हरिद्रां, दूर्वामेतत्पञ्चतयं वा पश्येत् नत्वधर्मिणं श्वानं मार्जारादिकं यद्येतानि वस्तून्यभ्याशस्थानि नस्युस्तदावास्वहस्ताभ्यामवलोकयेत्.
इसके बाद गाँव से या नगर से बाहर नैऋत दिशा में शूरवीर के हाथ जाने की दूरतक (कमसेकम २००-कदम) शुद्ध मिट्टी और जल पात्र लेकर कीड़े मकोड़े से रहित जगह में जाकर मिट्टी और जल को धरन रख कर यज्ञ में काम न आनेवाले सूखे तिनकों से जमीन को ढककर कर्ण या कंठ में यज्ञोपवीत लटका चुप चाप नाक और मुंह मूंद कर दिन में उत्तर को मुंह कर रात में दक्षिण की ओर मुंह कर पाखाना पेशाब फिर, ढेले इत्यादि से गुदा साफ कर और वहां से उठकर पहिले लाये हुए मिट्टी और जल पात्र लेकर गोल आमले के बराबर मिट्टी ले जल से दोबार इन्द्रिय को साफ़ कर फिर मिट्टी और जल से तीन	तदनन्तरं ग्रामान्नगराद्वा बहिर्नैऋत्यां वीरपुरुषेणाढ्यं शुद्धमृदं वाप्तपात्र श्चादाय कीटादिशून्यस्थलं गत्वा मृत्तिकां जलपात्रं च निधायायज्ञियैः शुष्कैस्तृणैर्धरामाच्छाद्यप्रावृतशिराः कण्ठलम्बितयज्ञोपवीतः तूष्णीं घ्राणाक्ष्येपिधाय दिवोदङ्मुखो नक्तं दक्षिणामुखो मूत्रपुरीष उत्सृज्य लोष्टादिना गुदं परिमृज्योत्थाय पूर्वगृहीतमृज्जलपात्रे गृहीत्वाद्रांमलकमात्रमृज्जलैर्द्विवारं शिश्नशौचं कृत्वा पुनर्मृज्जलैस्त्रिवारमपानं संशोध्य पुनर्जलेनैव लिङ्गगुदे प्रक्षाल्य शुद्धमृत्सिकयैकवार हस्त प्रक्षाल्य शुद्ध भूमिभागस्थान्यमृज्जलेन दशवारं वामकरं प्रक्षाल्य ततः करद्वयं सप्तवारं मृज्जलैः प्रक्षाल्य पादावपि अनयैव रीत्या त्रिः प्रक्षाल्यान्यजलेन हस्त-

गृहचर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
बार गुदा को शुद्ध कर फिर जल सेही लिंग और गुदा धोकर शुद्ध मिट्टी से एक बार हाथ धो और शुद्ध जगह पर आ दूसरी मिट्टी और जल से दस बार बाम हाथ को धो और फिर दोनों हाथों को सात बार मिट्टी और जल से धो, पावों को भी इसी रीति से तीन बार धो, दूसरे पानी से बारह कुल्ले बाँई तरफ़ कर जल के पात्र को तीन बार माँज जनेऊ ठीक कर दोबार आचमन करे.	शगद्वयान्यामभागे कृत्वा जलपात्रं धिःपर्युक्ष्य उपवीती द्विराचामेत्.
अब दाँतन करना—दाँतन, बारह अंगुल चौड़ी और कनी उंगली के नौंक की बराबर मोटी, सीधी, बिना गांठ या खखोड़र की करनी चाहिये। एक २ दांत को मुलायम कूंची से या दांतों को शुद्ध करने वाले मञ्जन से मसूड़ों पर जोर न देता हुआ, घिसे.	अथ दन्तधावनं—भक्षयेद्दन्तपवनं द्वादशाङ्गुलमायतं कनिष्ठिकाग्रवत् स्थूलमृज्वग्रन्थिलंस्राव्रणं एकैकंवर्जयेद्दन्तं मृदुना कूर्चकेन च, दन्तशोधनचूर्णेन दन्तमांसान्यबाधयन्.
घिकुआ में शहद मिलाकर या तेल और सेंधा नमक मिलाकर या तेजोवती चूर्ण से दांत नित्य साफ़ करे.	क्षौद्रत्रिकटुकाक्तेन तैलसिन्धुभवेन वा चूर्णेन तेजोवत्याश्च दन्तान्नित्यं विशोधयेत्.
अब दांतन के योग्य लकड़ी वर्णन करते हैं.	अथ दन्तधावनार्हाणि काष्ठान्याह.
आक की लकड़ी में वीर्य, बड़ में दीप्ति, कआ में विजय, पिलखन में धन	अर्के वीर्यं वटे दीप्तिः करञ्जे विजयो भवेत् प्लक्षे चैवार्थसम्पत्तिर्वदर्यांम-

वृहच्चर्यांचन्द्रोदयाद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
दाँतन, घेर में मीठी आवाज़, खैर में मुख की सुगन्ध, बेल में बहुत-सा धन, गूलर में वाणी की सिद्धि, आम में आरोग्यता, कदम में धैर्य और बुद्धि और चम्पा में दृढ मति, सिरस में कीर्ति, सौभाग्य, उम्र, और आरोग्यता; आँगा में धैर्य, बुद्धि, प्रज्ञा शक्ति तैसेही आवाज़; अनार में सुन्दर आकार, ककुभ (अर्जुन) कुड़ा में तैसेही, जाती, तगर और मन्दार इन से खोटा स्वप्न नाश होता है.	धुरो ध्वनिः खदिरे मुखसौगन्ध्यं बिल्वे तु विपुलं धनं उदुम्बरे तु वाक्सिद्धिरार्के त्वारोग्यमेव च कदम्बे तु धृतिर्मेधा, चम्पके तु दृढा मतिः शिरीषे कीर्तिसौभाग्यमायुरारोग्यमेव च अपामार्गे धृतिर्मेधा प्रज्ञा शक्तिस्तथा ध्वनिः दाडिम्यां सुन्दराकारः ककुभे कुटजे तथा, जातीतगरमन्दारैर्दुःस्वप्नश्च विनश्यति.
और लकड़ी निषिद्ध हैं। अब अन्दाज सुनो.	निषिद्धान्यन्यानि काष्ठानि । अथ प्रमाणं शृणु.
ब्राह्मणों की दांतन १२ अंगुल की, और क्षत्रियों की १० अंगुल की, वैश्यों की १८ अंगुल की और शूद्रों की ६ अंगुल की होती है.	द्वादशाङ्गुलं विप्राणां क्षत्रियाणां दशाङ्गुलं अष्टाङ्गुलञ्च वैश्यानां शूद्राणान्तूपदङ्गुलम्.
स्त्रियों की दांतन उससे चौथाई अंगुल लेनी चाहिये.	दन्तकाष्ठन्तु गृह्णीयात् स्त्रीणां तच्चतुरङ्गुलं.
अब कुल्ला करने की तरकीब लिखी जाती है.	अथ गण्डूषविधिर्लिख्यते.
बारह आँचामन्तर, और पेशाब जाने पीछे चार और भोजन के पीछे १६ कुल्ले करे.	कुर्याद्द्वादशगण्डूषान् पुरीषोत्सर्जने ततः मूत्रोत्सर्गे च चतुरो भोजनान्ते तु षोडशः.

वृद्धचर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तब मनुष्य स्नान, स्नान के पीछे सन्ध्यावन्दन और अपने इष्ट देव का पूजन उसके पीछे यथा शक्ति गायत्री का जाप और * पांच महा यज्ञ करे.	ततो जनः स्नानं, स्नानानन्तरं सन्ध्यवन्दनं स्वेष्टदेवार्चनं तत्पश्चाद्गायत्री जापं * पञ्चमहा यज्ञाँश्च समाचरेत्.
तब भोजन के आदि में मंगलीक वस्तुओं का जैसे अग्नि, गौ, जल, ब्राह्मण सोना, घी, सूर्य, और राजा इन का दर्शन और परिक्रमा करे। तब बलिवैश्वदेव और भोजन का ईश्वरार्पण "ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतं ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितं भक्ष्यंभोज्यंत्वया नित्यं नैवेद्यं प्रतिगृह्यतां पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः" "विश्वात्मा प्रीयतां" इत्यादि वाक्यों से करना। इसके अनन्तर भोजन पहिले मीठी चीज़ोंका उसके बाद औरों का, खाकर सौ पैंड़ चल ले फिर पाट पर सीधा लेटा हुआ आठ उसास ले और उनके दुगुने दाहिनी करवट में और उनके दुगुने बाईं करवट में	ततो भोजनादौ माङ्गल्यवस्तूनां यथा अग्निगोजलब्राह्मणस्वर्णघृतादित्यराज्ञां दर्शनं प्रदक्षिणञ्च कुर्यात् ततो बलिवैश्वदेवं भोजनस्येश्वरार्पणञ्च "ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतं ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितं भक्ष्यभोज्यं त्वया नित्यं नैवेद्यं प्रतिगृह्यतां, पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति, तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः" विश्वात्मा प्रीयतामित्यादि वाक्यैः" कुर्यात् ततो भोजनं मिष्टवस्तूनां प्रथमं तदनन्तरमन्येषाम्; भुक्त्वा शतपदं गच्छेत् पुनः शय्यां श्वासानष्टौ समुत्तानस्तान्द्विः पार्श्वे तु दक्षिणे ततस्तद्द्विगुणान्वामे पश्चात्सुप्याद्यथा सुखं ग्रीष्मतौ तु दिवाशयनं सुखप्रदं प्रायशः पित्त-
* पहिले अध्याय में स्पष्टरीति से देखो.	* नोट प्रथमे ऽध्याये स्फुट पश्यत .

बृहच्चर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
पीछे चाहे जैसे सोवे । ग्रीष्म ऋतु में दिन को सोना सुख देने वाला है और अक्सर पित्त मिजाज़ वालों को बहुत ज़रूरी है और दूसरी ऋतुओं में दिनका सोना मना है.	प्रकृतीनाञ्चात्यावश्यकमन्यर्तुषु च दिवास्वापो निषिद्धः.
तिस के बाद घर के काम और उनके अभाव में भक्ति रस में पगेहुए पारमार्थिक ग्रन्थों को शाम तक पढ़े वा सुना करे.	तदनन्तरं गृहकृत्यान् तदभावे भक्तिरसाक्रान्तपारमार्थिकान्ग्रन्थान् यावत्सन्ध्यासमय पठेच्छृणुयाद्वा.
फिर पहिलीही तरकीब से शौचादि काम करके सायकाल को सन्ध्या करे सन्ध्या समय भोजन, स्त्री प्रसंग, सोना पढ़ना, लिखना, रास्ता चलना ये काम छोड़ दे । दीये जलने के पीछे कोई धर्म पुस्तक वगैरह पढ़ कर और ईश्वर के गुणानुवाद गाकर या सुन कर सूक्ष्म भोजन करे.	ततः पूर्वेणैव विधिना शौचादिकं कृत्वा सायं सन्ध्यामुपासीत । सायं काले आहारं मैथुनं निद्रां सम्पाठं मार्गगमनमैलानि कर्माणि वर्जयेत् । दीपकज्वलनानन्तरं कानिचिद्धर्मपुस्तकानि पठित्वेश्वरगुणानुवादांश्च गात्वा श्रुत्वा वा लघु भोजनं कुर्वीत.
तब दूसरे पहर के आने पर कामशास्त्र में कहे हुए दिनों में ही क्रीड़ा घर में जाय वहां पहिले पाँव धोकर स्नाद को वैदिक गारुड़ी मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर लठिया, जल का पात्र	ततो द्वितीये प्रहरागमे कामशास्त्रप्रोक्तेष्वेव दिवसेषु रतिमन्दिरं व्रजेत् । तत्र पूर्वं पादौ प्रक्षाल्य शय्यां वैदिकैर्गारुडैर्मन्त्रैरभिमन्त्र्य वेणुदण्डमम्बुपात्रञ्चाभ्यानि पुष्पादीनि रक्षा-
१ नोट अमावस पून्यौ को छोड़ ऋतु से समतिथि ४, ६ इत्यादि में रवि, मंगल, गुरुवार को और पुरुष नक्षत्रों में ग्राम्यधर्म श्रेष्ठ है.	१ नोट पक्षद्वयपूर्णिमां हित्वा ऋतुतः समासु तिथिषुरवि कुजगुरुवारेषु, पुंनक्षत्रेषु च ग्राम्यधर्मः प्रशस्तः.

बृहच्चर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच।

हिन्दी।	संस्कृत।
और भी पुष्प वगैरह रमणीय चीजें सिरहाने रख कर सोवे इस प्रकार दिन के काम और रात के काम समाप्त हुए.	णि वस्तूनि शिरःस्थाने निधाय स्वपेदिति दिनचर्या रात्रिचर्य्या च समाप्ता.
गौड़ वंश उत्पन्न कृष्ण पादपङ्कज भ्रमर श्रीदुर्गाप्रसाद पुत्र सुखानन्दनामक भयो ॥ १ ॥	गौड़ान्ववायजातः गोविन्दांघ्रिसरोजपट्पदोऽयम् दुर्गाप्रसादसूनुः सुखानन्दाख्यत्रिपाठीति ॥ १ ॥
उन्निस सो इकसठ बरश पुरुषोत्तम तह मास शुक्ल चतुर्थी शुक्र को शिवहि समर्प्यो दास ॥ २ ॥	रसारसाङ्कभूमिते, हायने मासि तु सहस्यनामके उशनसि शुक्लचतुर्थ्यां कृत्वा पूर्णमथार्पयच्छिवाय ॥ २ ॥

इति श्रीसुखानन्दत्रिपाठिविरचिते व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोधे प्रथमो भागः।

प्रथमो भागः समाप्तः।

श्रीगणेशायनमः ।

अथ व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोधे ।

द्वितीयो भागः ।

यशोदानन्दनं नत्वा बालबोधाय भूरिशः
सारमुद्धृत्य कौमुद्या वर्ण्यते नरभाषया ॥ १ ॥

अथ सन्धिप्रक्रियाप्रदर्शकः

प्रथमोऽध्यायः ।

[जबदो अक्षर निकट होकर परस्पर मिलजाते है और उनके मिलने से जो विकार होता है वह सन्धि कहाता है) सन्धि मुख्य तीन प्रकारकी हैं १ स्वर-सन्धि २ व्यञ्जनसन्धि ३ विसर्गसन्धि ।) जहां सन्धि होसक्ती हो और वहां न हो वह एक चौथी प्रकृतिभाव सन्धि कहलाती है, क्रमसे प्रत्येक का विवरण देगे।

जब स्वरके साथ स्वरका संयोग होता है उसे स्वरसन्धि कहते है और वह ५ प्रकार की है, १ यण्, २ दीर्घ, ३ गुण, ४ वृद्धि और ५ अयादि चतुष्टय।

१ यण्—यदि ह्रस्व वा दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ इनसे परे अपने सवर्ण स्वरको छोड़ कोई स्वर परे हो तो क्रमसे उपरोक्त वर्णों के स्थान में य्, व्, र्, ल् होजाते है (इकोयणचि) जैसे सुधी+उपास्यः सुध्युपास्यः, मधु+अत्र मध्वत्र, पितृ+आज्ञा पित्राज्ञा, ऌ+अनुबन्धः लन्नुबन्धः ।

२ दीर्घ—ह्रस्वचा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ, ऌ से परे इनके सवर्णी अक्षर परे हों तो दोनों मिलकर एक दीर्घ स्वर होजाता है। (अकः सवर्णेदीर्घः) जैसे तव+आदरः तवादरः, दधि+इह दध्यिह, साधु+उक्तिः साधूक्तिः, पितृ+ऋणम् पितॄणम् ।

३ गुण—यदि अ, आ से परे ह्रस्व वा दीर्घ इ, उ, ऋ हो तो क्रम से ए, ओ, अर् होजाता है (आद्गुणः) जैसे देव + इन्द्रः देवेन्द्रः, नील + उत्पलं नीलोत्पलं, देव + ऋषिः देवर्षिः ।

४ वृद्धि—यदि अ वा आ से परे ए, ऐ, ओ, औ वा ऋवर्ण होतो दोनों मिलकर क्रम से ऐ, औ और आर होजाते हैं (वृद्धिरेचि) जैसे एक + एकम् एकैकम्, जल + ओघः जलौघः, शीत + ऋतः शीतार्तः ।

५ अयादिचतुष्टय—यदि ए, ऐ, ओ, औ से परे अपने सवर्ण को छोड़ और कोई स्वर होतो क्रम से अय्, आय्, अव्, आव्, हो जाते हैं (एचोऽयवायावः) जैसे शे + अनम् शयनम्, विनै + अकः विनायकः, भो + अनं भवनम्, पौ + अकः पावकः ।

६ यदि पदान्त के ए वा ओ से परे अ आवे तो उस आकार का लोप करके उसकी जगह (ऽ) यह चिन्ह कर देते हैं (एङः पदान्तादति) जैसे कवे + अत्र कवेऽत्र, पटो + अत्र पटोऽत्र ।

७ यदि पदान्त के ए वा ओ से परे अकार को छोड़ कोई स्वर वर्ण रहे तो विकल्प से अय्, अव् के य् और व् का लोप हो जाता है दूसरे पक्ष में अय् और अव् ही बने रहते हैं (लोपः शाकल्यस्य) सखे + आगच्छ सख आगच्छ, सखयागच्छ, प्रभो + एहि प्रभएहि, प्रभवेहि ।

८ यदि किसी उपसर्ग के अ वा आ से परे एध् और इण् धातुओं के 'ए' को छोड़ और कोई ए वा ओ होतो दोनों मिल कर ए और ओ ही रहता है ऐ और औ नहीं (एङि पररूपम्) जैसे प्र + एषयति प्रेषयति, उप + ओषति उपोषति, परा + एधते परैधते ।

९ यदि अवा ओ से परे ओष्ठ और ओतु हों और समास किये जायतो विकल्प से औ होजाता है यदि समास न हो तो ओ ही होता है (ओत्वोष्ठ्यो. समासेवा) जैसे बिम्ब + ओष्ठः बिम्बौष्ठ, बिम्बोष्ठ, स्थूल + ओतुः स्थूलौतुः स्थूलोतुः, तव + ओष्ठः तवौष्ठः ।

अथप्रकृतिभावसन्धिः ।

१ ऐसे अव्यय जो एक स्वरवाली हों या जिनके अन्त में ओ हो तो वहां सन्धि, योग होने पर भी नहीं होती (निपात एकाजनाङ्, ओत्) जैसे आ + एवम् अहो + अपेहि ।

२ यदि द्विवचन के ई, ऊ या ए हों तो ये भी सन्धि योग होने पर सन्धि को प्राप्त नहीं होते (ईदूदेद्विवचनमगृह्यम्) जैसे कवी + इमो, साधू + आगता, हरे एते ।

३ अदस् शब्द के भी ईकार ऊकार सन्धि को प्राप्त नहीं होते (अदसोमात्) जैसे असी + अश्वा, असू + अर्भको ।

अथ व्यञ्जन सन्धिः ।

जब व्यञ्जन के साथ व्यञ्जन का या स्वर का संयोग होता है तो उसे व्यञ्जन (हल्) सन्धि कहते हैं ।

१ सकार या तवर्ग को शकार या चवर्ग का योग हो तो क्रमसे शकार चवर्ग होजाते हैं (स्तोः श्चुना श्चुः) जैसे हरि + शेते हरिश्शेते, सत् + चित् सच्चित् ।

२ सकार वा तवर्ग को षकार वा टवर्ग का योग होतो क्रमसे षकार वा टवर्ग होजाते हैं (ष्टुनाष्टुः) जैसे राम + षष्ठ रामष्षष्ठ, तत् + टीका तट्टीका

३ पदान्त के जो प् ट् त् क् प् सो क्रमसे ज्, ड्, द्, ग्, ब् होजाँय यदि कोई स्वर या ह् य व र ल या किसी वर्ग का तृतीय चतुर्थ अक्षर परे हो परञ्च पञ्चम अक्षर परे होने विकल्प से अनुनासिक अक्षर भी होजायेंगे (झलां जशोऽन्ते, यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा) जैसे वाक् + ईश वागीश, चित् + रूपम् चिद्रूपम्, एतत् + मुरारिः एतद्मुरारिः एतन्मुरारिः ।

४ तवर्ग से परे लकार हो तो तवर्ग के स्थान में भी लकार होजाता है परन्तु न् के स्थान में अनुनासिक ही लँ होता है (तोर्लि) तत् + लुनाति तल्लुनाति, भवान् + लिखति भवाँल्लिखति ।

५ ष् ट् त् क् प् के उत्तर हकार हो तो उनके स्थान में क्रम से ग्, ड्, ध्, ब्, भ् अर्थात् जिसवर्ग के वे अक्षर हों उसी का चौथा अक्षर उस "ह्" के स्थान में विकल्प से होजाता है और पहिले ष् आदि अक्षरों को उसी वर्ग का तीसरा अक्षर होजाता है (झयोहोऽन्यतरस्याम्) जैसे, दिक् + हस्ती दिग्घस्ती दिग्हस्ती ।

६ ष् ट् त् क् प् के उत्तर जो शकार उसको विकल्प से "छ" हो यदि कोई स्वर या ह् य् व् र् वर्ण परे होवे (शश्छोऽटि) जैसे तत् + शिवः तच्छिवः, तच्शिवः ।

७ ह्रस्व से परे जो पदान्त के न् ङ् ण् वे स्वर परे होने पर द्वित्व हो जाँय (ङमो ह्रस्वादचिङमुण् नित्यम्) जैसे राजन्+इह राजन्निह, प्रत्यङ्+आत्मा प्रत्यङ्ङात्मा, सुगण्+इह सुगण्णिह ।

८ यदि नकारान्त पद से परे छ् ह् थ्, ष् ट्, त् होंतो सकार का आगम और नकार को अनुस्वार होजाता है (नश्छव्यप्रशान्) जैसे नृत्यन्+चकोरः नृत्यँश्चकोरः ।

९ अनुस्वार से ऊष्मवर्ण छोड़ कोई व्यञ्जन परे होतो उस व्यञ्जन का सवर्णी पञ्चमाक्षर होजायगा । परञ्च यदि अनुस्वार पदान्त का होतो विकल्प से उत्तर वर्ण का पञ्चमाक्षर होगा (अनुस्वारस्यययि परसवर्णः । घपदान्तस्य) जैसे अ+कित+अङ्कित, धं+चित, धञ्चित, त्व+करोषि त्वङ् करोषि, त्वंकरोषि ।

१० यदि ह्रस्व स्वर से 'छ' परे होतो 'च्छ' होजाता है, और कहीं दीर्घ स्वर के अनन्तर भी होता है (छेच, दीर्घात्) परन्तु पदान्त दीर्घ के अनन्तर विकल्प से 'च्छ' होता है (पदान्ताद्वा) जैसे तव+छत्र, तवच्छत्र, म्लेच्छ+छ म्लेच्छ, लक्ष्मी+छाया लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया ।

अथ विसर्गसन्धिः ।

१ जब विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन का संयोग होता है तो उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं । विसर्ग से परे सकार या तवर्ग होतो सकार और शकार या चवर्ग होतो शकार और षकार या टवर्ग हो तो षकार हो जाता है (विसर्जनीयस्यस०) विष्णुः+त्राता विष्णुस्त्राता, पूर्ण०+चन्द्रः पूर्णश्चन्द्रः, धनुः+टङ्कार० धनुष्टङ्कारः ।

२ यदि विसर्ग से परे "अ" हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है और 'अ' का लोप हो जाता है और यदि किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम या य् र् ल् व् ह् परे हो तो भी विसर्ग का 'ओ' हो जाता है (अतोरोरप्लुतादप्लुते) (हशिच) जैसे शिव+अर्च्य० शिवोऽर्च्यः, शिव०+वन्द्यः शिवोवन्द्य० ।

३ यदि भो, भगो०, अघोः और अकार से परे विसर्ग हो और उनसे परे अ को छोड़ और कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है । और यदि

आकार से परे विसर्ग हो और उसके परे किसी वर्ग का तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण या य र ल व ह परे हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और फिर सन्धि नहीं होती (भोभगो अघो अपूर्वस्ययोऽशि) जैसे चन्द्रः+उदेति चन्द्रउदेति, अग्नाः+अमी अग्नाअमी।

४ ग आ को छोड़ किसी स्वर से परे विसर्ग हो और उससे परे कोई स्वर या किसी वर्ग का तृतीय चतुर्थ पञ्चम अक्षर या य र ल व परे हो तो विसर्ग का रकार हो जाता है (नामिनोरः चं० पू०) जैसे कविः+अयं कविरयम्, शिशुः+हसति शिशुर्हसति।

५ यदि अकार के अनन्तर रकार का विसर्ग हो और उससे परे कोई स्वर, किसी वर्ग का तृतीय चतुर्थ पञ्चम अक्षर या ह य व र ल परे हों तो विसर्ग का फिर रकार हो जाता है (रः च० पू०) जैसे पुनः+अपि पुनरपि, मातः+देहि मातर्देहि।

६ यदि रकार से परे रकार हो तो पहिला र लोप हो जाता है और उसका पूर्व ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है (रोरि। ढ्रलोपेपूर्वस्यदीर्घोऽणः) जैसे पुनः+रमते पुनारमते, विधुः+राजते विधूराजते।

७ सः और एषः शब्द का विसर्ग 'अ' को छोड़ और कोई वर्ण परे रहते लोप हो जाता है (एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासेहलि) जैसे सः+हसति सहसति, एषः+आगतः एषआगतः।

न् का ण् होना।

८ अ आ र ष् से परे न् हो तो वह ण् में बदल जाता है और यदि इनके बीच में कोई स्वर, कवर्ग, पवर्ग और य व ह, और अनुस्वार, एक या अनेक आपस में भी कुछ ण् के बदलने में बाधा नहीं होती। (रषाभ्यांनोणः समानपदे, अट्कुप्वाङ्नुम् व्यवायेऽपि) जैसे चतुर्णाम्, मूर्खेण, वृक्षेण।

म् का ण् होना।

९ कवर्ग, और अ आ को छोड़ शेष स्वर, और ह य व र ल इनसे परे किसी सूत्र का किया म् या किसी प्रत्यय का अवयव म् हो तो ण में बदल जाता है (आदेशप्रत्यययोः) जैसे सुपाम्, नदीषु, सर्वेषाम्।

षड्लिङ्गरूपप्रदर्शको द्वितीयोऽध्यायः ।

(पुं) अकारान्त राम (ईश्वर) रमन्ते योगिनो भूतानि चा यस्मिन्, रम् + घञ्।

प्र.	रामः	रामौ	रामाः
द्वि.	रामम्	रामौ	रामान्
तृ.	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
च.	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पं.	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
ष.	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
स.	रामे	रामयोः	रामेषु
सं.	हे राम	रामौ	रामाः

आ० विश्वपा (विश्व का रक्षक) विश्वं पातीति, विश्व + पा + क्विप्।

प्र.	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः
द्वि.	विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः
तृ.	विश्वपा	विश्वपाभ्यां	विश्वपाभिः
च.	विश्वपे	,,	विश्वपाभ्यः
पं.	विश्वपः	,,	,,
ष.	विश्वपः	विश्वपोः	विश्वपाम्
स.	विश्वपि	,,	विश्वपासु
सं.	हेविश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः

इ—हरिः (ईश्वर) हरति पापानिति, हृ + इन्।

प्र.	हरिः	हरी	हरयः
द्वि.	हरिम्	हरी	हरीन्
तृ.	हरिणा	हरिभ्यां	हरिभिः
च.	हरये	हरिभ्यां	हरिभ्यः
पं.	हरेः	हरिभ्यां	हरिभ्यः
ष.	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
स.	हरौ	हर्योः	हरिषु
सं.	हे हरे	हरी	हरयः

इ—सखि (मित्र) सहसमानं ख्यायत इति, सह + ख्या + इन्।

प्र.	सखा	सखायौ	सखायः
द्वि.	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृ.	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
च.	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पं.	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
ष.	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
स.	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सं.	हे सखे	सखायौ	सखायः

इ—पर्वी (सूर्य) पातिलोकमिति पा + इ

प्र.	पर्वीः	पर्व्यौ	पर्व्यः
द्वि.	पर्वीम्	पर्व्यौ	पर्व्यः
तृ.	पर्व्या	पर्वीभ्याम्	पर्वीभिः
च.	पर्व्ये	पर्वीभ्याम्	पर्वीभ्यः
पं.	पर्व्यः	पर्वीभ्याम्	पर्वीभ्यः
ष.	पर्व्यः	पर्व्योः	पर्व्याम्
स.	पर्वी	पर्व्योः	पर्वीषु
सं.	हे पर्वीः	पर्व्यौ	पर्व्यः

ई—सुधी (अच्छी बुद्धिवाला) सुष्ठु शोभनाधीर्यस्य सः, सु + धा + ई

प्र.	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वि.	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः

तृ.	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
च.	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पं.	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
ष.	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
स.	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सं.	हे सुधीः	सुधियौ	सुधियः

उ + भानु (सूर्य) भातीति भा + नुक्

प्र.	भानुः	भानू	भानवः
द्वि.	भानुम्	भानू	भानून्
तृ.	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
च.	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पं.	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
ष.	भानोः	भान्योः	भानूनाम्
स.	भानौ	भान्योः	भानुषु
सं.	हे भानो	भानू	भानवः

ऊ—वर्षाभू (मंडूक) वर्षायाम्भव-तीति भू + क्विप्

प्र.	वर्षाभूः	वर्षाभ्वौ	वर्षाभ्वः
द्वि.	वर्षाभ्वम्	वर्षाभ्वौ	वर्षाभ्वः
तृ.	वर्षाभ्वा	वर्षाभूभ्याम्	वर्षाभूभिः
च.	वर्षाभ्वे	,,	वर्षाभूभ्यः
पं.	वर्षाभ्वः	,,	वर्षाभूभ्यः
ष.	वर्षाभ्वः	वर्षाभ्वोः	वर्षाभ्वाम्
स.	वर्षाभ्वि	वर्षाभ्वोः	वर्षाभूषु
सं.	हे वर्षाभूः	वर्षाभ्वौ	वर्षाभ्वः

ऊ—स्वयम्भू (ब्रह्मा) स्वयंभवतीति भू + क्विप्

प्र.	स्वयम्भूः	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
द्वि.	स्वयम्भुवम्	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
तृ.	स्वयम्भुवा	स्वयंभूभ्यां	स्वयम्भूभिः
च.	स्वयम्भुवे	,,	स्वयम्भूभ्यः
पं.	स्वयम्भुवः	,,	,,
ष.	स्वयम्भुवः	स्वयम्भुवोः	स्वयंभुवाम्
स.	स्वयम्भुवि	,,	स्वयम्भूषु
सं.	हे स्वयम्भूः	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः

ऋ—पितृ (पिता) पातिरक्षतीति पा + तृच्

प्र.	पिता	पितरौ	पितरः
द्वि.	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृ.	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
च.	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पं.	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
ष.	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
स.	पितरि	,,	पितृषु
सं.	हे पितः	पितरौ	पितरः

ऐ—रै (धन) रेत्यादद्दाति जनोऽवश्यं-व्यनेन रा + डै

प्र.	राः	रायौ	रायः
द्वि.	रायम्	रायौ	रायः
तृ.	राया	राभ्याम्	राभिः
च.	राये	राभ्याम्	राभ्यः
पं.	रायः	राभ्याम्	राभ्यः
ष.	रायः	रायोः	रायाम्
स.	रायि	रायोः	रासु
स.	हे रायः	रायौ	रायः

औ—गौ (गाय) गच्छतीति गम् + डौ

प्र.	गौः	गावौ	गावः
द्वि.	गाम्	गावौ	गाः

तृ.	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
च.	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पं.	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
ष.	गोः	गवोः	गवाम्
स.	गवि	गवोः	गोषु
सं.	हे गौः	गावौ	गावः

औ—ग्लौ (चन्द्रमा) ग्लायतीति ग्लै + डौ

प्र.	ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः
द्वि.	ग्लावम्	ग्लावौ	ग्लावः
तृ.	ग्लावा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभिः
च.	ग्लावे	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः
पं.	ग्लावः	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः
ष.	ग्लावः	ग्लावोः	ग्लावाम्
स.	ग्लावि	ग्लावोः	ग्लौषु
सं.	हे ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः

अजन्त स्त्रीलिङ्ग आ—रमा (लक्ष्मी) रमयति लोकान्, रम् + अच् + आ

प्र.	रमा	रमे	रमाः
द्वि.	रमाम	रमे	रमाः
तृ.	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
च.	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पं.	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
ष.	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
स.	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सं.	हे रमे	रमे	रमाः

इ—मति (बुद्धि) मन्यते ज्ञायतेऽनया, मन् + क्तिन्

प्र.	मतिः	मती	मतयः
द्वि.	मतिम्	मती	मतीः
तृ.	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
च.	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पं.	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
ष.	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
स.	मत्याम्, मतौ	,,	मतिषु
सं.	हे मते	मती	मतयः

ई—नदी (दर्याञ्च) नदन्ति जलजन्तवोऽस्यां, नद् + अच् + ई

प्र.	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वि.	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृ.	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च.	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पं.	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
ष.	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
स.	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सं.	हे नदि	नद्यौ	नद्यः

उ—धेनु (गौ) धयतिस्नुतामिति धे + नुक्

प्र.	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वि.	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृ.	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
च.	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पं.	धेन्वाः धेनोः	,,	धेनुभ्यः
ष.	,,	धेन्वोः	धेनूनां
स.	धेन्वाम् धेनौ	,,	धेनुषु
सं.	हे धेनो	धेनू	धेनवः

ऊ—भ्रू (भौं) भ्राम्यतीति, भ्रम् + डू

प्र.	भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः

द्वि.	भ्रुवम्	,,	,,
तृ.	भ्रुवा	भ्रूभ्याम्	भ्रूभिः
च.	भ्रुवै, भ्रुवे	,,	भ्रूभ्यः
पं.	भ्रुवाः, भ्रुवः	,,	,,
ष.	,,	,, भ्रुवोः	भ्रुवाम् भ्रूणाम्
स.	भ्रुवाम्, भ्रुवि	,,	भ्रूषु
सं.	हे भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः

ऋ-मातृ (माता) मीयते आद्रियते या; मा + तृच्

प्र.	माता	मातरौ	मातरः
द्वि.	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृ.	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
च.	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पं.	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
ष.	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
स.	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सं.	हे मातः	मातरौ	मातरः

ऐ—सुरै (अच्छे धनवाली) सुष्ठु श्रोभनोरायस्यः सा

प्र.	सुरा:	सुरायौ	सुरायः
द्वि.	सुरायम्	सुरायौ	सुरायः
तृ.	सुरया	सुराभ्याम्	सुराभिः
च.	सुराये	सुराभ्याम्	सुराभ्यः
पं.	सुरायाः	सुराभ्याम्	सुराभ्यः
ष.	सुरायाः	सुरायोः	सुरायाम्
स.	सुरायि	सुरायोः	सुरासु
सं.	हे सुराः	सुरायौः	सुरायः

औ-नौ (नाव) नीयते या सा, नी+डौ

प्र.	नौः	नावौ	नावः
द्वि.	नावम्	नावौ	नावः
तृ.	नावा	नौभ्याम्	नौभिः
च.	नावे	नौभ्याम्	नौभ्यः
पं.	नावः	नौभ्याम्	नौभ्यः
ष.	नावः	नावोः	नावाम्
स.	नावि	नावोः	नौषु
सं.	हे नौः	नावौ	नावः

(अ. नपुं.) अ—ज्ञान (समझ) ज्ञायतेऽनेनेति, ज्ञा + ल्युट्

प्र.	ज्ञानम्,	ज्ञाने	ज्ञानानि
द्वि.	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
तृ.	ज्ञानेन	ज्ञानाभ्यां	ज्ञानैः
च.	ज्ञानाय	ज्ञानाभ्यां	ज्ञानेभ्यः
पं.	ज्ञानात्	ज्ञानाभ्यां	ज्ञानेभ्यः
ष.	ज्ञानस्य	ज्ञानयोः	ज्ञानानाम्
स.	ज्ञाने	ज्ञानयोः	ज्ञानेषु
सं.	हे ज्ञान	ज्ञाने	ज्ञानानि

इ—वारि (जल) वार्य्यतेऽनेनेति, वृ + इन्

प्र.	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वि.	वारि	वारिणी	वारीणि
तृ.	वारिणा	वारिभ्यां	वारिभिः
च.	वारिणे	वारिभ्यां	वारिभ्यः
पं.	वारिणः	वारिभ्यां	वारिभ्यः
ष.	वारिणः	वारिणोः	वारीणां
स.	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सं.	हेवारि,वारे	वारिणी	वारीणि

इ—अक्षि (नेत्र) अश्नुवन्ते व्याप्नुवन्ते रूपादिपदार्थान् येन, अश्+क्+सि

प्र.	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वि.	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृ.	अक्ष्णा	अक्षिभ्यां	अक्षिभिः
च.	अक्ष्णे	अक्षिभ्यां	अक्षिभ्यः
पं	अक्ष्णः	अक्षिभ्यां	अक्षिभ्यः
ष.	अक्ष्णः	अक्ष्णोः	अक्ष्णाम्
स.	अक्षिणि	अक्ष्णि अक्ष्णोः	अक्षिषु
सं.	हे अक्षे	अक्षि इत्यादि	

उ—मधु (शहद) मन्+उ नस्य धः

प्र.	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वि.	,,	,,	,,
तृ.	मधुना	मधुभ्यां	मधुभिः
च.	मधुने	,,	मधुभ्यः
पं.	मधुनः	,,	,,
ष.	,,	मधुनोः	मधूनां
स.	मधुनि	,,	मधुषु
सं.	हे मधो	मधु	इत्यादि

ऋ—धातृ (धाय) दधातीति, धा+तृच्

प्र.	धातृ	धातृणी	धातृणि
द्वि.	,,	,,	,,
तृ.	धात्रा	धातृभ्यां	धातृभिः
च.	धात्रे	धातृभ्यां	धातृभ्यः
पं.	धातुः	धातृभ्यां	धातृभ्य
ष.	धातुः	धात्रोः	धातृणाम्
स.	धातरि	धात्रोः	धतृषु
सं.	हे धातः	धातृ	इत्यादि

ऐ—अरि (शत्रु) सुष्ठु गच्छन्ति तत्

प्र.	अरिः	अरिणौ	अरीणि
द्वि.	,,	,,	,,

शेषं पुंवत्

औ—अम्बौ (आकाश) प्रकर्षेण-दीव्यतीति तत्

प्र.	प्रद्यौः	प्रद्यौनी	प्रद्यूनि
द्वि.	,,	,,	,,

शेषं पुंवत्

औ—सुनौ (अच्छी नाववाला) सुष्ठु शोभनानौर्यत्र तत्

प्र.	सुनुः	सुनुनौ	सुनूनि
द्वि.	,,	,,	,,
तृ.	सुनुना	सुनुभ्यां	सुनुभिः
च.	सुनुने	सुनुभ्यां	सुनुभ्यः
पं.	सुनुनः	सुनुभ्यां	सुनुभ्यः
ष.	सुनुनः	सुनुनोः	सुनुनाम्
स.	सुनुनि	सुनुनोः	सुनुषु
सं.	हे सुनुः		इत्यादि

हलन्त पुल्लिङ्ग च—जलमुच् (बादल) जलंमुञ्चतीति, मुच्+क्विप्

प्र.	जलमुक् ग्	जलमुचौ	जलमुचः
द्वि.	जलमुचं	,,	,,
तृ.	जलमुचा	जलमुग्भ्यां	जलमुग्भिः
च.	जलमुचे	जलमुग्भ्यां	जलमुग्भ्यः
पं.	जलमुचः	जलमुग्भ्यां	,,
ष.	जलमुचः	जलमुचोः	जलमुचां
स.	जलमुचि	,,	जलमुक्षु
सं.	हे जलमुक्		इत्यादि

ज्—वणिज् (बनिया) पणायते व्यवहरतीति पण् + इज् पस्यवत्वम्

प्र.	वणिक्	वणिजौ	वणिजः
द्वि.	वणिजं	वणिजौ	वणिजः
तृ.	वणिजा	वणिग्भ्यां	वणिग्भिः
च.	वणिजे	वणिग्भ्यां	वणिग्भ्यः
पं.	वणिजः	वणिग्भ्यां	वणिग्भ्यः
ष.	वणिजः	वणिजोः	वणिजाम्
स.	वणिजि	वणिजोः	वणिक्षु
सं.	हे वणिक्		इत्यादि

ज्—(सम्राज्) मण्डलेश्वरराजा सम्यक्राजते, राज + क्विप्

प्र.	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः
द्वि.	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः
तृ.	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः
च.	सम्राजे	,,	सम्राड्भ्यः
पं.	सम्राजः	,,	सम्राड्भ्यः
ष.	सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्
स.	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राट्त्सु
सं.	हे सम्राट्		

त्—भूभृत् (पहाड़ वा राजा) भुवं बिभर्तीति, भू + भृ + क्विप

प्र.	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वि.	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
तृ.	भूभृता	भूभृद्भ्यां	भूभृद्भिः
च.	भूभृते	भूभृद्भ्यां	भूभृद्भ्यः
पं.	भूभृतः	भूभृद्भ्यां	भूभृद्भ्यः
ष.	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
स.	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु
सं.	हे भूभृत्		इत्यादि

त्—भावत् (चाहता हुआ) भावनीमि, भाव + शतृ

प्र.	भावन्	भावन्तौ	भावन्तः
द्वि.	भावन्तम्	भावन्तौ	भावतः
तृ.	भावता	भावद्भ्याम्	भावद्भिः
च.	भावते	,,	भावद्भ्यः
पं.	भावतः	,,	भावद्भ्यः
ष.	भावतः	भावतोः	भावताम्
स.	भावति	भावतोः	भावत्सु
सं.	हे भावन्		इत्यादि

त्—श्रीमत् (लक्ष्मीवान्) श्रीर्विद्यतेऽस्य, श्री + मतुप्

प्र.	श्रीमान्	श्रीमन्तौ	श्रीमन्तः
द्वि.	श्रीमन्तम्	श्रीमन्तौ	श्रीमतः
तृ.	श्रीमता	श्रीमद्भ्यां	श्रीमद्भिः
च.	श्रीमते	श्रीमद्भ्यां	श्रीमद्भ्यः
पं.	श्रीमतः	श्रीमद्भ्यां	श्रीमद्भ्यः
ष.	श्रीमतः	श्रीमतोः	श्रीमताम्
स.	श्रीमति	श्रीमतोः	श्रीमत्सु
सं.	हे श्रीमन्		

त्—महत् (बड़ा) मह्यते पूज्यते यः सः, मह् + अति

प्र.	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वि.	महान्तम्	महान्तौ	महतः
तृ.	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
च.	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
पं.	महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
ष.	महतः	महतोः	महताम्
स.	महति	महतोः	महत्सु
सं.	हे महन्	इत्यादि	

द्—सुहृद् (मित्र) सुष्ठुशोभनंहृद-यस्य सः, सु + हृ + क्विप् तुक्च

प्र.	सुहृद्	सुहृदौ	सुहृदः
द्वि.	सुहृदम्	सुहृदौ	सुहृदः
तृ.	सुहृदा	सुहृद्भ्यां	सुहृद्भिः
च.	सुहृदे	सुहृद्भ्यां	सुहृद्भ्यः
पं.	सुहृदः	सुहृद्भ्यां	सुहृद्भ्यः
ष.	सुहृदः	सुहृदोः	सुहृदाम्
स.	सुहृदि	सुहृदोः	सुहृत्सु
सं.	हे सुहृत्		

ध्—युध् (लड़ाई) युध्यत्यसि-मिति, युध् + क्विप्

प्र.	युत्	युधौ	युधः
द्वि.	युधम्	युधौ	युधः
तृ.	युधा	युद्भ्याम्	युद्भिः
च.	युधे	युद्भ्याम्	युद्भ्यः
पं.	युधः	युद्भ्याम्	"
ष.	युधः	युधोः	युधाम्
स.	युधि	युधोः	युत्सु
सं.	हे युत्		

न्—आत्मन् (चित्त) अतति सततं गच्छति, अत् + मनिण्

प्र.	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वि.	आत्मानं	आत्मानौ	आत्मनः
तृ.	आत्मना	आत्मभ्यां	आत्मभिः
च.	आत्मने	आत्मभ्यां	आत्मभ्यः
पं.	आत्मनः	आत्मभ्यां	"
ष.	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
स.	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सं.	हे आत्मन्		

श्—श्वन् (कुत्ता) श्वि + कनिन् या डिन्

प्र.	श्वा	श्वानौ	श्वानः
द्वि.	श्वानम्	श्वानौ	शुनः
तृ.	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
च.	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
पं.	शुनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
ष.	शुनः	शुनोः	शुनाम्
स.	शुनि	शुनोः	श्वसु

न्—युवन् (जवान) यु + कनिन, युमिश्रणामिश्रणयोः

प्र.	युवा	युवानौ	युवानः
द्वि.	युवानम्	युवानौ	यूनः
तृ.	यूना	युवभ्यां	युवभिः
च.	यूने	युवभ्यां	युवभ्यः
पं.	यूनः	युवभ्यां	युवभ्यः
ष.	यूनः	यूनोः	यूनाम्
स.	यूनि	यूनोः	युवसु
सं.	हे युवन्		

न्—गुणिन् (गुणवान्) गुणाः सन्त्यस्य, गुण + इनि

प्र.	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
द्वि.	गुणिनं	गुणिनौ	गुणिनः
तृ.	गुणिना	गुणिभ्यां	गुणिभिः
च.	गुणिने	गुणिभ्यां	गुणिभ्यः
पं.	गुणिनः	गुणिभ्यां	गुणिभ्यः
ष.	गुणिनः	गुणिनोः	गुणिनां
स.	गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
सं.	हे गुणिन्		

न्—पथिन् (रास्ता) पथगतौ+इनि

प्र.	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वि.	पन्थानं	पन्थानौ	पथः
तृ.	पथा	पथिभ्यां	पथिभिः
च.	पथे	पथिभ्यां	पथिभ्यः
पं.	पथः	पथिभ्यां	पथिभ्यः
ष.	पथः	पथोः	पथाम्
स.	पथि	पथोः	पथिषु
सं.	हे पन्थाः		

ष्—विष् (वेदय) विशति विश्+क्विप्

प्र.	विट्	विशौ	विशः
द्वि.	विशम्	विशौ	विशः
तृ.	विशा	विड्भ्यां	विड्भिः
च.	विशे	विड्भ्यां	विड्भ्यः
पं.	विशः	विड्भ्यां	विड्भ्यः
ष.	विशः	विशोः	विशाम्
स.	विशि	विशोः	विट्सु
सं.	हे विट्		

श्—तादृश (तैसा) तस्यैवदृश्यते+क्विप

प्र.	तादृक्	तादृशौ	तादृशः
द्वि.	तादृशम्	तादृशौ	तादृशः
तृ	तादृशा	तादृग्भ्यां	तादृग्भिः
च.	तादृशे	तादृग्भ्यां	तादृग्भ्यः
पं.	तादृशः	तादृग्भ्यां	तादृग्भ्यः
ष.	तादृशः	तादृशोः	तादृशाम्
स.	तादृशि	तादृशोः	तादृक्षु
सं.	हे तादृक्		

प्—दुविष् (वैरी) दुचेष्टेति दुविष्+क्विप्

प्र.	दुविट्	दुविषौ	दुविषः
द्वि.	दुविषम्	,,	दुविषः
तृ.	दुविषा	दुविड्भ्यां	दुविड्भिः
च.	दुविषे	,,	दुविड्भ्यः
पं.	दुविषः	,,	,,
ष.	,,	दुविषोः	दुविषाम्
स.	दुविषि	,,	विट्सु विट्सु
सं.	हे दुविट्		

स्—चन्द्रमस् (चन्द्रमा) चन्द्रमाह्लादंमिमीते, मा+अस्

प्र.	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वि.	चन्द्रमसं	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
तृ.	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्यां	चन्द्रमोभिः
च.	चन्द्रमसे	,,	चन्द्रमोभ्यः
पं.	चन्द्रमसः	,,	,,
ष.	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
स.	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमस्सु
सं.	हे चन्द्रमः		

ष्—विदुषस् (विदुषान्) वेत्तीति, विद्+क्वसु

प्र.	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वि.	विदुषांसम्	,,	विदुषः
तृ.	विदुषा	विदुषद्भ्यां	विदुषद्भिः
च.	विदुषे	,,	विदुषद्भ्यः
पं.	विदुषः	,,	,,
ष.	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
स.	विदुषि	,,	विदुषत्सु
सं.	हे विदुषन्		

स्—पुम्स् (मनुष्य) पातीति
पा+डुमसुन्

प्र.	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वि.	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः
तृ.	पुंसा	पुम्भ्यां	पुंभिः
च.	पुंसे	पुम्भ्यां	पुम्भ्यः
पं.	पुंसः	पुम्भ्यां	पुम्भ्यः
ष.	पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्
स.	पुंसि	पुंसोः	पुंस्सु
सं.	हे पुमन्		

ह्—मधुलिह् (भौंरा) मधुलेढीति,
लिह्+क्विप्

प्र.	मधुलिट्	मधुलिहौ	मधुलिहः
द्वि.	मधुलिहम्	,,	,,
तृ.	मधुलिहा	मधुलिड्भ्यां	मधुलिड्भिः
च.	मधुलिहे	,,	मधुलिड्भ्यः
पं.	मधुलिहः	,,	,,
ष.	मधुलिहः	मधुलिहोः	मधुलिहाम्
स.	मधुलिहि	,,	मधुलिट्सु-त्सु
सं.	हे मधुलिट्		

ह्—अनडुह् (बैल) अनः शकटं
वहतीति, वह्+क्विप्

प्र.	अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः
द्वि.	अनड्वाहम्	,,	,,
तृ.	अनड्वाहा	अनड्वद्भ्यां	अनड्वद्भिः
च.	अनड्वाहे	,,	अनड्वद्भ्यः
पं.	अनड्वाहः	,,	अनड्वद्भ्यः
ष.	अनड्वाहः	अनड्वाहोः	अनड्वाहाम्
स.	अनड्वाहि	अनड्वाहोः	अनड्वत्सु
सं.	हे अनड्वन्		

हलन्त स्त्रीलिङ्ग ।

च्—वाच् (वाणी) उच्यतेऽनयासा,
वच्+क्विप्

प्र.	वाक्	वाचौ	वाचः
द्वि.	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृ.	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
च.	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पं.	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
ष.	वाचः	वाचोः	वाचाम्
स.	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सं.	हे वाक्		

ध्—वीरुध् (वृक्ष) विशेषेणरुणद्धि
स्थानं या सा वि+रुध्+क्विप्

प्र.	वीरुत्	वीरुधौ	वीरुधः
द्वि.	वीरुधम्	वीरुधौ	वीरुधः
तृ.	वीरुधा	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भिः
च.	वीरुधे	,,	वीरुद्भ्यः
पं.	वीरुधः	,,	,,
ष.	वीरुधः	वीरुधोः	वीरुधाम्
स.	वीरुधि	वीरुधोः	वीरुत्सु
सं.	हे वीरुत्		

प्—अप् (जल) आप्यन्ते यास्ताः,
आप्+क्विप्

बहुवचनान्त	आपः		
	अपः		
	अद्भिः		
	अद्भ्यः		
	,,		
	अपाम्		
	अप्सु		
	हे आपः		

र्—गिर् (वाणी) गृणाति तत्त्व मनया, गृ+क्विप्

प्र.	गीः	गिरौ	गिरः
द्वि.	गिरम्	गिरौ	गिरः
तृ.	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
च.	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
पं.	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
ष.	गिरः	गिरोः	गिराम्
स.	गिरि	गिरोः	गीर्षु
सं.	हे गीः		

द्यु—दिव् (स्वर्ग) दीव्यन्ति देवा यत्र, दिव्+डिवि

प्र.	द्यौः	दिवौ	दिवः
द्वि.	दिवम्	दिवौ	दिवः
तृ.	दिवा	द्युभ्याम्	द्युभिः
च.	दिवे	,,	द्युभ्यः
पं.	दिवः	,,	,,
ष.	दिवः	दिवोः	दिवाम्
स.	दिवि	दिवोः	द्युषु
सं.	हे द्यौः		

प्—आशिष् (आशीर्वाद) आ+शास्+क्विप्

प्र.	आशीः	आशिषौ	आशिषः
द्वि.	आशिषम्	आशिषौ	आशिषः
तृ.	आशिषा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः
च.	आशिषे	,,	आशीर्भ्यः
पं.	आशिषः	,,	आशीर्भ्यः
ष.	आशिषः	आशिषोः	आशिषाम्
स.	आशिषि	आशिषोः	आशीःषु आशीष्षु
सं.	हे आशीः		

द्—उपानह् (जूता) उपानह्यते या सा, उप+आनह् क्विप्

प्र.	उपानत्	उपानहौ	उपानहः
द्वि.	उपानहम्	उपानहौ	उपानहः
तृ.	उपानहा	उपानद्भ्यां	उपानद्भिः
च.	उपानहे	,,	उपानद्भ्यः
पं.	उपानहः	,,	उपानद्भ्यः
ष.	उपानहः	उपानहोः	उपानहाम्
स.	उपानहि	उपानहोः	उपानत्सु
सं.	हे उपानत्		

हलन्त नपुंसक ।

ज्—असृज् (लोहू) न सृज्यते इति न+सृज्+क्विप्

प्र.	असृक्	असृजी	असृञ्जि
द्वि.	असृक्	असृजी	असृञ्जि
तृ.	असृजा	असृग्भ्याम्	असृग्भिः
च.	असृजे	,,	असृग्भ्यः
पं.	असृजः	,,	असृग्भ्यः
ष.	असृजः	असृजोः	असृजाम्
स.	असृजि	असृजोः	असृक्षु
सं.	हे असृक्		

अस्यतेरौणादिके ऋच् वा ।

त्—श्रीमत् (शोभावान्) श्रीः शोभास्यस्य तत्, श्री+मतुप्

प्र.	श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति
द्वि.	श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति

शेषम्पुम्वत् ।

त्—महत् (बड़ा) महानि यत्तत्

प्र.	महत्	महती	महान्ति

द्वि. महत् महती महान्ति
शेषम्पुम्वत्।

न्—नामन् (नाम) नाम्यतेऽभिधी-
यतेऽर्थोऽनेन, नम्+अनण्

प्र.	नाम	नाम्नी	नामानि
द्वि.	नाम	,,	नामानि
तृ.	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
च.	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्यः
पं.	नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः
ष.	नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्
स.	नाम्नि	नामनि ,,	नामसु
सं.	हे नाम, नामन् इत्यादि		

न्—अहन् (दिन) न जहातीति,
न+हा+कनिन्

प्र.	अहः	अह्नी, अहनी	अह्नानि
द्वि.	अहः	,,	अह्नानि
तृ.	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
च.	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
पं.	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
ष.	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
स.	अह्नि, अहनि	,,	अहःसु
सं.	हे अहः		

श्—तादृश् (तैसा) तत्सदृश
दृश्यत इति तत्

प्र.	तादृक्	तादृशौ	तादृशि
द्वि.	तादृक्	तादृशौ	तादृशि

शेषम्पुम्वत्

स्—पयस् (जल व दूध) पीयते
यत्तत्, पा+असुन्

प्र.	पयः	पयसी	पयांसि
द्वि.	पयः	पयसी	पयांसि
तृ.	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
च.	पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
पं.	पयसः	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
ष.	पयसः	पयसोः	पयसाम्
स.	पयसि	पयसोः	पयस्सु
सं.	हे पयः		

ष्—हविष् (हवन पदार्थ) हूयते
यत्तत्, हु+इसुन्

प्र.	हविः	हविषी	हवींषि
द्वि.	हविः	हविषी	हवींषि
तृ.	हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः
च.	हविषे	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
पं.	हविषः	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
ष.	हविषः	हविषोः	हविषाम्
स.	हविषि	हविषोः	हविष्षु
सं.	हे हविः		

ष्—धनुष् (कमान) धन+उसि

प्र.	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वि.	धनुः	धनुषी	धनूंषि
तृ.	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
च.	धनुषे	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
पं.	धनुषः	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
ष.	धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्
स.	धनुषि	धनुषोः	धनुष्षु
सं.	हे धनुः		

सर्वादिगिलिङ्गीशब्द ।

अ—सर्व (सब) सर्वसर्पणे+अच्

पुल्लिङ्ग

प्र.	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वि.	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृ.	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
च.	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पं.	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
ष.	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
स.	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सं.	हे सर्व		

नपुंसक ।

प्र.	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वि.	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

शेषम्पुम्वत्

स्त्रीलिङ्ग ।

प्र.	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वि.	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृ.	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
च.	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पं.	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
ष.	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
स.	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु
सं.	हे सर्वे		

म्—किम् (कौन) कै शब्दे+डिमु

पुल्लिङ्ग ।

प्र.	कः	कौ	के
द्वि.	कम्	कौ	कान्
तृ.	केन	काभ्याम्	कैः
च.	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पं.	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
ष.	कस्य	कयोः	केषाम्
स.	कस्मिन्	कयोः	केषु

(त्यदादिकों में सम्बोधन नहीं होता)

(नपुंसक) किम्

प्र.	किम्	के	कानि
द्वि.	किम्	के	कानि

शेषम्पुम्वत्

(स्त्रीलिङ्ग) किम्

प्र.	का	के	काः
द्वि.	काम्	के	काः
तृ.	कया	काभ्याम्	काभिः
च.	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पं.	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
ष.	कस्याः	कयोः	कासाम्
स.	कस्याम्	कयोः	कासु

पुल्लिङ्ग—दृ यद् या+आदि डिद्ध

प्र.	यः	यौ	ये
द्वि.	यम्	यौ	यान्
तृ.	येन	याभ्याम्	यैः
च.	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पं.	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
ष.	यस्य	ययोः	येषाम्
स.	यस्मिन्	ययोः	येषु

नपुंसक-यद्

प्र.	यत्	ये	यानि
द्वि.	यत्	ये	यानि

शेषम्पुम्वत्

(स्त्रीलिङ्ग) यद् (जो)

प्र.	या	ये	याः
द्वि.	याम्	ये	याः
तृ.	यया	याभ्याम्	याभिः
च.	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पं.	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
ष.	यस्याः	ययोः	यासाम्
स.	यस्याम्	ययोः	यासु

द्—तद् (वह) तत्+अदि डिच

[पुल्लिङ्ग]

प्र.	सः	तौ	ते
द्वि.	तम्	तौ	तान्
तृ.	तेन	ताभ्याम्	तैः
च.	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पं.	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
ष.	तस्य	तयोः	तेषाम्
स.	तस्मिन्	तयोः	तेषु

[नपुंसक]

प्र.	तत्	ते	तानि
द्वि.	तत्	ते	तानि

शेषम्पुम्वत्

[स्त्रीलिङ्ग]

प्र.	सा	ते	ताः
द्वि.	ताम्	ते	ताः
तृ.	तया	ताभ्याम्	ताभिः
च.	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पं.	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
ष.	तस्याः	तयोः	तासाम्
स.	तस्याम्	तयोः	तासु

द्—एतद् [यह] इण्+आदित्वर् च

प्र.	एषः	एतौ	एते
द्वि.	एतम्/एनम्	एतौ/एनौ	एतान्/एनान्
तृ.	एतेन/एनेन	एताभ्याम्	एतैः
च.	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पं.	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
ष.	एतस्य	एतयोः/एनयोः	एतेषाम्
स.	एतस्मिन्	एतयोः/एनयोः	एतेषु

(नपुंसक) द् एत द्

प्र.	एतत्	एते	एतानि
द्वि.	एनत्/एनत्	एते/एनं	एतानि/एनानि

शेषम्पुम्वत्

(स्त्रीलिङ्ग) द् एतद्

प्र.	एषा	एते	एताः
द्वि.	एताम् एनाम्	एते एने	एताः एनाः
तृ.	एतया एनया	एताभ्यां	एताभिः
च.	एतस्यै	एताभ्यां	एताभ्यः
पं.	एतस्याः	एताभ्यां	एताभ्यः
ष.	"	एतयोः/एनयोः	एतासाम्
स.	एतस्याम्	"	एतासु

म्—इदम्, इदिपरमैश्वर्ये, कमिनलोपश्च

पुल्लिङ्ग—(यह)

प्र.	अयम्	इमौ	इमे
द्वि.	इमम्/एनम्	इमौ/एनौ	इमान्/एनान्
तृ.	अनेन/एनेन	आभ्याम्	एभिः
च.	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पं.	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः

ष.	अस्य	अनयोः एनयोः	एषाम्
स.	अस्मिन्	,,	एषु

नपुंसक—इदम्

प्र.	इदम्	इमे	इमानि
द्वि.	इदम्	इमे	इमानि

शेषम्पुम्वत्

स्त्रीलिङ्ग—इदम्

प्र.	इयम्	इमे	इमाः
द्वि.	इमाम् एनाम्	इमे एने	इमाः एनाः
तृ.	अनया एनया	आभ्याम्	आभिः
च.	अस्यै	,,	आभ्यः
पं.	अस्याः	,,	,,
ष.	,,	अनयोः एनयोः	आसाम्
स.	अस्याम्	,,	आसु

स्—अदस् [वह] न दृश्यते उत्क्षिप्यतेऽङ्गुल्यिर्यत्र, न+दृस+क्विप्

—पुल्लिङ्ग—

प्र.	असौ	अमू	अमी
द्वि.	अमुम्	अमू	अमून्
तृ.	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
च.	अमुष्मै	,,	अमीभ्यः
पं.	अमुष्मात्	,,	,,
ष.	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
स.	अमुस्मिन्	,,	अमीषु

— नपुंसकलिङ्ग —

प्र.	अदः	अमू	अमूनि
द्वि.	,,	,,	,,

शेषम्पुम्वत्

[स्त्रीलिङ्ग]

प्र.	असौ	अमू	अमूः
द्वि.	अमूम्	,,	,,
तृ.	अमुया	अमूभ्यां	अमूभिः
च.	अमुष्यै	,,	अमूभ्यः
पं.	अमुष्याः	,,	,,
ष.	,,	अमुयोः	अमूषाम्
स.	अमुष्याम्	,,	अमूषु

द्—युष्मद् [तू] युष भजने+मदिक्

प्र.	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वि.	त्वाम् त्वा	युवाम् वाम्	युष्मान् वः
तृ.	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
च.	तुभ्यम् ते	,, वाम्	युष्मभ्यम् वः
पं.	त्वत्	युवाभ्यां	युष्मत्
ष.	तव ते	युवयोः वाम्	युष्माकम् वः
स.	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

द्—अस्मद् [मैं] अस्तृक्षेपणे+मदिक्

प्र.	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वि.	माम् मा	,, नौ	अस्मान् नः
तृ.	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
च.	मह्यम् मे	,, नौ	अस्मभ्यम् नः
पं.	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
ष.	मम मे	आवयोः नौ	अस्माकम् नः
स.	मयि	आवयोः	अस्मासु

संख्यावाचकशब्द

अ—एक इण् + कन् एकवचन

	[पुं]	[स्त्री]	[नपुंसक]
प्र.	एकः	एका	एकम्
द्वि.	एकम्	एकाम्	,,
तृ.	एकेन	एकया	शेषंपुंवत्
च.	एकस्मै	एकस्यै	
पं.	एकस्मात्	एकस्याः	
ष.	एकस्य	,,	
स.	एकस्मिन्	एकस्याम्	

इं—द्वि [दो] द्वि० व०दृशसञ्चरणे + डि

	पुं०—स्त्री०—नपुंसक		
प्र.	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वि.	,,	,,	,,
तृ.	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	शेषंपुंवत्
च.	,,	,,	
पं.	,,	,,	
ष.	द्वयोः	द्वयोः	
स.	,,	,,	

इ—त्रि (तीन) चतु० व० तॄ + डि

पुं०—स्त्री०—नपुंसक

प्र.	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वि.	त्रीन्	,,	,,
तृ.	त्रिभिः	तिसृभिः	शेषंपुंवत्
च.	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	
पं.	,,	,,	
ष.	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	
स.	त्रिषु	तिसृषु	
सं.	हेत्रयः	हेतिस्रः	

ऋ—चतुर् (चार) ष० च०

चते याचने + उरन्

पुं०—स्त्री०—नपुंसक

प्र.	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वि.	चतुरः	,,	,,
तृ.	चतुर्भिः	चतसृभिः	शेषंपुंवत्
च.	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	
पं.	,,	,,	
ष.	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	
स.	चतुर्षु	चतसृषु	
सं.	हेचत्वारः	हेचतस्रः	

तीनोंलिङ्गोंमेंतुल्यः ।

न—पञ्चन् (५)

पचिविस्तारे + अनि

प्र०	पञ्च
द्वि०	,,
तृ०	पञ्चभिः
च०	पञ्चभ्यः
ष०	पञ्चानाम्
स०	पञ्चसु
सं०	हेपञ्च

ष—षष् (६)

षो + असुक् + किप्

प्र०	षट्	षट्
द्वि०	,,	,,
तृ०	षड्भिः	
च०	षड्भ्यः	
पं०	,,	
ष०	षण्णाम्	
स.	षट्सु षट्त्सु	
सं.	हेषट्	

न—सप्तन् (७)

सृ + तनिन्

प्र०	सप्त	
द्वि०	,,	
तृ०	सप्तभिः	
च०	सप्तभ्यः	
ष०	,,	

प. सप्तानाम्	पं. ,,	च. नवभ्यः	तृ. दशभिः
स. सप्तसु	प. अष्टानाम्	पं. ,,	च. दशभ्यः
सं. हेसप्त	स. अष्टसु अष्टासु	प. नवानाम्	पं. ,,
न-अष्टन् ८ अशब्या-	सं. अष्टौ अष्ट	स. नवसु	प. दशानाम्
सौ+कनिन्+लुक्	न्—नवन् (९) नु+	सं. हेनव	स. दशसु
प्र. अष्टौ, अष्ट	अनि	न्—दशन् १०	सं. हेदश
द्वि. ,, ,,	प्र. नव	दंश+कनिन्	
तृ. अष्टभिः अष्टाभिः	द्वि. ,,	प्र. दश	
च. अष्टभ्यः अष्टाभ्यः	तृ. नवभिः	द्वि. ,,	

अव्ययार्थप्रदर्शकस्तृतीयोऽध्यायः।

अव्यय।	अर्थ।	अव्यय।	अर्थ।	अव्यय।	अर्थ।
स्वर्	स्वर्गेपरलोकेच	दिवा	दिवसे	हेतौ	निमित्ते
अन्तर्	मध्ये	रात्रौ	निशि	इद्धा	प्राकाश्ये
प्रातर्	प्रत्यूषे	सायम्	निशामुखे	अद्धा	स्फुटावधारणयोः
पुनर्	अप्रथमेविशेषेच	चिरम्	बहुकाले	सामि	अर्धजुगुप्सितयोः
सनुतर्	अन्तर्धाने	मनाक्, ईषत्	अल्पे	यत्	तुल्ये
उच्चैस्	महति			सना,	
नीचैस्	अल्पे	जोषम्	सुखेमौनेच	सनत्,	नित्ये
शनैस्	क्रियामान्द्ये	तूष्णीम्	मौने	सनात्	
ऋधक्	सत्यवियोगशी- घ्रसामीप्यलाघवेषु	बहिस्, बाह्ये अधस्		उपधा	भेदे
		समया	समीपे मध्येच	तिरस्	अन्तर्धौ,तिर्यगर्थे परिभवे च
ऋते	वर्जने	निकषा	अन्तिके		
युगपत्	एककाले	स्वयम्	आत्मना	अन्तरा	मध्ये, विनार्थेच
आरात्	दूरसमीपयोः	वृथा	व्यर्थे	अन्तरेण	वर्जने
पृथक्	भिन्ने	नक्तम्	रात्रौ	ज्योक्	कालभूयस्त्वे, प्रश्नेशीघ्रार्थे सम्प्रत्यर्थेच
ह्यस्	अतीतेऽह्नि	नञ्	निषेधे		
श्वस्	अनागतेऽह्नि				

अव्यय ।	अर्थ ।
कम्	वारिमूर्धनिन्दा-सुप्तेषु
शम्	सुखे
सहसा	आकस्मिकाधिमर्शयोः
विना	वर्जने
नाना	अनेकविनार्थयोः
स्वस्ति	मङ्गले
स्वधा	पितृदाने
अलं	भूषणपर्य्याप्ति शक्तिवारण निषेधेषु
वषट्, औषट्, वौषट्	हविर्दाने
अन्यत्	अन्यार्थे
अस्ति	प्रसिद्धौ सत्तायाम् च
उपांशु	अप्रकाशोच्चारणरहस्ययोः
क्षमा	क्षान्तौ
विहायसा	वियदर्थे
दोषा	रात्रौ
मृषा, मिथ्या	मिथ्यार्थे
मुधा	व्यर्थे
पुरा	अचिरतरे, चिरातीतभविष्यद्दानप्रेषु च

अव्यय ।	अर्थ ।
मिथो, मिथस्	रहःसहार्थयोः
प्रायस्	बाहुल्ये
मुहुस्	पुनरर्थे
सघाडुकम्	समानकाले
सघाडिका	ऊर्ध्वार्थे च
आर्यहलम्	बलात्कारे
अभीक्ष्णम्	पौन:पुन्ये
साकंसार्द्धं	सहार्थे
नमस्	नतौ
हिरुक्	वर्जने
धिक्	निन्दाभर्त्सनयो:
अम्	शैघ्र्येऽल्पे च
आम्	अङ्गीकारे
प्रताम्	ग्लानौ
प्रशान्	समानार्थे
प्रतान्	विस्तारे
मा,माङ्	निषेधाराङ्क्योः
कामम्	स्वाच्छन्द्ये
प्रकामम्	अतिशये
भूयः	पुनरर्थे
साम्प्रत	न्याय्ये
परम्	किन्त्वर्थे
साक्षात्	प्रत्यक्षे
साचि	तिर्यगर्थे
मङ्क्षु, आशु	शीघ्रे
अटि(गि)	
ति,त्वरा	

अव्यय ।	अर्थ ।
संयत्	यत्नै
अवश्यं	निश्चये
उषा	रात्रौ
ओम्	अङ्गीकारे ब्रह्मणि च
भूः	पृथिव्याम्
भुवः	अन्तरिक्षे
सुष्ठु	प्रशंसायाम्
दुष्ठु	निकृष्टे
सुः	पूजायाम्
कु	कुत्सितेपदार्थेच
अञ्जसा	तत्वशीघ्रार्थयोः
वरम्	ईषदुत्कर्षे
सुदि	शुक्लपक्षे
वदि	कृष्णपक्षे
अस्त	विनाशे
स्थाने	युक्ते
मिथु	द्वाविंत्यर्थे
च.	समुच्चयान्वाचयेतरेतरयोग समाहारेषु
वा	विकल्पे
ह	प्रसिद्धौ
अह	पूजायाम्
एव	अवधारणे
एवम्	उक्तपरामर्शे
नूनम्	निश्चये तर्केच
शश्वत्	पौनःपुन्ये नित्यसहार्थेच

अव्यय	अर्थ
कृपत्	प्रश्नेप्रशंसायांच
कुवित्	भूयोंर्थेप्रशंसायांच
नेत्	शङ्कायां,प्रतिषेधविचार समुच्चयेषुच
चेत्,चण	यद्यर्थे
कश्चित्	इष्टप्रश्ने
नह	प्रत्यारम्भे
हन्त	हर्षे, विषादे, वाक्यारम्भेऽनुकम्पायाञ्च
माकिः, मार्का, नकिम्	वर्जने
यावत्	साकल्यावधि-
तावत्	मानावधारणेषु
त्वै	विशेषवितर्कयोः
ह्वै, न्वै	वितर्के
रै	दाने अनादरेच
तुम्,हुम्	तुकारे, हुंकारे, भर्त्सनेच
तद्धाहि	निदर्शने

अव्यय	अर्थ
खलु	निषेधवाक्यालंकारनिश्चयेषु
किल	वार्तायामलीकेच
अथो,अथ	मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकात्स्न्र्याधिकार प्रतिज्ञासमुच्चयेषु
स	अतीते पादपूरणेच
अहं	अहंकारे
अ	संबोधनेऽधिक्षेपेनिषेधेच
आ	वाक्यस्मरणयोः
इ	सम्बोधनजुगुप्साविस्मयेषु
इ,उ,ऊ,ए ये,ओ,औं	सम्बोधने
पशु	सम्यगर्थे
शुक्रं	शीघ्रये

अव्यय	अर्थ
यथा	अनादरे
कथाच	
पाट्पाट्	
अङ्ग हे हे	सम्बोधने
भोः अये	
च	हिंसाप्रतिलोम्यपादपूरणेषु
विपु	नानार्थे
एकपदे	अकस्मात्
युत्	कुत्सायाम्
आतः	इतोऽपि
यत्तद्	हेतौ
आहोस्वित्	विकल्पे
सीम	सर्वतोभावे
शुकं	अतिशये
अनुकं	वितर्के
च	पादपूरणेऽवार्थेच
दिष्ट्या	आनन्दे
चटुचाटु	प्रियेवाक्ये
इवेति	सादृश्ये
अधत्वे	इदानीमित्यर्थे

स्त्रीप्रत्ययप्रदर्शकश्चतुर्थोऽध्यायः ।

१ प्रायः विशेषण अकारान्त शब्दोंका स्त्रीलिङ्ग बनाने केलिये 'आ' लगा देते हैं जैसे कृशा, दीना, मलिना, चतुरा, चपला, प्रिया, पूर्णा, अनुकूला, मनोहरा इत्यादि ।

(१) अजाद्यतष्टाप् ।

२ प्रथम अवस्था वाले शब्दों से और गौर आदि शब्दों से "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे कुमारी, किशोरी, तरुणी इत्यादि। गौरी, नदी, तटी, कदली, बदली, इत्यादि।

३ जाति वाचक शब्दों से, अजादि शब्दों को छोड़ "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे सिंही, व्याघ्री, मृगी, हंसी, बकी, ब्राह्मणी, राक्षसी, अजादि शब्द जैसे अजा पडका, मछिका, वर्तिका, शूद्रा, अश्वा इत्यादि।

४ ऋकारान्त शब्दों से, स्वसृ, मातृ, दुहितृ, यातृ, ननान्दृ, तिसृ और चतसृ शब्दों को छोड़ "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे दात्री, धात्री, कर्त्री, हन्त्री, प्रसवित्री इत्यादि।

५ नकारान्त संख्यावाचक शब्दों को छोड़ इन् प्रत्ययान्त शब्दों से "ई" लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे कामिनी, भामिनी, मयाविनी, तपस्विनी इत्यादि।

६ अन् प्रत्ययान्त शब्दों से "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है और उपधाके अकालोप होजाताहै जैसे राजन्—राज्ञी, मघवन्—मघोनी इ०।

७ मत्, घत्, वतत्, यस् ईयस् प्रत्ययान्त शब्दोंका स्त्रीलिङ्ग "ई" प्रत्यय से बनता है जैसे बुद्धिमती, दृढवती, विदुषी, श्रेयसी इ०।

८ भव, शर्व, रुद्र, मृड, इन्द्र, वरुण, वरुन मातुल, क्षत्रिय, अर्य, उपाध्याय, आचार्य शब्दों से "आनी" लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे भवानी इत्यादि। और कोष्टान्तर्गत शब्दों का विकल्प से "आ" प्रत्यय लगाकर भी स्त्रीलिङ्ग होता है जैसे क्षत्रियाणी क्षत्रिया।

९ भ्वादि, दिवादि, चुरादि गणी धातुओं के अनन्तर अत् (शतृ) प्रत्यय लगे शब्दों का स्त्रीलिङ्ग "ई" लगाकर बनता है और त्, न्त, में बदल जाता है जैसे भू—भवन्ती दिव—दीव्यन्ती, चुर—चोरयन्ती; परन्तु तुदादि, कयादि, और अदादि गणी धातुओं के अनन्तर त विकल्प में

(२) "घरसि ङ्योः" "पिद्गौरादिभ्यश्च"। (३) जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्। (४) ऋन्नेभ्योङीप्। (५) ऋन्नेभ्योङीप्। (६) अनउपधालोपिनोऽन्यतरस्याम्। (७) उगितश्च। (८) इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्। (९) उगितश्च।

न्त में बदल जाता है जैसे तुद्-तुदती, तुदन्ती; क्री-क्रीणती, क्रीणन्ती, भी—भाती, भान्ती, । स्यत् प्रत्ययान्त शब्दों में भी विकल्प से रूप होते हैं जैसे करिष्यती, करिष्यन्ती ।

१० देहाङ्गवाची शब्दों के साथ जब बहुव्रीहि समास हो तो विकल्प से "ई" प्रत्यय लगता है जैसे चन्द्रमुखी—खा, कृशाङ्गी—ङ्ग, कोकिलकण्ठी—ण्ठ इत्यादि परन्तु नख, मुख शब्द को लगाकर जहां व्यक्तिवाचक संज्ञा बनती है या जहां अङ्गवाची शब्द की उपधा में संयुक्तवर्ण होता है, अथवा जिन अङ्गवाची शब्दों में दोसे अधिक स्वर हों वहां "ई" नहीं लगता जैसे शूर्पणखा, गौरमुखा; मृगनेत्रा, चारुदशना ।

११ इकारान्त शब्द विकल्प से "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनते हैं जैसे श्येणि, श्येणी, रजनिः—नी, कपिः—पी, मुनिः—नी इत्यादि ।

१२ क्ति प्रत्ययान्त शब्द प्रायः भाववाचक संज्ञा व स्त्रीलिङ्ग होते हैं जैसे मतिः, गतिः स्थितिः ।

१३ उकारान्त संज्ञा विशेषण शब्द विकल्प से "ई" लगकर स्त्रीलिङ्ग बनते हैं जैसे मृदुः मृद्वी, बहुः बह्वी इत्यादि ।

१४ श्वशुर शब्द से श्वश्रू, युवन् से युवतिः, पति से पत्नी, सखि से सखी और समस्तपद मे ऊरु शब्द को जहां किसी से तुलना दी जाती है या जहां याम सह शफादि शब्द ऊरुसे पहिले होते हैं वहां स्त्रीलिङ्ग में दीर्घ ऊकार होजाता है जैसे रम्भोरूः, यामोरूः, शफोरूः ।

अथ कारकप्रकरणप्रदर्शकः पञ्चमोऽध्यायः ।

१ प्रथमाविभक्ति नीचे लिखे योगों में होती है क्रमानुसार उदाहरण देखो—१ लिङ्ग में जैसे तटः, तटी, तटम्; २ वचन में जैसे एकः, द्वौ, बहवः; ३ परिमाण में जैसे द्रोणः आढकम्; ४ सम्बोधन में जैसे हे कृष्ण; ५ इति,

(१०) स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात् । (११) हृदिकारादक्तिनः । (१३) पोतेगुणवचनात् " वह्वादिभ्यश्च । (१४) श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च " यूनस्तिः" स्त्र्याशिष्वीति भाषायाम्" ऊरूत्तरपदादौपम्ये" संहितशफलक्षण यामादेश्च । १ प्रातिपदिकार्थ लिङ्गवचनपरिमाणमात्रेप्रथमा । (४) सम्बोधनेच ।

साम्प्रतम् इत्यादि अव्ययों के योग में जैसे मनुष्याश्चन्द्रं हिमांशुरिति वदन्ति, दुष्टात्मनां सङ्गः परित्यक्तुं साम्प्रतम्; ६ जहां कर्तातिङ् प्रत्यय से उक्त हो जैसे रामोवदति; ७ जहां कर्तृवाच्य का कर्म "क्त" प्रत्यय से उक्त होवे जैसे कृष्णेन कंसो हतः ॥

२ द्वितीया विभक्ति नीचे लिखे योगों में होती है:—

१ काल व मार्ग के अत्यन्त अर्थात् निरवच्छिन्न (लगातार) संयोग में जैसे मासं व्याकरणमधीतम् क्रोशं पर्वतः (मासं क्रोशं व्याप्य इत्यर्थः) २ धिक्, प्रति, अनु, अन्तरा, अन्तरेण, यावत्, अभितः, परितः, समया (पास या पांच,) निकषा (पास,) हा, ऋते, विनाके योगों में जैसे देवदत्तधिक्, हरिं प्रति दयोचिता; स्वामिनमनुसरति भृत्यः, अन्तरा त्वां मां हरिः; अन्तरेणाक्षिणी किंजीवितेन; यमं यावत्प्रविशानि; अभितः, उभयतः ग्रामंनदी वहति, समया, निकषा ग्रामम्; हा-कृष्णामक्तम्; ऋते, विना ज्ञानं न मुक्तिः ; ३ स्मृ धातुके योग में जैसे मातर स्मरति शिशुः ४ कर्मउक्त (जिसका असर क्रियापर पड़े वह उक्त होता है) न होने से जैसे कृष्णोव्रजं व्रजति ५ उपरि जब दोवार आवे जैसे क्षेत्र मुपरि उपरि शालभाङ्कयन्ते ।

३ तृतीया विभक्ति नीचे लिखे योगों में होती है:—

सह, सत्रम्, सार्द्धम्, समम्, (साथ) के योग में जैसे शिष्येण सहागतो गुरुः । २ सम, तुल्य, समान, सदृश (बराबर) के योग में जैसे शिष्यः पुत्रेण समोऽधीते । ३ अलं, किम्, अर्थ, प्रयोजन ऊन, हीन, शून्य, विना, पृथक् के योग में जैसे अलंविवादेन; विरोधेनकिम्, कोऽर्थः कलहेन धनेन प्रयोजनं नास्ति, एकेन ऊनोविंशः, विद्ययाहीनः; अहङ्कारेण शून्यः, रागेण विनापृथक् । ४ हेत्वर्थ में जैसे कार्यत्वेनशब्दो-

---

२ कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे । उभसर्वतसोःकार्याधिगुपर्या दिषु त्रिषु द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषुततोऽन्यत्रापि दृश्यते' अभितःपरितःसमयानिकषाहाप्रति योगेऽपि । अन्तराऽन्तरेणयुक्ते । अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते । पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्

३ १ सहयुक्तेऽप्रधाने २ पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्यां, ४ हेतौ । *. येनाऽङ्गविकारः । कर्तृकरणयोस्तृतीया ।

८ प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् ।

नित्यः ५ जिस अङ्गसे प्राणीके अङ्गका अङ्गविकार लखजाय उस अङ्ग में जैसे अक्ष्णाकाणः कर्णेनबधिरः ६ कर्ता और करण जब उक्त नहीं जैसे रामेणबाणेन रावणोहतः ७ तृप्त्यर्थक शब्दों के योग में जैसे भोजनेन वृतः ८ प्रकृति इत्यादि शब्दोंके योग में जैसे प्रकृत्या चारुः जात्याब्राह्मणः ९ तव्य' अनीय, यत् के योग में (षष्ठीभीहोतीहै) जैसे चन्द्रस्तवया (तव) द्रष्टव्यः।

४ चतुर्थी विभक्ति नीचे लिखे योगों में होती है:—

१ दानपात्र में जैसे राजा विप्रायधनंददाति; २ तादर्थ्य (उसीके अर्थ) में जैसे गोविन्दस्लदा कथनाय प्रवृत्तोऽभूत् ३ नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट् के योग में जैसे गुरुभ्योनमः, राज्ञेस्वस्ति, रुद्राय स्वाहा, पितृभ्यःस्वधा, अलं मल्लोमल्लाय, इन्द्रायवषट्; ४ निमित्त अर्थ सूचन करने में जैसे अध्ययनं ज्ञानाय भवति; ५ हित, सुख प्रभवति और समर्थके योग में जैसे पुत्रायाहितम्, शिष्यायसुखम्, शूरःसमर्थः प्रभवति वा सग्रामाय ६ तुम् प्रत्यय के अर्थ में द्वितीयाकी जगह चतुर्थी होती है जैसे जलाय नदीं गच्छति जलमाचेतुमित्यर्थः; ७ क्रुध् द्रुह् ईर्षा, असूयार्थक धातुओं के योग में जैसे क्रूराय क्रुध्यति, गुणवते असूयति; ८ रुच्यर्थक धातु के योग में जैसे हरयेरोचते भक्तिः ९ धारयतिके प्रयोग में उत्तमर्ण (साहूकार) में देवदत्तः रुद्रदत्ताय शतं धारयति।

५ पञ्चमी विभक्ति नीचे लिखे योगों में होती है:—

१ विश्लेष (विभाग) की अवधि में जैसे वृक्षात्पत्राणिपतन्ति; २ ल्यप् प्रत्ययका जहां लुप्त अर्थ हो जैसे आसनात्प्रेक्षते (आसनेउपविश्येत्यर्थः) ३ तुलना में धनाढ्यिद्याग्रीयसी ४ भय और त्राणार्थक धातुओं के भय

---

४ १ दानस्य कर्मणा यमभिप्रैति स संप्रदानम्। २ तादर्थ्ये चतुर्थी ३ नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च। ४
५ हितयोगे च, ६ क्रुधिसम्पद्यमाने च ७
६ क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः। ७ क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रतिकोपः
८ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ९ धारेरुत्तमर्णः
५ १ ध्रुवमपायेऽपादानम् २ ल्यब्लोपे कर्म्मण्याधिकरणेच
४ भीत्रार्थानां भयहेतुः ५ धारणार्थानां प्रीयमाणः ६ स्पृहेरीप्सितः ७ अन्यारादितरर्तेदिक् शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते

हेतु में जैसे व्याघ्राऽभ्यर्षति ५ वारणार्थक धातुओं के योग में जैसे क्षेत्राद्गांवारण्यति ६ स्पृह धातु के योग में जैसे पुष्पेभ्यः स्पृहयति; ७ अन्य, भिन्न, बहिः, आरात्, प्रभृति आरभ्य, इतर, पूर्वः, उत्तरः, प्राक्, अनन्तरम्, ऋते, विना, पृथक् और हेतु में जैसे मिलाऽन्य. भिन्नः; ग्रामाद्बहिः; आराद्धनात्; तद्दिनादारभ्य, प्रभृति वा; तस्मादितरोऽनर्थश्चित्; नगरात्पूर्वः उत्तरोगा, भोजनात्प्राक् शयनादनन्तरम्; ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः; श्रमाद्विना नकिञ्चित्फलति; पुत्रात्पृथक्; भयात्कम्पते ।

६ षष्ठी निम्नलिखित योगों में होती है:—

१ सम्बन्ध में जैसे गोविन्दस्य पुस्तकम्; २ हेतु शब्दके प्रयोग में जैसे कस्यहेतोरिदं भोजनम्; ३ स्मृ धातु के भी योग में जैसे मातुः स्मरति; ४ सम, तुल्य, समान, सदृश इनके भी योग में जैसे किम् तव समो न कोऽस्ति; ५ तृप्त्यर्थक शब्दों के भी योग में जैसे अपांतृप्त. ६ निर्धारण अर्थात् बहुतसी वस्तुओं में से एक के अलग करने में षष्ठी सप्तमी दोनों होती हैं जैसे कवीनांकविषु वा कालिदासः श्रेष्ठ; ७ स्वाम्यादि अर्थात् स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद साक्षी, प्रतिभू और प्रसूत इन के योग में जैसे नराणां स्वामी इत्यादि; ८ अनादर में षष्ठी सप्तमी दोनों होती है जैसे माता पित्रोः रुदतोः प्राव्राजीत्पुत्रः; ९ भद्रः, कुशल, आयुष्य सुख हित इत्यादि शब्दों के योग में जैसे तव भद्र स्यात् ।

७ नीचे लिखे योगों में सप्तमी विभक्ति होती है:—

१ अधिकरण अर्थात् आधार में; यह आधार चार प्रकार का है औपश्लेषिक, सामीपिक, अभिव्यापक, वैषयिक जैसे कटे शेते कुमारोसौ, घटेगावः सुखेरते, तिलेषुविद्यते तैलं; हृदिब्रह्मामृतंपरम्। २ निमित्तार्थवाचक शब्द से जैसे चर्मणिद्वीपिनहन्ति (चर्मनिमित्तमित्यर्थः), ३ सप्तर्थक अर्थात् जहां एक क्रिया के काल से दूसरी क्रिया का समय लक्षित होता हो जैसे रथावस्तङ्कते स आगतः)

---

६ १ षष्ठीशेषे २ षष्ठीहेतु प्रयोगे ३ षष्ठीशेषे ४ तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयाऽन्यतरस्याम् ४ यतश्च निर्धारणम् ५ स्वामीश्वराधिपति दायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च ८ षष्ठी चानादरे ९ चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः

७ १ आधारोऽधिकरणम् २ निमित्तात्कर्मयोगे ३ यस्य च भावेन भावलक्षणम्

अथ समासप्रकरणप्रदर्शकः षष्ठोऽध्यायः।

समास छः प्रकार के हैं, १ तत्पुरुष, २ कर्मधारय, ३ बहुव्रीहि, ४ द्विगु, ५ द्वन्द्व, ६ अव्ययीभाव। अब प्रत्येक के लक्षण सोदाहरण और सविग्रह (समास के अर्थ का जतानेवाला वाक्य विग्रह कहलाता है) लिखते हैं:—

१ तत्पुरुष उत्तरपदार्थ प्रधान, और आठ प्रकार का होता है जैसे प्रथमातत्पुरुष जैसे अर्धं पिप्पल्याः अर्धपिप्पली; द्वितीया त० जैसे ग्रामंगतः ग्रामगतः; तृतीया त० जैसे शङ्कुलयाखण्डः शङ्कुलाखण्डः, चतुर्थी त० गुरवेदक्षिणा गुरुदक्षिणा; पञ्चमी त० जैसे सिंहात्भयं सिंहभयम्; षष्ठी त० जैसे कृष्णस्य भक्तः कृष्णभक्तः, सप्तमी त० जैसे कर्मणिकुशलः कर्मकुशलः; नञ् त० जैसे न ब्राह्मणः अब्राह्मणः; न अश्वः अनश्वः।

२ कर्मधारय सात प्रकार का है जैसे १ विशेषण पूर्वपद जैसे कृष्णः चासौ सर्पः कृष्णसर्पः; २ विशेष्य पूर्वपद जैसे गोपालश्चासौबालः गोपालबालः; ३ विशेषणोभयपद जैसे शीतं च तदुष्णं च शीतोष्णम्; ४ उपमानपूर्वपद जैसे मेघ इव श्यामः मेघश्यामः; ५ उपमानोत्तरपद जैसे पुरुषः व्याघ्रइव पुरुषव्याघ्रः; सम्भावना पूर्वपद जैसे गुण इति बुद्धिः गुणबुद्धिः; ७ अवधारण पूर्वपद जैसे अविद्यैव शृङ्खला अविद्याशृङ्खलाः मध्यमपद लोपी जैसे शाकप्रियः पार्थिवः शाकपार्थिवः।

३ बहुव्रीहि अन्य पदार्थ प्रधान होता है यह सात प्रकार का है १ द्विपद जैसे चित्रोगावो यस्यसः चित्रगुःगोपः भुक्त ओदनोयेनसः भुक्तौदनोभूपः; २ बहुपद जैसे अधिकः उन्नतः अंसोयस्य सः, अधिकोन्नतांसः; ३ सहपूर्वपद जैसे सह पुत्रेण वर्तते इति सपुत्रः; ४ संख्योत्तर पद जैसे दशानां समीपे ये सन्ति ते उपदशाः; ५ संख्योभय पद जैसे द्वौ वा त्रयो वा त्रिंशाः;

(१) अर्द्धं नपुंसकम्। (२) द्वितीया श्रित तीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः। (३) तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन। (४) चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः (५) पञ्चमी भये। (६) षष्ठी। (७) सप्तमी शौण्डैः। (८) नञ्। (९) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्। (१०) उपमानानि सामान्यवचनैः। (११) उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे। (१२) शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम्। (१३) अनेकमन्यपदार्थे। (१४) तेनसहेतितुल्ययोगे। (१५) संख्ययाऽव्ययासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये।

६ व्यतिहारलक्षण जैसे केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवर्तते इति केशाकेशि;

७ दिगन्तरालक्षण जैसे दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोयदन्तरालं सा दक्षिणपूर्वा ।

४ संख्यावाचक शब्द पूर्वक समास द्विगु कहलाता है वह दो प्रकार का है १ एक पदार्थी जैसे त्रयाणां जगतां समाहारः त्रिजगत्म्; २ अनेकपदार्थी जैसे सप्त च ते ऋषयश्च सप्तर्षयः ।

५ चार्थक द्वन्द्व उभयपदार्थ प्रधान होता है और वह तीन प्रकार का है १ इतरेतर द्वन्द्व जैसे रामश्च कृष्णश्च रामकृष्णौ; २ समाहार द्वन्द्व जैसे हरिश्च हरश्च गुरुश्च हरिहरगुरु; पाणी च पादौ च पाणिपादम्; ३ एक शेष द्वन्द्व जैसे माता च पिता च पितरौ, श्वश्रूश्च श्वशुरश्च श्वशुरौ ।

६ अव्यय पूर्वपद और पूर्वपदार्थप्रधान अव्ययीभाव होता है जैसे तटं तटं प्रति अनुतटम्, क्रममनतिक्रम्य वर्तते इतियथाक्रमम्, कुक्षेरस्यसमीपे वर्तते इति उपकुक्षम् वस्तु ।

अथतद्धितप्रकरणप्रदर्शकः सप्तमोऽध्यायः ।

१ अण्, यण्, आयनण्, इण्, इकण्, ईकण्, ईयण्, रायण्, कण्, कन् इत्यादि प्रत्यय "तस्यापत्यं", "तत्रभवः", "तस्येदम्", "अस्यदेवता", "तंवेत्त्यधीते वा", "तेन प्रोक्तम्", "तेनकृतम्", "तत्रसाधुः", "तत्रदेयम्", "तस्मादागतं", तमर्हति "अस्यपण्यम्", "अस्य ग्रहणम्", "प्रयोजनमस्य", "अस्य शीलं", "तं अधिकृत्यकृतं", "तेनजीवति", "तस्य भावः", "स्वार्थे मे", "हस्वार्थे मे" होते हैं क्रम से सविग्रह उदाहरण देखो जैसे रघणस्यापत्यंपुमान् राघवः; ग्रामेभवः ग्राम्यः; चन्द्रस्य इदं चान्द्रम्; विष्णु रस्यदेवतावैष्णवः; व्याकरणं वेत्ति अधीते वा वैयाकरणः; ऋषिणा प्रोक्तं आर्षम् मनसाकृतंमानसिकम्; सभायांसाधुः सभ्यः; मासेदेयंमासिकम्; पितुरागतं पैतृकम्; छेदमर्हतिछेद्यः; लवणमस्यपण्यं लावणिकः; धनुरस्य ग्रहणं धानुष्कः; यशः प्रयोजनमस्य यशस्यम्; तपोऽस्यशीलं तापसः

(१) तत्र तेनेदमिति सरूपे । (२) दिङ्नामान्यन्तराले । (३)तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च । (४) चार्थे द्वन्द्वः । [५] पितामात्र । [६] श्वशुरः श्वश्रूवा ।

राममधिकृत्यकृतं रामायणं; व्यवहारेणजीवति व्यावहारिकः; शिशोर्भावः शैशवम्; चोरएवचौरः; ह्रस्वोवृक्षः वृक्षकः।

२ भाववाचक संज्ञा बनाने के लिये संज्ञा व विशेषण शब्दों से त और त्व प्रत्यय लगाई जाती है जिनमें तान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग और त्वान्त नपुंसक होते हैं जैसे अमरस्य भावः अमरता, अमरत्वम्, लघुता, लघुत्वम्।

३ तुल्यार्थद्योतन करने के लिये संज्ञा शब्दों से वत् प्रत्यय लगाते हैं और ये शब्द अव्ययों में गणना किये जाते हैं जैसे चन्द्रेण तुल्यं (इव) चन्द्रवत्।

४ अस्त्यर्थ में 'मत्' प्रत्यय होता है परन्तु जिन शब्दों के अन्त में, अन्तिम अ, आ या ऋ, अ, ण न को छोड़ कोई ऐसे वर्ण हो या उपधाभूत अ, आ या म होवे तो मत् के स्थान में वत् हो जाता है जैसे मतिर्विद्यतेऽस्य सः मतिमान्, अंशुमान्; ज्ञानवत्, दयावत्, विद्युत्वत् आत्मवत्, भास्वत्, लक्ष्मीवत्।

५ कहीं २ ऐसी संज्ञा जिनके अन्त में अ या आ हो और जिनमें एक से अधिक स्वर हों तो वहां विकल्प से वत् और इन् भी होते है जैसे ज्ञान से ज्ञानवत्, ज्ञानिन्; मालावत्, मालिन्।

६ अस् प्रत्ययान्त शब्द और स्रज्, मेधा, माया शब्दों में उपरोक्त अर्थ में विन् और वत् दोनों प्रत्यय विकल्प से होते है जैसे तेजस्—तेजस्विन्, तेजस्वत्; स्रज्—स्रग्वन्, स्रग्वत्।

७ जातार्थ में संज्ञा शब्द से इतच् प्रत्यय होता है जैसे पिपासा जाता अस्य सः पिपासितः क्षुधितः फलितः पुष्पितः।

८ उत्कर्ष वा प्रकर्षार्थद्योतन करने के लिये विशेषण शब्दों से तर, तम, ईयस्, इष्ठ प्रत्यय लगाई जाती हैं जैसे गुरु-गुरुतरः, गुरुतमः; गुरु—गरीयान्, गरिष्ठः। इन प्रत्ययों के साथ बहुधा प्रकृति के रूप में बहुत भेद हो जाता है इस लिये दूसरे व्याकरणों से पूरा २ अभ्यास कर लेना चाहिये जैसे अतिशयेन प्रशस्यः श्रेयान्, श्रेष्ठः, वृद्धः, ज्यायान्, ज्येष्ठः इत्यादि।

९ भाववाचक संज्ञा बनाने के लिये विशेषण शब्दों से इमन् प्रत्यय लगता है और इमन् प्रत्ययान्त शब्द प्रायः पुंल्लिङ्ग होते हैं जैसे गुरोर्भावः गरिमा, लघिमा, बहु—भूमा प्रिय से प्रेमा इत्यादि।

१० संख्यावाचक शब्दों से प्रकारार्थ में "धा" प्रत्यय और कुछ सर्व नाम

शब्दों से इसी अर्थ में "था" प्रत्यय लगाते हैं और दोनों प्रकार के सिद्ध शब्द अव्यय होते हैं जैसे एकाविधा एकधा, द्विधा, त्रिधा इत्यादि और अन्येन प्रकारेण अन्यथा, उभयथा, सर्वथा इत्यादि।

११ पञ्चमी अर्थ में तस् और सप्तमी अर्थ में "त्र" प्रत्यय लगाकर तदन्त शब्द अव्यय होते हैं जैसे ग्रामादितिग्रामतः; सर्वस्मिन्निति सर्वत्र, कस्मिन्निति-कुत्र इत्यादि।

१२ पूर्व, ऊर्द्ध, उपरि, अधस् और समय सूचक अव्ययों से भवार्थ में "तन" प्रत्यय होता है जैसे पूर्वं भवः पूर्वतनः अधसभवः अधतनः इत्यादि।

१३ किम् शब्द के सिद्ध रूपों में अनिश्चयत्व दिखाने के लिये "चित्" और चन प्रत्यय लगाते हैं जैसे कश्चित् कोचित् केचित् कश्चन, कोचन केचन इत्यादि भी अव्ययही हैं।

१४ अधीन और कात्स्न्यं (सम्पूर्णता) अर्थ में "सात्" प्रत्यय होता है जैसे राज्ञः अधीनं राजसात्; सर्वं भस्म भस्मसात् इत्यादि।

१५ किम्, यत् और तत् शब्दों से दो में से एक के निर्धारण करने में डतर और बहुतों में से एक के निर्धारण करने में "डतम" प्रत्यय लगाते हैं जैसे कतरो भवतोः नैयायिकः, कतमो भवतां वैयाकरणः।

अथ धातुरूपप्रदर्शकोऽष्टमोऽध्यायः।

(भ्वादिगणः) धातुसारः।

(धातु) भू सत्तायाम् (होना)	खनु अवदारणे (खोदना)	क्षिप्त्वरासंक्षमे (जल्दी क.)	जपजल्पव्यक्तायांवाचि (बोलना)
लट् (वर्तमान) भवति	खनति	त्वरते	जपति, जल्पति
लङ् (अनद्यतनभूत) अभवत्	अखनत्	अत्वरत	अजपत्, अजल्पत्
लिङ् (विधि) भवेत्	खनेत	त्वरेत	जपेत्, जल्पेत्
लिङ् (आशी) भूयात्	खायात्, खन्यात्	त्वरिषीष्ट	जप्यात्, जल्प्यात्
लिट् (परोक्षभूत) बभूव	चखान	तत्वरे	जजाप, जजल्प
लुट् (अन. भविष्य) भविता	खनिता	त्वरिता	जपिता, जल्पिता
लुङ् (सामान्यभूत) अभूत्	अखानीत्, अखनीत्	अत्वरिष्ट	अजापीत्, अजल्पीत्

लङ् (क्रियातिपत्ति) अभविष्यत्	अखनिष्यत्	अत्वरिष्यत	अजल्पिष्यत्, अजल्पिष्यत्
लृट् (सामान्यभविष्य) भविष्यति	खनिष्यति	त्वरिष्यते	जल्पिष्यति, जल्पिष्यति
लोट् (आज्ञा) भवतु	खनतु	त्वरताम्	जल्पतु, जल्पतु
णिजन्त (प्रेरणार्थक) भावयति *	खानयति	त्वरयति-ते	जल्पयति, जल्पयति
सन्नन्त (इच्छार्थक) बुभूषति	चिखनिषति	तित्वरिषति	जिजल्पिषति, जिजल्पिषति
यङन्त (अतिशयार्थक) बोभूयते	चख्न्यते	तात्वर्य्यते	जंजल्प्यते, जाजल्प्यते
कर्मवाच्य † या भाववाच्य भूयते	खायते, खन्यते	त्वर्य्यते	जल्प्यते, जल्प्यते
शतृ ‡. शानच् भवत्	खनन्	त्वरमाणः	जल्पन्, जल्पन्
क्त, क्तवतु भूतः भूतवान्	खातम्, खातवान्	तूर्णः तूर्णवान् त्वरितः त्वरितवान्	जल्पितः, जल्पितवान्; जल्पितवान्, जल्पितवान्
क्त्वाच् (पूर्वकालिका) भूत्वा	खात्वा, खनित्वा	त्वरित्वा	जल्पित्वा, जल्पित्वा
संज्ञा भावः भवनम् भूतिः	खननम्	त्वरणम्	जल्पः, जल्पनम्, जल्पनम्

(धातु) जिजये (जीतना)		क्षिक्षये (नाशहों)	चर (ल) गति भक्षणयोः	दंशदशने (काटना)	राजृदीप्तौ (शोभितहों)
लट्	जयति	क्षयति	चरति	दंशति	राजति, राजते
लङ्	अजयत्	अक्षयत्	अचरत्	अदशत्	अराजत्, अराजत
लिङ्	जयेत्	क्षयेत्	चरेत्	दशेत्	राजेत्, राजेत
लिङ्	जीयात्	क्षीयात्	चर्यात्	दश्यात्	राज्यात्, राजिषीष्ट
लिट्	जिगाय	चिक्षाय	चचार	ददंश	रराज, रेजे

* प्रायः सब धातु प्रेरणार्थक में उभयपदी होती हैं। † परस्मैपदी धातुओं से शतृ और आत्मनेपदी धातुओं से शानच् होता है। ‡ सकर्मक धातुओं से कर्मवाच्य अकर्मकों से भाववाच्य बनता है।

लुट्	जेता	क्षेता	चरिता	द्रष्टा	राजितासि,*राजितासे
लुङ्	अजैषीत्	अक्षैषीत्	अचारीत्	अदर्शीत्	अराजीस्, अराजिष्ट
लृङ्	अजेष्यत्	अक्षेष्यत्	अचरिष्यत्	अद्रक्ष्यत्	अराजिष्यत्,अराजिष्यत
लृट्	जेष्यति	क्षेष्यति	चरिष्यति	द्रक्ष्यति	राजिष्यति, राजिष्यते
लोट्	जयतु	क्षयतु	चरतु	दर्शतु	राजतु, राजताम्
णिजन्त	जाययति	क्षाययति	चारयति	दर्शयति	राजयति, राजयते
सन्नन्त	जिगीषति	चिक्षीषति	चिचरिषति	दिदृक्षति	रिराजिषति,रिराजिषते
यङन्त	जेजीयते	चेक्षीयते	चञ्चूर्यते	दंदृश्यते	रारज्यते
कर्मवाच्य	जीयते	क्षीयते	चर्यते	दृश्यते	राज्यते
शतृ	जयन्	क्षयन्	चरन्	दर्शन्	राजमानः
क्त,क्तवतु	जितः जितवान्	क्षीणः क्षीणवान्	चरितः चरितवान्	दृष्टः दृष्टवान्	राजितः, राजितवान्
क्त्वाच्	जित्वा	क्षित्वा	चरित्वा	दृष्ट्वा	राजित्वा
सप्ता	जयः	क्षयः	चरणम् चलनम्	दर्शनम्	राजनम्

दृशिर् प्रेक्षण (देखना)		पत्लृ पतने (गिरना)		भिक्षयाचने (माँगना)		याच याच्ञायां (माँगना)	
लट्	पश्यति	पतति		भिक्षते		याचति, याचते	
लङ्	अपश्यत्	अपतत्		अभिक्षत		अयाचत् अयाचत	
लिङ्	पश्येत्	पतेत्		भिक्षेत		याचेत्, याचेत	
लिङ्	दृश्यात्	पत्यात्		भिक्षिषीष्ट		याच्यात्, याचिषीष्ट	
लिट्	ददर्श	पपात		बिभिक्षे		ययाच, ययाचे	
लुट्	द्रष्टा	पतिता		भिक्षिता		याचितासि, याचितासे	
लुङ्	अद्राक्षीत्	अपतत्		अभिक्षिष्ट		अयाचीत्, अयाचिष्ट	
लृङ्	अद्रक्ष्यत्	अपतिष्यत्		अभिक्षिष्यत		अयाचिष्यत् अया-चिष्यत	
लृट्	द्रक्ष्यति	पतिष्यति		भिक्षिष्यते	)	याचिष्यति—ते	
लोट्	पश्यतु	पततु		भिक्षताम्		याचतु, याचताम्	
णिजन्त	दर्शयति	पातयति		भिक्षयति		याचयति—ते	
सन्नन्त	दिदृक्षति	पित्सति		बिभिक्षिषते		यियाचिषति—ते	

* इस लकार में प्रायः सब उभय पदी धातुओं में रूप भेद दिखाने के लिये मध्यम पुरुष एक वचन प्रयोग किया है।

यङन्त दरीदृश्यते	पनीपस्यते	वेमिक्ष्यते	यायाच्यते
कर्मवाच्य दृश्यते	पस्यते	मिक्ष्यते	याच्यते
शतृ० पश्यन्	पतन्	भिक्षमानः	याचन्,याचमानः
क्त, क्तवतु, दृष्टः, दृष्टवान्	पतितः—वान्	भिक्षितः-तवान्	याचितः, तवान्
क्त्वाप् दृष्ट्वा	पतित्वा	भिक्षित्वा	याचित्वा
संज्ञा दृष्टिः,दर्शनम्	पतनम्	भिक्षणं, भिक्षा	याचनम्, याच्ञा

पठ् व्यक्तायांवाचि पढ़ना	भास् दीप्तौ (रोशन हो०)	यती प्रयत्ने (कोशिश करना)	रमुक्रीडायाम् (खेलना)
लट् पठति	भासते	यतते	रमते
लङ् अपठत्	अभासत	अयतत	अरमत
लिङ् पठेत्	भासेत	यतेत	रमेत
लिङ् पठ्यात्	भासिषीष्ट	यतिषीष्ट	रंसीष्ट
लिट् पपाठ	बभासे	येते	रेमे
लुट् पठिता	भासिता	यतिता	रन्ता
लुङ् अपाठीत्	अभासिष्ट	अयतिष्ट	अरन्त
लृङ् अपठिष्यत्	अभासिष्यत्	अयतिष्यत	अरन्स्यत
लृट् पठिष्यति	भासिष्यते	यतिष्यते	रंस्यते
लोट् पठतु	भासताम्	यतताम्	रमताम्
णिजन्त पाठयति	भासयति—ते	यातयति	रमयति
सन्नन्त पिपठिषति	बिभासते	यियतिषते	रिरंसति
यङन्त पापठ्यते	बाभास्यते	यायत्यते	रंरम्यते
कर्मवाच्य पठ्यते	भास्यते	यत्यते	रम्यते
शतृ पठन्	भासमानः	यतमानः	रममाणः
क्त,क्तवतु पठितः पठितवान	भासितः, तवान्	यत्तः, यत्तवान्	रतः, रतवान्
क्त्वाप् पठित्वा	भासित्वा	यतित्वा	रन्त्वा
संज्ञा पठनम्	भासनम्, भासः	यतनम्, यत्नः	रमणम्, रतिः

	डुलभष्प्राप्तौ [पाना]	वद व्यक्तायां वाचि (बोलना)	टुवेपृ कम्पने [कांपना]	शंसु स्तुतौ [तारीफकरना]	स्वाद आस्वादने चखना
लट्	लभते	वदति	वेपते	शंसति	स्वादते
लुङ्	अलभत	अवदत्	अवेपत	अशंसत्	अस्वादत
लिङ्	लभेत	वदेत्	वेपेत	शंसेत्	स्वादेत
लिङ्	लप्सीष्ट	उद्यात्	वेपिषीष्ट	शंस्यात्	स्वादिषीष्ट
लिट्	लेभे	उवाद	विवेपे	शशंस	सस्वादे
लुट्	लब्धा	वदिता	वेपिता	शंसिता	स्वादिता
लृङ्	अलब्ध	अव[वा]दीत्	अवेपिष्ट	अशंसीत्	अस्वादिष्ट
लृङ्	अलप्स्यत	अवदिष्यत्	अवेपिष्यत	अशंसिष्यत्	अस्वादिष्यत
लृट्	लप्स्यते	वदिष्यति	वेपिष्यते	शंसिष्यति	स्वादिष्यते
लोट्	लभताम्	वदतु	वेपताम्	शंसतु	स्वादताम्
णिजन्त	लाभयति	वादयति	वेपयति	शंसयति	स्वादयति
सन्नन्त	लिप्सते	विवदिषति	विवेपिषते	शिशंसिषति	सिस्वादिषते
यङन्त	लालभ्यते	वावद्यते	वेवेप्यते	शाशस्यते	सास्वाद्यते
कर्मवाच्य	लभ्यते	उद्यते	वेप्यते	शस्यते	स्वाद्यते
शतृ०	लभमान	वदन्	वेपमान	शंसन्	स्वादमानः
क्तक्तवतु	लब्ध, वान्	उदितः-वान्	वेपित-वान्	शस्त, शस्त-वान्	स्वादितः स्वादितवान्
क्त्वाच्	लब्ध्वा	उदित्वा, वादित्वा	वेपित्वा	शंसित्वा, शस्त्वा	स्वादित्वा
संज्ञा	लाभः लब्धिः लभनम्	वदनम्, वाद	वेपनम्, वेपथु	शंसनम्, शस्ता, शस्ति	स्वादनं, स्वादः

	वस निवासे [रहना]	णद अव्यक्ते शब्दे	टुभाष आक्षेपे [बुराकहना]	ष्ठाग्लातिनिवृत्तौ [ठहरना]	ष्मृ स्मरणे [याद करना]
लट्	वसति	नदति	शपति	तिष्ठति	स्मरति
लङ्	अवसत्	अनदत्	अशपत्	अतिष्ठत्	अस्मरत्
लिङ्	वसेत्	नदेत्	शपेत्	तिष्ठेत्	स्मरेत्
लिङ्	उष्यात्	नद्यात्	शप्यात्	स्थेयात	स्मर्यात्
लिट्	उवास	ननाद	शशाप	तस्थौ	सस्मार
लुट्	वस्ता	नदिता	शप्ता	स्थाता	स्मर्ता

लुङ्	अवात्सीत्	अन[ना]दीत्	अशाप्सीत्	अस्थात्	अस्मार्षीत्
लृङ्	अवत्स्यत्	अनदिष्यत्	अशप्स्यत्	अस्थास्यत्	अस्मरिष्यत्
लृट्	वत्स्यति	नदिष्यति	शप्स्यति	स्थास्यति	स्मरिष्यति
लोट्	वसतु	नदतु	शपतु	तिष्ठतु	स्मरतु
णिजन्त	वासयति	नादयति	शापयति	स्थापयति	स्मरयति
सन्नन्त	विवत्सति	निनदिषति	शिशप्सति	तिष्ठासति	सुस्मूर्षते
यङन्त	वावस्यते	नानद्यते	शाशप्यते	तेष्ठीयते	सास्मर्यते
क० वा०	उष्यते	नद्यते	शप्यते	स्थीयते	स्मर्यते
शतृ०	वसन्	नदन्	शपन्	तिष्ठन्	स्मरन्
क्त क्तवतु	उषितः, वान्	नदितः वान्	शप्तः शप्तवान्	स्थित, वान्	स्मृतः, वान्
क्त्वाच्	उषित्वा	नदित्वा	शप्त्वा	स्थित्वा	स्मृत्वा
संज्ञा	उष्टि, वासः वसनम्	नदत्तम्, नादः	शपनम्, शाप	स्थानम्, स्थितिः	स्मृतिः स्मरणम्

	षह मर्षणे (सहना)	गुपू रक्षणे [रक्षाक०]	घ्राङ् गन्धोपादने [सूघना]	गम्लृ गतौ [जाना]	ङीङ् विहाय सागतौ
लट्	सहते	गोपायति	जिघ्रति	गच्छति	ङयते
लङ्	असहत	अगोपायत्	अजिघ्रत्	अगच्छत्	अङयत
लिङ्	सहेत	गोपायेत्	जिघ्रेत्	गच्छेत्	ङयेत
लिङ्	सहिषीष्ट	गुप्यात् गोपाय्यात्	घ्रायात्, घ्रेयात्	गम्यात्	ङयिषीष्ट
लिट्	सेहे	गोपायाम्*चक्रार इ.	जघ्रौ	जगाम	डिङ्ये
लुट्	सहिता, सोढा	गोपायिता, गोप्ता इ.	घ्राता	गन्ता	ङयिता
लुङ्	असहिष्ट	अगौप्सीत्, अगोपीत् इ.	अघ्रासीत् अघ्रात्	अगमत्	अङयिष्ट
लृङ्	असहिष्यत	अगोपायिष्यत् इ.	अघ्रास्यत्	अगमिष्यत	अङयिष्यत
लृट्	सहिष्यते	गोपायिष्यति इ.	घ्रास्यति	गमिष्यति	ङयिष्यते
लोट्	सहताम्	गोपायतु	जिघ्रतु	गच्छतु	ङयताम्
णिजन्त	साहयते	गोपाययति	घ्रापयति	गमयति	ङाययति
सन्नन्त	सिसहिषते	जुगोपायिषति	जिघ्रासति	जिगमिषति	डिङयिषते
यङन्त	सासह्यते		जेघ्रीयते	जङ्गम्यते	डेङीयते
कर्मवाच्य	सह्यते	गोपाय्यते		गम्यते	ङीयते

*"आस" और बभूव भी चकार के तुल्य लग सक्ता है परंतु केवल पर-सैपद में।

शतृ०	सहमानः	गोपायन्	जिघ्रन्	गच्छन्	डयमानः
क्त,क्तवतु	सोढः, वान्	गुप्तः, गोपायितः ई.	घ्रातः, घ्रातवान्	गतः, वान्	डीनः, वान्
क्त्वाच्	सहित्वा	गोपायित्वा ई.	घ्रात्वा	गत्वा	डायित्वा
संज्ञा	सहनम्	गोपायनम्, गोपनम्	घ्राणम्	गमनम्, गतिः	डयनम्

	हसे हसने [हंसना]		ध्माशब्दाग्निसंयोगयोः धौंकना		पा—पाने [पीना]		वृञ्वरणसन्त [रणयोः]		शिक्ष शिक्षायां
लट्	हसति		धमति		पिबति		तरति		शिक्षते
लङ्	अहसत्		अधमत्		अपिबत्		अतरत्		अशिक्षत
लिङ्	हसेत्		धमेत्		पिबेत्		तरेत्		शिक्षेत
लिङ्	हस्यात्		ध्मेयात्, ध्मायात्		पेयात्		तीर्यात्		शिक्षिषीष्ट
लिट्	जहास		दध्मौ		पपौ		ततार		शिक्षिक्षे
लुट्	हसिता		ध्माता		पाता		तरि [री] ता		शिक्षिता
लुङ्	अहसीत्		अध्मासीत्		अपात्		अतारीत्		अशिक्षिष्ट
लृङ्	अहसिष्यत्		अध्मास्यत्		अपास्यत्		अतरि [री] ष्यत्		अशिक्षिष्यत
लृट्	हसिष्यति		ध्मास्यति		पास्यति		तरि[री]ष्यति		शिक्षिष्यते
लोट्	हसतु		धमतु		पिबतु		तरतु		शिक्षताम्
णिजन्त	हासयति		ध्मापयति		पाययति		तारयति		शिक्षयति
सन्नन्त	जिहसिषति		दिध्मासति		पिपासति		तितीर्षति ई.		शिशिक्षिषते
यङन्त	जाहस्यते		देध्मीयते		पेपीयते		तेतीर्य्यते		शेशिक्ष्यते
क० घा०	हस्यते		ध्मायते		पीयते		तीर्यते		शिक्ष्यते
शतृ०	हसन्		धमन्		पिबन्		तरन्		शिक्षमाणः
क्त,क्तवतु	हसितः,वान्		ध्मातः, वान्		पीतः, वान्		तीर्णः—वान्		शिक्षितः,वान्
क्त्वाच्	हसित्वा		ध्मात्वा		पीत्वा		तीर्त्वा		शिक्षित्वा
संज्ञा	हसनम्, हासः		ध्मानम्		पानम्		तरणम्		शिक्षणम्, शिक्षा

	डुधमुउद्गिरणे [ओंकना]	हृञ् हरणे (हरना)	धाव गति शुद्ध्योः (दौड़ना)	ह्वे—आह्वाने (बुलाना)
लट्	धमति	हरति-ते	धावति, धावते	ह्वयति, ह्वयते
लङ्	अधमत्	अहरत्-त	अधावत्, अधावत	अह्वयत्, अह्वयत
लिङ्	धमेत्	हरेत् त	धावेत्, धावेत	ह्वयेत्, ह्वयेत

लिङ्	घम्यात्	ह्रियात्-ह्रषीष्ट	धाव्यात्, धाविषीष्ट	ह्वेयात्, ह्वासीष्ट
लिट्	घवाम	जह्रार-जह्रे	दधाव, दधावे	जुह्वाव, जुह्वुवे
लुट्	घमिता	ह्रर्तासि-से	धावितासि, से	ह्वातासि, ह्वातासे
लुङ्	अवमीत्	अहार्षीत्, अह्रत	अधावीत्, विष्ट	अह्वत्, अह्वत, अह्वास्त
लृङ्	अवमिष्यत्	अहरिष्यत्, त	अधाविष्यत्, त	अह्वास्यत्, त
लृट्	घमिष्यति	हरिष्यति-ते	धाविष्यति, ते	ह्वास्यति, ते
लोट्	घमतु	हरतु-ताम्	धावतु, ताम्	ह्वयतु, ह्वयताम्
णिजन्त	घा [व]मयति	हारयति इ०	धावयति, ते	ह्वाययति, ते
सन्नन्त	विघमिषति	जिहीर्षति	दिधाविषति, ते	जुह्वषति
यङन्त	घंघम्यते	जेह्रीयते	दाधाव्यते	आह्वायते
क० घा०	घम्यते	ह्रियते	धाव्यते	ह्वयते
शतृ०	घमन्	ह्रन्, माणः	धावन्, मानः	ह्वयन्—मानः
क्त,क्तवतु	घान्तः, घान्	ह्रतः, ह्रतवान्	धावितः धावितवान्	ह्रतः, तवान्
क्त्वाच्	घांत्वा, घमित्वा	ह्रत्वा	धावित्वा	ह्रत्वा
संज्ञा	घमनम्	ह्रणम्	धावनम्	आह्वानम्

	मिह सेचने [पेशावक.]	णीञ् प्रापणे (पाना)	डुवप् बीजतन्तु-सन्ताने (बोना)	पच् (पाके) पकाना
लट्	मेहति	नयति-ते	वपति—ते	पचति—ते
लङ्	अमेहत्	अनयत्-त	अवपत्—त	अपचत्—त
लिङ्	मेहेत्	नयेत्, त	उप्यात्, वप्सीष्ट	पच्यात्, पक्षीष्ट
लिट्	मिमेह	निनाय, निन्ये	उवाप, ऊपे	पपाच, पेचे
लुट्	मेढा	नेतासि-से	वप्तासि—से	पक्तासि—से
लुङ्	अमिक्षत्	अनैषीत्, अनेष्ट	अवाप्सीत्, अवप्त	अपाक्षीत्, अपक्त
लृङ्	अमेक्ष्यत्	अनेष्यत्-त	अवप्स्यत्—त	अपक्ष्यत्—त
लृट्	मेक्ष्यति	नेष्यति-ते	वप्स्यति—ते	पक्ष्यति—ते
लोट्	मेहतु	नयतु, ताम्	वपतु-ताम्	पचतु—ताम्
णिजन्त	मेहयति	नाययति-ते	वापयति—ते	पाचयति—ते
सन्नन्त	मिमिक्षति	निनीषति ते	विवप्सति-ते	पिपक्षति—ते
यङन्त	मेमिह्यते	नेनीयते	वावप्यते	पापच्यते
क० घा०	मिह्यते	नीयते	उप्यते	पच्यते
शतृ०	मेहन्	नयन्-मानः	वपन्, वपमानः	पचन्, पचमानः
क्त,क्तवतु	मीढः, वान्	नीतः-वान्	उप्तः, वान्	पक्तः, पक्तवान्

क्त्वाच् संज्ञा	मीत्वा मेहनम्	नीत्वा नयनं, नीतिः	उप्त्वा वपनम्	पक्त्वा पचनम्, पाकः

	यज देवपूजादौ	षेवृ सेवायाम् (सेवा करना)	लज्ज लज्जायां	यदि अभिवादन स्तुत्योः
लट्	यजति, ते	सेवते	लज्जते	वन्दते
लङ्	अयजत्—त	असेवत	अलज्जत	अवन्दत
लिङ्	यजेत्—त	सेवेत	लज्जेत	वन्देत
लिङ्	इज्यात्—यक्षीष्ट	सेविषीष्ट	लज्जिषीष्ट	वन्दिषीष्ट
लिट्	ईयाज, ईजे	सिषेव	लज्जे	ववन्दे
लुट्	यष्टासि—से	सेविता	लज्जिता	वन्दिता
लुङ्	अयाक्षीत्, अयष्ट	असेविष्ट	अलज्जिष्ट	अवन्दिष्ट
लृङ्	अयक्ष्यत्—त	असेविष्यत	अलज्जिष्यत	अवन्दिष्यत
लृट्	यक्ष्यति—ते	सेविष्यते	लज्जिष्यते	वन्दिष्यते
लोट्	यजतु—ताम्	सेवताम्	लज्जताम्	वन्दताम्
णिजन्त	याजयति—ते	सेवयति—ते	लज्जयति	वन्दयति—ते
सन्नन्त	यियक्षति—ते	सिषेविषते	लिलज्जिषते	विवन्दिषते
यङन्त	यायज्यते	सेसेव्यते	लालज्यते	वावन्द्यते
क०या०	इज्यते	सेव्यते	लज्ज्यते	वन्द्यते
शतृ०	यजन्, मानः	सेवमानः	लज्जमानः	वन्दमानः
क्त,क्तवतु	इष्ट, वान्	सेवितः-वान्	लज्जितः, वान्	वन्दितः, वान्
क्त्वाच्	इष्ट्वा	सेवित्वा	लज्जित्वा	वन्दित्वा
सञ्ज्ञा	यजनम्, यागः	सेवनम्, सेवा	लज्जा	वन्दनम्

	वृधूंवर्धने (बढ़ना)	गैशब्दे (गाना)	शकि शङ्कायां (शङ्का करना)	मुद हर्षे (खुशहोना)
लट्	वर्धते	गायति	शङ्कते	मोदते
लङ्	अवर्धत	अगायत्	अशङ्कत	अमोदत
लिङ्	वर्धेत	गायेत्	शङ्केत	मोदेत
लिङ्	वर्धिषीष्ट	गेयात्	शङ्किषीष्ट	मोदिषीष्ट
लिट्	ववृधे	जगौ	शशङ्के	मुमुदे
लुट्	वर्धिता	गाता	शङ्किता	मोदिता
लुङ्	अवृधत्, अवर्धिष्ट	अगासीत्	अशङ्किष्ट	अमोदिष्ट
लृङ्	अवर्त्स्यत, अवृधिष्यत	अगास्यत्	अशङ्किष्यत	अमोदिष्यत
लृट्	वर्त्स्यते, वर्धिष्यते	गास्यति	शङ्किष्यते	मोदिष्यते

लोट्	वर्धताम्	गायतु	शङ्कताम्	मोदताम्
णिजन्त	वर्धयति—ते	गापयति-ते	शङ्कयति—ते	मोदयति
सन्नन्त	विवर्धिषते, विवृत्सते	जिगासति	शिशङ्किषते	मुमु (मो) दिषते
यङन्त	वरीवृध्यते	जेगीयते	शाशङ्क्यते	मोमुद्यते
क० वा०	वृध्यते	गीयते	शङ्क्यते	मुद्यते
शतृ०	वर्धमानः	गायन्	शङ्कमानः	मोदमानः
क्त,क्तवतु	वृद्धः, वान्	गीतम्	शङ्कितः, वान्	मु(मो)दितम् वान्
क्त्वाच्	वर्धित्वा, वृद्ध्वा	गात्वा	शङ्कित्वा	मु (मो) दित्वा
संज्ञा	वर्धनम्, वृद्धिः	गानम्	शङ्का	मोदनम्, मोदः

	णिदि कुत्सायाम् (निन्दाक०)	वृतु वर्तने (वर्तना)	अदाद्गणः अद भक्षणे	मा माने (समाना)
लट्	निन्दति	वर्तते	अत्ति	माति
लङ्	अनिन्दत्	अवर्तत	आदत्	अमात्
लिङ्	नन्देत्	वर्तेत	अद्यात्	मायात्
लिंङ्	निन्द्यात्	वर्तिषीष्ट	अद्यात्	मेयात्
लिट्	निनिन्द	ववृते	आद, जघास	ममौ
लुट्	निन्दिता	वर्तिता	अत्ता	माता
लृट्	अनिन्दीत्	अवर्तिष्ट अवृतत	अघसत्	अमासीत्
लृङ्	अनिन्दिष्यत	अवर्तिं(र्त्स्यं)ष्यत	आत्स्यत्	अमास्यत्
लृट्	निन्दिष्यति	वर्तिं(र्त्स्यं)ष्यते	अत्स्यति	मास्यति
लोट्	निन्दतु	वर्तताम्	अत्तु	मातु
णिजन्त	निन्दयति	वर्तयते—ति	आदयति	मापयति
सन्नन्त	निनिन्दिषति	विवर्तिषते विवृत्सते	जिघत्सति	मित्सति
यङन्त	नेनिन्द्यते	वरीवृत्यते		ममीयते
कर्म०	निन्द्यते	वृत्यते	अद्यते	मीयते
शतृ०	निन्दन्	वर्तमानः	अदन्	मान्
क्त,क्तवतु	निन्दितः, वान्	वृतः, वान्	जग्धः, वान्	मितः, तवान्
क्त्वाच्	निन्दित्वा	वर्तिं (वृ) त्वा	जग्ध्वा	मात्वा
संज्ञा	निन्दा	वर्तनम्, वृत्तिः	अदनम्	मानम्

	णमुअभिवादने (नमस्कारक०)	जीव प्राणधारणे (जीना)	जागृ निद्राक्षये (जागना)	मृजूष शुद्धौ (मांजना)
लट्	नमति	जीवति	जागर्ति	मार्ष्टि
लङ्	अनमत्	अजीवत्	अजागः	अमार्ट्

कत्वाच्	मीत्वा	नीत्वा	उप्त्वा	पक्त्वा
संज्ञा	मेहनम्	नयनं, नीतिः	वपनम्	पचनम्, पाकः

	यज देवपूजादौ	सेवृ सेवायाम् (सेवा करना)	लज्ज लज्जायां	वदि अभिवादन स्तुत्योः
लट्	यजति, ते	सेवते	लज्जते	वन्दते
लङ्	अयजत्—त	असेवत	अलज्जत	अवन्दत
लिङ्	यजेत्—त	सेवेत	लज्जेत	वन्देत
लिङ्	इज्यात्—यक्षीष्ट	सेविषीष्ट	लज्जिषीष्ट	वन्दिषीष्ट
लिट्	ईयाज, ईजे	सिषेवे	ललज्जे	ववन्दे
लुट्	यष्टासि—से	सेविता	लज्जिता	वन्दिता
लुङ्	अयाक्षीत्, अयष्ट	असेविष्ट	अलज्जिष्ट	अवन्दिष्ट
लृङ्	अयक्ष्यत्—त	असेविष्यत	अलज्जिष्यत	अवन्दिष्यत
लृट्	यक्ष्यति—ते	सेविष्यते	लज्जिष्यते	वन्दिष्यते
लोट्	यजतु—ताम्	सेवताम्	लज्जताम्	वन्दताम्
णिजन्त	याजयति—ते	सेवयति—ते	लज्जयति	वन्दयति—ते
सन्नन्त	यियक्षति—ते	सिषेविषते	लिलज्जिषते	विवन्दिषते
यङन्त	यायज्यते	सेसेव्यते	लालज्यते	वावन्द्यते
क०वा०	इज्यते	सेव्यते	लज्ज्यते	वन्द्यते
शतृ०	यजन्, मानः	सेवमानः	लज्जमानः	वन्दमानः
क्त,क्तवतु	इष्ट, वान्	सेवितः-वान्	लज्जितः, वान्	वन्दितः, वान्
कत्वाच्	इष्ट्वा	सेवित्वा	लज्जित्वा	वन्दित्वा
संज्ञा	यजनम्, यागः	सेवनम्, सेवा	लज्जा	वन्दनम्

	धृधूधर्धने (बढ़ना)	गैशब्दे (गाना)	शकि शङ्कायां (शङ्का करना)	मुद हर्षे (खुशहोना)
लट्	धर्धते	गायति	शङ्कते	मोदते
लङ्	अधर्धत	अगायत्	अशङ्कत	अमोदत
लिङ्	धर्धेत	गायेत्	शङ्केत	मोदेत
लिङ्	धर्धिषीष्ट	गेयात्	शङ्किषीष्ट	मोदिषीष्ट
लिट्	दधृधे	जगौ	शशङ्के	मुमुदे
लुट्	धर्धिता	गाता	शङ्किता	मोदिता
लुङ्	अधृधत्, अधर्धिष्ट	अगासीत्	अशङ्किष्ट	अमोदिष्ट
लृङ्	अधर्स्यत, अधृधिष्यत	अगास्यत्	अशङ्किष्यत	अमोदिष्यत
लृट्	धर्स्यते, धर्धिष्यते	गास्यति	शङ्किष्यते	मोदिष्यते

लोट्	वर्धताम्	गायतु	शङ्कताम्	मोदताम्
णिजन्त	वर्धयति—ते	गापयति-ते	शङ्कयति—ते	मोदयति
सन्नन्त	विवर्धिषते, विवृत्सते	जिगासति	शिशङ्किषते	मुमु (मो) दिषते
यङन्त	वरीवृध्यते	जेगीयते	शाशङ्क्यते	मोमुद्यते
क० वा०	वृध्यते	गीयते	शङ्क्यते	मुद्यत
शतृ०	वर्धमानः	गायन्	शङ्कमानः	मोदमानः
क्त,क्तवतु	वृद्धः, वान्	गीतम्	शङ्कितः, वान्	मु(मो)दितम् वान्
क्त्वाच्	वर्धित्वा, वृद्ध्वा	गात्वा	शङ्कित्वा	मु (मो) दित्वा
संज्ञा	वर्धनम्, वृद्धिः	गानम्	शङ्का	मोदनम्, मोदः

	णिदि कुत्सायाम् (निन्दाक०)	वृतु वर्तने (वर्तना)	अदादिगणः अद भक्षणे	मा माने (समाना)
लट्	निन्दति	वर्तते	अत्ति	माति
लङ्	अनिन्दत्	अवर्तत	आदत्	अमात्
लिङ्	नन्देत्	वर्तेत	अद्यात्	मायात्
लिङ्	निन्द्यात्	वर्तिषीष्ट	अद्यात्	मेयात्
लिट्	निनिन्द	ववृते	आद, जघास	ममौ
लुट्	निन्दिता	वर्तिता	अत्ता	माता
लृट्	अनिन्दीत्	अवर्तिष्ट अवृतत	अघसत्	अमासीत्
लृङ्	अनिन्दिष्यत	अवर्तिं(र्त्स्यं)ष्यत	आत्स्यत्	अमास्यत्
लृट्	निन्दिष्यति	वर्तिं(र्त्स्यं)ष्यते	अत्स्यति	मास्यति
लोट्	निन्दतु	वर्तताम्	अत्तु	मातु
णिजन्त	निन्द्यति	वर्तयते—ति	आदयति	मापयति
सन्नन्त	निनिन्दिषति	विवर्तिषते विवृत्सते	जिघत्सति	मित्सति
यङन्त	नेनिन्द्यते	वरीवृत्यते		ममीयते
कर्म०	निन्द्यते	वृत्यते	अद्यते	मीयते
शतृ०	निन्दन्	वर्तमानः	अदन्	मान्
क्त,क्तवतु	निन्दितः, वान्	वृतः, वान्	जग्धः, वान्	मीतः, तवान्
क्त्वाच्	निन्दित्वा	वर्तिं (वृ) त्वा	जग्ध्वा	मात्वा
संज्ञा	निन्दा	वर्तनम्, वृत्तिः	अदनम्	मानम्

	णमुअभिवादने (नमस्कारक०)	जीव प्राणधारणे (जीना)	जागृ निद्राक्षये (जागना)	मृजूष शुद्धौ (मांगना)
लट्	नमति	जीवति	जागर्ति	मार्ष्टि
लङ्	अनमत्	अजीवत्	अजागः	अमार्ट्

लिङ्	नमत्	जीवेत्	जागृयात्	मृज्यात्
लिङ्	नम्यात्	जीव्यात्	जागर्यात्	मृज्यात्
लिट्	ननाम	जिजीव	जजागार जागराञ्चकार	ममार्ज
लुट्	नन्ता	जीविता	जागरिता	मार्ष्टा, मार्जिता
लृट्	नंसीत्	अजीवीत्	अजागरीत्	अमार्क्षी (र्जी) त्
लृङ्	अनंस्यत्	अजीविष्यत्	अजागरीष्यत्	अमार्क्ष्यं(र्जिष्य)त्
लृट्	नंस्यति	जीविष्यति	जागरिष्यति	मार्क्षं(र्जिष्य)ति
लोट्	नमतु	जीवतु	जागर्तु	मार्ष्टु
णिजन्त	न (ना) मयति	जीवयति	जागरयति	माजयति
सन्नन्त	निनंसति	जिजीविषति	जिजागरिषति	मिमार्क्षं(र्जिष) ति
यङन्त	नंनम्यते	जेजीव्यते		मर्मृज्यते
क० वा०	नम्यते	जीव्यते	जागर्य्यते	मृज्यते
शतृ०	नमन्	जीवन्	जाग्रन्	मार्जन्, मृजन्
क्त,क्तवतु	नतः—वान्	जीवितः, वान्	जागरितः, वान्	मृष्टः, वान्
क्त्वाञ्	नत्वा	जीवित्वा	जागरित्वा	मृष्ट्वा, मार्जित्वा
संज्ञा	नमनम्, नतिः	जीवनम् इति भ्वादिः	जागरणम्	मार्जनम्

	वच परिभाषणे (बोलना)	ष्टुञ् स्तुतौ (तारीफ करना)	पारक्षणे	ष्वप् शये [सोना]
लट्	वक्ति	स्तौति, स्तवीतिस्तुते, स्तवीत	पाति	स्वपिति
लङ्	अवक्	अस्तौत्, अस्तवीत्; अस्तुत, अस्तवीत	अपाट्	अस्वप[पी]त्
लिङ्	वच्यात्	स्तवीयात्, स्तुयात्, स्तुवीत	पायात्	स्वप्यात्
लिङ्	उच्यात्	स्तूयात्, स्तोषीष्ट	पायात्	सुप्यात्
लिट्	उवाच	तुष्टाव; तुष्टुवे	ययौ	सुष्वाप
लुट्	वक्ता	स्तोतासि—से	पाता	स्वप्ता
लुङ्	अवोचत्	अस्तावीत् अस्तोष्ट	अपासीत्	अस्वाप्सीत्
लृङ्	अवक्ष्यत्	अस्तोष्यत्, अस्तोष्यत	अपास्यत्	अस्वप्स्यत्
लृट्	वक्ष्यति	स्तोष्यति, स्तोष्यते	पास्यति	स्वप्स्यति
लोट्	वक्तु	स्तौतु, स्तवीतु; स्तुतां, स्तुवाताम्	पातु	स्वपितु
णिजन्त	वाचयति	स्तावयति—ते	पालयति	स्वापयति
सन्नन्त	विवक्षति	तुष्टूषति	पिपासति	सुषुप्सति

यङन्त	वावच्यते	तोष्टूयते	पेपीयते	सास्वप्यते
क० वा०	उच्यते	स्तूयते	पीयते	सुप्यते
शतृ०	वचन्	स्तुवन्, स्तवमानः	पान्	स्वपन्
क्त,क्तवतु	उक्तम्, वान्	स्तुतः, तवान्	पीतः, वान्	सुप्तः, वान्
क्त्वाच्	उक्त्वा	स्तुत्वा	पीत्वा	सुप्त्वा
संज्ञा	वचनम्	स्तुतिः, स्तवनम	पानम्	स्वपनं,सुषुप्ति

	शासु अनुशिष्टौ (हुक्म द०)	ष्टुस्तुतौ (तारीफकरना)	अस् भुवि [होना]	विद् ज्ञाने [जानना]	ष्णा शौच [न्हाना]
लट्	शास्ति	नौति	अस्ति	वेत्ति [वेद]	स्नाति
लङ्	अशात्	अनौत्	आसीत्	अवेत्	अस्नात्
लिङ्	शिष्यात्	नुयात्	स्यात्	विद्यात्	स्नायात्
लिङ्	शिष्यात्	नूयात्	भूयात	विद्यात्	स्ना [स्ने]-यात्
लिट्	शशास	नुनाव	बभूव	विवेद,विदाञ्चकार	सस्नौ
लुट्	शासिता	नविता	भविता	वेदिता	स्नाता
लुङ्	अशिषत्	अनावीत्	अभूत्	अवेदीत्	अस्नासीत्
लृङ्	अशासिष्यत्	अनविष्यत्	अभविष्यत्	अवेदिष्यत्	अस्नास्यत्
लृट्	शासिष्यति	नविष्यति	भविष्यति	वेदिष्यति	स्नास्यति
लोट्	शास्तु	नौतु	अस्तु	वेत्तु, विदाङ्कयतु	स्नातु
णिजन्त	शासयति	नावयति	भावयति	वेदयति	स्नापयति
सन्नन्त	शिशासिषति	नुनविषति	बुभूषति	विविदिषति	सिस्नासति
यङन्त	शेशिष्यते	नोनूयते	बोभूयते	वेवेद्यते	सास्नायते
क० वा०	शिष्यते	नूयते	भूयते	विद्यते	स्नायते
शतृ०	शासन्	नवन्	सन्	विदन्	स्नान्
क्त,क्तवतु	शिष्टः, वान्	नुतः, वान्	भूतः, वान्	विदितःवान्	स्नातः,वान्
क्त्वाच्	शिष्ट्वा, शासित्वा	नुत्वा	भूत्वा	विदित्वा	स्नात्वा
संज्ञा	शासनन्	नवनम्, नुतिः	भवनम्भूतिः	वेदनम्	स्नानम्

	लिहआस्वादने (चाटना)	ऋदिरश्रुवि-मोचने	द्विष अप्रीतौ (द्वेष करना)	इण् गतौ (जाना)
लट्	लेढि, लीढे	रेदिति	द्वेष्टि, द्विष्टे	एति
लङ्	अलेट्, अलीढ	अरोद् (दी) त्	अद्वेट्, अद्विष्ट	ऐत्
लिङ्	लिह्यात्,लिहीत	रुद्यात्	द्विष्यात्,द्विषीत	इयात्

लिङ्	लिह्यात्, लिक्षीष्ट	रुद्यात्	द्विष्यात्, द्विक्षीष्ट	ईयात्
लिट्	लिलेह, लिलिहे	रुरोद	दिद्वेष, दिद्विषे	इयाय
लुट्	लेढासि-से	रोदिता	द्वेष्टासि-से	एता
लुङ्	अलिक्षत्-त अलीढ	अरोदीत् (रुद्) त्	अद्विक्षत्-त	अगात्
लृङ्	अलेक्ष्यत् त	अरोदिष्यत्	अद्वेक्ष्यत् त	ऐष्यत्
लृट्	लेक्ष्यति ते	रोदिष्यति	द्वेक्ष्यति-ते	एष्यति
लोट्	लेढु, लीढाम्	रोदितु	द्वेष्टु, द्विष्टाम्	एतु
णिजन्त	लेहयति ते	रोदयति	द्वेषयति-ते	गमयति
सन्नन्त	लिलिक्षति ते	रुरुदिषति	दिद्विक्षति-ते	जिगमिषति
यङन्त	लेलिह्यते	रोरुद्यते	देद्विष्यते	
क०वा०	लिह्यते	रुद्यते	द्विष्यते	ईयते
शतृ०	लिहन्, लिहान	रुदन्	द्विषन्-षाणः	यन्
क्त,क्तवतु	लीढः, लीढवान्	रु(रो)दितः वान्	द्विष्टः, वान्	इतः, वान्
क्त्वाड्	लीढ्वा	रुदित्वा	द्विष्ट्वा	इत्वा
सञ्	लेहनम्	रोदनम्	द्वेषणम्, द्वेषः	अयनम्

	हन् हिंसागत्योः (मारना)	रु शब्दे (रोना)	शीङ् स्वप्ने (सोना)	दुह प्रपूरणे (दुहना)
लट्	हन्ति	रौति, रवीति	शेते	दोग्धि, गुग्धे
लङ्	अहन्	अरौत्, अरवीत्	अशेत	अधोक्, अदुग्ध
लिङ्	हन्यात्	रुयात्, रुवीयात्	शयीत्	दुह्यात्, दुहीत
लिट्	जघान	रुराव	शयिषीष्ट	दुह्यात्, धुक्षीष्ट
लुट्	हन्ता	रुरविता	शिश्ये	दुदोह, दुदुहे
लृट्	अवधीत्	अरावीत्	शयिता	दोग्धासि-से
			अशयिष्ट	अधुक्षत् त अदुग्ध
लृङ्	अहनिष्यत्	अरविष्यत्	अशयिष्यत	अधोक्ष्यत् त
लृट्	हनिष्यति	रविष्यति	शयिष्यते	धोक्ष्यति-ते
लोट्	हन्तु	रौतु, रवीतु	शेताम्	दोग्धु, दुग्धाम्
णिजन्त	घातयति	रावयति	शाययति	दोहयति ते
सन्नन्त	जिघांसति	रुरूषति	शिशयिषते	दुधुक्षति ते
यङन्त	जङ्घन्यते जङ्घ्नीयते	रोरूयते	शाशय्यते	दोदुह्यते
क०वा०	हन्यते	रूयते	श्रूयते	दुह्यते

शतृ०	घ्नन्	स्वपन्	शयानः	दुहन्-हानः
क्त,क्तवतु	हतः, वान्	सुप्तः, वान्	शयितः, वान्	दुग्धः, वान्
क्त्वाच्	हत्वा	सुप्त्वा	शयित्वा	दुग्ध्वा
संज्ञा	हननम्	स्वपनं, सावः	शयनम्	दोहनम्

	ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि	ञिभी भये (डरना)	डुभृञ् धारणपोषणयोः (पालना)	डुधाञ् धारणे
लट्	ब्रवीति, ब्रूते	बिभेति	बिभर्ति, बिभृते	दधाति धत्ते
लङ्	अब्रवीत्, अब्रूत	अबिभेत्	अबिभः,अबिभृत	अदधात् अधत्त
लिङ्	ब्रूयात्, ब्रुवीत	बिभीयात्	बिभृयात्,बिभ्रीत	दध्यात् दधीत
लिङ्	उच्यात्, वक्षीष्ट	भीयात्	म्रियात्, भृषीष्ट	धेयात्-धासीष्ट
लिट्	उवाच, ऊचे	बिभाय, बिभयां चक्रे इत्यादि	बभार, बिभरा-ञ्चकार बभ्रे	दधौ दधे
लुट्	वक्तासि-से	भेता	भर्तासि-से	धातासि-से
लुङ्	अवोचत्-त	अभैषीत्	अभार्षीत्, अभृत	अधात् अधित
लृङ्	अवक्ष्यत्-त	अभेष्यत्	अभरिष्यत्-त	अधास्यत्-त
लृट्	वक्ष्यति-ते	भेष्यति	भरिष्यति ते	धास्यति-ते
लोट्	ब्रवीतु, ब्रूताम्	बिभेतु	बिभर्तु,बिभृताम्	दधातु-धत्ताम्
णिजन्त	वाचयति-ते	भाषयते,भाषयते	भारयति-ते	धापयति ते
सन्नन्त	विवक्षति ते	बिभीषति	बुभूर्षति-ते	धित्सति-ते
यङन्त	वावच्यते	बेभीयते	बेभ्रीयते	देधीयते
कर्म०	उच्यते	भीयते	भ्रियते	धीयते
शतृ०	ब्रुवन्, वाणः	बिभ्यन्	बिभ्रन् बिभ्राणः	दधन्-दधानः
क्त,क्तवतु	उक्तम्, वान्	भीतः, वान्	भृतः, वान्	हितः, वान्
क्त्वाच्	उक्त्वा	भीत्वा	भृत्वा	हित्वा
संज्ञा	वचनम्	भयम्, भीतिः	भरणम्, भृतिः	आधानम्
	इत्यदादिः			

	अथजुहोत्यादिः। हुदानादनयोः (देना खाना)	ओहाक् त्यागे	डुदाञ् दाने (देना)	अथ दिवादिः। दिवुक्रीडा विजगीषा दी (खेलना)
लट्	जुहोति	जहाति	ददाति दत्ते	दीव्यति
लङ्	अजुहोत	अजहात्	अददात् अदत्त	अदीव्यत्
लिङ्	जुहुयात्	जह्यात्	दद्यात-ददीत	दीव्येत्
लिङ्	हूयात्	हेयात्	देयात्-दासीष्ट	दीव्यात्
लिट्	जुहाव	जहौ	ददौ-ददे	दिदेव

लुट्	दाता	दाता	दातारौ-रः	देविता
लुङ्	अदात्पीत्	अदासीत्	अदात्-अदिष्ट	अदेवीत्
लृङ्	अदास्यत्	अदास्यत्	अदास्यत्-त	अदेविष्यत्
लृट्	दास्यति	दास्यति	दास्यति-ते	देविष्यति
लोट्	ददातु	ददातु	ददातु-दत्ताम्	दीव्यतु
णिजन्त	दापयति	दापयति-ते	दापयति ते	देवयति-ते
सन्नन्त	दित्सति	जिदासति	दिरसति-ते	दिदेविषति (ते)
यङन्त	दादीयते	देदीयते	देदीयते	देदीव्यते
क० या०	दीयते	दीयते	दीयते	दीव्यते
शतृ०	ददत्	जदत्	ददत्-ददानः	दीव्यत्
क्त,क्तवतु	दत्तः, वान्	दत्तः, वान्	दत्तः, वान्	यूतः, वान्
क्त्वाच्	दत्त्वा	दित्वा	दत्त्वा	दिवित्वा, यूत्वा
संज्ञा	दानम्	दानिः	दानम्	यूतिः

	मन ज्ञाने [मानना]		नृती गात्रविक्षेपे [नाचना]		असु क्षेपणे [फेंकना]		णश् अदर्शने [नाशहो०]	
लट्	मन्यते		नृत्यति		अस्यति		नश्यति	
लङ्	अमन्यत		अनृत्यत्		आस्यत्		अनश्यत्	
लिङ्	मन्येत		नृत्येत्		असेत्		नश्येत्	
लिट्	मंसीष्ट		नृत्यात्		अस्यात्		नश्यात्	
लुट्	मेने		ननर्त		आस		ननाश	
लुट्	मन्ता		नर्तिता		असिता		नशिता, नंष्टा	
लुङ्	अमंस्त		अनर्तीत्		आस्यत्		अनशत्	
लृङ्	अमस्यत		अनर्तिं [स्यं] ष्यत्		आसिष्यत्		अनशिष्य[नंक्ष्य]त्	
लृट्	मंस्यते		नर्त्स्यं [र्तिष्य] ति		असिष्यति		नंक्ष्य [नशिष्य] ति	
लोट्	मन्यताम्		नृत्यतु		अस्यतु		नश्यतु	
णिजन्त	मानयति		नर्तयति		आसयति		नाशयति	
सन्नन्त	मिमंसते		निनर्तिंषतिनिनृत्सति		आसिसिषति		निनंक्ष[निनशिष]ति	
यङन्त	मम्मन्यते		नरीनृत्यते				नानश्यते	
क० या०	मन्यते		नृत्यते		अस्यते		नश्यते	
शतृ०	मन्यमानः		नृत्यन्		अस्यन्		नश्यन्	
क्त,क्तवतु	मतः, वान्		नर्तितः, वान्		अस्तः, वान्		नष्टः, वान्	
क्त्वाच्	मत्वा		नर्तित्वा		असित्वा, स्त्वा		नशित्वा, नंष्ट्वा	
संज्ञा	मननम्मतिः		नर्तनम्		असनम्		नाशनम्, नाशः	

	युधसम्प्रहारे [लड़ना]	मुह वैचित्ये [घबड़ाना]	अमु तृपसि खेदे च	रध हिंसासंराध्योः [राधना]
लट्	युध्यते	मुह्यति	आम्यति	रध्यति
लङ्	अयुध्यत	अमुह्यत्	अश्राम्यत्	अरध्यत्
लिङ्	युध्येत	मुह्येत्	श्राम्येत्	रध्येत्
लिङ्	युत्सीष्ट	मुह्यात्	श्रम्यात्	रध्यात्
लिट्	युयुधे	मुमोह	श्राथाम	ररन्ध
लुट्	योद्धा	मोग्धा, ढा, ढिता	श्रमिता	रधिता [रद्धा]
लृट्	अयुत्स्य	अमुहत्	अश्रमत्	अरधत्
लृङ्	अयोत्स्यत	अमोक्ष्य (ढ्यि)त	अश्रमिष्यत्	अरत्स्य [धिष्य] त्
लृट्	योत्स्यते	मोक्ष्य [ढ्यि] ति	श्रमिष्यति	रत्स्य [धिष्य] ति
लोट्	युध्यताम्	मुह्यतु	श्राम्यतु	रध्यतु
णिजन्त	योधयति	मोहयति	श्रमयति	रन्धयति
सन्नन्त	युयुत्सते	मुमुक्षिप [क्ष] ति	शिश्रमिषते	रित्स (धिप) ति
यङन्त	योयुध्यते	मोमुह्यते	शंश्रम्यते	रारध्यते
क० धा०	युध्यते	मुह्यते	श्रम्यते	रध्यते
शतृ०	युध्यमानः	मुह्यन्	श्राम्यन्	रध्यन्
क्त,क्तवतु	युद्धः, वान्	मूढ. मुग्धः; वान्	श्रान्तः, वान्	रद्धः, वान्
क्त्वाच्	युद्ध्वा	मोहित्वा, मुग्ध्वा	श्रमित्वा,श्रान्त्वा	रधित्वा, रद्ध्वा
संज्ञा	योधनम्	मोहनम्, मोहः	श्रमः, श्रान्तिः	रंधनम्

	शुष शोषणे [सूखना]	विदसत्तायां [होना]	तुष प्रीतौ	पुष पुष्टौ [पुष्टहोना]
लट्	शुष्यति	विद्यते	तुष्यति	पुष्यति
लङ्	अशुष्यत्	अविद्यत	अतुष्यत्	अपुष्यत्
लिङ्	शुष्येत्	विद्येत	तुष्येत्	पुष्येत्
लिङ्	शुष्यात्	वित्सीष्ट	तुष्यात्	पुष्यात्
लिट्	शुशोष	विविदे	तुतोष	पुपोष
लुट्	शोष्टा	वेत्ता	तोष्टा	पोष्टा
लुङ्	अशुषत्	अवित्त	अतुषत्	अपुषत्
लृङ्	अशोक्ष्यत्	अवेत्स्यत	अतोक्ष्यत्	अपोक्ष्यत्
लृट्	शोक्ष्यति	वेत्स्यते	तोक्ष्यति	पोक्ष्यति
लोट्	शुष्यतु	विद्यताम्	तुष्यतु	पुष्यतु
णिजन्त	शोषयति	वेदयति	तोषयति	पोषयति
सन्नन्त	शुशुक्षति	विवित्सते	तुतुक्षति	पुपुक्षति

यङन्त	शोशुष्यते	वेविद्यते	तोतुष्यते	पोपुष्यते
क० वा०	शुष्यते	विद्यते	तुष्यते	पुष्यते
शतृ०	शुष्यन्	विद्यमानः	तुष्यन्	पुष्यन्
क्त,क्तवतु	शुष्कः, वान्	विद्धः, वान्	तुष्टः, वान्	पुष्टः, वान्
क्त्वाच्	शुष्ट्वा	विदित्वा	तुष्ट्वा	पुष्ट्वा
संज्ञा	शोषणम्	वेदनम्	तोषणम् तुष्टिः	पोषणं, पुष्टिः

	शमु उपशमे (शान्तहो०)	जनी प्रादुर्भावे	कुप्, क्रुध क्रोधे	ष्लिष आलिङ्गने [चिपटना]
लट्	शाम्यति	जायते	कुप्यति	श्लिष्यति
लङ्	अशाम्यत्	अजायत	अकुप्यत्	अश्लिष्यत्
लिङ्	शाम्येत्	जायेत	कुप्येत्	श्लिष्येत्
लिट्	शशाम	जज्ञे	चुकोप	शिश्लेष
लुट्	शमिता	जनिता	कोपिता	श्लेष्टा
लृट्	शशमत्	अजनि, ष्ट	अकुपत्	अश्लिक्ष [ष्] ट्
लृङ्	अशमिष्यत्	अजनिष्यत	अकोपिष्यत्	अश्लेक्ष्यत्
लृट्	शमिष्यति	जनिष्यते	कोपिष्यति	श्लेक्ष्यति
लोट्	शाम्यतु	जायताम्	कुप्यत्	श्लिष्यत
णिजन्त	श [शा] मयति	जनयति	कोपयति	श्लेषयति
सन्नन्त	शिशमिषति	जिजनिषते	चुकु [को] षिषति	शिश्लिक्षति
यङन्त	शाशम्यते	जञ्जन्यते [जाजायते]	चोकुप्यते	शेश्लिष्यते
क० वा०	शम्यते	जन्यते	कुप्यते	श्लिष्यते
शतृ०	शाम्यन्	जायमान.	कुप्यन्	श्लिष्यन्
क्त,क्तवतु	शान्त ,वान्	जात', वान्	कुपित', वान्	श्लिष्ट', वान्
क्त्वाच्	शमित्वा, शान्त्वा	जनित्वा	कु [को] पित्वा	श्लिष्ट्वा
संज्ञा	शान्ति , शमनम्	जननम्, जनु.	कोपन, कोप.	श्लेषणं, श्लेष.

	भ्रमु अनवस्थाने (घूमना)	हृष तुष्टौ (खुशहाना)	दुह जिघांसायाम् (वैर करना)	ष्ठिवु निरसने (थूकना)
लट्	भ्राम्यति, भ्रमति	हृष्यति	द्रुह्यति	ष्ठीव्य (ष्ठ) ति
लङ्	अभ्राम्यत्, अभ्रमत्	अहृष्यत्	अद्रुह्यत्	अष्ठीव्यत्
लिङ्	भ्राम्येत्, भ्रमेत्	हृष्येत्	द्रुह्येत्	ष्ठीव्येत्

लिङ्	भ्रम्यात्	हृष्यात्	द्रुह्यात्	ष्ठीव्यात्
लिट्	चभ्राम	जहर्ष	दुद्रोह	ति (टि) ष्ठेव
लुट्	भ्रमिता	हर्षिता	द्रोहिता, द्रोढा, द्रोग्धा	ष्ठेविता
लृङ्	अभ्रमत्	अहृषत्	अद्रुहत्	अष्ठेवीत्
लृङ्	अभ्रमिष्यत्	अहर्षिष्यत्	अद्रोहिष्य (अध्रोक्ष्य) त्	अष्ठेविष्यत्
लृट्	भ्रमिष्यति	हर्षिष्यति	द्रोहिष्य (ध्रोक्ष्य) ति	ष्ठेविष्यति
लोट्	भ्राम्यतु, भ्रमतु	हृष्यतु	द्रुह्यतु	ष्ठीव्यतु
णिजन्त	भ्रमयति	हर्षयति	द्रोहयति	ष्ठेवयति
सन्नन्त	विभ्रमिषति	जिहर्षिषति	दुद्रो (द्रु) हिष (दुध्रक्ष) ति	ति (टि) ष्ठेविषति
यङन्त	वंभ्रम्यते	जरीहृष्यते	दोद्रुह्यते	ते (टे) ष्ठीव्यते
क०घा०	भ्रम्यते	हृष्यते	द्रुह्यते	ष्ठीव्यते
शतृ०	भ्राम्यन्	हृष्यन्	द्रुह्यन्	ष्ठीव्यन्
क्त,क्तवतु	भ्रान्तः, वान्	हृष्टः, वान्	दुग्धः, द्रूढः, वान्	ष्ठ्यूतः, वान्
क्त्वाच	भ्रान्त्वा, भ्रमित्वा	हर्षित्वा	दुग्ध्वा, द्रो (द्रु) हित्वा	ष्ठेवि (ष्ठ्यू) त्वा
संज्ञा	भ्रमणम्, भ्रान्तिः	हर्षणम्, हर्षः	द्रोहः	ष्ठेवनम्, ष्ठ्यूतिः

	षिञ् तन्तु सन्ताने (सीना)	अथ स्वादिः। षूञ् अभिषवे	धूञ् कम्पने (कांपना)	राधसाध संसिद्धौ (सिद्ध करना)
लट्	सीव्यति	सुनोति, सुनुते	धू (धु) नोति, धूनुते	रा [सा] ध्नोति
लङ्	असीव्यत्	असुनोत्, असुनुत	अधूनोत्, अधूनुत	अरा [सा] ध्नोत्
लिङ्	सीव्येत्	सुनुयात्, सुन्वीत	धूनुयात्, धून्वीत	रा (सा) ध्नुयात्
लिङ्	सीव्यात्	सूयात्, सोषीष्ट	धूयात् धोषीष्ट-धविषीष्ट	रा [सा] ध्यात्
लिट्	सिषेव	सुषाव; सुषुवे	दुधाव, दुधुवे	रराध, ससाध
लुट्	सेविता	सोतासि—ते	धो (धवि) तासि, तासे	रा (सा) द्धा
लृङ्	असेवीत्	असावीत्-असोष्ट	अधावीत्, अधोष्ट अधविष्ट	अरा (असा) त्सीत्
लृङ्	असेविष्यत्	असोष्यत्—त	अधोष्यत्, अधोष्यत्	अरा (असा) त्स्यत्
लृट्	सेविष्यति	सोष्यति—ते	धोष्यति, धोष्यते	रा (सा) त्स्यति
लोट्	सीव्यतु	सुनोतु, सुनुताम्	धूनोतु, धूनुताम्	रा (सा) ध्नोतु
णिजन्त	सेवयति	साधयति—ते	धावयति,—ते	रा [सा] धयति
सन्नन्त	सिषेविषति	सुसूषति—ते	दुधूषति—ते	रिरा (रिसा) त्सति
यङन्त	सेवीव्यते	सोषूयते	दोधूयते	रारा [सासा] ध्यते
क० घा०	सीव्यते	सूयते	धूयते	रा [सा] ध्यते

शतृ०	सीव्यन्	सुन्वन्-सुन्वानः	धून्वन्, धून्वानः	रा (सा)ध्नुवन्
क्त,क्तवतु	स्यूतः, वान्	सुतः—वान्	धूतः—वान्	रा[सा]द्धः,वान्
क्त्वाप्	सेवि(स्यू)त्वा	सुत्वा	धूत्वा	राध्वा, साध्वा
संज्ञा	सेवन, स्यूतिः	अभिषवः	धवनम्	आराधनं,साधनम्

	षिञ् चयने [चुनना]	श्रु श्रवणे [सुनना]	शक्लृ शक्तौ (सकना)	भिदिर विदारणे (फाड़ना तोड़ना)
लट्	चिनोति, चिनुते	शृणोति	शक्नोति	भिनत्ति, भिन्ते
लङ्	अचिनोत्, अचिनुत	अशृणोत्	अशक्नोत्	अभिनत्, अभिन्त
लिङ्	चिनुयात्, चिन्वीत	शृणुयात्	शक्नुयात्	भिन्द्यात्, भिन्दीत
लिङ्	चीयात्, चेषीष्ट	श्रूयात्	शक्यात्	भिद्यात्, भित्सीष्ट
लिट्	चिच्राय चिच्ये चिकाय चिक्ये	शुश्राव	शशाक	विभेद, विभिदे
लुट्	चेतासि—से	श्रोता	शक्ता	भेत्तासि—से
लुङ्	अचैषीत्, अचेष्ट	अश्रौषीत्	अशाकत्	अभिदत्, अभैत्सीत् अभित्त
सृलृ	अचेत्स्यत्—त	अश्रोष्यत्	अशक्ष्यत्	अभेत्स्यत्—त
लृट्	चेष्यति—ते	श्रोष्यति	शक्ष्यति	भेत्स्यति—ते
लोट्	चिनोतु—नुताम्	शृणोतु	शक्नोतु	भिनत्तु-भिन्ताम्
णिजन्त	चाययति, ते	श्रावयति-ते	शाकयति	भेदयति—ते
सन्नन्त	चिचीषति, ते	शुश्रूषते	शिशक्षति	बिभित्सति-ते
यङन्त	चेचीयते	शोश्रूयते	शाशक्यते	बेभिद्यते
क० वा०	चीयते	श्रूयते	शक्यते	भिद्यते
शतृ०	चिन्वन्	शृण्वन्	शक्नुवन्	भिन्दन् भिन्दानः
क्त,क्तवतु	चितः—वान्	श्रुतः,वान्	शक्तः, वान्	भिन्नः, भिन्नवान्
क्त्वाप्	चित्वा	श्रुत्वा	शक्त्वा	भित्वा
संज्ञा	चयनम्, चितिः	श्रवणम्	शक्तिः	भेदनं, भेदः

	वृञ् सम्भक्तौ [वरना] मांगना	आप्लृ व्याप्तौ	अथ रुधादिः रुधिरावरणे (टकना रोकना)	छिदिरद्वैधीकरणे (काटना)
लट्	वृणोति, वृणुते	आप्नोति	रुणद्धि, रुन्धे	छिनत्ति, छिन्ते
लङ्	अवृणोत्, अवृणुत	आप्नोत्	अरुणत्, अरुन्ध	अच्छिनत्,अच्छिन्त
लिङ्	वृणुयात्, वृण्वीत	आप्नुयात्	रुन्ध्यात्, रुन्धीत	छिन्द्यात्,छिन्दीत
लिङ्	वृयात्, वृ[वोर]षीष्ट	आप्यात्	रुध्यात्, रुत्सीष्ट	छिद्यात्, छित्सीष्ट
लिट्	वव्रे; वव्रे	आप	रुरोध, रुरुधे	चिच्छेद, चिच्छिदे

लुट्	वरि[री]तासि—से	आप्ता	रोद्धासि—से	छेत्तासि—से
लुङ्	अवारीत्, अवृत अवरिष्ट	आपत्	अरुधत्, अरुद्ध अरौत्सीत	अच्छिदत् अच्छित्त अच्छैत्सीत्
लृङ्	अवरि (री) ष्यत्-त	आप्स्यत्	अरोत्स्यत्—त	अच्छेत्स्यत्-त
लृट्	वरी(रि)ष्यति—ते	आप्स्यति	रोत्स्यति, ते	छेत्स्यति—ते
लोट्	वृणोतु, वृणुताम्	आप्नोतु	रुणद्धु, रुन्धाम्	छिनत्तु, छिन्ताम्
णिजन्त	वारयति—ते	आपयति	रोधयति—ते	छेदयति—ते
सन्नन्त	विवरि [री] षति, युवूर्षति,	ईप्सति	रुरुत्सति—ते	चिच्छित्सति-ते
यङन्त	वर्वीयते	आप्यते	रोरुध्यते	चेच्छिद्यते
क० वा०	म्रियते	आप्नुवन्	रुध्यते	छिद्यते
शतृ०	वृण्वन्, वृवानः	आप्नः-वान्	रुन्धन्, रुन्धानः	छिन्दन्, छिन्दानः
क्त,क्तवतु	वृतः—वान्	आप्त्वा	रुद्धः, वान्	छिन्नः, छिन्नवान्
क्त्वाच्	वृत्वा	प्रापणम्,	रुद्ध्वा	छित्वा
संज्ञा	वरणम्	प्राप्तिः	रोधनम्	छेदनम्

	भञ्ज भङ्गे (तोड़ना)	युजिर योगे [शामिल करना]	कृती छेदने (कतरना)	क्षिप प्रेरणे [फेंकना]
लट्	भनक्ति	युनक्ति, युङ्क्ते	कृन्तति	क्षिपति—ते
लङ्	अभनक्	अयुनक्, अयुङ्क्त	अकृन्तत्	अक्षिपत्—त
लिङ्	भञ्ज्यात्	युञ्ज्यात्, युञ्जीत	कृन्तेत्	क्षिपेत्—त
लिङ्	भज्यात्	युज्यात्, युक्षीष्ट	कृत्यात्	क्षिप्यात्, क्षिप्सीष्ट
लिट्	बभञ्ज	युयोज, युयुजे	चकर्त	चिक्षेप, चिक्षिपे
लुट्	भङ्क्ता	योक्तासि—से	कर्तिता	क्षेप्तासि—से
लुङ्	अभाङ्क्षीत्	अयुजत्, अयुक्त	अकर्तीत्	अक्षैप्सीत्, अक्षिप्त
लृङ्	अभङ्क्ष्यत्	अयोक्ष्यत्—त	अकर्तिष्यत् अकर्त्स्यत्	अक्षेप्स्यत्—त
लृट्	भङ्क्ष्यति	योक्ष्यति—ते	कर्त्स्यति, कर्तिष्यति	क्षेप्स्यति—ते
लोट्	भनक्तु	युनक्तु, युङ्क्ताम्	कृन्ततु	क्षिपतु
णिजन्त	भञ्जयति-ते	योजयति—ते	कर्तयति-ते	क्षेपयति—ते
सन्नन्त	बिभङ्क्षति,ते	युयुक्षति—ते	चिकर्तिषति	चिक्षिप्सति—ते
यङन्त	बम्भज्यते	योयुज्यते	चर्कृत्यते	चेक्षिप्यते
क० वा०	भज्यते	युज्यते	कृत्यते	क्षिप्यते
शतृ०	भञ्जन्	युञ्जन्, युञ्जानः	कृन्तन्	क्षिपन्, माणः
क्त,क्तवतु	भक्तः, वान्	युक्तः, वान्	कृत्तः, वान्	क्षिप्तः, क्षिप्तवान्

क्त्वाच् संज्ञा	भक्त्वा, भक्त्वा भञ्जनम्	युक्त्वा योजनम्, युक्तिः	कर्तित्वा कर्तनम्	क्षिप्त्वा क्षेपणम्
	पिष्लृसचूर्णने [पीसना]	अथ तुदादिः । तुदव्यथने [दुःख देना]	मृच्छ क्षाप्ला-यां [पूछना]	मुचॢ मोक्षणे [छोड़ना]
लट्	पिनष्टि	तुदति—ते	पृच्छति	मुञ्चति—ते
लङ्	अपिनट्	अतुदत्—त	अपृच्छत्	अमुञ्चत्—त
लिङ्	पिंष्यात्	तुदेत्—त	पृच्छेत्	मुञ्चेत्—त
लिङ्	पिष्यात्	तुद्यात्; तुत्सीष्ट	पृच्छ्यात्	मुच्यात्, मुक्षीष्ट
लिट्	पिपेष	तुतोद, तुतुदे	पप्रच्छ	मुमोच, मुमुचे
लुट्	पेष्टा	तोत्तासि—से	प्रष्टा	मोक्तासि—से
लुङ्	अपिषत्	अतौत्सीत्, अतुक्त	अप्राक्षीत्	अमुचत्, अमुक्त
लृट्	अपेक्ष्यत्	अतोत्स्यत्, त	अप्रक्ष्यत्	अमोक्ष्यत्—त
लृट्	पेक्ष्यति	तोत्स्यति—ते	प्रक्ष्यति	मोक्ष्यति—ते
लोट्	पिनष्टु	तुदतु, तुदताम्	पृच्छतु	मुञ्चतु, ताम्
णिजन्त	पेषयति—ते	तोदयति—ते	प्रच्छयति-ते	मोचयति—ते
सन्नन्त	पिपिक्षति, ते	तुतुत्सति—ते	पिपृच्छिषति	मुमुक्षति
यङन्त	पोपिष्यते	तोतुद्यते	परीपृच्छ्यते	मोमुच्यते
कर्मवाच्य	पिष्यते	तुद्यते	पृच्छ्यते	मुच्यते
शतृ०	पिंषन्	तुदन्—मानः	पृच्छन्	मुञ्चन्, मानः
क्त,क्तवतु	पिष्टः, वान्	तुन्नः, वान्	पृष्टः, वान्	मुक्तः, वान्
क्त्वाच्	पिष्ट्वा	तुत्त्वा	पृष्ट्वा	मुक्त्वा
संज्ञा	पेषणम्	तोदनम्	प्रच्छनम्प्रश्नः	मोचनम्, मुक्तिः

सृज विसर्गे [रचना]	कृप चिलेखने [जोतना]	विशप्रवेशने [घुसना]	गॄ निगरणे * [निगलना]
लट् सृजति	कृपति—ते	विशति	गिर् [ल] ति
लङ् असृजत्	अकृपत्—त	अविशत्	अगिरत्
लिङ् सृजेत्	कृपेत्—त	विशेत्	गिरेत्
लिङ् सृज्यात्	कृप्यात्, कृक्षीष्ट	विश्यात्	गीर्यात्
लिट् ससर्ज	चकर्प, चकृपे	विवेश	जगार
लुट् स्रष्टा	कर्ता (कर्प्टा) सि, से	वेष्टा	गरी(रि) ता
लुङ् असाक्षीत्	अक्राक्षीत्, अकृक्षत् अकृप्त	अविक्षत्	अगारीत्

* इस धातु के रूपों में प्रायः "र" की जगह "ल" भी होता है ।

लङ्	अस्रक्ष्यत्	अक्रक्ष्यत्—त	अवेक्ष्यत्	अगरि(री)ष्यत्
लृट्	स्रक्ष्यति	क्रक्ष्यति, कर्ष्यते	वेक्ष्यति	गरि(री)ष्यति
लोट्	सृजतु	कृषंतु	विशतु	गिरतु
णिजन्त	सर्जयति—ते	कर्षयति—ते	वेशयति ते	गारयति
सन्नन्त	सिस्रक्षति	चिकृक्षति—ते	विविक्षति	जिगरिषति
यङन्त	सरीसृज्यते	चरीकृष्यते	वेविश्यते	जेगिल्यते
क० वा०	सृज्यते	कृष्यते	विश्यते	गीर्यते
शतृ०	सृजन्	कृषन्, कृषमाणः	विशन्	गिरन्
क्त क्तवतु	सृष्टः, वान्	कृष्टः, वान्	विष्टः, वान्	गीर्णः, वान्
क्त्वाप्	सृष्ट्वा	कृष्ट्वा	विष्ट्वा	गीर्त्वा
संज्ञा	सर्जनम्, सृष्टिः	कर्षणं, कृषिः	वेशनम्	निगरणम्
	स्पृश संस्पर्शने [छूना]	विदृलृलाभे (पाना)	लिख अक्षर विन्यासे (लिखना)	मृङ् प्राणत्यागे [मरना]
लट्	स्पृशति	विन्दति—ते	लिखति	म्रियते
लङ्	अस्पृशत्	अविन्दत्—त	अलिखत्	अम्रियत
लिङ्	स्पृशेत	विन्देत्—त	लिखेत्	म्रियेत
लिङ्	स्पृश्यात्	विद्यात् वित्सीष्ट वेदिषीष्ट	लिख्यात्	मृषीष्ट
लिट्	पस्पर्श	विवेद, विविदे	लिलेख	ममार
लुट्	स्प्रष्टा, स्पर्ष्टा	वेत्तासि, वेदितासे	लेखिता	मर्ता
लुङ्	अस्प्राक्षीत् अस्पृक्षत्	अवित्त अविदत् अवेदिष्ट अविद्ध	अलेखीत्	अमृत
लृङ्	अस्प्रक्ष्यत्	अवेत्स्यत्, अवेदिष्यत	अलेखिष्यत्	अमरिष्यत्
लृट्	स्पृक्ष्यति, स्पर्क्ष्यति	वेदिष्यति, वेत्स्यते	लेखिष्यति	मरिष्यति
लोट्	स्पृशतु	विन्दतु	लिखतु	म्रियताम्
णिजन्त	स्पर्शयति-ते	वेदयति—ते	लेखयति	मारयति
सन्नन्त	पिस्पृक्षति	वित्सति विवेदिषति	लिलिखिषति लिलेखयति	मुमूर्षति
यङन्त	परीस्पृश्यते	वेविद्यते	लेलिख्यते	मेम्रीयते
क० वा०	स्पृश्यते	विद्यते	लिख्यते	म्रियते
शतृ०	स्पृशन्	विन्दन्	लिखन्	म्रियमाणः
क्त, क्तवतु	स्पृष्टः, वान्	विदितः, वान्	लिखितः, वान्	मृतः, वान्
क्त्वाप्	स्पृष्ट्वा	विदित्वा, वित्वा	लिखित्वा	मृत्वा
संज्ञा	स्पर्शनम्	वेदनम्	लेखनम्	मरण मृत्युः

	अथ तनादिः तनुविस्तारे (फैलाना)	अथ क्र्यादिः। डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये (खरीदना)	मन्थ विलोडने (मथना)	अद भक्षणे (खाना)
लट्	तनोति, तनुते	क्रीणाति, क्रीणीते	मथ्नाति	अश्नाति
लङ्	अतनोत्, अतनुत	अक्रीणात् अक्रीणीत	अमथ्नात्	आश्नात्
लिङ्	तनुयात, तन्वीत	क्रीणीयात्, क्रीणीत	मथ्नीयात्	अश्नीयात्
लिङ्	तन्यात्, तनिषीष्ट	क्रीयात्, क्रीषीष्ट	मथ्यात्	अद्यात्
लिट्	ततान, तेने	चिक्राय, चिक्रिये	ममन्थ	आद
लुट्	तनितासि-से	क्रेतासि—से	मन्थिता	अदिता
लुङ्	अत (ता)नीत्, अतत अतानिष्ट	अक्रैषीत्, अक्रेष्ट	अमन्थीत्	आदीत्
ऋृङ्	अतनिष्यत्—त	अक्रेष्यत्—त	अमन्थिष्यत्	आदिष्यत्
लृट्	तनिष्यति—ते	क्रेष्यति—ते	मन्थिष्यति	अदिष्यति
लोट्	तनोतु, तनुताम्	क्रीणातु, क्रीणीताम्	मथ्नातु	अश्नातु
णिजन्त	तानयति—ते	क्राययति—ते	मन्थयति	आदयति
सन्नन्त	तितंसति—ते तितनिषति—ते	चिक्रीषति—ते	मिमन्थिषति	आदिदिषति
यङन्त	तन्तन्यते	चेक्रीयते	मामथ्यते	अदाद्यते
क० धा०	तन्यते	क्रीयते	मथ्यते	अद्यते
शतृ०	तन्वन्, तन्वानः	क्रीणन्, क्रीणानः	मथ्नन्	अश्नन्
क्त, क्तवतु	ततः, ततवान्	क्रीतः, वान्	मथितः, वान्	अदितः, वान्
क्त्वाप्	तनित्वा	क्रीत्वा	मथित्वा, मन्थित्वा	अदित्वा
संज्ञा	तननम्, ततिः	क्रयणम्, क्रयः	मन्थनम्	अदनम्

	डुकृञ् करणे (करना)	प्रीञ् तर्पणेकान्तौच (खुशकरना)	ज्ञा अवबोधने (जानना)	दृ विदारणे (फाड़ना)
लट्	करोति, कुरुते	प्रीणाति, प्रीणीते	जानाति	दृणाति
लङ्	अकरोत्, अकुरुत	अप्रीणात्, अप्रीणीत	अजानात्	अदृणात्
लिङ्	कुर्यात्, कुर्वीत	प्रीणीयात्, प्रीणीत	जानीयात्	दृणीयात्
लिङ्	क्रियात्, कृषीष्ट	प्रीयात्, प्रीषीष्ट	ज्ञा (ज्ञे) यात्	दीर्यात्
लिट्	चकार, चक्रे	पिप्राय, पिप्रिये	जज्ञौ	ददार
लुट्	कर्तासि—से	प्रेतासि—से	ज्ञाता	दरि[री]ता
लुङ्	अकार्षीत्, अकृत	अप्रैषीत्, अप्रेष्ट	अज्ञासीत्	अदारीत्
ऋृङ्	अकरिष्यत्—त	अप्रेष्यत्, त	अज्ञास्यत्	अदरि[री]ष्यत्
लृट्	करिष्यति—ते	प्रेष्यति—ते	ज्ञास्यति	दरि[री]ष्यति

लोट्	करोतु, कुरुताम्	प्रीणातु, प्रीणीताम्	जानातु	दृणातु
णिजन्त	कारयति—ते	प्राययति, ते	ज्ञापयति	दारयति
सन्नन्त	चिकीर्षति—ते	पिप्रीषति—ते	जिज्ञासति	दिदीर्षति दिदरि[री]षति
यङन्त	चेक्रीयते	पेप्रीयते	नाज्ञायते	देद्रीयते
क०घा०	क्रियते	प्रीयते	ज्ञायते	दीर्यते
शतृ०	कुर्वन्, कुर्वाणः	प्रीणन्, प्रीणानः	जानन्	दृणन्
क्त,क्तवतु	कृतः, वान्	प्रीतः, प्रीतवान्	ज्ञातः, वान्	दीर्णः, वान्
क्त्वाञ्	कृत्वा	प्रीत्वा	ज्ञात्वा	दरि[री]त्वा
संज्ञा	करणं, कृतिः	प्रेम, प्रीतिः	ज्ञानम्	दरण, दीर्णिः

	सुपस्तेये [चुराना]	लूञ् छेदने [काटना]	ग्रह उपादाने (लेना)	पॄपालने पूर्तौच (पालनापूराकरना)
लट्	मुष्णाति	लुनाति, लुनीते	गृह्णाति, गृह्णीते	पृणाति
लङ्	अमुष्णात्	अलूनात्, अलुनीत	अगृह्णात्, अगृह्णीत	अपृणात्
लिङ्	मुष्णीयात्	लुनीयात्, लुनीत	गृह्णीयात्, गृह्णीत	पृणीयात्
लिङ्	मुष्यात्	लूयात्, लविषीष्ट	गृह्यात्, ग्रहीषीष्ट	पूर्यात्
लिट्	मुमोष	लुलाव, लुलुवे	जग्राह, जगृहे	पपार
लुट्	मोषिता	लवितासि, से	ग्रहीतासि—से	परि(री)ता
लुङ्	अमोषीत्	अलावीत्, अलविष्ट	अग्रहीत्, अग्रहीष्ट	अपारीत्
लृङ्	अमोषिष्यत्	अलविष्यत्, त	अग्रहीष्यत्—त	अपरि(री)ष्यत्
लृट्	मोषिष्यति	लविष्यति—ते	ग्रहीष्यति—ते	परि (री) ष्यति
लोट्	मुष्णातु	लुनातु, लुनीताम्	गृह्णातु, गृह्णीताम्	पृणातु
णिजन्त	मोषयति	लावयति	ग्राहयति—ते	पारयति
सन्नन्त	मुमुषिषति	लुलूषति—ते	जिघृक्षति—ते	पिपरि(री)षति पुपूर्षति
यङन्त	मोमुष्यते	लोलूयते	जरीगृह्यते	पेप्रीयते
कर्मवाच्य	मुष्यते	लूयते	गृह्यते	पूर्यते
शतृ०	मुष्णन्	लुनन्, लुनानः	गृह्णन्, गृह्णानः	पृणन्
क्त,क्तवतु	मुषितः, वान्	लूनः, वान्	गृहीतः, वान्	पूर्णः, वान्
क्त्वाञ्	मु (मो) षित्वा	लवित्वा	ग्रहीत्वा	परि [री] त्वा
संज्ञा	मोषणम्	लवनम्, लूनिः	ग्रहणम्,	पूर्तिः, पूर्णिः

	बन्ध बन्धने (बाधना)	पूञ् पवने (पवित्रकरना)	क्रिञ् विक्षेपणे (क्रेनापाना)	अथ चुरादिः* । चुरस्तेय [चुराना]
लट्	बध्नाति	पुनाति, पुनीते	क्रिणाति	चोरयति—ते
लङ्	अबध्नात्	अपुनात्, अपुनीत	अक्रिणात्	अचोरयत्—त
लिङ्	बध्नीयात्	पुनीयात्, पुनीत	क्रिणीयात्	चोरयेत्—त
लिङ्	बध्यात्	पूयात्, पविषीष्ट	क्रियात्	चोर्यात्, चोरयिषीष्ट
लिट्	बबन्ध	पुपाव, पुपुवे	चिक्रेय	चोरयाञ्चकार चक्रे
लुट्	बन्धा	पवितासि—से	क्रेतासि, क्रेष्टा	चोरयितासि-से
लुङ्	अभान्त्सीत्	अपावीत्, अपविष्ट	अक्रैषीत्, अक्रेष्टाम्	अचूचुरत्—त
लृङ्	अभन्त्स्यत्	अपविष्यत्—त	अक्रेशिष्यत्, अक्रेस्यत्	अचोरयिष्यत्-त
लृट्	भन्त्स्यति	पविष्यति—ते	क्रेशिष्यति, क्रेष्यति	चोरयिष्यति ते
लोट्	बध्नातु	पुनातु-पुनीताम्	क्रिणातु	चोरयतु
णिजन्त	बन्धयति	पावयति	क्रेषयति	चोरयति—ते
सन्नन्त	बिभन्त्सति	पुपूषति—ते	चिक्रे(क्रि)षति, चिक्रिक्षति	चुचोरयिषति ते
यङन्त	बाबध्यते	पोपूयते	चेक्रिय्यते	
क० वा०	बध्यते	पूयते	क्रिय्यते	चोर्यते
शतृ०	बध्नन्	पुनन्, नानः	क्रिणन्	चोरयन्-माणः
क्त,क्तवतु	बद्धः, वान्	पूतः, वान्	क्रीतः, वान्	चोरितः, वान्
क्त्वाच्	बद्ध्वा	पवित्वा	क्रीत्वा, क्रीत्वा	चोरयित्वा
संज्ञा	बन्धनम्	पवनं, पूतिः	क्रेयाः	चोरणम्, चौरः

	ऋन् संशब्दने [तारीफ़ करना]	गण सङ्ख्याने [गिनना]	अद्भक्ष भक्षणे [खाना]
लट्	कीर्तयति—ते	गणयति—ते	भक्षयति-ते
लङ्	अकीर्तयत्—त	अगणयत्—त	अभक्षयत्—त
लिङ्	कीर्तयेत्—त	गणयेत्—त	भक्षयेत्—त
लिङ्	कीर्त्यात्, कीर्तयिषीष्ट	गण्यात्, गणयिषीष्ट	भक्ष्यात्, भक्षयिषीष्ट

* चुरादि गण से यङन्त के रूप नहीं होते ।
† और रूपों के लिये भ्वादिगण का "गुप्" धातु देखो ।

लिट्	कीर्तयाञ्चकार—चक्रे	गणयाञ्चकार, चक्रे	भक्षयाञ्चकार—चक्रे
लुट्	कीर्तयितासि—से	गणयितासि—से	भक्षयितासि—से
लृङ्	अचिकीर्तत्, अचीकृतत्—त	अजी [ज] गणत्, त	अबभक्षत्—त
लृट्	अकीर्तयिष्यत्—त	अगणयिष्यत्—त	अभक्षयिष्यत्—त
लृट्	कीर्तयिष्यति—ते	गणयिष्यति-ते	भक्षयिष्यति-ते
लोट्	कीर्तयतु	गणयतु, ताम्	भक्षयतु-ताम्
णिजन्त	कीर्तयति—ते	गणयति—ते	भक्षयति-ते
सन्नन्त	चिकीर्तयिषति—ते	जिगणयिषति—ते	विभक्षयिषति, ते
क० वा०	कीर्त्यते	गण्यते	भक्ष्यते
शतृ०	कीर्तयन्—मानः	गणयन्—मानः	भक्षयन्-माणः
क्त,क्तवतु	कीर्तितः—वान्	गणितः—वान्	भक्षितः, वान्
क्त्वाप्	कीर्तयित्वा	गणयित्वा	भक्षयित्वा
संज्ञा	कीर्तिः कीर्तनम्	गणनम्, गणना	भक्षणम्

	मन्त्रि गुप्तभाषणे [सलाह करना]	तुल उन्माने [तोलना]	चिति स्मृत्याम् [सोचना]
लट्	मन्त्रयते	तोलयति—ते	चिन्तयति—ते
लङ्	अमन्त्रयत	अतोलयत्—त	अचिन्तयत्—त
लिङ्	मन्त्रयेत'	तोलयेत्—त	चिन्तयेत्—त
लिङ्	मन्त्रयिषीष्ट	तोल्यात्, तोलयिषीष्ट	चिन्त्यात्, चिन्तयिषीष्ट
लिट्	मन्त्रयाञ्चक्रे	तोलयाञ्चकार चक्रे	चिन्तयाञ्चकार,-चक्रे चिचिन्त
लुट्	मन्त्रयिता	तोलयितासि—से	चिन्तयितासि—से
लुङ्	अममन्त्रत	अतूतुलत्—त	अचिचिन्तत्—त अचिन्तीत्
लृङ्	अमन्त्रयिष्यत	अतोलयिष्यत्—त	अचिन्तयिष्यत्—त
लृट्	मन्त्रयिष्यते	तोलयिष्यति—ते	चिन्तयिष्यति—ते
लोट्	मन्त्रयताम्	तोलयतु—ताम्	चिन्तयतु—ताम्
णिजन्त	मन्त्रयति—ते	तोलयति, ते	चिन्तयति—ते
सन्नन्त	मिमन्त्रयिषते	तुतोलयिषति—ते	चिचिन्तयिषति—ते
क० वा०	मन्त्र्यते	तोल्यते	चिन्त्यते
शतृ०	मन्त्रयमाणः	तोयलन्, मानः	चिन्तयन् मानः
क्त,क्तवतु	मन्त्रितः, वान्	तोलितः, वान्	चिन्तितः वान्
क्त्वाप्	मन्त्रयित्वा	तोलयित्वा	चिन्तयित्वा
संज्ञा	मन्त्रणं, मन्त्रः	तोलनम् तुला	चिन्तनम् चिन्ता

	पीड अवगाहने [पीड़ा देना]	स्पृह ईप्सायाम् (चाहना)	तर्ज भर्त्स तर्जने (डाँटना)
लट्	पीडयति ते	स्पृहयति—ते	तर्जयते, भर्त्सयते
लङ्	अपीडयत् त	अस्पृहयत्—त	अतर्जयत, अभर्त्सयत
लिङ्	पीडयेत् त	स्पृहयेत्—त	तर्जयेत, भर्त्सयेत
लिट्	पीड्यात्-पीडयिषीष्ट	स्पृह्यात्, स्पृहयिषीष्ट	तर्जयिषीष्ट, भर्त्सयिषीष्ट
लिट्	पीडयाञ्चकार चक्रे	स्पृहयाञ्चकार, चक्रे	तर्जयाञ्चक्रे, भर्त्सयाञ्चक्रे
लुट्	पीडयितासि से	स्पृहयितासि—से	तर्जयिता, भर्त्सयिता
लुङ्	अपीपिडत् त	अस्पृहत्—त	अततर्जत, अबभर्त्सत
लृङ्	अपीडयिष्यत् त	अस्पृहयिष्यत्—त	अतर्जयिष्यत, अभर्त्सयिष्यत
लृट्	पीडयिष्यति ते	स्पृहयिष्यति—ते	तर्जयिष्यते, भर्त्सयिष्यते
लोट्	पीडयतु ताम्	स्पृहयतु—ताम्	तर्जयताम्, भर्त्सयताम्
णिजन्त	पीडयति—ते	स्पृहयति—ते	तर्जयति ते, भर्त्सयति ते
सन्नन्त	पिपीडयिषति ते	पिस्पृहयिषति—ते	तितर्जयिषते, बिभर्त्सयिषते
य० क्या०	पीड्यते	स्पृह्यते	तर्ज्यते, भर्त्स्यते
शतृ०	पीडयन् मान०	स्पृहयन्—माणः	तर्जयमान०, भर्त्सयमानः
क्त, क्तवतु	पीडित, वान्	स्पृहितः, वान्	तर्जित०वान्, भर्त्सितः, वान्
क्त्वाप्	पीडयित्वा	स्पृहयित्वा	तर्जयित्वा, भर्त्सयित्वा
अंश	पीडनम्, पीडा	स्पृहणम् स्पृहा	तर्जनम्-तर्जना भर्त्सनम्-भर्त्सना

	सान्त्व सामप्रयोगे [शान्त करना]	तडि आघाते (पीटना)	अर्थ उपयाच्ञायां (मांगना)	पॄ पूरणे (पूरा करना)
लट्	सान्त्वयति ते	ताडयति—ते	अर्थयते	पारयति-ते
लङ्	असान्त्वयत् त	अताडयत्-त	आर्थयत	अपारयत्-त
लिङ्	सान्त्व्यात्, सान्त्वयिषीष्ट	ताड्यात् ताडयिषीष्ट	अर्थयेत अर्थयिषीष्ट	पार्यात् पारयिषीष्ट
लिट्	सान्त्वयाञ्चकार चक्रे	ताडयाञ्चकार, चक्रे	अर्थयाञ्चक्रे	पारयाञ्चकार, चक्रे
लुट्	सान्त्वयितासि-से	ताडयितासि-से	अर्थयिता	पारयितासि-से
लुङ्	असस्सान्त्वत् त	अताडीत्-त	आर्थयत	अपारयत् त
लृङ्	असान्त्वयिष्यत्	अताडयिष्यत् त	आर्थयिष्यत	अपारयिष्यत् त
लृट्	सान्त्वयिष्यति ते	ताडयिष्यति—ते	अर्थयिष्यते	पारयिष्यति ते
लोट्	सान्त्वयतु ताम्	ताडयतु-ताम्	अर्थयताम्	पारयतु ताम्

णिजन्त	सान्त्वयति ते	ताडयति-ते	अर्थयति ते	पारयति ते
सन्नन्त	सिसान्त्वयिषसिते	तिताडयिषति-ते	अर्तिथयिषत	पिपारयिषति ते
क० वा०	सान्त्व्यते	ताड्यत	अर्थ्यत	पार्य्यते
शतृ०	सान्त्वयन् मान	ताडयन्-मान	अर्थयमान	पारयन् माण
क्त,क्तवतु	सान्त्वित -वान्	ताडित -वान्	अर्थित ,वान्	पारित वान्
क्त्वाच्	सान्त्वयित्वा	ताडयित्वा	अर्थयित्वा	पारयित्वा
सञ्ज्ञा	सान्त्वनम्	ताडनम् ताडना	अर्थनम्	पारणम् पारणा

जिस प्रकार दश गण हैं उसी प्रकार १ णिजन्त, २ सन्नन्त, ३ यङन्त, ४ यङ् लुगन्त ५ नामधातु ६ आत्मनेपद, ७ परस्मैपद, ८ भावकर्म, ९ कर्मकर्तृ, १० लकारार्थ इन नामों की दश प्रक्रिया भी हैं जिनका एक संक्षिप्त विवरण उदाहरण सहित आगे किया जाता है।

अथ णिजन्त [ण्यन्त] प्रक्रियादर्शनो नवमोऽध्यायः ।

णिजन्त, ण्यन्त वा प्रेरणार्थक (Causative verbs) प्रक्रिया वह है जिसमें क्रिया द्वारा किसी को प्रेरणा व आज्ञा पाई जाव, इस प्रक्रिया में अकर्मक क्रिया भी सकर्मक बन जाती है। इन क्रियाओं के रूप प्राय चुरादिगणी धातुओं के से होते हैं। उमंयपदी अष्टमअध्याय मे आये हुए सभी धातुओं का ण्यन्तरूप वहीं पर दिया गया है परन्तु यहा पर थोडा उदाहरणार्थ दिग्दर्शन है बुद्धिमान् इसी विधि से सब लकारों में रूप लें देवदत्त स्तृणाति त अन्य प्रेरयति स्तारयति ते, स्तारयेत् त, स्तारयतु ताम्, अस्तारयत् त, स्तारयामास-चक्रे, स्तार्यात् स्तारयिषीष्ट, स्तारयितासि-से स्तारयिष्यति-ते, अस्तारयिष्यत् त, अस्ति(स्नु)ध्वत् न।

भू भावयति-अबीभवत् ष्ठा स्थापयति अतिष्ठिपत्, शी शाययति, अशीशयत् गम् गमयति, अजीगमत्; कृ कारयति, अचीकरत्, दा दापयति, अदीदपत्, पूङ् पावयति अपीपवत् रु रावयति अरीरवत्, लूञ् लावयति, अलीलवत्, स्नु स्नावयति, अस्नि(स्नु)स्नवत्, स्वप् स्वापयति असूषुपत्, पा पाययति, अपीपयत घ्रा घ्रापयति अजिघ्रिपत्, अधि+इ अध्यापयति, अध्यजीगपत्, अध्यापिपत्।

अथ सन्नन्तप्रक्रियाप्रदर्शको दशमोऽध्यायः ।

सन्नन्त या इच्छार्थक (Desiderative verbs) प्रक्रिया वह है जिसमें क्रिया द्वारा ही कर्ता की इच्छा प्रकट हो जाय; इस प्रक्रिया में क्रियाओं के रूप अपनी धातु के पद के ही अनुसार होते हैं और धातु को द्वित्व हो जाता है और "स" बीच में आ जाता है फिर परस्मैपदी धातुओं के रूप पठ धातु के समान और आत्मनेपदी धातुओं के लभ् धातु के समान रूप दशों लकारों में चलते हैं जैसे पठ्—पाठितुमिच्छति पिपठिषति पिपठिषतु, पिपठिषेत्, अपिपठिषत, पिपठिषांचकार, पिपठिष्यात्, पिपठिषिता, पिपठिषिष्यति, अपिपठिषिष्यत्, अपिपठिषीत्। पातुमिच्छति पिपासति, पिपासतु पिपासेत्, अपिपासत्, पिपासांचकार, पिपास्यात्, पिपासिता, पिपासिष्यति, अपिपासिष्यत्, अपिपासीत्। आत्मने पद में जैसे लभ्-लब्धुमिच्छति लिप्सते लिप्सताम्, लिप्सेत, अलिप्सत, लिप्सांचक्रे, लिप्सीष्ट, लिप्सिता, लिप्स्यते अलिप्स्यत, अलिप्सिष्ट। ज्ञा-ज्ञातुमिच्छति-जिज्ञासते, जिज्ञासताम्, जिज्ञासेत अजिज्ञासत, जिज्ञासांचक्रे, जिज्ञासिषीष्ट, जिज्ञासिता, जिज्ञासिष्यते, अजिज्ञासिष्यत, अजिज्ञासिष्ट। इसी प्रकार आठवें अध्याय में आयेहुए सब धातुओं के सन्नन्त रूप लट्लकार के यहां दिखाये हैं शेष उपरोक्त क्रमानुसार अपनेबुद्धिसे लेजाओ। परन्तु यह ध्यानरहे कि ज्ञा, श्रु, स्मृ, दृश् धातुओं के सन्नन्त रूप आत्मनेपदही में होते हैं।

अथ यङन्तप्रक्रियाप्रदर्शक एकादशोऽध्यायः ।

यङन्त प्रक्रिया, (Frequentative verbs) श्नु और रूप को छोड़कर हलादि और एक स्वरवाली धातुसे पौनः पुन्य (बारम्बार) या अतिशयार्थ (अधिकता) बोधन करने के लिये धातुको द्वित्वकर और यङ् प्रत्ययलगाकर बनाते हैं इनके रूप दशों लकारों में आत्मनेपदीही इस प्रकार चलते हैं जैसे पुनः पुनः अतिशयेन वा भवतीति बोभूयते बोभूयताम्, बोभूयेत, अबोभूयत, बोभूयाञ्चक्रे, बोभूयिषीष्ट, बोभूयिता, बोभूयिष्यते अबोभूयिष्यत, अबोभूयिष्ट अतिशयेन वर्णते इति वरीवृत्यते, वरीवृत्यताम्, वरीवृत्तांचक्रे, वरीवृतिता अवरीवृतित (दृङ्) विशेष धातुओं के यङन्त रूप ज्ञातकरने केलिये अष्टम अध्याय देखो। यहां पर यह भी ज्ञात होजायगा कि, किन २ धातुओं के रूप इस प्रक्रिया में नहीं होते

अथ * यङ्लुगन्तप्रक्रियाप्रदर्शको द्वादशोऽध्यायः ।

यङ् लुगन्त (Frequentative verbs rejecting यङ्) प्रक्रिया उपरोक्त अध्याय केही अर्थ घ नियमों पर बनती है, केवल भेद इतनाही है कि रूप परस्मैपदीही होते हैं और यङ् का लुक् हो कर ईट् विकल्प होजाता है-जैसे अति शयेन पुनः पुनर्वा भवतीति वोभवीति, वोभोति, वोभूतः वोभुवति; वोभूयात्, वोभवीतु वोभोतु; वोभवाञ्चकार-मास; लङि अवोभवीत् अवोभोत्; वोभूयात्, वोभविता, वोभविष्यति, अवोभविष्यत्, अवोभूवीत्,, अवोभोत् ।

स्पर्ध सङ्घर्षे-पास्पर्धीति पास्पार्धि, पास्पर्धः, पास्पर्धति, पास्पार्त्सि इत्यादिलङि अपास्पर्त् अपास्पर्द्, अपास्पाः; पास्पर्धाञ्चकार, पास्पर्धिता, पास्पार्धिष्यति, पास्पर्धीतु पास्पर्धु लुङि अपास्पर्धीत् अपास्पार्धिष्टाम्, अपास्पार्धिष्यत् इ० गाधू प्रतिष्ठादौ. जागार्द्धि जागार्धीति जागार्धीतु जागार्द्धु, लङि अजागार्धीत् अजागार्घात् अजागार्द्धाम् लुङि अजागार्धीत् अजागार्धिष्टाम् । नाथ नाधृ याच्ञादौ नानार्त्ति नानार्धीति नानार्तः इ० दध धारणे दादर्द्धि दादर्धीति, लुङि अदादर्दा (द) धीत् । मुदहर्षे मोमोत्ति मोमुदीति; मोमोदाञ्चकार, मोमोदिता, लङि अमोमुदीत् अमोमोत् अमोमुत्ताम् अमोमुदुः लुङि अमोमोदीत् । गम्लृगतौ जङ्गमीति जङ्गन्ति, लङि अजङ्गमीत् अजङ्गताम्, अजङ्गमुः लुङि अजङ्गमीत् अजङ्गमिष्टाम् इ० चरगतिभक्षणयोः चञ्चुरीति चञ्चूर्ति, अचञ्चुरीत् । खनु अवदारणे [खोदना] चङ्खनीति चङ्खन्ति चङ्खात' चङ्खनति लङि अचङ्खनीत् लुङि अचङ्ख (ङ्खा) नीत् ञिस्वप्शये सास्वपीति सास्वप्ति, लङि असास्वपीत् सास्वप्यात् आशिषि सास्वप्यात् लुङि असा[स्व]स्वापीत् वृतुवर्तने वर्वृतीति, वरिवृतीति, वरीवृतीति, वर्वर्ति, वरिवर्ति, वरीवर्ति, वर्वृतः वर्वर्तीमास वर्वर्तिता, वर्वर्तिष्यति, अवर्वर्तीत् अवर्वृतीत् अवर्वर्त् । डुकृञ् करणे चर्कर्रीति चर्कर्ति चरिकर्ति, चरीकर्ति चर्कृतः चर्कर्ति, चर्कराञ्चकार, चर्करिता, अचर्कर्रीत्, चर्कृयात् आशिषि चर्किंयात् लुङि अचर्कारीत् कृविक्षेपे चाकर्ति चाकरीति लङि अचाकरीत् अचाकः अचाकर्तीताम्, अचाकरुः लुङि अचाकरीत् एवं तॄप्लवनसन्तरणयोः तातर्ति, तातरीति, तार्तीतः तातिरति लङि अतातरीत् लुङि अतातारीत् ग्रह उपादाने जाग्रहीति जाग्राढि, जाग्रूढः, जाग्रहति, अजाग्रहीत् । प्रच्छज्ञीप्सायाम् पाम्र-

* विद्यार्थियों को विदित हो कि यह प्रक्रिया रूपभेद, और रूप विलक्षण होने के कारण और प्रक्रियाओं से कुछ क्लिष्ट है अतएव साधारण रीति से इस अध्याय की रूप प्रक्रिया को समझ लें इसमें अधिक अपनी बुद्धि को भ्रमित करना आवश्यक नहीं क्योंकि संस्कृत बोलने तथा शास्त्रादि समझने के लिये इन रूपों की कुछ अधिक अपेक्षा नहीं है ।

च्छीति पापष्टि पाप्रष्टुः पाप्रच्छति, प्राप्रष्टि प्राप्रच्छुः पाप्रष्टः लोटि पाप्रच्छतु पाप्रष्टु पाप्रष्टाम् पाप्रच्छतु पाप्रड्ढि लङि अपाप्रट् अपाप्रच्छीः अपाप्रष्टम्। मूर्छा मोहसमुच्छ्राययोः मोमूर्छीति मोमोर्तिमोमूर्तः मोमूर्च्छति मोमूर्च्छांचकार मोमूर्च्छिता, मोमूर्च्छीतु मोमोर्तु लङि अमोमूर्च्छीत् मोमूर्च्छ्यात्, लुङि अमोमोर्च्छीत्, अमोमूर्च्छिष्टाम् अमोमूर्च्छिष्यत् इत्यादि।

अथ नामधातुप्रक्रियाप्रदर्शकत्रयोदशोऽध्यायः।

संज्ञा व अव्ययों से क्यच्, क्यङ्, काम्यच्, णिच् और क्विप् प्रत्यय लगा कर कर्ता की इच्छा, वर्ताव आचरण, करना आदि अर्थ बोधन करने के लिये जो धातु बनाई जावे वह नाम धातु कहलाती है विशेषता यह है कि जो नाम धातु काम्यच् (काम्य) क्यच् (य) और क्विप् (०) प्रत्यय लगाकर बनती हैं वे परस्मैपदी और क्यङ् (य) प्रत्ययवाली आत्मनेपदी और णिच् (इ) प्रत्ययवाली उभयपदी होती हैं क्रम से उदाहरण देखो जैसे आत्मनः पुत्रमिच्छति (इच्छा) पुत्रीयति (क्यच्) पुत्रकाम्यति (काम्यच्), नमः करोतीति नमस्यति (क्यच्) चिरंकरोतीति चिरयति (णिच्) शब्दं करोतीति शब्दायते [क्यङ्] भण्डं करोतीति भण्डयति—ते [णिच्]; दासम इव आचरतीति दासभायते [क्यङ्] विष्णुमिवाचरतीति विष्णूयति द्विजम् (क्यच्), कृष्ण इव आचरति कृष्णति (क्विप्)। ध्यान रहे कि उपरोक्त धातुओं के रूप प्रायः भ्वादिगण के से होते हैं। जैसे तपः करोतीति तपस्यति, तपस्येत्, तपस्यतु, अतपस्यत्, तपसाम्बभूव इत्यादि, तपस्यात्, तपसिता, तपसिष्यति, अतपसिष्यत्, अतपसीत्, अतपसिष्टाम्।

अथात्मनेपदप्रक्रियाप्रदर्शकश्चतुर्दशोऽध्यायः।

इस प्रक्रिया में यह दिखाया है कि धातु चाहे जिस पद की हो परन्तु कुछ उपसर्गों के लगने से चाहे उसका अर्थ बदले वा नहीं सदैव आत्मनेपदी ही रहेंगी। जैसे नि+विश् (आई हुई सेना का उहरना); वि, परि, अव+क्री (बेचना, धात्वर्थ, मोल चुकाना); वि, परा+जि (जीतना, हारना); आ+दा [लेना] परन्तु जहां फैलाना चीरना व अपना मुखादि बाना अर्थ हो वहां परस्मैपद होता है जैसे सिंहोमुखंव्यादत्ते वैद्यःस्फोटकं व्यादत्ते; अनु, परि, आ और सम्+क्रीड् [धात्वर्थ] परन्तु कूजनार्थ में सम्+क्रीड् परस्मैपद होता है जैसे संक्रीडति चक्रम्। आ+नु अच्छ [धात्वर्थ] में; सम्, अव, प्र,

वि+स्था [रहना, ठहरना, इज्ज़त पाना इ०] उत्+स्था [यत्न करना] जैसे मुक्त्वा व्युत्तिष्ठते-यतनेइत्यर्थः; परन्तु जहां उठना अर्थ है वहां परस्मैपद होता है जैसे आसनादुत्तिष्ठति; वि+तप [दीप्त होना] वितपते; उप+स्था [देवपूजन, मिलन वा मैत्रीकरण] अर्थ में जैसे विष्णुमुपतिष्ठतेवैष्णवः, यमुनामुपतिष्ठते गङ्गा, -साधुमुपतिष्ठतेसाधुः; और जहां कुछ धन लाभेच्छा प्रकट हो वहां विकल्प से आत्मनेपद होता है जैसे धनिनमुपतिष्ठते [ति] भिक्षुः धनलाभेच्छया धनिसमीपंगच्छतीत्यर्थः। आ+हन् और यम् [अकर्मकार्थ में]; परन्तु सकर्मकार्थ में परस्मैपद होता है जैसे कूपाद्रज्जुमायच्छति [खींचना फैलाना]; आहन्तिशत्रुम्; परन्तु जहां स्वाङ्गही कर्म हो वहां आत्मनेपद होता है जैसे आयच्छते पाणिमात्मीयम्, आहतेस्वीयं शिरः इ०; अप+कृ [किसी चतुष्पादादि जीवों का यातो प्रसन्न होकर या भोजन की तलाश में या लेटने के लिये पृथ्वी का खोदना इस अर्थ में] जैसे अप्रस्किरतेवृषोहप्रः, कुक्कुटोभक्ष्यार्थी, श्वा आश्रयार्थीच; सम्+गम् और श्रु साथ आना, ध्यान देना [अकर्मकार्थमें] परन्तु सकर्मकार्थ में परस्मै० होता है जैसे सङ्गच्छति मित्रम्, संशृणोति शास्त्रम्; आ+ह्वे (स्पर्धा करना) जैसे मल्लमाह्वयतेमल्लः, और किसी अर्थ में परस्मैपद होता है जैसे पिता पुत्रमाह्वयति; केवल क्रम् धातु और उप, परा उपसर्ग के साथ (वृद्धि, उत्साह और अप्रतिबन्ध अर्थ में) जैसे सतां श्रीः क्रमते, वर्धतइत्यर्थः अध्ययनाय क्रामतेछात्रः (उत्सहते), शास्त्रेंपुक्रमतेबुद्धिः (न प्रतिहन्यते); आ+क्रम् (उदय होने अर्थ में) जैसे आक्रमते सूर्यः (उदयतइत्यर्थः); वि+क्रम् (पादविक्षेपार्थ में) जैसे साधु विक्रमतेवाजी (वल्गतीत्यर्थः वलाप्लुतगतौ) विक्रामति सन्धिः (द्विधाभवतीत्यर्थः); अ, उप+क्रम् (आरम्भार्थ में) जैसे प्रक्रमते उपक्रमते वा भोक्तुम् (आरभतइत्यर्थः); अप+ज्ञा (मना करना) उक्रमपजानीते; सम्, प्रति+ज्ञा (स्मरणार्थ छोड़) जैसें शतं संजानीते (अपेक्षते), शतंप्रतिजानीते [अङ्गीकरोति], स्मरण में जैसे पुत्रं संजानाति, प्रतिजानाति वा स्मरतीत्यर्थः वद धातु (भासन, सान्त्वन, ज्ञान, याच, क्षिप्रक्रि, प्रार्थना और मनुष्यों के एकत्रित होकर उच्चारण करने अर्थ में) जैसे शास्त्रेवदते (भासमानोभवतीति) भृत्यानुपवदते (सान्त्वयति) शास्त्रेवदते (जानाति), क्षेत्रेवदते (यतते) क्षेत्रेविवदन्ते, उपवदते (प्रार्थयते) संप्रवदन्ते ब्राह्मणः; सम्+कृ (प्रतिज्ञार्थ में) जैसे शतं सङ्किरते (प्रतिजानीते); उत्+चर (सकर्मक) या सम्+चर (तृतीया के साथ) जैसे गुरुवचनमुच्चरते [उल्लंघयतीत्यर्थः], रथेनसञ्चरते; अकर्मक से जैसे उच्चरतिधूमः। उप+यम् [विवाहार्थ में] गुलक्षणांकन्यामुपयच्छते; युज् धातु निर, दुर, सम् उपसर्गों को छोड़ प्रत्येक उपसर्ग के साथ में जैसे प्रयुङ्क्ते उद्युङ्क्ते इत्यादि परन्तु जहां यज्ञ, पात्रों के साथ इनका प्रयोग हो वहां परस्मैपद होगा जैसे यज्ञपात्राणि प्रयुनक्ति।

अथ परस्मैपदप्रक्रियाप्रदर्शकः पञ्चदशोऽध्यायः ।

परस्मैपद प्रक्रिया में यह दिखायागया है कि धातुचाहे जिसपद की हो कुछ उपसर्गों के लगने से सदैव परस्मैपदीही होंगी जैसे अनु, परा + कृन् (नकल करना, रद्द करना) ; प्र + यह (तेज बहना) ; अभि, अति ; अति + क्षिप् (किसी ओरफेंकना; रद्दकरना निकालदेना, तिरस्कार करना, परेफेंकना) ; परि + मृद् परिमृष्य (मर्ष) ति; (खफ़ाहोना, डाहकरना) वि, आ, परि + रम् [ठहरना, आरामलेना, खुशहोना] ; उप + रम् [अकर्मकार्थं अर्थात् निवृत्त होना अर्थ में विकल्प से] ; बुध् युध् नश् जन् और अधि + इ, प्र, हु, स्रु [प्रेरणार्थक में] जैसे बोधयति-प्रावयति [प्रापयति], द्रावयति [विलापयति] स्रावयति [स्यन्दयति]; अद् धातु छोड़ घेधातु जो निगलना और चलना अर्थदिखाती हैं प्रेरणार्थक में परस्मैपद होती हैं ।

अथ वाच्यप्रदर्शकः षोडशोऽध्यायः ।

१ जिन वाक्यों में कर्ता प्रथमान्त और कर्म द्वितीयान्त और क्रिया दशों गणों में कोई सी, कर्तानुसार वचनादि में होवे कर्तृवाच्य (active voice) कहलाते हैं जैसे देवदत्तः मातरं स्मरति, वयं ग्रामंगच्छामः ।

कुछ धातु द्विकर्मक होती हैं जिनके दोकर्म होते हैं उनमें जोकर्म कि क्रिया से ठीक सम्बन्ध रखता है [मुख्य या प्रधान Direct] और दूसरा [अ-प्रधान या गौण Indirect] कहलाता है जैसे गोपोगां [गौण] दुग्धं [मुख्य] दोग्धि, दरिद्रो राजान [गौण] धनं [मुख्य] याचते, दुहाद्यष्टदण्डकीधर्मच्छ चिद्रुशासुजिमन्थमुषाम् नी हृकृष्वह इत्येते धातवःस्युर्द्विकर्मकाः १

कर्मवाच्य प्रयोगों में द्विकर्मक धातुओं के दोनोंकर्म इस प्रकार विभक्ति पाते हैं गौणे कर्मणि दुहादेः प्रधाने नीहृकृष्वहाम् विभक्तिः प्रथमा ज्ञेया द्वितीया च तदन्यतः । १ ।

जैसे द्विकर्मक कर्तृवाच्य प्रयोग गोपोगांदुग्धंदोग्धि इसकाकर्मवाच्य गोपेन गौदुग्धं दुह्यते अजाजीघ. अजांग्रामं नयति इसका कर्मवाच्य अजाजीवेन अजाग्रामंनीयते सारांश यह है कि दुहादि धातुओं के गौणकर्म में और न्यादि धातुओं के प्रधान कर्म में प्रथमाविभक्ति होती है और तद्भिन्न कर्म मे द्वितीया विभक्ति होती है ।

कर्मवाच्य [Pauive voice] प्रयोग सकर्मकधातुओं से बनते हैं कर्तृवाच्य प्रयोग में जोकर्ता होता है वह कर्मवाच्य में सविशेषण तृतीयान्त होजाता है और कर्म सविशेषण प्रथमान्त और इसीके अनुसार क्रिया के वचनादिहोते हैं और वाक्य में इनके सिवाय कोई शब्द नहीं बदलता। जैसे धीमान देवदत्तः सदैव पुस्तकं [द्वि.] पठति— [कर्तृवाच्य], धीमता देवदत्तेन सदैव पुस्तकं [प्र०] पठ्यते (कर्मवाच्य) कर्मवाच्य क्रियाओं के रूप प्रायः आत्मनेपदी दिवादि गणीधातुओं के से प्रथम चारलकारों में, औरलुङ् लकार के प्र. पु. प. व. को छोड़ शेष ५ लकारों में अपने गुणानुसारही आत्मनेपद में, होते हैं लुङ् लकार का प्रयोग आगे दियाजाता है।

जैसे पठ्—पठ्यते, पठ्यतां, पठ्येत, अपठ्यत, पेठे, पठिता, पठिष्यते, अपठिष्यत, पठिषीष्ट लुङि अपाठि अपाठिषाताम् शेषं पूर्ववत्; विशेषकर्मवाच्य धातुरूप जानने के लिये अष्टम अध्याय देखो कुछ धातुओं के अभ्यासाथ लुङ् लकार के प्र० पु० एक व० के रूप दियेजाते हैं। स्तु—अस्तावि; स्मृ—अस्मारि; दा—अदायि; नी—अनायि; ग्रह—अग्राहि, दृश्—अदर्शि हन्—अघानि, अवधि; जन्—अजनि; लभ्—अलाभि, अलम्भि गम्—अगमि, कृ—अकारि इत्यादि।

३ भाव वाच्य (Iatransitive Passive voice) प्रयोग अकर्मक धातुओं से बनते हैं। अकर्मक क्रियावाले कर्तृवाच्य प्रयोग के जब भाववाच्य में बदलते हैं तब कर्ता सविशेषण तृतीयान्त होता है परन्तु क्रियाकेवल अन्यपुरुष एक वचन कीही सर्वत्ररहती है जैसे बालकाः शेरते [कर्तृवाच्य], बालकैः शय्यते; अहं शये मया शय्यते भू—भूयते, भूयताम्, भूयेत, अभूयत, बभूवे, भविता, भविषीष्ट, भविष्यते, अभविष्यत, अभावि श्रि-श्रीयते लुङि अश्रायि इत्यादि केवल अ० पु० एक० वचन में ही रूप चलते हैं। सपितृको देवदत्तोऽतिष्ठति [कर्तृवाच्य] सपितृकेण देवदत्तेनात्र स्थीयते। इत्यादि जानो।

अथ लकारार्थप्रक्रियाप्रदर्शकः सप्तदशोऽध्यायः।

यह वह प्रक्रिया है जिससे वाक्यों में लकारोंका प्रयोग करना दिखाया गया है। सामान्य रीति से वर्तमानकाल द्योतन करने कोलिये लट्, और भूतकाल द्योतन करने के लिये लट् लिट् और लुङ् और भविष्यकाल द्योतन करने के लिये लृट् और लृट् लकार प्रयोग किये जाते हैं निम्न लिखित विशेषनियम यह यह है १ जब लट् लकार के साथ "स" का प्रयोग होता है तब भूतकाल द्योतन करता है जैसे स घिप्रेभ्यः प्रचुरं धनं ददातिस [अदात्]। २ "मास" के साथलट् वा लुट् लकार तीनों काल द्योतन करते हैं जैसे क्लैब्यं मास्मगमः पार्थ। ३ "मा" के साथ विकल्प से लुङ् लकार का प्रयोग तीनों काल द्योतन करना है जैसे

भाभूत् शोकः । ४ यावत्, पुरा अव्ययोंके साथ लट् लकार भविष्यार्थ द्योतन करता है सः पुरागच्छति [अचिराद्गमिष्यतीत्यर्थः] । ५ कदा, कहिं के योग में लट् लकार विकल्प से भविष्यार्थ द्योतन करता है जैसे कदा कहिंवा आगच्छामीति नजानै [आगमिष्यामि] ।

६ यदा, यदि अव्ययोंके योग में विधिलिङ् भविष्यार्थ द्योतन करता है जैसे वक्ष्यामि यदास आगच्छेत् [आगमिष्यति] । ७ आशीर्वादार्थ में आशीर्लिङ् चालोट् लाते हैं जैसे तवसुखं भूयात् भवतुवा । ८ कर्तव्यार्थका जहां उपदेश हो या सम्भावनाहो वहां विधिलिङ् लाते हैं जैसे सत्यं वदेत् ९ यदि एक वाक्य में दो क्रिया एक दूसरी परनिर्भरहों तो दोनों क्रिया भविष्यार्थ दिखाने केलिये विधिलिङ् में प्रयोग की जायगी जैसे यदि प्रियं वदेत् सर्वस प्रियोभवेत् । १० कर्ता की सामर्थ्य दिखाने के लिये लोट् या विधिलिङ् कोईसा लकार प्रयोग कर सके हैं जैसे मिन्धुमांस शोषयाणि शोषयेयंवा । ११ दो भूतकाल जो एक दूसरे पर निर्भरहों और क्रियाकी अनिष्पत्ति [असिद्धि] दिखाते हों वहां लृङ् लकार प्रयोग होता है जैसे यदि सुवृष्टरभविष्यत्तदासुभिक्षमभविष्यत् । १२ जहां पौनः पुन्य या अतिशयार्थ द्योतन करना होता है वहां केवल लोट् लकार के मध्यम पुरुष एक वचन बहुवचन के प्रयोग [हि, त, स्व, ध्वम्] तीनों कालों तीनों पुरुषों व तीनों वचनों में किये जाते हैं जैसे पुरोमयस्कन्दलुनीहि नन्दनं सुगण रजानिहरामराङ्गनाः ।

अथ कृत्प्रत्ययमदर्शकोऽष्टादशोऽध्यायः ।

धातुओं में जिन प्रत्ययों के लगाने से संज्ञादि शब्द बनते हैं वे कृत् प्रत्यय और तदन्त शब्द कृदन्त कहलाते हैं ।

१ निमित्तार्थ [injunctive] बोध कराने के लिये धातु के उत्तर तुमुन् [तुम्] प्रत्यय लगा देते हैं जैसे "जि" जेतुम्, भुज्—भोक्तुम्, दा-दातुम्, गम्—गन्तुम्, परन्तु रूप बनाने में यह ध्यान रहे कि सेट धातुओं के बीच में "इ" लग जाता है जैसे भू—भवितुम्, कथ् कथितुम् इत्यादि ।

२ पूर्वकाल बोध [पूर्वकालिक] कराने के लिये अर्थात् जहां एकही कर्ता को दो क्रिया बतलाती हों वहां पूर्व क्रिया के उत्तर "त्वा" प्रत्यय लगा देते हैं परन्तु "नञ् समास" छोड़ और कोई उपसर्ग धातु से पहिले आवे तो 'त्वा' 'य' [ल्यप्] में बदल जाता है और जहां अभीक्ष्ण और नित्यवीप्सा दिखाई जाती है वहां पहिली क्रिया में 'त्वा' की जगह 'अम्' [णमुल्] भी होता है नाम से उदाहरण देखो जैसे दा-दत्वा, स्था-स्थित्वा, चल-

उक्त्वा, गम्-गत्वा, नभ् समास जैसे अगत्वा, आ+गम्—आगम्य आगत्य, प्रणम्-प्रणम्य । सेट, अनिट का उपरोक्त ध्यान यहां भी रहना चाहिये जैसे वस्—उषित्वा, शी—शयित्वा इत्यादि । अभीक्ष्ण या नित्य घोप्तार्थ में स्मारंस्मारंनमति शिवं [स्मृत्वास्मृत्वा इत्यर्थः]।

३ धातुओं से भूतकाल बोधन कराने के लिये कर्म तथा भाव अर्थ में 'त' प्रत्यय, और कर्ता अर्थ में 'तवत्' प्रत्यय होता है जैसे रामेण रावणोहतः, रघवास्नातम्; स्रष्टाविश्वंरचितवान् शृ-शीर्णः, भिद्-भिन्न, शुष-शुष्कः, पच-पक्वः, धा-हितम् इत्यादि

४ योग्यता अर्थ बोधन करने के लिये और क्रिया का कर्म बतलाने के लिये धातु के उत्तर 'तव्य', 'अनीय' और 'य' प्रत्यय लगाते हैं जैसे ग्रह—ग्रहीतव्यं, ग्रहणीयं, ग्राह्यं धनमेतत् ।

५ कर्तृवाच्य प्रयोग में विशेषण [Present participle] बनाने के लिये परस्मैपदी धातुओं से अत् [शतृ], और आत्मनेपदी धातुओं से 'आन' [शानच्] लगाते हैं इनका लिङ्ग वचन अपने विशेष्यानुसार होता है। यह ध्यान रहे कि इनके रूप धातु के गणानुसार पहिले 'शप्' आदि विकरण लगा कर बनाये जाते है और वर्तमान काल द्योतन करते है जैसे गम्-गच्छत् [जाता हुआ]; भुज भुञ्जत्-भुञ्जानः; दा-ददत् ददानः; दृश्-पश्यत्, चुर-चोरयत् इत्यादि ।

६ कर्तृवाच्य प्रयोग में भूतकाल द्योतन करने वाले विशेषण शब्द Past Participle बनाने के लिये परस्मैपदी धातुओं से वस् (क्वसु) और आत्मनेपदी धातुओं से 'आन' (कानच्) लगाते है जैसे श्रु-शुश्रुवस्, भू-बभूवस्, घस्-जक्षिवस्, स्था-तस्थिवस्, गम् जग्मिवस और रुच-रुरुचानः, युध्-युयुधानः, शिक्ष-शिशिक्षाणः इत्यादि । सगानं शुश्रुवान् जगाम।

७ कर्तृवाच्य प्रयोग में भविष्यकाल द्योतन करने के लिये परस्मैपदी धातुओं से 'स्यत्' और आत्मनेपदी धातुओं से 'स्यमान' प्रत्यय लगाकर विशेषण शब्द Future Participle बनाते हैं जैसे गम्-गमिष्यत्, दृश्-द्रक्ष्यत्, स्था-स्थास्यत्, वृत्-वर्तिष्यमाणः, जन्-जनिष्यमाणः, सेव्-सेविष्यमाणः ।

८ कर्तृवाच्य प्रयोग में कर्त्रर्थद्योतन करने के लिये धातुओं के उत्तर 'तृ' (तृन्) 'अक' (णक) और 'इन्' (णिन्) प्रत्यय लगाते हैं जैसे दा-दातृ, कृ-कर्तृ, हन्-हन्तृ, नी-नायकः कृ-कारकः, पच-पाचकः, णिन्-वद्-वादिन्, वस्-वासिन्, द्रुह्-द्रोहिन् । कहीं २ शील अर्थ में भी 'णिन्' प्रत्यय होता है जैसे त्यक्तुंशीलमस्य स त्यागिन्, भज्-भागिन्, गम्-गामिन् ।

९ किसी प्रकार का कार्य अर्थात् धात्वर्थ बनाने के लिये धातु से उत्तर 'अ' (घञ्) 'अ' (अल्) प्रत्यय लगा कर प्रायः पुल्लिङ्ग संज्ञा बनाते हैं जैसे

घञ्-पच्-पाकः, त्यज्-त्यागः, जापः अल्-जि-जयः, स्तु-स्तवः, भी-भयम् इत्यादि ।

१० किसी प्रकार का कार्य अर्थात् धात्वर्थ करण (ज़रिया) और ओर (तरफ़) द्योतन करने के लिये धातु से उत्तर 'अन' प्रत्यय लगा कर संज्ञा बनाते हैं और ये संज्ञा प्रायः नपुंसक होती हैं जैसे कार्य में-गम्-गमनम्,-भुज्-भोजनम्; करण में नी-नयनम्, श्रु-श्रवणम्; और ओर में शीशयनम्-भू-भवनम् ।

११ कर्म उपपद होने से धातु के उत्तर 'अण्' प्रत्यय लगा कर संज्ञा बनाते हैं जैसे कुम्भं करोतीति कुम्भकारः ।

१२ इच्छार्थक धातु, आङ्पूर्वक दांस, और भिक्ष धातु इनसे 'उ' प्रत्यय होता है जैसे जिगमिषुः, आशंसुः, भिक्षुः ।

१३ भाववाचक संज्ञा बनाने के लिये धातु के उत्तर 'ति' प्रत्यय लगाते हैं जैसे गम्-गतिः, मन्-मतिः, मुच्-मुक्तिः इत्यादि ।

१४ (अ) जल्प, भिक्ष, कुट्ट, लुण्ट, और वृङ् धातुओं से 'आक' प्रत्यय होता है जैसे जल्पतीतिजल्पाकः, भिक्षाकः, लुण्टाकः, कुट्टाकः, वराकः ।

(ब) हलन्त शब्द प्रायः क्विप् प्रत्ययान्त होते हैं क्योंकि उक्त प्रत्यय लोप होनेसे केवल धातुमात्र सा रूप रहजाता है जैसे वि×भ्राज् [विशेषण भ्राजते इति] विभ्राट्, भास्—भाः, वि×द्युत्—विद्युत्, प्रच्छ—प्राट्, वच्—वाक्, परि + व्रज परिव्राट् ।

(स) करण अर्थ में दा, नी, शास्, यु, युज्, स्तु, तुद्, सि, सिच्, मिह्, पत्, दंश, और नह धातुओं से "त्र" प्रत्यय होता है और अर्ति, लू, धू, सू, खन्, सह, चर, और पू इन धातुओं से "त्र" प्रत्यय होता है । जैसे दात्रेनेनेति दात्रम्, नेत्रम्, शास्त्रम्, योत्रम्, योक्त्रम्, स्तोत्रम्, तोत्रम्, सेत्रम्, सेक्त्रम्, मेढ्रम्, पत्रम्, दंष्ट्रा, नर्भा; और अरित्रम्, लवित्रम्, धवित्रम्, सवित्रम्, खनित्रम्, सहित्रम्, चरित्रम्, पवित्रम् इत्यादि ।

१५ यज, याच, यत, विच्छ, प्रच्छ, रक्ष इनसे नङ् प्रत्यय और स्वप् धातु से नन् प्रत्यय होता है जैसे यज्ञः, याच्ञा, यत्नः विघ्नः (प्रतापः) रक्षणः और स्वप्नः ।

गौडान्ववायजातः गोविन्दांघ्रिसरोजषट्पदोऽयम् ।
दुर्गाप्रसादसूनुः सुखानन्दाख्यत्रिपाठीति ॥ १ ॥
रसारसाङ्कभूमिते, हायने मासितु सहस्यनामके ।
उत्तरे शुक्लचतुर्थ्यां कृत्वा पूर्णमथार्पयच्छिवाय ॥ २ ॥

शमस्तु ।

व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोध की शुद्धाशुद्धपत्रसूची ।

पृष्ठ	का	अशुद्धि.	शुद्धि.
३	२	फुक्षि	कुक्षिः
"	४	मन्यते	मन्यते *
५	"	मार्ष्टि	मार्ष्टि
४	२	स्वपति	स्वपिति
६	"	क्षालयसि	(क्षालयसि)
१०	"	रक्यरिक्षा	रक्परीक्षा
११	"	पुरस्कृत्या पण्डितः	पुरस्कृत्या-पण्डितैः
"	"	आधापितु	अधापितु
"	"	शब्दकरोति	शब्दंकरोति
१२	"	पारसिक	पारसीक
१४	"	श्रुयताम्	श्रूयताम्
"	४	शय्याच्छादःनम्	शय्याच्छादः-नम्
१५	"	घयति ते	घपति-ते,
"	२	वयति ते नवान्यंशुकानि	वयति-ते नवान्यंशुकानि
"	"	शिरस्त्राणां	शिरस्त्राणम्
१६	"	तदन्विष्याआ-	तदन्विष्याआनय
"	"	नयं	
१७	"	तूलेन भूत	तूलेन च भूत
१९	"	निर्मापयिता ऽस्मि	निर्मापयितास्मि
"	"	स्त्रीयो	स्त्रियो
२०	"	अपहरत्	अपाहरत्
२१	"	अरधद्दः	अरघद्दः
२३	"	शृणं	शृणु
२४	१	गृहस्थ और घर्तन	गृहस्थ के स्थान और वर्तन (सर्वत्र)
"	४	मञ्चः	मञ्चाः
२५	"	गृहस्थानां विशेषाः	गृहस्थानां स्थान विशेषाः (सर्वत्र)
२६	२	पाकाणला	पाकशाला

पृष्ठ	का	अशुद्धि.	शुद्धि.
३३	३	चहगादर	चमगादर
३५	२	कल्यमुत्थाय	कल्य उत्थाय
३७	"	समाने	स माने
३९	"	रौतिति	रौतीति
४०	"	श्वाविध	श्वाविध
५३	१	५५ रुपये	६५ रुपये
"	२	पञ्चपञ्चाश-न्मुद्राः	पञ्चषष्टिमुद्राः
५९	"	आधुनिको	आधुनिकाः
६६	"	जम्बुः-धु	जम्बुः-चू
"	४	मूलिका,काथली	मूलिका
६८	२	पार्करा	शार्करा
७०	"	समस्त	समस्तु
७१	"	शर्करैरेवा	शर्करयाचैवा
"	"	लेह्यां	लेह्या,
"	"	शलाछिद	शलाद्विद
७२	"	पितृस्वसा	पितृष्वसा
"	"	भागिनय	भागिनेयः
७३	"	पुड्याः	पुज्यः
७६	४	चित्कारः	चीत्कारः
७७	"	पलगण्ड	पलगण्डः
"	"	चर्मप्रमेदिका	चर्म प्रभेदिकाः
७८	"	कृपीः	कृपिः
७९	"	विनि मे ते	वनिमयते
८०	२	समापतिति	सम्+आ+पतति
८१	"	स्नानात्	स्नानात्
८३	"	क्षुद्रराजानः	क्षुद्राराजानः
९१	४	कर्णोरः	कर्णेरः
९२	"	द्यो	द्यौ
९५	२	(अमरूद)	अमृतफल
९६	"	दन्तशठवृक्षा	दन्तशठवृक्षाः

* प्रत्येक धातु का गण पद दिखाने के लिये सर्वत्र वर्तमान कालिक रूप दिखाये हैं।

पृष्ठ	का	अशुद्धि.	शुद्धि.
३०	प० १५	रायण्	क्यण्
३१	प० २	स्पर्स	स्पर्श
,,	२	स	से
३२	२	है	हैं
३३	नो	प्रेणार्थक	प्रेरणार्थक
,,		अष्टमोऽध्याय	अष्टमोऽध्यायः
,,	२	चङ्क्रम्यते	चङ्क्रम्यते
३६	४	चिचेष	चिचेषे
,,	५	शासनम्	शासनम्
,,	,,	शसा, शस्ति	शंसा, शंसति
३७	२	अशङ्कत	असहत
,,	३	ई०	सर्वत्र उडादीजे
,,	४	अघ्रात्	अघ्रात्
४०	२	ईयाज	इयाज
४१	,,	नन्देत्	निन्दित्
,,	४	घर्तताम्	धर्तताम्
,,	५	ममीयते	मेमीयते
४२	४	अजागरीष्यत्	अजागरिष्यत्
४३	,,	पीयते	पायते
४४	,,	शयीत्	शयीत
,,	५	गुग्धे	दुग्धे
४५	,,	ह्नुङ्	ह्नूङ्

पृष्ठ	का	अशुद्धि.	शुद्धि.
४७	प्र.	भाषयते	भीषयते
४६	५	घृत्वा	धृत्वा
४९	४	अधोष्यत	अधो (धिव)
५०	२	वृयात्	व्रियात्
,,	,,	ढक्ना	ढकना
५१	,,	वन्नीयते	वेव्रीयते
,,	४	कुन्तेत्	कृन्तेत्
,,	५	भक्ता	भक्त्वा
५३	,,	तनुयात	तनुयात्
५५	४	जिज्ञासति	जिज्ञासते
,,	२	अलूनात्	अलुनात्
५६	,,	तोयलन्	तोलयन्
५९		होतेहै। उभयपदी	उभयपदी होते हैं
६०		शुभ् और रुच्	भृशार्थमे शुभ् और रुच्
,,			
६५		Pauive	Passive
,,		गुणनुसार	गणानुसार
,,		अभ्यासाथ	अभ्यासार्थ
,,		Iatransitive	Intransitive
,,		स्थ	स्था
६६		Injeuctive	Infinitive
६७		Parteceple	Particeple